CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

नवम्बर '८६

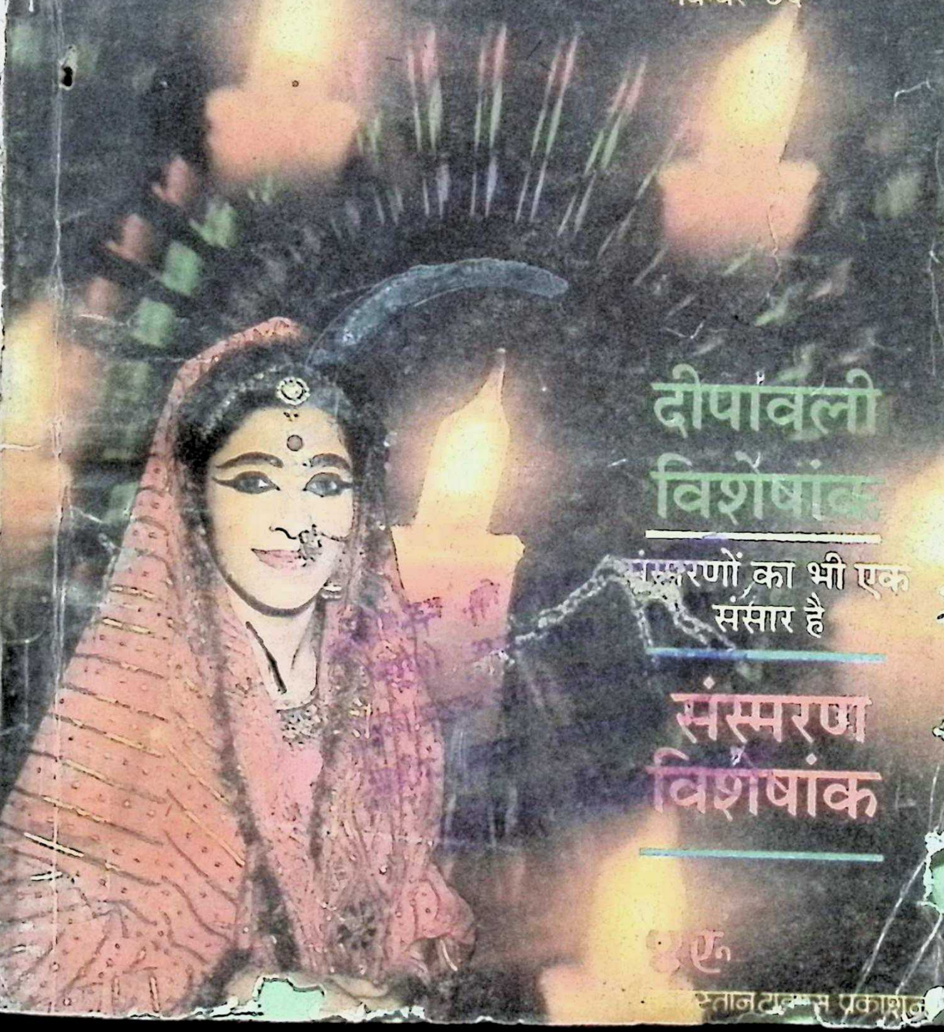

दीपावली विशेषांक

...स्मरणों का भी एक संसार है

संस्मरण विशेषांक

...स्तान टा...स प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

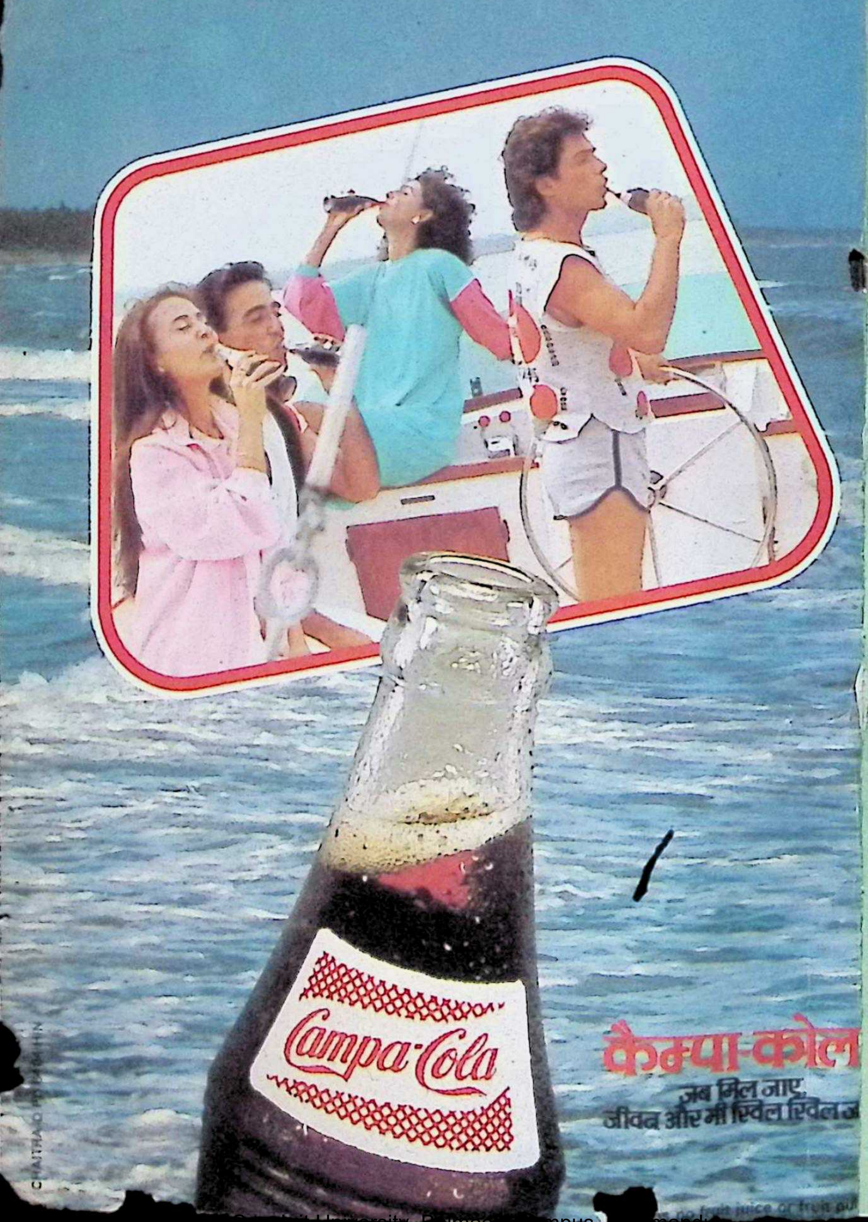

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

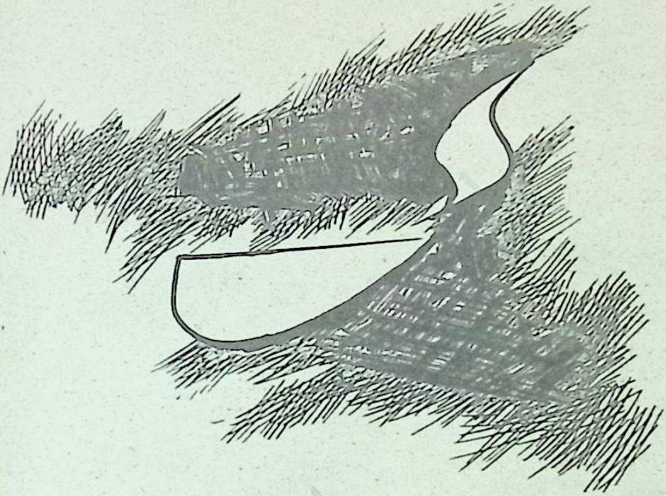

दीपावली के पुनीत पर्व पर लेखकों, पाठकों और एजेंटों को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं —

राजेन्द्र अवस्थी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशन विभाग की उत्कृष्ट नियतकालीन हिन्दी पत्रिकाएं

सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का प्रकाशन विभाग विभिन्न विषयों से संबंधित हिंदी की पांच नियतकालीन पत्रिकाएं प्रकाशित करता है। ये सभी पत्रिकाएं अपने-अपने विषय से संबंधित सर्वोत्कृष्ट साहित्य पाठकों को बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध कराती है।

आज ही अपनी प्रति सुरक्षित कराएं।	मूल्य एक प्रति रु. पै.	वार्षिक चन्दा रु. पै.	द्विवार्षिक चंदा रु. पै.	त्रिवार्षिक चन्दा रु. पै.
● **आजकल** (मासिक) हिंदी के अतिरिक्त उर्दू भाषा में भी उपलब्ध (आधुनिक साहित्य एवं संस्कृति का संवाह मासिक)	2.00	20.00	36.00	48.00
● **बाल भारती** (मासिक) बच्चों की सचित्र, रोचक एवं ज्ञानवर्धक संपूर्ण मासिक पत्रिका।	2.00	20.00	36.00	48.00
● **कुरुक्षेत्र** (मासिक) ग्रामीण पुनर्निर्माण पर उत्कृष्ट पत्रिका।	2.00	20.00	36.00	48.00
● **योजना** (पाक्षिक) देश के बहुमुखी विकास एवं योजना की निष्पक्ष समीक्षा करने वाली पत्रिका।	2.00	40.00	72.00	96.00

उपरोक्त पत्रिकाओं में से किसी भी एक पत्रिका का ग्राहक बन जाने पर प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित सभी प्रकाशनों की खरीद पर 10% की छूट। विभिन्न विषयों पर भारत की सभी भाषाओं में उपयोगी पुस्तकें उपलब्ध हैं। निःशुल्क सूची-पत्र मंगाइए।

चन्दे की अग्रिम राशि बैंक ड्राफ्ट/ मनीआर्डर/ भा. पो. आर्डर द्वारा हमारे निम्न में से किसी भी एक कार्यालय को भेजें।

(डाक खर्च मुफ्त)

25 रु. कम से कम के आदेश पर पंजीकरण शुल्क (रजिस्ट्रेशन फी) अतिरिक्त भेजना होगा। पुस्तकें स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं से लें अथवा सीधे हमें लिखें :

संपर्क करें
व्यापार व्यवस्थापक,
विक्रय केन्द्र,
प्रकाशन विभाग

- पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001
- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- बिहार स्टेट को-आपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- 10-बी स्टेशन रोड, लखनऊ-226019
- 8, एसप्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- कामर्स हाउस (दूसरी मंजिल), करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- एल. एल. ए. आडिटोरियम, अन्ना सलै, मद्रास-600002
- स्टेट आर्कीलाजिकल म्यूजियम बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन, हैदराबाद-500004
- प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001

डीएवीपी-86/ 287

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी, हस्तरेखा-विशेषज्ञ एवं सिद्धहस्त तान्त्रिक-मांत्रिक डा. नारायणदत्त श्रीमाली की

अनमोल पुस्तकें

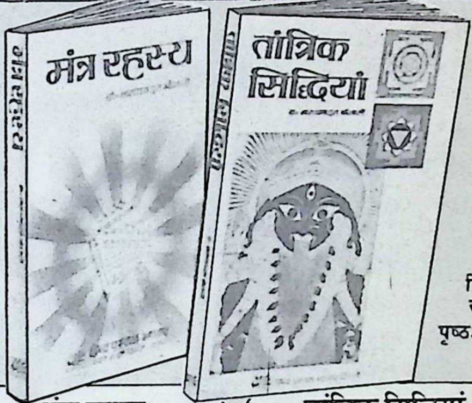

डिमाई साइज
पृष्ठ: 380

डिमाई साइज
पृष्ठ: 192

मंत्र रहस्य

- मंत्र, मंत्र का मूल स्वरूप, मंत्र की मूल ध्वनि व उसके सफल प्रयोगों पर एक प्रामाणिक सचित्र पुस्तक।
- असंख्य दुर्लभ मंत्र व उनके प्रामाणिक प्रयोग, जिसके माध्यम से साधक एक सफल मंत्र-शास्त्री एवं ज्ञाता बन सकता है।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए अद्भुत एवं आश्चर्यजनक ग्रंथ, जिसके माध्यम से साधक स्वयं के तथा लोगों के कष्टों को दूर करने में समर्थ हो सकता है।
- मंत्रों के मूल स्वरूप, मंत्र-चैतन्य, मंत्र कीलन-उत्कीलन, मंत्र-ध्वनि, मंत्र प्रयोग, मंत्र-विनियोग एवं मत्रों के सफल प्रयोगों के लिए सचित्र ग्रन्थ।

मूल्य: 24/- डाकखर्च: 4/-

तांत्रिक सिद्धियां

- दुर्लभ तांत्रिक-क्रियाओं का सरस-सरल एवं सचित्र विवरण, जिससे सामान्य पाठक भी लाभ उठा सकता है। मंत्र-अध्येताओं, तांत्रिकों एवं साधकों के लिए पथ-प्रदर्शक पुस्तक, जिसमें बगलामुखी साधना, तारा साधना, कर्ण पिशाचिनी साधना, अष्टलक्ष्मी साधना, सम्मोहन का प्रामाणिक वर्णन-विवेचन।
- तंत्र के क्षेत्र में प्रैक्टिकल पुस्तक, जिसमें तांत्रिक-सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए प्रयोग, मार्ग में आने वाली बाधाएं, उनका निराकरण व सफलता प्राप्त करने के साधन बताए गए हैं।

मूल्य: 18/- डाकखर्च: 2/-

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006

10-B नेताजी सुभाष मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नि बीमा पॉलिसी

हर छोटे उद्योग को क्यों लेनी चाहिए — यह रहे इसके १३ कारण :

ऐसे नुकसानों का निदान :

आग
बिजली
दंगे
हड़तालें
दुर्भावना से हुई हानि
विस्फोट
बाढ़
तूफान
चक्रवात
भूस्खलन
भूकंप
ज्वालामुखी विस्फोट
हवाई नुकसान

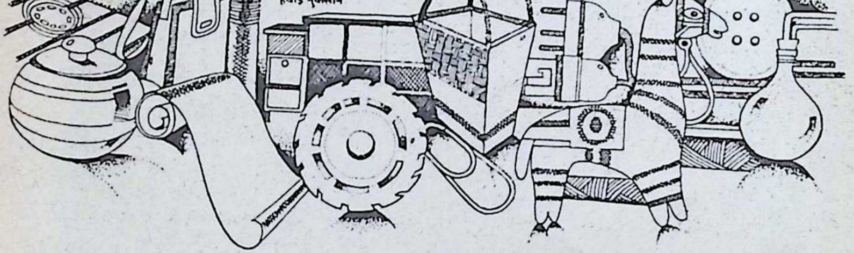

और सबसे छोटा उद्योग भी यह पॉलिसी क्यों ले?
यह रहा इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण :

प्रीमियम की रकम बेहद कम — मात्र एक रुपये में एक हज़ार रुपयों के मूल्य का बीमा.

यह पॉलिसी खास तौर पर उन लघु उद्योगों के लिए है जिनका मूल निवेश ५ लाख रु. और बीमे की कुल रकम १० लाख रु. से अधिक न हो.

जनरल इंश्योरेंस
कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया

अधिक जानकारी हमारी निम्नलिखित सहायक कंपनियों से प्राप्त कीजिए:

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
दि न्यू इंडिया ऐश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय की नई उत्कृष्टता

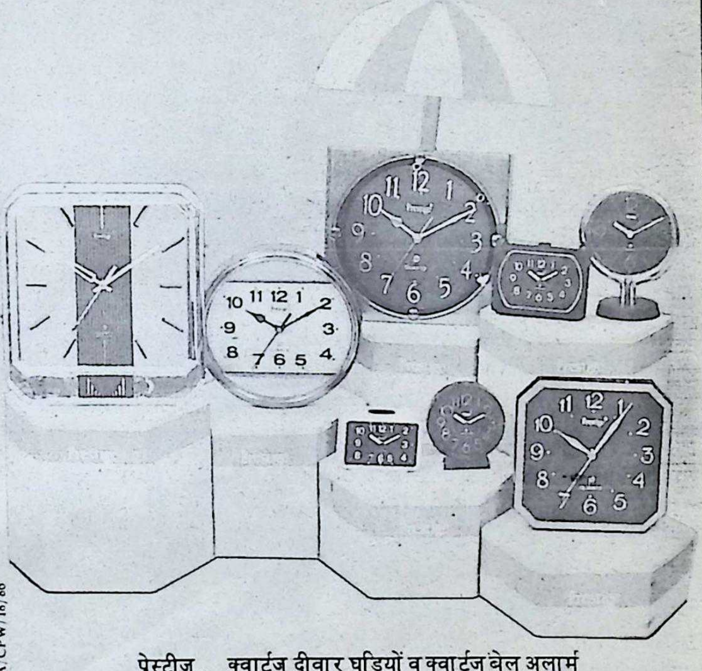

ANKA/CPW/18/86

प्रेस्टीज... क्वार्टज दीवार घड़ियों व क्वार्टज बेल अलार्म टेबल घड़ियों के सबसे बड़े निर्माता आपके लिए लाए हैं उच्चकोटि के बेजोड़ समय प्रहरी।

Prestige
QUARTZ

WALL CLOCKS & BELL ALARM TABLE CLOCKS

६५ खूबसूरत मॉडल क्वार्टज दीवार घड़िया व बेल अलार्म टेबल घड़ियां हर बड़े घड़ी विक्रेता के पास उपलब्ध।

निर्माता चावला प्लास्टिक वर्क्स प्रा.लि.

ए-4 मायापुरी फेस I, नई दिल्ली-110064 फोन: 590762 ,590835 टेलेक्स: 31 2085

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आस्था के आयाम

संस्मरण

पैसे का पेड़ बनाम कल्प वृक्ष

● बाबा आमटे

बचपन में मैंने एक बार सचमुच ही पैसे का पेड़ लगाया था। कहीं किसी को कहते सुन लिया कि 'क्या यहां पैसे का पेड़ लगता है!' बस, बात दिमाग में घुस गयी। मैंने चुपचाप जमीन में गढ़ा खोदकर पैसा गाड़ दिया और फिर प्रतीक्षा करने लगा कि कब पौधा फूटता है!

मैं रोज सुबह उठकर पहला काम वही करता। लेकिन, जब देखते-देखते कई दिन बीत गये और पौधा फूटता नजर नहीं आया, तो मैंने गढ़ा खोदकर देखा। तांबे का सिक्का ज्यों का त्यों पाया, तो इतना निराश हुआ कि रोने लगा।'

बाबा आमटे : प्रख्यात समाजसेवी एवं कुष्ठ रोगियों की निस्वार्थ सेवा के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित। उनकी 'भारत जोड़ो यात्रा' ने देश की जनता में एक नया उत्साह पैदा किया है। यहां प्रस्तुत हैं उनके कुछ संस्मरण।

प्रस्तुति : प्रो. रमेश गुप्त

मां ने मुझे रोते देख लिया। पूछा तो मैंने सब बता दिया। उसने न तो मेरी खिल्ली उड़ायी, न मुझे पागल ठहराया। वह बोली, "मैं तुम्हें बताती हूं कि पैसे के पेड़ कैसे लगाये जाते हैं।"

फिर उन्होंने समझाया कि किस प्रकार संतरे और नीबू और आम का दरख्त और गेहूं का पौधा जमीन में ही उगाया जाता है। फिर कैसे उनकी फसल बाजार में बिकती है और पैसे की शक्ल में बदलती है! उन्होंने कहा था, 'मिट्टी और मेहनत दोनों पर भरोसा रखना। पेड़ यहीं उगेगा और पैसा अपने आप तुम्हारी जेब में चला आएगा। और हां, एक बीज कल्पना का भी होता है। जब वह फलता-फूलता है, तो वह भी पैसा देने लगता है—जानते हो इसे क्या कहते हैं—कल्पवृक्ष।'

जापानी गुड़िया

मेरी मां ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी, किंतु बड़ी अच्छी शिक्षिका थी। बड़ी-बड़ी चीजें वह आसानी से समझा देती थी। एक बार उसने मुझे एक जापानी गुड़िया दी। यह गुड़िया गिरा दी जाती, तो वह गिरी पड़ी नहीं रहती। तुरंत उठ खड़ी हो जाती। यह गुड़िया देते हुए उसने मुझे समझाया, 'तुम इसे सात बार गिराओ, यह आठ बार उठ खड़ी होगी। गिराते-गिराते तुम हार जाओगे। इसी प्रकार जिंदगी में तुम्हें बार-बार गिरना पड़ेगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि जिंदगी में हर बार तुम्हारी कोशिश सफल हो। तुम हारो ही नहीं, गिरो ही नहीं। शान न गिरने और न हारने में नहीं है। बल्कि गिरकर तुरंत उठ खड़े होने में है। सात बार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरना, किंतु आठ बार उठ खड़े होना; हारना, किंतु हार न मानना ही जिंदगी का दूसरा नाम है।'

पतझड़

बचपन में अपने हमजोलियों से मैं अकसर रूठ जाता था। वैसे, हम एक दूसरे को खूब चाहते। एक दूसरे के गुणों का आदर करते। किंतु, कभी कुछ ऐसा हो जाता कि हम रूठ जाते। बोलना बंद कर देते। और यह मनमुटाव का अनबोला दो-दो साल तक चलता। सवाल यह होता कि पहल कौन करे। और झूठा घमंड हमें रोकता। दिल उछलता रहता बोलने को, लेकिन मुंह बंद होता। एक बार मां ने मेरी यह घुटन देखी, सुनी और फिर वह मुझे पेड़ों के पास ले गयी। पतझड़ चल रहा था। पतझड़ के पेड़ दिखाते हुए उसने कहा, 'देखो, ये पुराने पत्ते, किस प्रकार अनायास ही झड़ रहे हैं। हमारे पुराने मनमुटाव, नफरत, जलन, घुटन को इसी तरह झड़ जाना चाहिए। मन के इन पीले, सड़े-गले पत्तों को भी जल्द से जल्द झटककर इन पत्तों की तरह दूर फेंक देना चाहिए।'

उसके बाद दोस्तों से रूठना और अनबोले तो चलते रहे किंतु, उन्हें तोड़ने के लिए पहल करने में मुझे जिंदगी में कभी कठिनाई महसूस नहीं हुई।

कूदो

बचपन की सभी स्मृतियों में वह क्षण मेरे परम संतोष का क्षण था, जब गुरुजी के आदेश पर मैंने अपने आपको अंधकूप में झोंक दिया था।

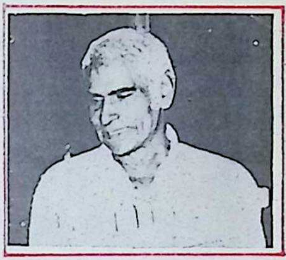

नरूभाऊ परांजपे हमारे हाईस्कूल के शिक्षक थे। तिलक युग के तपे हुए। स्कूली शिक्षा के दायरों से आगे बढ़कर देशभक्ति और चरित्र के कई जीवंत-ज्वलंत पाठ उन्होंने हमें पढ़ाये। एक बार उन्होंने पूछा, 'देशभक्त कौन हो सकता है?—जिसमें ताकत हो, हिम्मत हो और समर्पण की भावना हो।'

हमें आजमाने के लिए वे अनेक प्रयोग किया करते। एक बार वे हमें शहर के बाहर घनी अमराई में छिपे एक विशाल कुएं पर ले गये। अंधियारी रात का भयावना आलम था। चारों ओर सन्नाटा और झींगुरों की आवाज। उन्होंने मुझे कुएं की जगत पर खड़ा कर दिया और कहा, 'कूदो।'

मैंने तनिक झुककर देखा। अंदर अंधकार ही अंधकार था। मैं दो बार कूदने के लिए झुका, लेकिन रुक गया। मन में भय से युद्ध चल रहा था। शरीर अपनी प्राकृतिक प्रेरणावश पीछे हटना चाहता था, किंतु एक क्षण कौंधा। तीसरी बार जब कड़क आवाज में 'कूदो' का आदेश हुआ, तो मैं इन बाधाओं से एकबारगी ऊपर उठ गया और मैंने अंधेरे कुएं में अपने-आप को झोंक दिया।

—आनंद वन, वरोरा, महाराष्ट्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **कंकालशेष**— क. मृत, ख. मरणासन्न, ग. जो हड्डियों का ढांचा-सा रह गया हो, ७. मृत व्यक्ति के अस्थि-अवशेष।

२. **कचाकचि**— क. छीना-झपटी, ख. घिचपिच, ग. तू-तू-मैं-मैं, घ. एक-दूसरे के बाल पकड़कर झगड़ना।

३. **क्षुधालु**— क. दुबला, ख. भूखा, ग. गरीब, घ. पीड़ित।

४. **खगोल**— क. व्यर्थ, ख. आकाशमंडल, ग. गोलमाल, घ. मूर्ख।

५. **खचित**—क. खिंचा हुआ, ख. अलग, ग. जड़ा हुआ, घ. जुड़ा हुआ।

६. **गत-स्पृह**— क. स्नेहरहित, ख. सांसारिक विषयों से विरक्त, ग. आकांक्षाहीन, घ. संन्यासी।

७. **गतिभंग**— क. बाधा, ख. ठहर जाना, ग. विनाश, घ. अंत समय।

८. **चक्षुष्य**— क. तीव्र दृष्टिवाला, ख. सुंदर, ग. आंखों से संबंधित, घ. प्रिय नेत्रोंवाला।

९. **जीव्या**— क. जिंदगी, ख. आजीविका का साधन, ग. जिंदादिली, घ. जीवन-पथ।

१०. **निराकरण**— क. अस्त-व्यस्त करना, ख. विनाश, ग. खंडन, घ. गलत रूप देना।

११. **श्रुतिकीर्ति**— क. ख्याति, ख. प्रसिद्ध, ग. लोकप्रिय, घ. पवित्र।

१२. **मंथरविवेक**—क. मूर्ख, ख. जो शीघ्र निर्णय न कर सके, ग. आलसी, घ. गलत बात सोचनेवाला।

उत्तर

१. जो हड्डियों का ढांचा-सा रह गया हो। लंबी बीमारी के कारण वह **कंकालशेष** रह गया है।

२. घ. एक-दूसरे के बाल पकड़कर झगड़ना। तू-तू-मैं-मैं के बाद दोनों में **कचाकचि** होने लगी।

३. ख. भूखा। **क्षुधालु** को भोजन कराना पुण्य है।

४. ख. आकाशमंडल। **खगोल** की जानकारी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी पृथ्वी की। (खगोलविद=खगोल का विशेष ज्ञान रखनेवाले)

५. ग. जड़ा हुआ। राजा-महाराजा रत्न-**खचित** सिंहासन पर बैठते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. ख. सांसारिक विषयों से विरक्त, जिसने अपनी इच्छाओं का दमन कर लिया हो। इस संसार में **गतस्पृह** तो विरले ही होते हैं।

७. ख. ठहर जाना। तीव्र प्रगति के बाद उसकी जीवन-यात्रा में सहसा **गतिभंग** हो गया।

८. ख. सुंदर, मनोहर, आंखों को प्रिय लगनेवाला। यह उद्यान कितना **चक्षुष्य** है!

९. ख. आजीविका का साधन। कुछ लोग समाज-सेवा को भी **जीव्या** मान लेते हैं।

१०. ग. खंडन। उसने सभी आरोपों का **निराकरण** किया है।

११. ख. प्रसिद्ध। सुकर्मों से ही व्यक्ति **श्रुतिकीर्ति** होता है।

१२. ख. जो शीघ्र निर्णय न कर सके। जो **मंथरविवेक** हैं उनकी प्रगति भी धीमी रहती है।

पारिभाषिक शब्द

इन थ्योरी=सिद्धांतत:
इन प्रैक्टिस=व्यवहारत:
डि नोवो=नये सिरे से
इंटर एलिया=अन्य बातों के साथ-साथ
इंटर से=पारस्परिक
इप्सो फैक्टो=स्वत:
मोडस आपरेंडी=कार्यप्रणाली
मोडस विवेंडी=अस्थायी व्यवस्था
साइन डाई=अनिश्चित काल के लिए

समस्या पूर्ति—८८

साथ-साथ...

प्रथम पुरस्कार

है मौन प्रणय के अर्चन में
इस अमराई का पात-पात
भू-आंचल बिखरा-बिखरा-सा
रहकर वसंत के साथ-साथ
इक गुंजन महकी सांसों में—
"प्रिय रहें सदा हम साथ-साथ।"

—श्रवण कुमार वाजपेयी
७८५, पुराना कटरा, यूनिवर्सिटी रोड,
इलाहाबाद

द्वितीय पुरस्कार

मादक, उत्कंठित सरस रात
मृदु मंद मनोरम मलय-वात
मन रंगित-राग प्रेमाभिसार
आल्हादित हम तुम साथ-साथ

—प्रेम जैन
दादाबाड़ी कोटा—३२४००९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

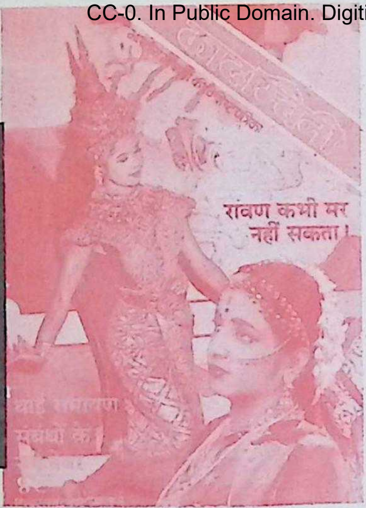

'कादम्बिनी' का अक्तूबर अंक मिला । अनेक लेख प्रेरणादायक एवं जीवनोपयोगी है । 'नशेबाज माता-पिता का अभिशाप भोगते शिशु' लेख बहुत ज्यादा पसंद आया, इसे पढ़कर कई लोग नशे के नारकीय जीवन से बच पाएंगे ।

—सुदामा राठौर, पंधाना

'अक्तूबर' अंक मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक के साथ-साथ संग्रहणीय भी था । 'आदमी से आदमी तक गंध गुलाब की' शीर्षक से प्रकाशित लेख ने पूरा गुलाबी का इतिहास खोलकर रख दिया ।

—मनोज जैन, हरसूद (पू. नि.)

'कादम्बिनी' का अक्तूबर का अंक बहुत ही अच्छा लगा । आद्योपांत पढ़कर मन प्रसन्न हो उठा । ऐसे तो संपूर्ण अंक ही पठनीय है परंतु 'आस्था के आयाम', 'रावण कभी नहीं मर सकता', 'थाई रामायण : संबंधों के नये तेवर', मुंशी रामगोविन्द (सार संक्षेप) तथा 'शिफान साड़ी' (कहानी) विशेष अच्छी लगी । प्रसन्नता का विषय है कि 'कादम्बिनी' का स्तर निरंतर उठता जा रहा है ।

—डॉ. शकुनचन्द गुप्त, लालगंज (रायबरेली)

अक्तूबर अंक काफी विषयों को सुसंयोजित करते हुए अत्यधिक प्रभावी बन पड़ा है । अंक की कविताएं उत्कृष्टतम श्रेणी की बन पड़ी हैं । दिव्येन्दु पालित की कहानी सहज प्रवाह में बहती पाठकों को भी साथ ले चली ।

कमोडोर रेवतीरमण ने ट्रांजेक्श्नल एनालिसिस थ्योरी का परिचय देने का सफल प्रयास किया । परंतु यह लेख केवल उन्हीं व्यक्तियों को ग्राह्य हो पाया होगा, जिन्होंने इस सिद्धांत को कुछ जान रखा हो । बहरहाल,लेखक को प्रयास हेतु बधाई ।

—मदनगोपाल खत्री, जयपुर

अक्तूबर की 'कादम्बिनी' काफी सज-धजकर आयी और साथ लायी सुंदर और ज्ञानवर्द्धक रचनाओं की सुगंधि । जहां, डॉ. दत्ता विनायक देशमुख का निबंध 'रावण कभी नहीं मर सकता' तथ्यों से परिपूर्ण लगा, वहीं डॉ. शिवनन्दन कपूर की रचना 'आदमी से आदमी तक गंध गुलाब की' से मन-प्राण सुरभित हो उठे ।

—नंदकिशोर, श्रीरामपुर, अयोध्या

अक्तूबर अंक में प्रकाशित 'रावण कभी मर नहीं सकता' लेख वस्तुतः प्रतीकात्मक रूपी रावण को उपेक्षित दायरे से बाहर लाकर रावण से कहीं अधिक पूर्ण प्रमाणित करने का बहुत सटीक एवं प्रामाणिक प्रयास है । मेरे विचार से रावण का चरित्र, जिसे रामायण में गौण कर दिया गया है, भी उभारने का प्रयास इसी ढंग से होना चाहिए । रावण का यह रूप प्रायः अज्ञात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहा है। किंतु विद्वान लेखक ने रावण के विभिन्न अवसरों पर परस्पर विरोधी आचरण को स्वीकार कर के उसको मनोविश्लेषण का विषय बना दिया है। वस्तुतः एकाधिक व्यक्तित्वों वाले रावण का वास्तविक व्यक्तित्व क्या था? यदि यह मान लिया जाये कि रावण एक महान संगठित, समग्र व्यक्तित्व का स्वामी था, तो उसमें अनेक घिनौने, अंधेरे और खलनायकत्व से भरे तहखाने क्यों थे?

—शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, पो. रावती (म. प्र.)

अक्तूबर अंक मिला। सामग्री काफी उपयोगी रही। 'राजन' जी ने अपने लेख में देहरादून, मौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी और चमोली जिलों को जौनसार क्षेत्र के अंतर्गत लिया जबकि चकरौता से आगे तथा उत्तरकाशी का कुछ सीमांत क्षेत्र याने एक पट्टी ही 'जौनसार' कहलाती है न कि सारा गढ़वाल। गढ़वाल और जौनसार में लगभग सभी रीति-रिवाज भिन्न-भिन्न हैं, जैसे बहुपति प्रथा आदि-आदि। यहां (गढ़वाल) में लोकोक्तियां हैं कि जौनसारी लोग 'पांडववंशी' हैं।

—राकेशचंद्र हटवाल, हाट

'कादम्बिनी' वास्तव में हिंदी साहित्य-जगत की श्रेष्ठ पत्रिका है। 'कादम्बिनी' का सितम्बर अंक बहुत ही रोचक रहा। इसमें डॉ. श्रीराम परिहार का लेख 'आकाश प्रिया और मेघ-काव्य' अत्यधिक पसंद आया। प्रकृति का इतना अनूठा चित्रण मैंने अपने विगत जीवन में कभी नहीं पढ़ा।

—बृजमोहन संज्ञा, राजघाट (ललितपुर)

'कादम्बिनी' का सितम्बर अंक मेरे लिए मात्र परिचय अंक था। ऐसी साहित्यिक विधाओं से परिपूर्ण पत्रिका मनोनुकूल थी। श्रीमती महादेवी वर्मा का प्रथम लेख रुचिपूर्ण था। रोचक प्रसंग में नेहरूजी के व्यक्तित्व पर लेखक ने व्यापक प्रभाव डालने की चेष्टा की, पर सफल नहीं हुए, वहीं मदनमोहन मालवीय के प्रेरक प्रसंगों को पढ़कर मजा आ गया।

—विजय प्रकाश त्रिपाठी, कानपुर

कोयल : भ्रांतियों का निराकरण

सितम्बर अंक में कैलाशचंद्र सैनी का लेख 'कोयल की कूटनीति का शिकार कौआ' जानकारीपूर्ण है। कई सारी बातें ऐसी दी गयी हैं, जो मैंने पहली बार सुनी हैं। कई भ्रांतियों का निराकरण भी हुआ है।

हमारे यहां लोकजीवन में कोयल का ही महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। कोयलबाई लड़की का नाम ही नहीं, अपितु विवाह की विदाई पर जो गीत गाया जाता है, उसमें नवविवाहिता को 'कोयलबाई' नाम से ही संबोधित किया जाता है। जयशंकर प्रसाद ने भी 'अहा कौन है पंचम स्वर में कोकिल बोला' लिखकर भ्रांति ही अधिक फैलायी।

यहां यह विचारणीय है कि इस जाति में भी क्या पुरुष कोयल भी होती है? मेरी दृष्टि में प्रायः स्त्री कोयल ही होती है, पुरुष होता ही नहीं। यह भी सत्य है कि कोयल कोयल ही को जन्म देती है। कोयल के अंडे कौए के संसर्ग से होते हैं। यदि अपवादस्वरूप किसी कोयल के पुरुष बच्चा होता है, तो अंडा फूटते ही वह पुरुषत्वहीन हो जाता है, जो तिरस्कृत जीवन ही जीता है। ऐसे पुरुष कोयल के पंख पर लाल धब्बा होता है। कोयल कागली से अपेक्षाकृत छोटी होती है। यह न केवल वसंत ऋतु में अपितु अन्य ऋतुओं में भी बोलती है।

—डॉ. महेन्द्र भानावत, उदयपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्ष : २७, अंक १ : नवम्बर, १९८६

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

कमलापति त्रिपाठी
जो आत्मा कहती है.................................... २२
अमृतलाल नागर
वह छोटे से छोटे व्यक्ति का
मन रखना जानते थे.................................. २४
कृष्णा साही
गांधीजी की धरती पर.................................. २७
वीरेन्द्र मिश्र
काव्य-प्रेरणा के मंचीय प्रसंग.......................... २९
एम. हिदायतुल्ला
जज ही नहीं जादूगर भी.............................. ३२
गुलाबदास ब्रोकर
बनना यूसुफ खान का
दिलीपकुमार... ३५
विष्णु प्रभाकर
मृत्यु का स्पर्श.. ४०
विद्याव्रत
दास्तान एक रहस्यमय
छायाचित्र की... ४२
मेजर जनरल राजसिंह अत्रे
फिर पंगा नहीं लेंगे.................................... ४७
सुंदरलाल बहुगुणा
क्या तुम अपने को बेच दोगे ? ५०
डॉ. इलपावुलूरि पांडुरंग राव
साक्षरता और साक्षात्कार............................ ५६
शिवकुमार गोयल
पाप व कर्ज की गठरी
क्यों ले जाऊं.. ५८
डॉ. रामदरश मिश्र
कविताभरे दिन.. ६०
डॉ. वैसिलिस जी. विट्सास्किस
संपदा की देवी लक्ष्मी................................ ६८
उस्ताद विलायत खां
उपहास को चुनौती ही समझा........................ ७९
मन्मथनाथ गुप्त
स्वर्ग की अप्सराएं...................................... ८०
लाल प्रद्युम्न सिंह
ईश्वर अगले जन्म में.................................... ८६
राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह
बेगम समरू : कुछ नये तथ्य ९२
डॉ. नगेन्द्र
मेरा पहला साक्षात्कार................................ ११२
होरी लाल वर्मा
दुल्हन बनी सरकार.................................... ११६
शंकर दयाल सिंह
वे मुंहफट नहीं, स्पष्टवादी थे....................... १२०
उस्ताद बिसमिल्ला खां
शहनाई बजाते समय.................................. १२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

पूर्णिमा पांडेय
गंगा के मायके की लोककला १३०
सविन्दर
आदमगढ़ के शैलाश्रय १३४
एन. त्यागराजन
बर्मों के साथ वह जोखिमभरा सफर १४६
जगदीश चंद्र दीक्षित
राग-रागनियों से साक्षात्कार १५२
मुकुटधर पांडेय
संबंध बिगड़ जाते थे १५८
डॉ. इंदिरा हिंदुजा
भाग्य बदल डालूंगी १५९
जयंत उल्लाल
गोलियों की बौछारों के बीच १६०
चार्ल्स एलन
भारतीय राजा-महाराजा १६२
विनोट भट्ट
ये शब्द मुझे बोलने थे १६७
रामकुमार
व्यथा-कथा पड़ कलाकारों की १६८
जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
राजा का प्रताप १७४
डॉ. पी. सक्सेना
वह यादगार चांटा १७७
विवेकी राय
गूंज की गिरफ़्त में १७८
टी. काशीनाथ
मैं भी इनसान हूं १८०
लक्ष्मीशंकर व्यास
महायोग के साधक १८२
डॉ. रणजीत कुमार साहा
अधूरी प्रतिकृति १८५
जमनादास अख्तर
मेरी हत्या करने आया था १८६
कर्नल रणजीत सिंह रावत
जिंदगी के दो पहलू १९०
उस्ताद अमजद अली खां
अंधेरे में भी महफिल १९२

स्थायी स्तंभ

आस्था के अभ्यास—८, ज्ञान गंगा—८५, बुद्धिविलास—१०१, हंसाइयां—१२८, सीपिकाएं—१२९, विधि-विधान—१६४, यह महीना और आपका भविष्य—१९६, वचन-वीथी—२१७, ज्योतिष समस्या और समाधान—२२५, और अंत में २३०।

आवरण पृष्ठ : अनूप अस्थाना (युवती), सूरज एन. शर्मा (दीप)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामेश्वर शुक्ल अंचल
अपराधिनी २००
गुरु हनुमान
हवलदार और 'चंदू लुटेरा' २०६
अशोक प्रभाकर मोटे
आकाश युद्ध २१०
कुलभूषण
खुशी, जो ज्यादा दिन नहीं रही २१४
जानकी वल्लभ शास्त्री
सारी दिल्ली आपकी २१६
डॉ. हरिदत्त भट्ट शैलेश
हिंदी की प्रकृति और प्रवृत्ति.......................... २१८
यादवेन्द्र शर्मा चंद्र
सौ का नोट.. २२०
गोपालकृष्ण कौल
वे साहित्यानुरागी थे २२२

कहानियां एवं व्यंग्य

कुलदीप सिंह बेदी
रक्तपात.. ७२
पुष्पा अवस्थी
तपते सीखचों के बीच.................................. १०२
कुंवर प्रेमिल
सेमलपानी का शेर.................................... १२३
सुखबीर
दो हाथों की दूसरी मौत १४०

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज
उप-संपादक :
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह
कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त
प्रूफरीडर : स्वामी शरण

पता : संपादक—'कादम्बिनी,' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ४६ रुपये

दिसम्बर अंक में पढ़िए

- वह समूचा जेल खरीदना चाहता था
- काफी हाउस : विद्रोह के स्कूल
- सांस्कृतिक धरोहर के तस्कर
- पुष्प गंगा की ओर
- वह जिंदगी भर अफवाहों में घिरा रहा

यही नहीं, और भी अनेक दिलचस्प रचनाएं, मर्मस्पर्शी कहानियां, भावभीनी कविताएं और ज्ञानवर्धक स्तंभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काल-चिंतन

—एक कथा है !

—चारों ओर भयावह दृश्य था । अपने हाथ अपने को ही काट रहे थे । पानी की जगह रक्त पीने की आकांक्षा अचानक कई तत्वों में उभरने लगी थी । रहीम ने खड़े होकर सबको समझाने का बीड़ा उठाया । उसने अल्लाह से प्रार्थना की, ईश्वर का जाप किया और सबकी सद्बुद्धि तथा सद्गति की मांग की । रहीम के साथ रामसुख ने भी वही कुछ किया । समय बीतता गया । आंधी और तूफान का एक झंझावात समाप्त हुआ । पहचान दोनों को नहीं थी—न रहीम को, न रामसुख को । कभी कोई चीज समाप्त नहीं होती । अंततः दोनों ने वैराग्य ले लिया ।

★

—कथा स्पष्ट है : वैराग्य लेने से शांति मिल सकती है ?

—वैराग्य जीवन से पलायन है ।

—वैराग्य समस्याओं से पराजय है ।

—समस्याओं को जहां पराजित करना था, वैराग्य लेकर उन्हीं दलित-गलित शक्तियों की शरण स्थली में अपने को पहुंचा दिया उन्होंने ।

—जीवन का उदय एक संघर्ष का आह्वान है ।

—जीवन का दौड़ना और भागना क्रियाशीलता और क्षमताओं को परखने देने का अवसर है ।

—कसौटी पर ही सोने की परख होती है । तूफानों के बीच अपने को संयत रखने में ही व्यक्तित्व उभरता है ।

—अकारण ढकेलनेवाली ताकतों से सामना करनेवाला ही विजेता बनता है ।

—कुल मिलाकर एक ही निष्कर्ष निकलता है : संघर्ष ही विकास का सबसे आसान रास्ता है ।

—महाबलि अध्येताओं और कालजयी पुरुषों ने अनेक संघर्ष झेले हैं । उसी के बाद वे शाश्वत सत्य और अनश्वरता के प्रतीक बने हैं ।

—ऐसे संघर्षशील व्यक्ति समय की शिला पर एक मूर्ति रूप में उभरकर अभय का वरदान देते हैं ।

—मनुष्य यहीं देवत्व को पाता है और सबके सिर-अपने आप उसके सामने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

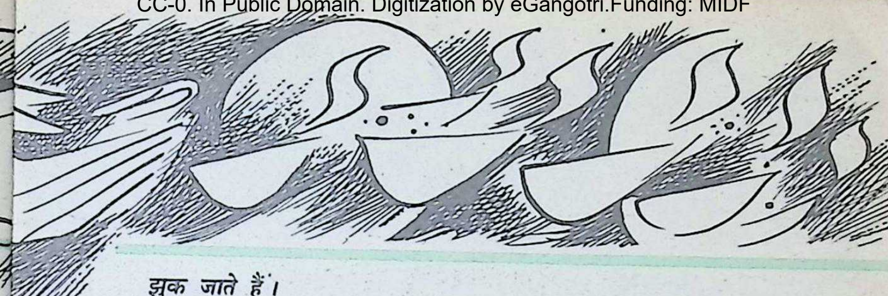

झुक जाते हैं।

—कालजयी के सामने झुकना अपनी पराजय का निष्क्रमण नहीं है, बल्कि उससे शक्ति का एक अंश पा लेना है।

☆

—प्रकाश का पर्व है यह।

—सत्य और शक्ति के प्रतीक एक महामानव की आगवानी की बेला है।

—उससे कुछ शक्ति संचयन कर लेने का अवसर है।

—दीपक जलाकर प्रकाश किसलिए करते हैं हम ? किसके लिए करते हैं हम ?

—प्रकाश आस्था का प्रतीक है।

—प्रकाश करके हम अपनी आस्थाओं को बल देते हैं। हम अपने ही अंधकार को मिटाने का संकल्प लेते हैं। अतः प्रकाश किसी की आगवानी का बहाना हो सकता है, हम दीपक जलाकर स्वयं को सार्थक बनाना चाहते हैं।

—सार्थक इसलिए कि समय की शिला और कसौटी पर हम खरे उतरें और नश्वरता के ऊपर अपने चरण चिह्न खड़े कर कालजयी बन जाएं।

—स्वागत करें अंधकारभरी रात का। एक चुनौती देने के लिए वह आती है। उस चुनौती का सामना कर लेंगे तो हर चुनौती को झेल सकने की क्षमता का हममें उदय होगा।

—जीवन आखिर में संघर्ष-सत्य है और परीक्षा के हर क्षणों से उसे उलझना होता है।

—यहीं व्यतीत को भूलकर वर्तमान के आश्रम में भविष्य की आधार-शिला रखी जाती है।

—समय का सीमेंट उसे मजबूत बनता है। हमारी दृढ़ इच्छाएं सीमेंट पर निरंतर जल बरसातीं हैं। जितना पानी मिलेगा, सीमेंट उतना ही दृढ़ होगा।

—जितनी दृढ़ आधार-शिला होगी, भवन उतना ही विशाल होगा।

☆

—अंधकार का यह पर्व सनातनता का बोध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

—हमारी महान सांस्कृतिक विरासत में यही क्रियाशीलता रही है कि उसने निरंतर हमें अवसर दिये हैं, कुछ पाने के।

—प्रत्येक पर्व पाने का अवसर है, क्योंकि उसके साथ इतिहास के शक्तिशाली पृष्ठ जुड़े हुए हैं।

—महाबलि व्यतीत ने जब कहीं किसी को कुछ दिया है तो वर्तमान ने उसकी अभ्यर्थना की है और भविष्य को चुनौती दी है कि इस वर्तमान को अस्थिर नहीं कर सकते समय के टूटे हुए पंख।

★

—आंख दौड़ाएं तो ?

—पूछा किसी ने, 'आंख दौड़ती है ?'

—उत्तर मिला, 'समझ नहीं टूटी तो सत्य बना रहेगा—आंख ही दौड़ती है। वही समूचे शरीर की पथ-प्रदर्शक है।'

—नेत्रहीन की दौड़ व्यर्थ की बाहों का सहारा लेकर खोखली चीख का उद्गार है।

—नेत्रहीन का अर्थ यहां सामान्य अर्थ-बोध से नहीं है। देखनेवाली आंखें भी नेत्रहीन हो सकती हैं।

—आंखें मात्र दरवाजा हैं। द्वार हैं वे जो भीतर की दृष्टि को सामने रखती हैं।

—इसीलिए कहा गया है : आत्म-प्रकाश के भागीदार बनो।

—प्रकाश भीतर है, जैसे बल्बों से उभरने वाली रोशनी का केंद्र बल्ब से बहुत दूर है।

—बल्ब मात्र प्रकाश-केंद्र का पथचारी है।

—हमारी आंखें इसी प्रक्रिया से गुजरती हैं। तब भी उनका महत्त्व शेष है, जैसे बल्ब का तब भी महत्त्व शेष है, क्योंकि वह फ्यूज हो जाए, तो उसे बदलना तो पड़ता ही है।

—एक अजीब बात हुई न ? एक मात्र पथचारी है, लेकिन वह भटक जाए तो उसे वापस लाना होता है।

—शक्तिशाली केंद्रीय क्षमता के बावजूद उसकी भूमिका कहीं न कहीं है।

—अंधकार में यही भूमिका एक छोटे-से दीपक की होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

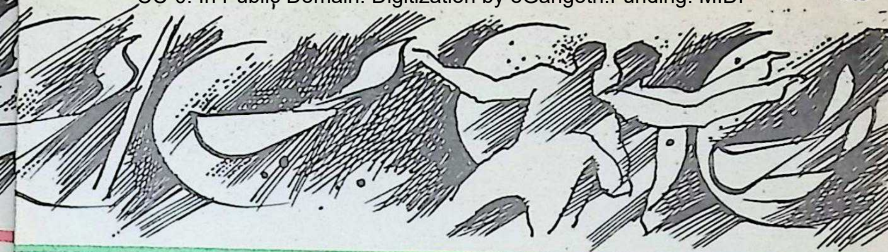

—सत्य की सार्थकता में निष्कपट होना एक अहम् तत्व है।

—आपसी रिश्तों में सौदेबाजी नहीं होती। रिश्ते स्वयं दोनों भूमिकाओं को निभाते हैं—खरीद और खरीददार की।

—अतः प्रकाश, सत्य और रिश्ते एक ही तुला में तौले जा सकते हैं। उनकी मूल-संवेदना समान है।

☆

—तो आइए, इस छोटी-सी समझ को अपनी मुट्ठियों में कैद कर लें।

—घनीभूत अंधकार में नन्हा-सा दीपक जलाकर हम आह्वान करें कि जो गलती रहीम और रामसुख ने की है, हम उसे न दोहराएं।

—छोटी-सी शक्ति महाशक्ति बनती है। परमाणु से ही अणु का निर्माण होता है, अतः अपनी महाशक्ति के सामने भी हम लघु शक्तियों को साथ लेते चलें।

—इसी भाईचारे की तलाश है हमें आज और हमेशा रहेगी युग-युगों तक।

राजेन्द्र अवस्थी

पठनीय ही नहीं संग्रहणीय

'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'

तंत्र-विशेषांक

सिद्ध साधकों और अनुभवी तांत्रिकों के अनुभवों और अनुभूत प्रयोगों के विवरण से भरपूर। प्रत्येक रचना बेहद दिलचस्प और प्रामाणिक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार से उतरते हुए गांधीजी का स्वागत करते हुए मालवीयजी

संस्मरण

आत्मा जो कहती है

● कमलापति त्रिपाठी

सन १९२० में गांधीजी काशी आये हुए थे। उस समय तक असहयोग का प्रस्ताव कांग्रेस में स्वीकार नहीं हुआ था। इसीलिए गांधीजी सारे भारत का दौरा कर रहे थे और स्कूल-कॉलेजों के बहिष्कार का आंदोलन चलाने के लिए घूम-घूमकर प्रचार कर रहे थे। इसी सिलसिले में वह काशी आये थे और सेंट्रल हिंदू कॉलेज के एक होस्टल के सामने की थोड़ी-सी खुली जमीन पर उनकी सभा हो रही थी। उस सभा में हिंदू विश्वविद्यालय तथा काशी के और विद्यालयों के छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मैं भी उस समय सेंट्रल हिंदू स्कूल का नवें दर्जे का विद्यार्थी था। गांधीजी ने अपने भाषण में कहा कि 'इस देश में जो शासन है, वह रावण राज्य है। इस शासन के हाथ से मिले हुए पैसों से जो स्कूल कॉलेज चलते हों, उनमें पढ़ना पाप है। इस शासन के अधिकारियों का हाथ हिंदुस्तानियों के खून से रंगा हुआ है। उन्हीं हाथों से जो पैसा आता है, उससे स्कूल, कॉलेज चलते हैं। इसलिए उनमें पढ़ना पाप है। मैं आप लोगों से यह कहने आया हूं कि इन स्कूल, कॉलेजों का बहिष्कार कर दो और देश की सेवा के लिए बाहर निकल आओ।'

गांधीजी के इस भाषण से मेरे जैसे बहुत-से विद्यार्थियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। दूसरे ही दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

हम कुछ विद्यार्थी गांधीजी से मिलने जा पहुंचे, जहां वह टिके हुए थे।

वह हिंदू विश्वविद्यालय के बंगले में टिके हुए थे, जिसमें मालवीयजी महाराज रहते थे। जिस कमरे में मालवीयजी रहते थे उसके ठीक बगल के कमरे में गांधीजी टिके हुए थे। दोनों नेताओं के दृष्टिकोण परस्पर भिन्न थे। तब भी दोनों करीब-करीब एक साथ ही टिके हुए थे। वह जमाना ऐसा था कि परस्पर मतभेद होते हुए भी आपस का प्रेम और सौहार्द तथा एक-दूसरे का सम्मान निकटतम स्थिति में बना रहता था। हम लोग जब गांधीजी के पास गये, तो उनसे पूछा कि 'हमलोग पढ़ना-लिखना छोड़ दें, तब क्या करें, आपकी आज्ञा मांगने हमलोग आये हैं।'

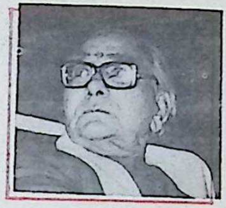
त्रिपाठीजी

असहयोग आंदोलन के प्रचार के लिए गांधीजी देशभर का दौरा कर रहे थे और छात्रों से स्कूल-कॉलेजों के बहिष्कार करने की अपील कर रहे थे। उन्होंने उस समय जो बात कही, वह आज भी उतनी ही संगत है, जितनी उस समय थी।

गांधीजी का उत्तर ऐसा था जो कि वह व्यक्ति ही दे सकता था, जिसके हृदय में मानव-मात्र के लिए आस्था निवास करती रही हो। गांधीजी ने कहा, 'यदि आज्ञा मांगनी हो तो मालवीयजी से मांगो, वे हमारे बड़े भाई हैं और मुझे भी आज्ञा मांगनी होगी, तो उन्हीं से मांगूगा। अगर तुम लोगों की आत्मा यह कहती हो कि गांधी जो कुछ कर रहा है, वह सही है तो उसका पालन करो और फिर किसी से आज्ञा मांगने की जरूरत नहीं है।' गांधीजी ने आगे कहा, प्रहलाद ने अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं किया और जो उनकी आत्मा कहती थी, वही उन्होंने किया। यदि तुम्हारी आत्मा कहती हो कि गांधी की बात ठीक है, तो उसी को मानो और उसके विरुद्ध कोई दूसरी विपरीत आज्ञा दे, तो न मानो।'

यह घटना मुझे आज भी याद है। यद्यपि इस बात को हुए ६५-६६ वर्ष हो गये। एक बड़ी भारी बात गांधीजी ने कही, जो सदा संगत है। उनके कहने का अर्थ यह था कि जो बात आपके विवेक में सही और उचित लगे, वही कीजिए। चाहे उसका कितना भी विरोध क्यों न हो और परिणामस्वरूप चाहे कितना भी कष्ट भोगना पड़े, उसे सहर्ष सहन करने की क्षमता रखनी चाहिए। —9, जनपथ, नयी दिल्ली

व्यवहार की कसौटी विचार है, सत्य की कसौटी व्यवहार नहीं।

—बर्टन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

वे छोटे से छोटे व्यक्ति का भी मन रखना जानते थे

● अमृतलाल नागर

हिंदी के एक पुराने पत्रकार थे—पंडित विश्वम्भर नाथ जिज्जा। गोरे-चिट्टे और सुंदर। उनके पान रंगे दांत किसी न किसी बात पर हमेशा खुले और खिले ही रहते थे। जिज्जाजी के चाचा सुप्रसिद्ध उपन्यासकार देवकीनन्दनजी खत्री के बड़े मित्र थे। इस मित्रता का खत्रीजी ने बड़ा ही मनोरंजक उदाहरण हमारे साहित्य में पेश किया है।

खत्रीजी के पुत्र सुप्रसिद्ध उपन्यासकार स्व. दुर्गाप्रसादजी खत्री ने एक बार मुझे प्रसंगवश बतलाया कि 'चन्द्रकांता' के ऐयार पंडित बद्रीनाथ वस्तुतः खत्रीजी के मित्र पंडित बद्रीनाथ जिज्जा थे यानी हमारे जिज्जाजी के चाचा। बालपन से ही जिज्जाजी को दो चस्के लग गये, एक लिखने का, दूसरा भांग पीने का। जिज्जाजी पहले कहानियां लिखते थे। उनकी कुछ कहानियां छपीं भी थीं, बल्कि एक कहानी 'बेला फूले आधी रात' अपने समय में बहुत प्रसिद्ध हुई थी। गुजराती भाषा में उसका अनुवाद भी हुआ था। लेकिन कोरे कहानी लेखक बनकर वे अपना गुजारा नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्हें कहीं न कहीं अखबारी नौकरी भी करनी पड़ी थी। मेरा उनका परिचय इलाहाबाद में हुआ, जब वे 'भारत' में काम करने लगे थे।

जिज्जाजी को यदि प्रशंसाओं से गुब्बारा बनाकर यह कह दिया जाता कि यह विजया बहुत ही उत्तम और पुरानी शास्त्रोक्त विधि से घोटते और छानते हैं तो फिर वे उत्साह के उमंगों की फुनगी पर चढ़कर सिल लेकर बैठ जाते। एक बार भारती-भंडार (लीडर प्रेस) के व्यवस्थापक आदरणीय भाई वाचस्पतिजी पाठक ने उन्हें इसी तरह बातों के खजूर पर चढ़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिया। जिज्जाजी बोले, 'पाठकजी, आज आफिस से छुट्टी दिलाय दीजिए। फिर देखिए, बंधुवर नागरजी को कैसी दिव्य छनाता हूं कि ये भी याद करेंगे।'

छुट्टी दिला दी गयी। जिज्जाजी स्वयं अपनी 'सत्यानासी' की तरंग में सिल-बट्टा लेकर जो बैठे, तो लगभग तीन-साढ़े तीन घंटों में भांग-बादाम आदि घोटते हुए पूरा शिवतांडव स्तोत्र और संस्कृत के अनेक शिव संबंधी श्लोक सुना डाले। बीच-बीच में जब सांस लेते तो कहते, 'बंधुवर, वैदिक ऋषियों की परंपरा निभानेवाला अब मैं ही एकमात्र ब्राह्मण बचा हूं। शिवजी के नाम से जुड़कर मेरी विजया शिवमयी हो जाती है, आप देखिएगा।'

विजया सचमुच अच्छी छनी थी। विजया के बाद उनकी शेखियां भी और तगड़ी छनी थीं। कभी-कभी उन्हें इतना तान दिया जाता कि वे नाराज भी हो जाते थे। परंतु उनकी नाराजी भी हम सबके लिए मनोरंजक ही होती थी। चाहे बड़े हों या आयु में छोटे, पर जब तप जाते तो कहनी न-कहनी सुना डालते थे।

एक बार बनारस में श्रद्धेय रायकृष्ण दास के रामघाट स्थित शाहीमहलनुमां 'शांति कुटीर' में उनके परम मित्र राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ठहरे हुए थे। उनका आगमन सुनकर कुछ और साहित्यिक भी आ गये थे। वैसे भी बड़े आदमी का घर था, इसलिए चार-पांच हाली-महाली सदा बैठे ही रहते थे। संयोग से काशी के एक अन्य रईस राय कृष्णजी श्रद्धेय रायसाहब से मिलने के लिए पधारे। एक बड़े रईस का दूसरे बड़े रईस के यहां आना-जाना ही उस जमाने में गलियों का 'वी.आई.पी. समाचार' हो जाता था, इसलिए जिज्जाजी को कहीं से खबर मिल गयी कि राय कृष्णजी, रायकृष्ण दास के यहां आये हैं। राय कृष्णजी न्यूज पेपर लिमिटेड, इलाहाबाद के अध्यक्ष भी थे। पूज्य राय साहब ही ने राय कृष्णजी से सिफारिश करके जिज्जाजी को वहां नौकरी दिलायी थी, इसलिए उनकी विजयारूपी अंतरात्मा ने जोर-जोर से धड़क-धड़ककर कहा, 'जाओ, अपने उपकारियों को प्रणाम कर आओ। गुरु और गोविंद दोनों ही साथ-साथ मिलें, यह अवसर कम ही होता है।' जिज्जाजी की कागावासी तुरंत बिजली बन गयी और झटपट कुरता कंधे पर डाल वे 'शांति कुटीर' की ओर दौड़ पड़े।

जिज्जाजी को यदि प्रशंसाओं से गुब्बारा बना दिया जाता तो वे फिर उत्साह के उमंगों की फुनगी पर ऐसे चढ़ जाते कि कुछ न पूछिए। उन्हीं जिज्जाजी के साथ मैथिलीशरण गुप्तजी एक बार उलझ गये. . .

रायजी और राय साहब चूंकि दोनों एकांत में वार्तालाप कर रहे थे, इसलिए पूज्य गुप्तजी और तमाम लोग उठकर बाहर के विशाल आंगन में गंगाजी की ओर बने हुए चबूतरे पर बैठे बातें कर रहे थे। जिज्जाजी ने घुसते ही यह साहित्यिक भीड़ देखी तो उनकी आत्मा ने आदेश दिया कि इनसे नजरें बचा जाओ। सो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चेहरा कसे हुए सीधे सामनेवाले कमरे की ओर चले। पूज्य गुप्तजी बड़े चतुर और बड़े ही दिल्लगीबाज थे। जिज्जाजी का रुख ताड़ गये और जोर-जोर से कहने लगे, 'जिज्जाजी नमस्कार, जिज्जाजी नमस्कार।' परंतु जिज्जाजी भला क्यों सुनते। मन का क्रोध दबाने के लिए उन्होंने अपना चेहरा और भी कस लिया और सीधे उसी कमरे में पहुंचे जहां रायद्वय विराजमान थे। अपनी 'कागावासी' की श्रद्धातरंग में जिज्जाजी ने दोनों को बहुत झुककर प्रणाम किया। रायसाहब ने हाथ से इशारा किया कि इस समय हम लोग बात कर रहे हैं।

'ठीक है—ठीक है, मैं समझता हूं, मैं समझता हूं, मैं केवल अपना धर्म पालन करने आया था,' कहकर वे उस साहित्यिक भीड़ की ओर लौट पड़े, जिससे वे कन्ना काटकर आये थे। गुप्तजी ने फिर ललकारा, 'जिज्जाजी नमस्कार, अरे हमारा नमस्कार तो ग्रहण करिए, महराज !'

जिज्जाजी बेरुखी से बोले, 'नमस्कार-नमस्कार' और फिर एकाएक ठिठककर त्योरियां चढ़ा लीं; और कहा, 'आपकी इसी बुद्धि पर महात्माजी ने आपको राष्ट्रकवि की उपाधि दी है ? आपको इतना भी ज्ञान नहीं कि मैं अपने अन्नदाता को नमस्कार करने जा रहा हूं और आप बीच में ही 'नमस्कार-नमस्कार', टोकते ही चले जा रहे हैं। वाह····· !'

गुप्तजी ने खड़े होकर उन्हें अपने पास बैठा लिया और कहा, 'अरे महराज क्षमा कीजिए, गलती हो गयी।' श्रद्धेय गुप्तजी जिज्जाजी को बड़ी देर तक मनुहाते रहे और 'भोलानाथ' झट ही क्रोध भूलकर हंसी-मजाक की तरंग में आ गये। श्रद्धेय गुप्तजी छोटे से छोटे व्यक्ति का मन भी रखना जानते थे। ऐसे उदार महापुरुष की पावन-स्मृति पर प्रणाम करता हूं।

— चौक, लखनऊ

एक तसवीर यह भी है अमरीका की

भौतिक समृद्धि और मुक्त-समाज की दृष्टि में अमरीका धनकुबेरों का देश कहा जाता है, जो स्वर्ग के समान सुख-सुविधाओं से संपन्न है। कृषि, विज्ञान और व्यवसाय में अमरीका का विश्व में पहला स्थान है। इसी अमरीका की एक और तसवीर है कि—

—अमरीका की बीस करोड़ की आबादी में से ७.४ करोड़ व्यक्ति या तो बिलकुल अनपढ़ हैं या बहुत ही कम पढ़े-लिखे। यह बात अमरीका के समाचार-पत्र 'क्रिश्चियन साइंस मानिटर' ने कही है।

—धनकुबेरों के देश अमरीका के २० करोड़ लोगों में से केवल ८,३२,६०२ लोग ही करोड़पति हैं। यह तथ्य जार्जिया विश्वविद्यालय द्वारा किये गये एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है।

—२३ प्रतिशत परिवार ऐसे हैं, जो या तो केवल पिता द्वारा चलाये जा रहे हैं या माता द्वारा, क्योंकि पति-पत्नी के आपसी संबंधों में गहरी दरार आ गयी है।

—विवाह नर-नारी की जैव-रासायनिक जरूरतों पर सिमिट आये हैं। ऐसे लोग बहुत ही कम हैं, जिनके सौतेले बाप न हों।

—व्यभिचार को सामाजिक मान्यता मिल चुकी है। पादरी लोग भी विवाहेतर संबंधों को स्वीकृति देने लगे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

गांधीजी की धरती पर

• कृष्णा साही

बात १९७०-७१ की है। गुजरात की पहली यात्रा थी, साथ में परिवार के लोग भी थे। हम द्वारकाधीश के दर्शनार्थ गये थे। वापसी में जब हम अहमदाबाद स्टेशन पहुंचे, तो गाड़ी छूटने में मात्र १५-२० मिनट रह गये थे। गाड़ी के टिकट मेरे एक रिश्तेदार के पास थे। जब उन्होंने जेब में टिकट टटोले, तो गायब पाये। आप हमारी परेशानी का सहज अंदाजा लगा सकते हैं, क्योंकि न तो दूसरे टिकट खरीदना संभव था और न ही इतनी जल्दी आरक्षण और प्रस्थान भी उसी दिन आवश्यक था। आपस में विचार होने लगा, कुछ का कहना था कि अब जाना नहीं हो सकेगा, कुछ का कहना था कि ट्रेन में चढ़ जाएं, बाद में टिकट बनवा लिये जाएंगे। इसी उधेड़-बुन में मैंने सामान ट्रेन में रखवा दिया, गाड़ी छूटने में अब करीब पांच मिनट ही रह गये थे! तभी अचानक एक मोटा-सा आदमी दौड़ा हुआ आया और हमसे पूछा, 'आप लोग अमुक दुकान में क्या कुछ घंटे पहले मिठाई लेने गये थे? क्या आपके ट्रेन के टिकट गुम हो गये हैं?'

हम लोगों ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, क्षणभर में ही उसने स्थिति भांप ली और हमें बतलाया कि 'आप दुकान में मिठाई लेने गये, जेब से पैसा निकालते समय टिकट वहीं गिर गये। बाद में टिकट हमें जमीन पर गिरे मिले। देखने के बाद पता चला कि आज की तारीख और इसी ट्रेन के टिकट हैं।' उसने यह भी बतलाया कि फोन कर स्टेशन-सुपरिंटेंडेंट से संपर्क किया गया तो पता चला कि यह टिकट अमुक मंत्री के मार्फत खरीदे गये हैं और आरक्षण भी उन्हीं के द्वारा हुआ है। फिर संबंधित मंत्री के निवास-स्थान पर फोन किया गया। मंत्रीजी ने उन्हें बताया कि बिहार के कुछ मेहमान आये थे, जिनके परिवार के लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था उनके यहां से की गयी थी।

दुकानदार ने तत्काल अपने इस आदमी को स्टेशन भेजा, ताकि वह हमें हमारे टिकट लौटा सके।

हम आश्चर्यचकित हो उसका मुंह देखते ही रह गये, तभी गाड़ी का सिगनल हो गया। गाड़ी में चढ़ते हुए हमने उसे ५० रुपये दिये, परंतु १० रुपये रख शेष ४० रुपये उसने यह कहकर वापस कर दिये कि 'सवारी में मेरे केवल १० रुपये ही खर्च हुए हैं।'

इसी २ अक्तूबर को गांधी जयंती के अवसर पर सहसा इस पुरानी घटना की याद आ गयी।

—शिक्षा एवं संस्कृति राज्य मंत्री,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
नयी दिल्ली—१.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रे
अपनी
संप्रति
कुछ
कुछ
भी जु
लेखन
संस्म
तत्काल
मदद
१९४०
प्रेरक प्र
मेरे व्या
के मूर्ध
नेपालीज
वामपं
सन
(ग्वालि
'सोशल
संपन्न ह
नवम्बर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आज मैं सोचता हूं कि तीन दिशाओं के तीन कवियों का मुझ पर जो प्रभाव पड़ा, क्या वह मात्र संयोग था ? क्या उनकी साहित्यिकता और संवेदनशीलता, जो किताबी नहीं थी, कहीं न कहीं समय-संदर्भ में किसी बदलाव का संकेत नहीं दे रही थी ?

संस्मरण

काव्य-प्रेरणा के मंचीय प्रसंग

● वीरेन्द्र मिश्र

मेरी काव्य-यात्रा में जनसंबद्धता, मंचीयता और साहित्य, परिस्थिति विशेष में, मेरी अपनी तरह से विकास के सोपान चढ़े हैं। संप्रति मेरे गीतधर्मा कवि के पीछे, अतीत की कुछ विशेष भूमिकाएं हैं। इन भूमिकाओं से कुछ ऐसे उल्लेखनीय और प्रेरक मंचीय प्रसंग भी जुड़े हैं, जिनके स्मृति-संकेतों द्वारा मेरे अपने लेखन के प्रारंभिक संदर्भों को ही नहीं, तत्कालीन साहित्यिक परिवेश को भी समझने में मदद मिलेगी। यहां मेरे किशोर काल (सन १९४० से सन १९४५ की अवधि) के इन प्रेरक प्रसंगों से संबद्ध तीन कवि, जिनसे बाद में मेरे व्यापक आत्मीय संबंध स्थापित हुए, हिंदी के मूर्धन्य रचनाकार हैं। दुर्भाग्य से, उनमें से नेपालीजी आज हमारे बीच नहीं हैं।

वामपंथी लेखन और गीतधर्मा चेतना

सन १९४३। उन दिनों लश्कर (ग्वालियर) के विक्टोरिया कॉलेज के वार्षिक 'सोशल गेदरिंग' के कार्यक्रम बड़े उत्साह से संपन्न होते थे। कवि-सम्मेलन भी होता था, जिसमें बाहर से कोई विशिष्ट कवि आमंत्रित होता था। एक बार ऐसे ही एक कवि-सम्मेलन में प्रख्यात कवि-गीतकार श्री हरिवंश राय 'बच्चन' को आमंत्रित किया गया। बड़ा नाम सुना था उनका। श्रोताओं में मैं भी उपस्थित था। बच्चनजी का दर्शन-लाभ तो हुआ ही, उनकी प्रसिद्ध रचना 'मधुशाला' भी सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। 'इस पार प्रिये, तुम हो, मधु है, उस पार न जाने क्या होगा' आदि अनेक गीत सुनकर एक ताजगी का अनुभव हुआ।

बच्चनजी का व्यक्तित्व देखकर मैं चकित रह गया। सोच रहा था कि ऐसे होते हैं बड़े कवि। ये हैं बच्चनजी। यह भी सोच रहा था कि व्यक्तित्व देखूं, काव्य-संगीत सुनूं या कविता में डूबूं। क्योंकि, ऐसा कवि-व्यक्तित्व पहली बार देखा था, जिसका ठाठ भी विलक्षण था, पाठ भी। एक विचित्र रसमयता से मैं प्रथम बार जुड़ा था। सोचने लगा, अपने और अपने लेखन, गायन, चिंतन आदि के बारे में। प्रेरणा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राहुलजी

भरपूर थी। फिर मेरी मनचाही संगीतात्मकता की सहजता भी तो थी वहां। इसके साथ ही मैं यह भी सोचता रहा कि तत्कालीन राष्ट्रीय और सामाजिक परतंत्रता के संदर्भ में, इन रचनाओं का क्या औचित्य है ? फिर भी मुझे लगा कि मेरे राजनीतिक परिवेश की अपेक्षा, संवेदना से संपन्न बच्चनजी के गीत मेरे अधिक निकट हैं।

एक अंतर्द्वंद्व चलता रहा। वामपंथी लेखन के साथ गीतधर्मा बच्चन की प्रेरणा का सहअस्तित्व मैं रोक नहीं सका। दो विचार कोणों के संयोग से मेरे लेखन में एक नया मोड़ आया। बाद की रचनाओं में यह चिंतन और अधिक स्पष्ट हुआ।

ऋषि राहुल : आधुनिक ऋषि

मेरे अपने काव्य लेखन के प्रारंभिक वातावरण में, मेरे गृहनगर ग्वालियर का साम्यवादी समाज महत्त्वपूर्ण था। द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। मुझे अपने कम्युनिस्ट मित्रों द्वारा राजनीतिक साहित्य पढ़ने को दिया जाता रहा। साप्ताहिक 'लोकयुद्ध' के समाचारों में कथात्मकता होती थी। मैं वह सब चाव से पढ़ता था। फिर भी कविता के मामले में अकसर ही मेरा विचार उनसे मेल नहीं खाता था। वैसे राहुल-साहित्य ने मुझे बेहद प्रभावित किया था और मैं उन्हें आधुनिक ऋषि मानता था।

पार्टी के कहने पर मैंने समकालीन घटना य
समाचार प्रसंगों पर गाने लिखने प्रारंभ किये
पर वह सब ऊपरी बातें थीं। उस समय व
अपनी आयु के अनुसार, जो भी संभव ह
सकती थीं, मैं अन्य प्रकार की कविताएं भ
लिखता था। पर हर कविता की कोई ट्यून य
धुन जरूर होती थी।

'सुमनजी' की प्रेरणा

सन १९४४। कविवर शिवमंगलसिं
'सुमन' लेक्चरर होकर विक्टोरिया कॉलेज
आये। उनकी कविताओं का स्वर साम्यवा
होते हुए भी प्रचारात्मक नहीं लगता था। उन
संपूर्ण व्यक्तित्व ने प्रभावित किया। वामपं
विचारों की समान अनुकूलता के कारण भी ऐ
हुआ। कॉलेज के एक छात्र-नेता अटलबिह
वाजपेयी भी उन दिनों कवि थे। बड़े जोर-श
से पढ़ते थे। लेकिन 'प्याले का परिचय' शीर्ष
के अंतर्गत लिखित बच्चनजी की प्रसिद्ध कवि
'मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीव
मेरा परिचय' से प्रेरित उनकी मंचीय कवि
'तन मन हिंदू, जीवन हिंदू, रग-रग हिंदू, मे
परिचय' से मेरा वैचारिक मतभेद था। तभी
अपने चिंतन के अनुसार 'मानव परिचय' रच
लिखी—'जग के कण कण में रमा-रमा, मा
जीवन, मेरा परिचय।' इस गीत में 'रमा-र
की जगह पापाजी (मेरे स्व. पिता—श्री
चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र) ने 'रम्यमान' का संशो
कर दिया था। वह स्वयं भी अपने समय
प्रसिद्ध कवि-लेखक थे।

ग्वालियर नगर में बाबा कृपानाथ की
(समाधि) पर जब मैंने उक्त गीत (जि
वर्ग-संघर्ष और सत्ता-विरोध का स्वर भी

पढ़ा
शिवमं
परिचित
मुझे 'य
की उन
भी दूर
ज्वाला'
सुम
होकर
लिखी
हाईस्कूल
में 'सुम
अकाल'
काव्य-प
सन
फिर 'सो
कवि था
बारे में उ
नाम था
महाप
सोशल
अतिथि
के प्रतिष्ठि
कवि-सम
संचालक
मैं भी था
काव्यपाठ
नेपाल
नदी का-
गर्जन-तर्ज
सादी भाष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पढ़ा तो कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन' ने (जो पापाजी से पूर्व परिचित थे, और उनका बड़ा आदर करते थे) मुझे 'योग्य पिता का योग्य पुत्र' कहा। सुमनजी की उन दिनों की प्रसिद्ध कविताओं 'मास्को अब भी दूर है', 'लालसेना', 'धधक रही मरघट की ज्वाला' आदि ने बहुत प्रभावित किया।

सुमनजी के 'बंगाल का अकाल' से प्रेरित होकर भी मैंने एक लंबी रचना उसी विषय पर लिखी थी। अपने स्कूल (जे. सी. मिल्स हाईस्कूल) के वार्षिकोत्सव पर मैं कवि-दरबार में 'सुमन' बना था और उनकी 'बंगाल का अकाल' रचना का उन्हीं की शैली में काव्य-पाठ करके पुरस्कार जीता था।

विलक्षण स्मृति

सन १९४६। वही विक्टोरिया कॉलेज था, फिर 'सोशल गेदरिंग' था, और फिर वहां एक कवि था। पर इस बार ऐसा कवि था, जिसके बारे में उस समय कोई कुछ नहीं जानता था। नाम था गोपालसिंह नेपाली।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन भी (जो सोशल गेदरिंग के मुख्य अतिथि थे) विशिष्ट अतिथि के रूप में वहां मंचासीन थे। ग्वालियर के प्रतिष्ठित कवि श्री जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द' कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष थे और सुमनजी संचालक। दो-चार स्थानीय कवियों में (जिनमें मैं भी था) कवितापाठ के पश्चात नेपालीजी का काव्यपाठ प्रारंभ हुआ।

नेपालीजी की कविता और स्वर-लहरी में नदी का-सा सहज प्रवाह था, समुद्र का गर्जन-तर्जन नहीं। उनकी कवि-कल्पना सीधी सादी भाषा में ढलकर श्रोताओं के मन तक

सुमनजी

पहुंच रही थी। 'दीपक जलता रहा रात भर' 'दो मेघ मिले, बोले डोले', 'जल रही ं जिंदगी' आदि गीत सुनकर एक अलग तरह की अनुभूति हुई। लोग झूम रहे थे और बार-बार अगली रचना के लिए अनुरोध कर रहे थे।

मुझे लगा कि नेपालीजी में विषय और छंद का वैविध्य भी है और स्वर का आनंद भी। यद्यपि बच्चनजी और सुमनजी की अपेक्षा उस समय वह एक नये हस्ताक्षर थे, लेकिन उनका अपना जो रंग था, एकदम मौलिक था।

नेपालीजी के जाने के बाद उनकी साहित्यिक कविताओं का गायन ग्वालियर में यत्र-तत्र लोकप्रिय होने लगा। जब वह प्रभाव याद आता है, एक विलक्षण स्मृति से मन झंकृत हो उठता है।

आज मैं सोचता हूं कि तीन दिशाओं के तीन कवियों का मुझ पर जो प्रभाव पड़ा, क्या वह मात्र संयोग था? क्या उनकी साहित्यिकता और संवेदनशीलता, जो किताबी नहीं थी, कहीं न कहीं समय-संदर्भ में किसी बदलाव का संकेत नहीं दे रही थी?

कम से कम मेरे लिए तो एक बदलाव की स्थिति थी ही। इन कवियों की कविताएं सुनकर मुझे इनके काव्य-संग्रह पढ़ने की प्रेरणा मिली।

—कृष्णकुंज, दादाभाई क्रास-३, बंबई-४०००५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जज ही नहीं जादूगर भी

● एम. हिदायतुल्ला

सन १९२४ । नागपुर वाई. एम. सी. ए. का टेनिस कोर्ट। हम सब नागपुर विश्वविद्यालय संघ का संविधान बनाने के लिए एकत्र हुए थे । किसी भी शोध-संस्थान ने इस विषय में अनुसंधान का कोई प्रयत्न नहीं किया है कि संविधान बनाने के स्थान के लिए टेनिस कोर्ट का ही चयन क्यों किया जाता है ! हमने एक परंपरा ही निभायी थी। आखिर फ्रेंच संविधान और बाद में नेहरू-संविधान भी तो टेनिस कोर्ट में ही तैयार किया गया था। विवियन ने इस सभा की अध्यक्षता की और बाद में वे संघ के प्रथम अध्यक्ष भी चुने गये । हममें से कुछ ने जिज्ञासा व्यक्त की कि आखिर यह नौजवान है कौन ? हमें बताया गया, 'क्या तुम मि. विवियन बोस को नहीं जानते ? वे बार-एट-लॉ हैं और सर विपिन कृष्ण बोस के पौत्र हैं ।' मैं नहीं जानता कि मैं उनकी किस बात से प्रभावित हुआ । उनकी पदवियों से या प्रख्यात विद्वान, न्यायविद्, मानवतावादी विभूति से उनके संबंध से। वे अपने आप में महान थे ।

मेरी और विवियन की अनेक रुचियां समान थीं । उनकी रेडियो में दिलचस्पी थी और मेरी भी । मैंने एक 'आदिम' सेट लिया था, पर उसे चला नहीं पाया ।...विवियन मेरी सहायता के लिए आये । एक दिन उन्होंने मुझे 'डिनर' पर बुलाया और जब डिनर के बाद श्रीमती बोस चली गयीं तो विवियन ने रेडियो सेट पर हाथ आजमाने की कोशिश की । रेडियो ने हर प्रकार की आवाजें की, सिवाय उन आवाजों के, जिन्हें सुनने के लिए हम उत्सुक थे। विवियन ने रेडियो के हर 'नॉब' को घुमाया-फिराया, कल-पुरजों की जांच की। मैं तो निराश हो गया, पर विवियन नहीं । इसके बाद डिनर के कई 'कार्यक्रम' हुए और अंततः रेडियो से काम ले ही लिया गया । ऐसे थे विवियन, जब कोई विषय हाथ में लेते तो उसे पूरा करके ही छोड़ते ।...शीघ्र ही विवियन नागपुर हाईकोर्ट के जज हो गये । हममें एक दूरी पैदा हो गयी । मैं अकसर पैरवी के लिए उनके सामने उपस्थित होता था ।

एक बार एक मामला आया । एक ठेकेदार

श्री एम. हिदायततुल्ला : सुप्रसिद्ध न्यायविद एवं भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति । १७ दिसम्बर, १९०५ को जन्मे श्री हिदायतुल्ला की शिक्षा-दीक्षा नागपुर में हुई । वे मध्यप्रांत और बरार के एडवोकेट जनरल, नागपुर हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एवं बाद में सर्वोच्च न्यायालय के भी मुख्य न्यायाधीश रहे । वे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से भी संबद्ध रहे हैं । यहां प्रस्तुत है, उनकी कृति 'ए जज्स मिसेलेनी' में प्रकाशित जस्टिस विवियन बोस संबंधी संस्मरण के कुछ अंश ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वारा एक पेड़ गिराते समय एक मकान ॰ा तिग्रस्त हो गया ।मैं ठेकेदार से काम करानेवाले व्यक्ति की ओर से उपस्थित हुआ था । हमारा तर्क था कि ठेकेदार एक 'स्वतंत्र ठेकेदार' था और वही अकेला उसके लिए जिम्मेदार भी था । मैंने कनाडा के सुप्रीम कोर्ट के कुछ मामले देखे । पर वे फ्रेंच में थे । मैं निर्भीकतापूर्वक उन्हें न्यायालय में ले गया और पढ़कर सुनाया । जब तक मैं उन्हें पढ़ता रहा, विवियन चुपचाप शांति से सुनते रहे । मैंने पढ़ना बंद किया ही था कि उन्होंने पूछा, 'अच्छा अब बताओ, वे जज क्या कह रहे हैं ?...क्या तुम्हें अंगरेजी में कोई निर्णय नहीं मिला' । 'वे सब मेरे खिलाफ हैं । मेरे मामले का समर्थन करनेवाले ये ही निर्णय मिले ।' विवियन तत्काल सतर्क हो गये । उन्होंने मुझसे उन निर्णयों के मूल के साथ उनका अनुवाद मांगा । मैंने वह केस जीत लिया । साथ ही विवियन की बधाई भी मिली ।

बाद में मैं एडवोकेट जनरल नियुक्त हुआ । इस पद पर मैंने जो पहला मामला लड़ा, उसकी याद है । यह एक हत्या का मामला था । और गवाह भी बने-बनाये थे, जिन्होंने साक्ष्य दी थी कि जब वे खेत में थे तो उन्होंने हत्यारे को भागता हुआ देखा । ऐसे गवाहों के लिए विवियन के पास अपने कुछ खास नाम थे । मैंने यही कहा कि गवाहों को सुननेवाले सत्र न्यायाधीश ने उन पर विश्वास किया था । विवियन ने छूटते ही कहा, 'अच्छा, उन गवाहों पर अविश्वास करने के लिए उन्हें देखना जरूरी नहीं है ।' इसके बाद बहस का सवाल ही नहीं था । मुझे इस बात की खुशी थी कि उन्होंने वही मत व्यक्त किया था, जो मैं भी अपने मन में

श्री हिदायतुल्ला

रखता था । उनका दृष्टिकोण विशुद्ध रूप से कानूनी नहीं था, बल्कि मानवीयता से ओतप्रोत था । न्यायालयों के लिए यह अनोखी बात ही थी ।

तत्काल निर्णय

जब मैं न्यायाधीश बना, तब अकसर उनके साथ पीठ पर बैठता था । विवियन एक बात के लिए प्रसिद्ध थे । वे पेचीदा से पेचीदा मामलों का निर्णय बहस समाप्त होने के बाद तत्काल सुना देते थे । मैं जानता था कि मुझे भी ऐसा ही करना पड़ेगा । मुझे सदा सतर्क रहना था । एक बड़े मुकदमे में उन्होंने मुझे फैसला सुनाने के लिए कहा, मुझे इसकी अपेक्षा नहीं थी । पर वे मुकदमे का निर्णय सुरक्षित रखने के पक्ष में नहीं थे । मुकदमे में कई अपराधी थे, कई गवाहियां थीं, कई दस्तावेज थे । मन ही मन मैंने उनकी तेज रफ़्तार की प्रवृत्ति को कोसा और फिर मात्र इच्छाशक्ति के बल पर निर्णय लिखाने लगा । यों विवियन अगला मुकदमा पढ़ने का अभिनय करते रहे, पर मैं जानता था कि वे मन ही मन मुसकरा रहे हैं । जब मैंने निर्णय खतम किया तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने सराहना के दो शब्द कहे। वे अपने साथियों से सदा निष्कपट रहते थे और उनकी उपलब्धियों या कार्यों के प्रति उनके मन में रंच मात्र भी ईर्ष्या नहीं होती थी।

नरभक्षी तेंदुआ और हम

एक बार हम लोग पचमढ़ी में थे। उन दिनों एक नरभक्षी तेंदुए ने पचमढ़ी के जंगलों में उत्पात मचा रखा था। विवियन केवल छड़ी लेकर जंगल में निकलते थे। मैं अपने पास एक रायफल रखता। श्रीमती बोस और मेरी पत्नी भी साथ होतीं। स्काउट का ध्येय-वाक्य है—'सदा तैयार रहो!' और मेरा खयाल है, मैं इसी ध्येय-वाक्य पर चल रहा था। विवियन मेरी रायफल का मजाक उड़ाते पर मैं नंगे हाथों या उनकी छड़ी के सहारे नरभक्षी का सामना करने की बजाय उनका मजाक सहना ज्यादा बेहतर समझता था। हर कुछ मिनटों बाद विवियन मुझसे कहते, 'उम्मीद है, तुम धोखे में कहीं मुझे ही न मार दो।' मैंने उनसे एक बात नहीं कही कि यदि गोली मारूंगा तो गलती से नहीं मारूंगा।

पानी की खोज

पचमढ़ी में जल का संकट था। विवियन ने मुझे बताया कि वे भूमि के भीतर छिपे जल का पता बता सकते हैं। मैंने अविश्वासभरी नजरों से उनकी ओर देखा तो उन्होंने अंगरेजी के 'वाय' अक्षर के आकार की एक डाल तोड़ी और उसके दोनों सिरे अपने हाथों में पकड़े और दूसरा सिरे को धरती की तरफ कर इधर-उधर घूमने लगे। मैंने उन्हें देखा। वे बोले, 'जहां पानी होगा, डाल का सिरा नीचे झुक जाएगा।' मैंने उन्हें उस खोजिए की कहानी सुनायी, जो पानी की तलाश करता एक ग्वाले के दूधभरे बरतनों से जा टकराया था और इस कारण उसकी पिटाई हुई थी। उन्होंने कहा, 'तुम देख लोगे तो विश्वास करोगे।' फिर उन्होंने ऐसे कई स्थान बताये, जहां पानी था और ट्यूबवेल लगाया जा सकता था। मैंने भी एक डाल तोड़ी और पानीवाले स्थानों का पता बताया। वे बोले, 'हर पांच व्यक्ति में से एक व्यक्ति पानी का खोजी होता है।' इस आधार पर मैं कम से कम बीस प्रतिशत तो पानी का खोजी हो ही सकता था। पर मैंने कभी अपनी इस शक्ति का परीक्षण नहीं किया। कारण एक तो न अवसर मिला, और दूसरे मुझे अपनी शक्ति पर विश्वास भी नहीं था। मेरा खयाल है कि तेल खोजने की ईश्वरीय शक्ति ज्यादा फायदेमंद होगी।

जज ही नहीं जादूगर भी

विवियन जादूगरी के खेल भी जानते थे। वे मन की बातें जान लेते थे। ऊपर उठ सकते थे। किसी महिला को आरे से 'काट' सकते थे। उन्हें हुडनी ट्रिक भी आती थी। हम दोनों बड़ी आसानी से न्यायाधीश का पद छोड़कर जादूगरी का तमाशा दिखानेवाली टीम बन सकते थे। उनका एक शानदार खेल था। वे हथकड़ी लगाकर एक बाक्स में बंद हो जाते थे। बक्से को रस्सी से बांधकर उस पर मुहर लगा दी जाती थी। इसके बाद इस बक्से को एक बड़ी-सी बोरी में बंद कर दिया जाता था। विवियन को बाहर आने में एक मिनट और फिर से भीतर जाने में एक मिनट ही लगता था। एक बार वे बाहर आने में असफल रहे और हमें उन्हें मुक्त करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने फिर कभी यह खेल नहीं दिखाया। ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीते साल...आते साल

बनना यूसुफ खान का दिलीप कुमार

○ गुलाबदास ब्रोकर

यूसुफ खान से दिलीप कुमार

अयूब भाई से मेरी मुलाकात ट्रेन में हुई थी। क्रॉफर्ड मार्केट में उनकी थोक फलों की दुकान थी जब कि मैं शेयर बाजार में दलाल था, लेकिन हम दोनों का शौक एक ही था—पढ़ना। यही शौक हमें करीब ले आया। बाद में पता चला कि वे तीन भाई-उससे बड़े गुलभाई और छोटे यूसुफ मिलकर धंधा करते थे।

परिचय दोस्ती में बदला और दोस्ती यहां तक बढ़ी कि एक दूसरे के यहां आना-जाना शुरू हो गया और हम एक दूसरे के घर के आदमी बन गये।

रविवार हमारे मिलने का दिन था। कभी वे मेरे यहां आते और दो-तीन घंटे बिताते। अगले रविवार मैं उनके घर पहुंच जाता। पठन-पाठन की बातें करने में घंटों कब गुजर जाते, पता ही न चलता।

मजा तो तब आया जब उन्होंने मेरी पत्नी को स्नेह और अदब से 'भाभीजान' कहकर पुकारा। हमने तो गाने-नाचनेवालियों के साथ यह 'जान' शब्द जुड़ा हुआ सुना था। यह शब्द सम्मानसूचक भी हो सकता है, ऐसा कभी खयाल में ही नहीं आया था। हम दोनों को बड़ा अटपटा-सा लगा और आश्चर्य भी हुआ! अयूबभाई तो संस्कार-संपन्न भले मानुस हैं। बढ़िया उर्दू और अंगरेजी साहित्य में रुचि रखते हैं। फिर 'भाभीजान', 'भाभीजान' क्या लगा रखा है! एक दिन बात चली तो उन्हीं के मुंह से खुलासा हुआ—संबोधन के साथ 'जान' लगा देना स्नेह और आदर का सूचक है—किसी अन्य भावना का नहीं। 'भाईजान', 'मामूजान' जैसे दाखले देकर उन्होंने यह भली-भांति समझा दिया। तब से 'भाभी' से 'जान' जुड़ा हुआ सुनने में और भी आनंद आने लगा।

इसी प्रकार का एक कुतूहल मुझे उनके घर पर हुआ। अयूब के पांच भाई और छह बहनें थीं। एक उनसे बड़ी, बाकी सब छोटी। इसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"इस बूढ़े ने मुझे बहुत चाहा है—अधिक से अधिक । और मैंने भी उन्हें जितना चाहा है, उतना अपनी मां को भी नहीं । और अब यह... मैं यह कैसे देख सकता हूं । घर में इसलिए कम आता हूं कि उनके सामने कम जाना पड़े ।"

तरह भाइयों में एक गुलभाई, बड़े बाकी सब छोटे थे ।

इस खानदानी, मुसलिम परिवार में शिष्टाचार बहुत था । मैं देखता कि जब तक हम दोनों, बांद्रा के समुद्र तट पर बने उनके मकान के दीवानखाने में बैठे बतिया रहे होते तो इन पांच छोटी बहनों में कोई भी जब बाहर जाती या बाहर से आती तो, कमर से नीचे झुककर, एक हाथ ऊंचा-नीचा करती हुई, अयूबभाई को (बाद में मुझे भी) 'सलाम वालेकुम' करतीं । मुझे कुतूहल यह हुआ कि ये शरीर को इतना क्यों नमाती हैं ! इस प्रकार तो मैंने गाने-नाचनेवालियों को 'मुजरा' करते हुए देखा है । मैं कुछ बोला नहीं । बड़ा खराब लगता था । एक दिन रहा नहीं गया । मैं पूछ बैठा, "यह इतना झुककर ऐसा क्यों करती हैं ?"

"ऐसा क्यों करती हैं !" वे आश्चर्य से बोले, "भई सलाम करती हैं—इसमें पूछने की क्या बात है ? क्या छोटे बड़ों को सलाम नहीं करते ?" फिर हंसकर बोले, "हां, गुलाब भाई, तुम्हारी भाषा में कहूं तो नमस्कार करती हैं । हमारी नमस्कार की यही रीति है !"

"ओह ! मुझे तो लगा... ।" और जब उनके आग्रह पर बताना पड़ा कि क्या लगा, तो हंसी के ठहाकों से दीवानखाना दनदना उठा ।

इसी प्रकार आंखें खोल देनेवाला एक अनुभव और हुआ । एक बार हम दीवानखाने में बैठे थे ! पास ही कौफिया, फरीदा, सलिदा-उनकी छोटी बहनों की अपनी महफिल जमी हुई थी । अयूब का यह घर पुराना था । वे पहले माले पर रहते थे । ऊपर आने के लिए लकड़ी का जीना था ।

हम बातें कर ही रहे थे कि अचानक जीने पर से धमाधम पैर पटकने-जैसी आवाज आने लगी । कोई जीने पर चढ़ रहा था, यह तो स्पष्ट था लेकिन इतना शोर मचाते हुए ! मैंने चिढ़कर अयूब से कहा, "कोई बेवकूफ आदमी ऊपर आता लग रहा है ।"

वे हंसे, "बेवकूफ क्यों ?"

"इतना शोर जो मचा रहा है !"

अयूब ने कहा, "गुलाबदास भाई, यह जो कर रहा है, ठीक ही कर रहा है ।"

मैं बोला, "क्या ठीक कर रहा है, कान फोड़ डाले !"

तभी मैंने देखा कि अयूब की बहनें अंदर चली गयीं । फिर हंसते हुए अयूबभाई ने बताया, "हम मुसलमान हैं । भले ही हमारी स्त्रियां परदा न करती हों, लेकिन घर में आनेवाले हर किसी को अपना मुंह नहीं दिखातीं । इसीलिए यह आदमी पैर पटकता हुआ यह जाहिर कर रहा है कि कोई अजनबी मर्द आ रहा है । महिलाएं हों तो चली जाएं !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अब समझा" मैंने कहा, "हममें भी ससुर, जेठ घर आते हैं तो जोर-जोर से खंखारते हुए-बहुओं को चेताने के लिए । फिर तो अयूब भाई, बेवकूफ मैं ही ठहरा !"

"क्यों, बेवकूफ कैसे ?" अयूब ने आश्चर्य से पूछा ।

"मैं तो बिल्ली की तरह दबे पांव, सबकी नजरें बचाता हुआ आता हूं !"

"तुम जो करते हो, वह भी ठीक करते हो !"

"वह कैसे ?"

"आप भाई हैं, अजनबी नहीं, इसलिए वे यहीं बैठी थीं । आनेवाला अजनबी है, इसलिए अंदर चली गयीं । बिना कारण गैरों को मुंह नहीं दिखातीं !"

अब तक अजनबी अंदर आ पहुंचा था । उसने पूछा, "यूसुफ साहब हैं ?"

उन्हें यूसुफ भाई के पास अंदर छोड़ आने के बाद अयूब भाई मुझसे बोले, "तुम्हें पता है, अपना यूसुफ अब फिल्म लाइन में पहुंच गया है ?"

"अच्छा !" मैंने आश्चर्य से कहा, "क्यों-किस काम से ?"

"नट बनने के लिए !"

"वाह, तब तो हम लोगों को यूसुफखान नामी नया नट मिलेगा !"

"नहीं, गुलाबदास भाई ! यूसुफखान तो अपना यूसुफ ही रहेगा । जो नट बनेगा उसका एक हिंदू नाम होगा ।"

"कौन सा नाम ?"

"दिलीप, दिलीप कुमार" वे बोले ।

यूसुफ दिलीप कुमार बना और देखते-देखते उसका सितारा बुलंद होता गया । उसका क्रॉफर्ड मार्केट जाना बंद हो गया और फिल्म स्टूडियो में आना-जाना शुरू हो गया ।

अयूब और यूसुफ की प्रेम की गांठ अद्भुत थी । मैं अयूब का मित्र था सो उसके प्रेम का हिस्सा मेरी ओर भी बढ़ा हुआ था ! लेकिन मैं केवल दोस्त नहीं, बल्कि पूरे परिवार का एक अंग बन गया था । इसकी एकबार मार्मिक प्रतीत हुई ।

भाई पीतांबर पटेल मेरे बहुत अच्छे मित्र थे । उपन्यास आदि लिखने के अलावा फिल्म पत्रकारिता भी करते थे । अब तक दिलीपकुमार का नाम बहुत विख्यात हो चुका था । अयूब भाई के पूरे परिवार से अपने संबंधों के बारे में यदा-कदा मैं पीतांबर भाई से बातें किया करता था । लेकिन उन्हें इनमें अतिशयोक्ति का आभास हुआ करता था । फिल्म पत्रकारिता के सिलसिले में उनकी एकबार यूसुफ उर्फ दिलीपकुमार से मुलाकात हुई तो बातों-बातें में पूछ बैठे, "मेरे एक मित्र हैं । हमारी भाषा के लेखक भी हैं । नाम है गुलाबदास ब्रोकर । क्या आप उन्हें पहचानते हैं ?"

दिलीपकुमार इस तरह उनकी ओर देखने लगे, जैसे उन्होंने कोई अटपटा सवाल पूछ लिया हो । फिर जरा हंसकर बोले, "मैं उन्हें पहचानता हूं ? यह पूछ रहे हो ? वे मेरे परिचित ही नहीं, मेरे परिवार के सदस्य हैं ! और तुम्हारी भाषा के ही लेखक नहीं, एक बहुत अच्छे लेखक हैं !"

पीतांबर भाई ने कुछ सकुचाते हुए ही यह बात मुझे बतायी । परिचितों के संबंधों के बारे में परिचित होने की उनकी आदत पर मैंने ऊपरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कद बढ़ाइए!

पूर्ण संतोष की गारंटी या पैसे वापिस!

न्यू हाइट: यह एक ऐसा प्रोग्राम है जिसमें शामिल हैं वैज्ञानिक वर्जिशें, दैनिक आहार संबंधी मार्गदर्शन-नया अंदाज पाने और कद बढ़ाने के लिए **न्यू हाइट:** एक ऐसा आज़माया हुआ तरीका है जो पूरे शरीर में स्फूर्ति भर देता है और पूरी तसल्ली की गारंटी देता है. रोजाना बस कुछ ही मिनिटों तक क्रमवार वर्जिशें कीजिए. आपको सीधे तन के खड़े रहने का एक नया अंदाज मिलेगा. इस आश्चर्यकारक कार्यक्रम ने हजारों पुरुषों और स्त्रियों को ढब सुधारने और उंचाई बढ़ाने में मदद की है. अज़ी आप भी ऊंचे कद के नज़र आ सकते हैं.

चौदह दिन की मुफ्त आजमाइश अवधि

हम चाहते है कि आप सिर्फ १४ दिनों तक **'न्यू हाइट'** को मुफ्त आजमायें. अगर **'न्यू हाइट'** प्रोग्राम से इस अवधि के दौरान आपको तसल्ली न हो तो आप सारी सामग्री हमें लौटा सकते हैं–आपको पूरे पैसे (डाक व प्रेषण खर्च काटकर) वापस मिल जायेंगे, कोई सवाल नहीं पूछा जायेगा. चाहे सामाजिक क्षेत्रों में कामयाबी हासिल करनी है या फिर प्यार, खेल और कामकाज की दुनिया में अपना सिक्का जमाना हो, लम्बे कद का आदमी हमेशा आगे रहता है, हां तो खुद में नयापन लाने के लिए अभी इसी वक्त कुछ कीजिए. आज ही कद बढ़ाने का फैसला कीजिए.

असफलता से सफलता की ओर सिर्फ १४ दिनों में

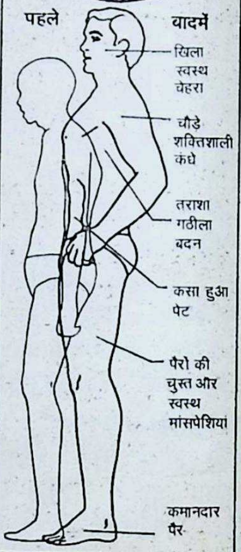

न्यू हाइट इस्तेमाल करनेवालों की ज़ुबानी उन्ही की कामयाबी की कहानी:

"मैने सोचा भी नही था कि कद बढ़ाना संभव होगा. लेकिन मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब न्यू हाइट ने मुझे अपना कद ५ सेंमी. बढ़ाने में मदद की."
– टी.वी.पी.,भुवनेश्वर.

"न्यू हाइट के क्रमवार तरीके को अपनाकर मैने अपना कद ४' ६" से ५' ४" तक बढ़ा लिया है. बहुत बहुत शुक्रिया."
– एस.बी.के., पुणे.

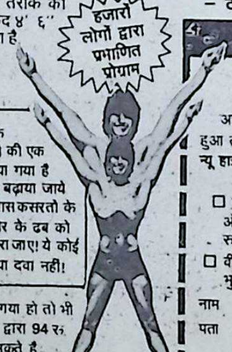

ये बात नोट कर ले कि **'न्यू हाइट'** कोर्स निर्देशो की एक पुस्तक है जिसमे बताया गया है कि कद कैसे बढ़ाया जाये और कुछ खास कसरतो के जरिये शरीर के ढब को कैसे सुधारा जाए! ये कोई औषधि या दवा नही!

यदि कूपन निकाल लिया गया हो तो भी आप **न्यू हाइट** वी.पी.पी. द्वारा 94 रु. मे इस पते पर मंगवा सकते है. न्यू हाइट, मेहता महल, 15 मैथ्यू रोड, बम्बई-400 004.

यह कूपन आज ही भेजिए

न्यू हाइट, मेहता महल, १५ मैथ्यू रोड, बम्बई-४०० ००४.

जी हां, मुझे अपना कद बढ़ाना है. **न्यू हाइट**-१४ दिनो की आजमाइश के लिए तुरंत भेज दीजिए. अगर मै पूर्णतया संतुष्ट न हुआ तो पैसा वापस पाने के लिए (डाक व प्रेषण-खर्च घटाकर) मै **न्यू हाइट** आपको लौटा दूंगा.

NH-224-H
KD-16

कृपया उपयुक्त खाने में ☑ निशान लगाइए

☐ रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल से भेजे. मै ड्राफ्ट/पोस्टल ऑर्डर/मनी ऑर्डर नं .... ता. .... द्वारा रु. 94/- भेज रहा हू. (बुलवर्कर प्रा. लि. को देय)

☐ वी पी पी से भेजें. डिलीवरी मिलने पर मै डाकिए को रु. 94/- के भुगतान का वादा करता हू.

नाम ....

पता ....

....

पिन .... हस्ताक्षर ....

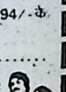

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाराजी बतलायी तो हंसते हुए बोले, "मैं जानना चाहता था कि कहीं आप फांकते तो नहीं हैं ! आदत से मजबूर हूं !"

दिलीपकुमार अपने पिता के सबसे लाड़ले थे ! वे भी पिता से बेहद प्यार करते थे—संभवतः मां से भी अधिक । पिता को 'वालिद साहब' कहकर पुकारते थे ।

वालिद साहब बीमार पड़ गये । बीमारी बढ़ती चली और उनके बचने की उम्मीद न रही । मैं उनकी खबर लेने बार-बार पहुंचने लगा । पूरे घर पर ग़मगीनी छाने लगी थी । अयूब, नासिर, गुलभाई, अस्लम सभी भाइयों के चेहरों पर मुर्दनी आ गयी थी । बहनें, समुद्र की ओर देखती, दीवानखाने में बतियाने के बजाय अंदर सेवाटहल में लगी रहतीं । लेकिन आश्चर्य था कि यूसुफ नज़र ही नहीं आता था !

एक दिन आपाजी—अयूब की बड़ी बहन-ने पहुंचते ही मुझे बुलवा भेजा और आंखों में आंसू भरकर कहा, "जरा यूसुफ को समझाइए, पता नहीं उसे क्या हो गया है ! घर में आता है, पांच मिनट बैठता है, फिर वालिद साहब के कमरे में झांककर 'मुझे काम है' कहकर बाहर चला जाता है ! हमारी कुछ सुनता ही नहीं !"

तभी यूसुफ आ पहुंचे । मैंने उसे अलग ले जाकर पूछा, "अब घर में बहुत कम आने लगे हो, यूसुफभाई !" सिर झुकाये धीमे से वे बोले, "सच है, गुलाबदासजी !!

"वालिद साब की यह हालत है, उनके पास बैठते उठते क्यों नहीं, तुम्हीं तो उनके सबसे लाड़ले हो !"

"बस, यों ही !"

"यों ही !" मैं आश्चर्य से बोला !

गुलाबदास ब्रोकर

यूसुफ मेरे और निकट आये । मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये । आवाज एकदम धीमी हो गयी ।

"इस बूढ़े ने मुझे बहुत चाहा है—अधिक से अधिक ! और मैंने भी उन्हें जितना चाहा है, उतना अपनी मां को भी नहीं ! और अब यह..." फिर जैसे खुद से ही बोल रहे हों,..."मैं यह कैसे देख सकता हूं ! घर में इसलिए कम आता हूं, कि उनके सामने कम से कम जाना पड़े !"

मेरी आंखें भर आयीं, लेकिन मन में कुछ बाकी था । कहा, "तो इसलिए फिल्म स्टूडियो में अपना समय काटते हो ?"

यूसुफ की आंखों में आंसू आ गये । मेरे गले में हाथ डालकर उन्होंने कहा, "तुम भी नहीं समझे मुझे ! उनकी ऐसी हालत में क्या मैं स्टूडियो में पैर भी रख सकता हूं !...बस भटकता रहता हूं दिनभर...अगर यह कोई समझ रहा है तो बस-वालिद साब !" और फिर उनके मुंह पर मुसकान झलक उठी ! प्यार की मुसकान ।

गुजराती से रूपांतर : प्रो. रमेश गुप्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृत्यु का स्पर्श

● विष्णु प्रभाकर

उस दिन हम दोनों मित्र (श्री यशपाल जैन और मैं) बरमा के शान राज्य की राजधानी टौंजी में थे। अगले दिन हमें रंगून में हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक समारोह में भाग लेना था, लेकिन हवाई जहाज का टिकट नहीं मिल रहा था। ट्रेन से पहुंच पाना संभव नहीं था। किसी ने सुझाया कि हम भारत के जाने-माने लेखक हैं। स्थानीय डिप्टी कमिश्नर से मिलने पर अवश्य कुछ प्रबंध हो सकेगा।

और सचमुच उन्होंने हमारी राम कहानी सुनकर तुरंत दो सीटों का प्रबंध करा दिया। हम बहुत खुश थे। सुबह सवेरे ठीक समय पर हवाई अड्डे पर पहुंच गये, लेकिन राह देखते-देखते यान के आने का समय बीत गया, पर वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। पूछताछ करने पर देरी का हर बार नया कारण बता दिया जाता था। कभी ईंधन की समस्या मालूम पड़ती, कभी यान चालक अस्वस्थ हो जाता तो कभी अधिकारी सिर हिला-हिलाकर कहते, 'पहाड़ी प्रदेश है। दुर्घटना भी हो सकती है।'

घड़ी की सुइयां निरंतर आगे बढ़ रही थीं। यान के जाने के निर्धारित समय के ऊपर दो घंटे बीत चुके थे। मुसाफिरों की परेशानी बढ़ रही थी। तभी घोषणा हुई कि रंगून जानेवाला पहला जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। कई यात्री घायल हुए हैं। दूसरा यान आनेवाला है। उसमें चार घायल यात्री भी जाएंगे इसलिए यह निश्चय किया गया है कि यहां से जानेवाले यात्री तो सभी जा सकेंगे, पर उन्हें अपना सामान यहीं छोड़ना होगा, जो संध्या के यान से पहुंच जाएगा।

यात्री खुश भी थे और परेशान भी। सामान खो भी तो सकता है। तभी फिर घोषणा हुई, 'रंगून जानेवाला यान आने ही वाला है। सभी यात्रियों से प्रार्थना है कि वे सामान सहित काउंटर पर पहुंच जाएं।'

खुशी की बात थी कि यान में चार घायल यात्रियों के अलावा केवल बारह यात्री और थे। सामान छोड़ना नहीं पड़ा। देर से ही सही, पर हमारा वह छोटा-सा 'डब' सभी बाधाएं पार करके रंगून की ओर उड़ चला।

लेकिन विधि तो अभी भी परीक्षा लेने पर तुली थी। कुछ देर बादलों पर उड़ने के बाद मैंने नीचे देखा तो पाया कि दूर-दूर तक भूधराकार पर्वतमाला फैली है और स्थान-स्थान पर उसके नुकीले शिखर हमारा स्वागत करने को आतुर हैं। उधर से दृष्टि घुमाकर मैंने पढ़ने की कोशिश की। तभी लगा जैसे यान एक झटके के साथ नीचे गिर रहा है। मैं अपने को सहेजूं कि देखा हमारा यान घने काले बादलों से घिर गया है। देखते-देखते बिजली कड़क उठी और ओले बरसने लगे। इंद्र और वृत्तासुर का युद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

तभी अघटित घट गया । जैसे मृत्यु ने हमारे कंधे थपथपाये और चली गयी । काली भयावह घटा के उस पार जीवन के स्पर्श-जैसा निरभ्र नीलाकाश चमक आया था ।

विष्णु प्रभाकर

आरंभ हो गया था ।

चालक के केबिन के द्वार पर लाल रोशनी चमक उठी, 'अपनी पेटियां बांध लो ।' उसी के साथ हमारे मस्तिष्क में भी लाल झंडी फहराने लगी । स्तब्ध मौन सभी यात्री मानो जड़ हो रहे । चेहरों पर राख पुत गयी । उस जड़ता को ओलों के गिरने का स्वर ही भंग कर पा रहा था, जो निरंतर तीव्र से तीव्रतर हो रहा था ।

कहने-लिखने में देर लगती है । दृश्य विद्युत की गति से बदल रहे थे । निश्चित था कि किसी भी क्षण हमारा यह लघु यान नीचे के दानवी शिखरों से टकराकर नष्ट हो जाएगा । कैसा भयानक पर कैसा आकर्षक था वह मंजर—निरंतर डगमगाता—हिचकोले खाता यान, डरावनी घटा को बार-बार प्रकाशित करती आड़ी तिरछी विद्युत रेखाएं और छाती में बज उठनेवाला मेघों का गर्जन... ।

यशपाल मेरे आगेवाली सीट पर बैठे थे । पीछे मुड़े, बोले, "कैसा लग रहा है ?"

मैंने धीरे से कहा, "अब कैसे बताऊं, कैसा लग रहा है ।"

तभी अघटित घट गया । जैसे मृत्यु ने हमारे कंधे थपथपाये और चली गयी । काली भयावह घटा के उस पार जीवन के स्पर्श-जैसा निरभ्र नीलाकाश चमक आया था । देखते-न-देखते हमारा यान धूप में स्नान करने लगा । न था अब ओलों का कर्णभेदी कर्कश स्वर, न चंचल चपला की भयानक आंख मिचौनी ।....

दृष्टि उठाकर देखता हूं-जैसे किसी कुशल चित्रकार ने आकाश के पटल पर तूफान का चित्र अंकित कर दिया हो । जैसे भयानक रात्रि के बाद अरुणाभा चमक उठी हो । भार मुक्ति के अनिर्वचनीय आनंद को कौन शब्द बांध पाया है ।

यान जैसे ही रंगून के हवाई अड्डे पर उतरा सुदृढ़ देहयष्टि वाले पंजाब नेशनल बैंक के जनरल मैनेजर, जो उसी यान में थे तेजी से नीचे उतरे और धरती पर लेट गये । मैंने मुसकरा कर पूछा, "यह क्या कर रहे हैं आप ?"

वे बोले, "धरती माता को प्रणाम कर रहा हूं । उन्हीं का आकर्षण तो हमारी रक्षा कर सका है, नहीं तो...।"

यह कहते-कहते वह मुझे यान के पास खींचकर ले गये, "देखो-देखो । ओलों की मार से कैसे छलनी हो रहा है यान ।"

मृत्यु को बहुत बार, बहुत पास से देखा है, पर वह इतनी सम्मोहक, इतनी भयानक और इतनी सुंदर होती है—यह उसी दिन जान सका ।

—८१८, कुंडेवालान, अजमेरी गेट,
दिल्ली-११०००६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

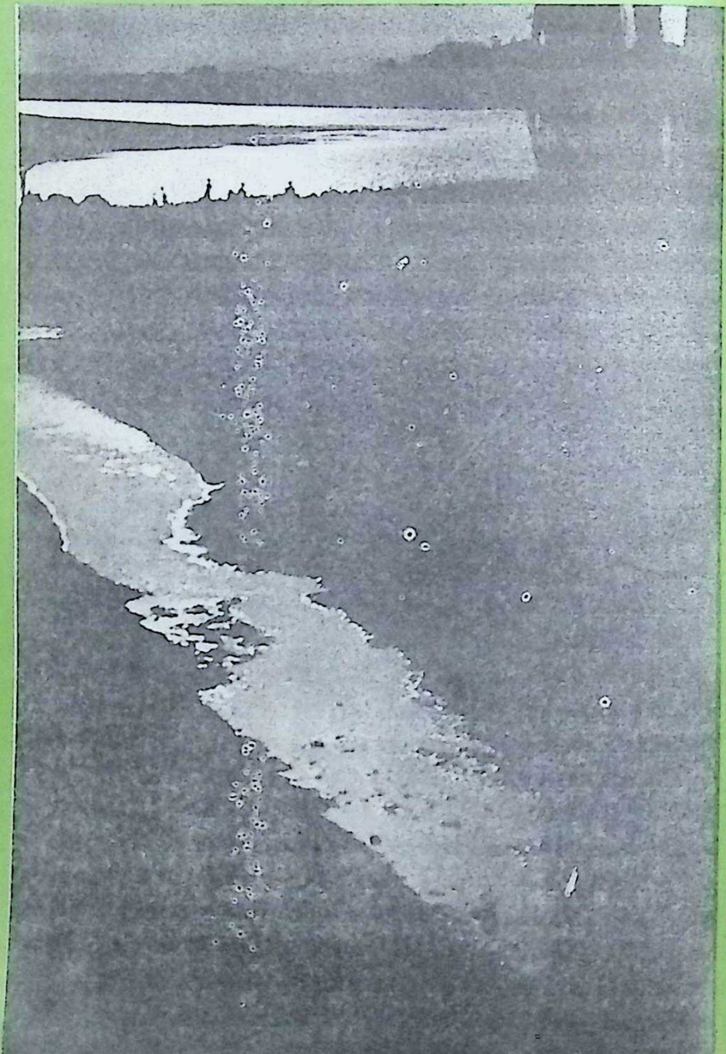

'रजतधारा',

स

दिनों
फोटो
यदा-
शर्त

नवम्ब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगभग अंधकार में से एक रजत-रेखा-सी उभरी और सामने की दीवार पर वह चित्र छा गया। फिर एक आवाज-सी सुनायी दी—'क्यों वह निगेटिव फेंक दिया ? मैं तुमसे इस चित्र को इसी प्रकार लिवाना चाहता था—उठो और वह निगेटिव कूड़ेदान से निकालो और देखो, वह एक सुंदर छायाचित्र बनता है।'

दास्तान एक रहस्यमय छायाचित्र की

विद्याव्रत

सन १९४८ में, तब मैं फोटोग्राफी की ओर झुका ही था, शुरुआत ही की थी। उन दिनों कोई भी कैमरा मेरा अपना नहीं था। एक फोटो स्टूडियोवाला मित्र बन गया था, उसी से यदा-कदा कैमरा ले लेता था। लेकिन, वह इस शर्त पर कैमरा तथा उसमें १२० की फिल्म डालकर देता कि पूरी रील ठीक आएगी तो वह फिल्म एवं प्रिंट के पैसे नहीं लेगा—एक भी चित्र गलत होने से पूरी रील और प्रिंट के दाम ले लेगा। उन दिनों अधिकतर फिल्में ओर्थोक्रोम मसाले की होती थीं और दाम होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

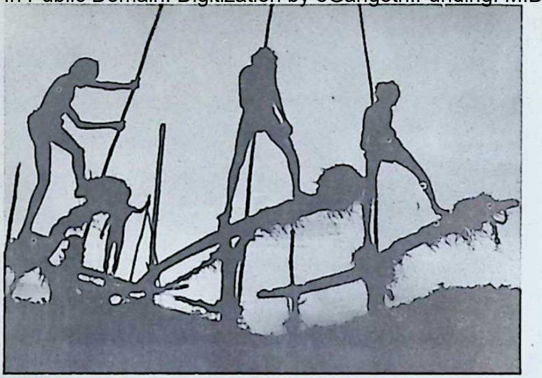

धान के खेतों को पानी

था शायद १०-१२ आने, एवं प्रिंट का १ आना प्रति प्रिंट। सौभाग्यवश कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसे कुछ भी पैसा देना पड़े। वह बड़ा खुश था कि उसका कोई तो ग्राहक ऐसा है, जो पूरी रील ठीक-ठीक उतार सकता है। कभी उसे अपने लिए भी कैमरा चाहिए होता तो उसमें मेरी रील होती, मेरे पास से वह वापस नहीं लेता था।

एक रविवार को साइकिल और कैमरा लेकर दूर, बहुत दूर निकल जाने की ठानी। पैसा न होने से बाहर कुछ भी खा सकने का प्रश्न ही नहीं उठता था। कहीं भी जाएं तो साढ़े बारह बजे दोपहर तक जरूर वापस आ जाना होगा, क्योंकि आश्रम भोजनालय साढ़े बारह तक ही खुला रहता है। यदि समय पर नहीं आ सका तो मध्याह्न का उपवास।

हां, तो साइकिल करते-करते कई छाया चित्र लेते हुए, मैं पंद्रह मील दूरी पर एक मनोरम स्थान पर जा निकला। वहां से एक बड़ी नदी से एक नाला निकलता था, जो पांडिचेरी की बड़ी झील 'अस्ट्रीका' पोषक नाला है। वहां जाकर पाया कि यहां का लैंडस्केप शाम के समय ही अच्छा बन पाएगा। सो भोजनालय के समय से केवल दो मिनट पूर्व लौट आया तथा एक घंटा विश्राम करके फिर से वहां के लिए चल दिया—पैंतालीस मील की साइकिल चलाने से काफी थकान प्रतीत होने लगी थी। चार बजे के लगभग वहां फिर से पहुंच गया। और जैसे एक अदृश्य शक्ति की प्रेरणावश परिचालित-सा एक बरगद के पेड़ पर चढ़ गया, कैमरे पर लाल फिल्टर लगाकर वहां से फोटो लिया। धत्तेरे की! चित्र लेने के बाद, यह बात ध्यान में आयी कि यह तो बड़ी गलती हो गयी कि ओर्थोक्रोम फिल्म पर लाल फिल्टर लगाकर चित्र ले लिया—'चलो! फिर से पीला फिल्टर लगाकर एक और चित्र ले लेता हूं', यह सोचा, पर यह क्या—वहां तो फिल्म समाप्त हो चुकी थी। उन दिनों फोटोग्राफी का बिलकुल भी ज्ञान नहीं था, वह तो प्रेरणावश ही वैसी गलती कर बैठा था। सो हताश होकर पेड़ से उतरा और

घर की
थक चु
एक ही
हताश
घर पहुं
साइकि
सिहर
कम
कंबल
प्रकाश
झुके-झ
मेरे पास
कि उस
निगेटिव
बारहवां
लाइनें-
की क्य
आया।
नासमझ
उस बा
कूड़ेदान
उसके
रात्रि
जैसे एक
अंधका
सामने
एक आ
फेंक दि
लिवाना
कूड़ेदान
छायाचि
एवं जी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर की ओर वापस चल पड़ा। एक तो शरीर थक चुका था, जांघें दुःख रही थीं, फिर केवल एक ही फोटो वह भी गलत लेने से मन भी हताश हो चुका था—सो किस प्रकार वहां से घर पहुंचा, साठ मील की (९० कि. मी.) साइकिल की यात्रा की, अब यह सोच-सोचकर सिहर उठता हूं।

कमरे पर वापस आते ही तख्त के चारों ओर कंबल एवं चादर लपेटी, जिससे इधर-उधर का प्रकाश अंदर न घुसने पाये और तख्त के नीचे झुके-झुके बैठ वह फिल्म धोयी। उस समय मेरे पास डार्क रूम तो था नहीं। धुलने पर देखा कि उसमें, अपनी तब की समझ से, ग्यारह निगेटिव तो बिलकुल ठीक हैं, केवल वही बारहवां बेकार-सा लगा। उसमें एक-दो काली लाइनें-सी हैं, शेष सफेद-सा है। उस निगेटिव की क्या विशेषता है, यह कुछ समझ में नहीं आया। फोटोग्राफी में नौसिखिया होने से, नासमझ होने से मैं इतना निरुत्साहित हुआ कि उस बारहवें निगेटिव को फिल्म में से काटकर कूड़ेदान में फेंक दिया। गनीमत यह हुई कि उसके टुकड़े-टुकड़े नहीं किये।

रात्रि में सोते-सोते हठात् आंखों के सामने जैसे एक चित्र उभरा-देखता क्या हूं कि लगभग अंधकार में से एक रजत-रेखा-सी उभरी और सामने की दीवार पर वह चित्र छा गया। फिर एक आवाज-सी सुनायी दी। 'क्यों यह निगेटिव फेंक दिया ? मैं तुमसे इस चित्र को इसी प्रकार लिवाना चाहता था—उठो और वह निगेटिव कूड़ेदान से निकालो और देखो, वह एक सुंदर छायाचित्र बनता है।' वह स्वप्न एकदम स्पष्ट एवं जीवंत आदेश-सा था। बिस्तर से उठा,

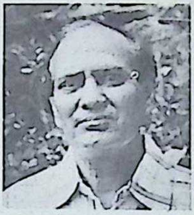
लेखक

नींद से थकित बोझिल आंखों को किसी प्रकार जागृत कर, निगेटिव को कूड़ेदान से ढूंढ़कर धोया, क्योंकि कूड़े से उसमें कुछ खरोंच आ गयी थी, फिर तार पर सुखाकर सो गया।

अगली सुबह जब उस निगेटिव को तार पर लटका देखा तो आश्चर्य हुआ कि यह यहां कैसे ! इसे तो रात में फेंक दिया था। और फिर. . . धीरे-धीरे रात का स्वप्न ध्यान में आया—उसे बड़ा किया, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उसे रात में देखा था। मैं स्वयं भी उस चित्र के प्रभाव को देखकर अवाक् रह गया था। आश्रम की अध्यक्षा श्री मां ने उसके लिए कहा—'बहुत सुंदर रहस्यात्मक चित्र है, तुम्हें इसी प्रकार के छायाचित्र लेने चाहिए।'

मैंने उन्हें चित्र के विषय में पूरा विवरण

प्रकाश और छाया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बताया तो उन्होंने कहा, 'देखा, जब सब कुछ अंतरात्मा की आवाज पर छोड़ दिया जाए तो कितना आश्चर्यमय सृजन किया जा सकता है ।' फिर उन्होंने स्वयं ही इसका नाम दिया—'रजतधारा' ।

यह वही चित्र है, जो भारत के प्रायः सभी प्रकाशनों में प्रकाशित तो हुआ ही है, विदेशों में भी इसे बहुत प्रसिद्धि मिली । विदेशी पर्यटक इसे देखते ही खरीदकर ले जाते हैं । नेपाल नरेश श्री वीरविक्रम महेंद्रजी ने सन १९६४ में मेरे चित्रों में इसे देखकर मुझे अपने महल में आदर से निमंत्रित किया था एवं कहा था—'विद्याव्रत ! मैं बहुत समय से, विदेशों की यात्रा में भी, ऐसे एक चित्र की तलाश में रहा हूं, जिसे मैं अपने अध्ययन कक्ष में सामने लगा लूं; आज यह चित्र मुझे मिल गया है । बोलो क्या मूल्य दूं ?' मैंने कहा कि 'मेरे लिए तो यह प्रशंसा ही सबसे अधिक मूल्य है, मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।'

'नहीं, यह कैसे हो सकता है, एक राजा होकर ऐसे नहीं ले सकता ।'

'अच्छा ठीक है, जो भी आप उचित समझें दीजिए मैं सहर्ष स्वीकार कर लूंगा ।'

फिर उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बाहर से बुलाया और नेपाली भाषा में कुछ कहा । उनको नमस्कार करके ज्योंही मैं बाहर आया तो सेक्रेटरी ने एक लिफाफा दिया कि 'किंग' ने यह उपहार आपको दिया है । उसमें एक हजार रु. था । यह 'रजतधारा' छायाचित्र आज भी उनके कमरे में सुशोभित है ।

अरविंद आश्रम, पांडिचेरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

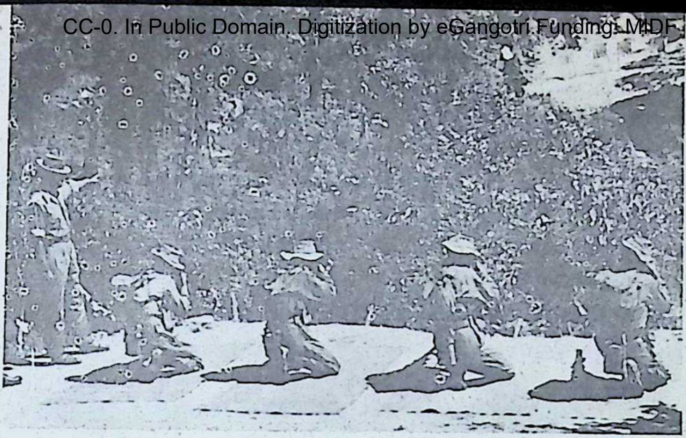

आत्मरक्षा के लिए आक्रमण की तैयारी

फिर पंगा नहीं लेंगे

● मेजर जनरल राजसिंह अत्रे (से. नि.)

सन् १९७२ :

उन दिनों मैं उस 'पहाड़ी डिवीजन' का 'कर्नल ऐडमिनिस्ट्रेशन' था । बारह हजार फुट की ऊंचाई पर हमारा डिवीजनल हैडक्वार्टर था । चारों ओर पहाड़ों का जमघट, जंगलों का सिलसिला, डरावना एकांत । इस घने बीहड़ में हमारे जासूसों का जाल बिछा था—पचास मील पर भी कोई छींके तो हमें पता लग जाता था । ठीक समय पर ठीक खबर पाने से ही युद्ध-नीति की परवरिश होती है । हम लोगों को भी खबर लगी कि सेला दर्रे से आगे तवांग नदी के पार जो लामाओं का मठ था, उसके आसपास सेना की कुछ गाड़ियां नजर आयी हैं । मैं चौंका । कौन हो सकते हैं ये लोग । और तभी हमारे जासूस ने आकर एक चीनी इश्तहार भी दिया, जिन्हें तवांग नगर में गिराया गया था और वहां के नागरिकों को संदेश भेजा था ''सितम्बर के पुण्य पर्व के बाद हम आपको आजाद कराने शीघ्र ही आ रहे हैं ।'' मुझे 'लालबत्ती' नजर आयी और उसी दिन डिवीजनल कमांडर (मेजर जनरल) को मैंने सूचना दे दी । तभी मेरे पास बाकी की खबर आ गयी कि हमारा ही एक और डिवीजन तवांग नदी से सोलह किलोमीटर आगे १४,००० फुट की ऊंचाई पर स्थित बुमला के आसपास पसरने की योजना बना रहा है । यह सुनते ही मेरी नजर के सामने सन १९६२ का युद्ध चल-चित्र की भांति घूमने लगा ।

. . .सन् १९६२ में भी हमने 'पंगा' लिया था । अब तक हम सेला दर्रे और तवांग नगर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के आसपास थोड़ी संख्या में रहे, तब तक स्थिति सामान्य रही थी। पर जैसे ही हम जोश में आकर बुमला दर्रे के समीप अपना ठीया बनाने लगे, तभी चीनी भड़भड़ा उठे। वहां पर हमारा जाना उनके दरवाजे के सामने ताल ठोकने के बराबर ही तो था। और फिर चीनियों ने अपनी चाल चल दी। बुमला के बगल से उनके झुंड भूटान की सरहद की ओर बढ़े। हम समझे कि वे भूटान पर हमला करने जा रहे हैं, पर तभी उन्होंने अपने मोहरों की चाल बदल

क्षेत्र है।' वे मेकमहोन लाइन को मानते ही नहीं . . .

. . . मेरी तंद्रा टूटी। हरेक युद्ध-शास्त्री को पिछले युद्ध से सीखे सबक को नहीं भूलना चाहिए। मैंने सन १९६२ के सबक दोहराये तो यही तय पाया कि तवांग नगर से आगे बर्फ से ढके पहाड़ों पर अड्डा जमाने की बात सोचना जानबूझकर कुएं में छलांग लगाने के बराबर है। अगर हम सन १९६२ में सेला दर्रे पर ही जमे रहते तो चीनी घुसपैठ होने ही नहीं देते।

क्या सन १९७५ में एक बार फिर भारत-चीन युद्ध होने जा रहा था? तवांग में चीनी इश्तहार गिराये गये थे कि '. . . हम आपको आजाद करने शीघ्र ही आ रहे हैं।' 'आश्वासन' के बावजूद चीनी सैनिक क्यों तवांग नहीं पहुंचे! एक रहस्योद्घाटन

दी। वे सेला दर्रे से दाहिनी ओर मुड़ लिये और फिर निकमीडोंग होते हुए बोमडीला पर पहुंच गये, तो सब आश्चर्य और घबराहट से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। और फिर भगदड़ मची थी। टिड्डी दल की भांति चीनी सिपाही घंसते हुए रूपा पहुंच गये, जहां पर पहाड़ों का सिलसिला खतम होता है और सपाट मैदान शुरू होने लगता है। चीनी बेवकूफ नहीं थे। वे जानते थे कि मैदान में उतरते ही उन्हें हमारी टैंक रेजीमेंट रौंद डालेगी। कुछ समय बाद वे फिर रूपा से वापस लौट गये—बुमला से भी दूर। बुमला का क्षेत्र तो आज भी 'झगड़े की जड़' है। वे कहते हैं, बुमला ही क्या उससे बहुत आगे तक हमारा क्षेत्र है, हम कहते हैं 'नहीं, मेकमहोन लाइन के अनुसार यह हमारा

पर हम अपनी सेना को बहुत दूर भेजकर चूक गये। आखिर सेना सिर्फ ताजा हवा पर ही तो नहीं जी सकती—उसे राशन पानी चाहिए, असला चाहिए। विकट ठंड को देखते हुए विशेष कपड़े चाहिए। सहसा मुझे लगा कि हम दोबारा सन १९६२ की गलती दोहराने जा रहे हैं।

दूसरे ही दिन बुमला के करीब ठीया बनाने का स्वप्न देखनेवाले जनरल साहब मय अपने वजीरों के हमारे 'मैस' में आ गये। वीयर के

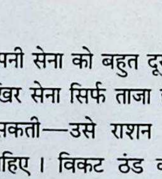

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कई गिलास झुकाकर उन्होंने बड़े उत्साह से अपने होनेवाले करिश्मे का राग छेड़ा। कुछ देर में उनकी लंतरानी सुनता रहा और जब मुझको मुंह खोलने को कहा गया तो मैंने बगैर लबा-लेसी के कहा, "आप वहां अपने ब्रिगेड जमाने नहीं जा रहे हैं बल्कि उनका कब्रिस्तान बनाने जा रहे हैं और उसके सिर्फ आप, मैं दोबारा कहता हूं—आप जिम्मेदार होंगे।" मेरी बात सुनते उनके ऊपर छाया बीयर का हलका-सा नशा काफूर हो गया। फिर मैंने उन्हें आड़े हाथों लिया, "क्या आप जानते हैं कि बारह महीने बर्फ से ढकी इन पहाड़ियों पर सिपाहियों पर सरदियों में क्या बीतेगी। खासकर जबकि न तो आप सप्लाई लाइन द्वारा उन्हें राशन पानी तेल दे पाएंगे और न ही उनको 'विशेष कपड़े' दे पाएंगे। हां, अलबत्ता आप चीनी बर्रों के छत्ते को फिर से कोंच देंगे, जिससे चीनी सन १९६२ का ड्रामा फिर से दुहराने को मजबूर हो जाएंगे।" फिर मैंने उन्हें चीनियों द्वारा फेंके गये इश्तहार दिखलाये और कहा, "आपकी उस इलाके में सरगर्मी को वह जान गये हैं। विश्वास रखिए, आपके वहां जमते ही वे भी हरकत शुरू कर देंगे।"

मेरी बात सुनकर उन्हें सांप सूंघ गया। जनरल साहब तो मन-ही-मन इतने भन्नाये कि लौटकर उन्होंने बड़े जनरल साहब से शिकायत की। तब बड़े जनरल साहब हंसे और कहा, "राज, ठीक कहता है। हम फिर पंगा नहीं लेंगे—बेकार का पंगा लेने से फायदा ही क्या ?"

और तभी हमारे जासूस कुछ दिन बाद खबर लाये कि भारी संख्या में चीनी (जो बुमला क्षेत्र में देखे गये थे) वे अपने डेरे तंबू उखाड़कर वापस चले गये हैं। **प्रस्तुति : बा. दु.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री देव सुमन

हमारे तरुण मस्तिष्क पर उनके करतब की ऐसी छाप पड़ी कि कुछ दिनों तक स्कूल जाने के बजाय उनका सामान उठाकर उनके पीछे-पीछे जाने लगे और उनके प्रदर्शनों में मदद करने लगे।

अब इस नये अजीब व्यक्ति से भी हमें ऐसी ही अपेक्षा थी कि वे भी कुछ नया करतब दिखाएंगे। हमारे विश्वास को इससे भी बल मिला कि जैसे धनुर्विद्या विशेषज्ञ के पास लंबा बक्सा था, इनके पास भी एक बहुत छोटी पेटी

"क्या तुम अपने को चांदी के

यह सवाल है, जो मुझे छियालीस वर्ष पहले, जब मैं केवल तेरह वर्ष का तरुण था, छरहरे शरीर, गौर वर्ण और खादी का कुरता, धोती, जाकेट व गांधी टोपी पहने हुए एक युवक ने पूछा था, यह हमारी ही टिहरी रियासत के जौल गांव के रहनेवाले श्री देव 'सुमन' थे। उस जमाने में टिहरी-रियासत में दो ही प्रकार के लोग रहते थे—पगड़ी, शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने हुए दरबारी या लंगोटी पहने हुए ग्रामीण। यह युवक इनसे भिन्न था, इसलिए जिस दिन वह टिहरी नगर की सड़कों में हम नौनिहालों को दिखायी दिया तो हम उसके पीछे यह जानने के लिए कि वह कौन है, दौड़ पड़े। कुछ दिन पहले इस नगर में धनुर्विद्या के एक विशेषज्ञ आये थे, जो घोड़ों के बालों पर तीर मारकर सबको आश्चर्यचकित कर देते थे।

थी। हमने युवक को चारों ओर से घेर लिया और पूछा "तुम्हारी पेटी में क्या है ?" उसने उत्तर दिया "बरगद के पेड़ के नीचे चबूतरे पर चलो, वहीं खोलकर दिखा दूंगा।"

उसने अपने कंधे का झोला नीचे रखा और उलटे घुटने कर जमीन पर बैठ गया। पेटी खोली और उसके चक्र को घुमाने लगा, उसके साथ ही छोटा चक्र और तेजी से घूमने लगा। उससे लगी हुई माल से तकुवा घूमने लगा और उसने पूनी निकालकर सूत कातना प्रारंभ किया। हमारे लिए यह घोड़े के बाल पर तीर का निशाना मारने-जैसे कुतूहल से कम नहीं था, लेकिन इस कमाल को करनेवाले के चेहरे पर धनुर्धारी के-जैसा गर्व नहीं था। वह तो शांत और निश्चल था। हमने पूछा, "यह क्या है ?"

उत्तर मिला, "यह गांधी का चरखा है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चंद टुकड़ों के बदले बेच दोगे ?

●सुंदरलाल बहुगुणा

"गांधी इस चरखे को चलाने के अलावा क्या-क्या करता है ?" हमने दोबारा पूछा।

उन्होंने कहा, "वह सारे देश को आजादी के लिए जगा रहा है। बच्चे-बूढ़े, जवान-प्रौढ़, स्त्री-पुरुष सबसे कहता है कि अंगरेजों की गुलामी का जुआ उतार फेंको, स्वराज्य हासिल करो। गांव-गांव को स्वावलंबी और खुशहाल बनाओ।" उसने अपने झोले में से छोटी-छोटी किताबें निकालकर हमें दिखायीं। इनमें से हमने 'राष्ट्रीय गीत' और प्रिंस क्रोपाटकिन की 'नवयुवकों से दो बातें' पसंद कीं। गीत की इसलिए कि उसमें 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' और 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'-जैसे गीत थे, जिन्हें हम गा सकते थे और 'नवयुवकों से दो बातें' इसलिए कि हम तरुणाई में ही अपने को नवयुवक समझकर गौरवान्वित होना चाहते थे। लेकिन इन किताबों के लिए हमें तीन दिन की दूध-जलेबी के लिए मिले हुए पैसे—तीन आने—कुरबान करने पड़े। हर इतवार को जब हफ्तेभर का राशन लेकर मैं टिहरी पढ़ने आता था, तो मेरी मां छह दिनों के लिए दो पैसे का दूध और दो पैसे रोज की जलेबी खाने के लिए मुझे छह आने देती थी।

'सुमन' उठकर तेजी से आगे बढ़ने लगे, पर हमने उनका पीछा नहीं छोड़ा। दरबारी लोग उनसे बातें नहीं करते थे, बल्कि वे लोगों से क्या क्या कहते हैं और कहां-कहां जाते हैं, यह देखने के लिए उनके पीछे-पीछे पुलिस रहती थी। सायंकाल को वे टिहरी से दो मील दूर अपनी ससुराल पडियार गांव जाते थे। वहां जाने के लिए टिहरी में भागीरथी का झूला पुल पार कर सड़क की चढ़ाई प्रारंभ होती थी, इसके नीचे भागीरथी के तट तक ही 'गंगा बाग' के नाम से आम का बगीचा था। सूर्यास्त हो रहा था। 'सुमन' तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे। हम विदा लेना चाहते थे, तो वे पूछ बैठे,

"तुम पढ़-लिखकर क्या करना चाहते हो ?" उस जमाने में टिहरी रियासत में बहुत कम लोगों को पढ़ने-लिखने का अवसर मिल पाता था। साढ़े चार हजार वर्ग मील क्षेत्रफल में फैली हुई रियासत में एक ही हाईस्कूल था। उसमें हाईस्कूल कक्षा में पढ़नेवाले मुश्किल से बीस लड़के होते थे, पढ़नेवाले सभी लड़कों के सामने एक ही उद्देश्य होता था, 'प्रभु सेवा' यानी दरबार की सेवा। यद्यपि तनख्वाह बहुत कम मिलती थी, लेकिन उसे 'बद्री प्रसाद' मानकर ग्रहण किया जाता था। टिहरी के महाराजा 'बोलांदा बदरीनाथ' माने जाते थे। हमने उत्तर दिया, "दरबार की सेवा।"

हम समझते थे इसके बाद कोई प्रश्न हो ही नहीं सकता है। सुमन ने कहा, "तुम्हें खाते-पीते घर में जन्म लेने और पढ़ने का सौभाग्य मिला है। दरबार की सेवा ही करोगे, तो इन सड़क पर लंगोटी पहनकर चलनेवालों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक नया उत्पादन

टुल्लू घराने से

बूटी मिक्सी

आपकी रसोई के लिए

तकनीकी विवरण
बिजली - 220-240 वोल्ट ए. सी.
बिजली खर्च - 400 वाट
रेटिंग - 45 मिनट

बूटी मिक्सी
उत्तमता चाहने वालों के लिये

निर्माता :
टुल्लू डोमेस्टिक अपलायन्सेज़
वाराणसी

'आइग्रूप'

Sterling-4541 A·*HIN.*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की सेवा कौन करेगा ?"

"इनकी सेवा भी हम ही करेंगे," अपनी हाजिर जवाबी का कमाल दिखाते हुए हमने कहा।

"लेकिन," सुमन ने कहा, "एक आदमी के दो भगवान कैसे हो सकते हैं ? क्या तुम अपने को चांदी के चंद टुकड़ों के लिए बेच दोगे ?"

इस प्रश्न ने हमें सोच-विचार में डाल दिया, फिर भी निकम्मे न माने जाएं, उत्तर दिया, "नहीं, हम अपने को हरगिज नहीं बेचेंगे। हम भी तुम्हारी ही तरह गांधी के सिपाही बनेंगे।"

हमने गांधी का सिपाही बनने के लिए अपनी तैयारियां प्रारंभ कर दीं। किसी प्रकार से एक चरखा मंगा लिया। गांधीजी की आत्मकथा और दूसरी पुस्तकें, जो वहां पर प्रतिबंधित थी, इकट्ठी कर लीं। मोटी खादी का एक थान भी मिल गया जिससे कुरता-पाजामा और टोपी बनवा ली। चरखा कातने और किताबें पढ़ने के लिए सबसे सुरक्षित स्थान कब्रिस्तान था। सायंकाल को हम वहां जमा होते। कब्रिस्तान में और कौन आता ? दूर से देखनेवाले कहते, 'ये बड़े पढ़ाकू लड़के हैं। जिस समय दूसरे लड़के खेलते हैं, उस समय ये पढ़ते रहते हैं।' बीच-बीच में सुमनजी आकर हमारे विचारों को पक्का कर जाते। हमारी गतिविधियों की खबर राज दरबार तक पहुंच गयी। रियासती असेंबली के सदस्य हमारे गांव के रहनेवाले थे। एक दिन वे दरबार की कोप दृष्टि की खबर लेकर मेरी मां के पास आये। उन्होंने कहा, "भाभी, आपका बेटा 'सुमन' का साथी हो गया है।" मेरी मां, घर में सबसे छोटा होने और बचपन में ही पिताजी की मृत्यु होने के कारण, मुझसे बेहद प्यार करती थी, बोलने लगी, "मैं तो नहीं समझती थी कि तू टिहरी में राजद्रोही बनने की पढ़ाई कर रहा है। तेरे पिताजी ने दरबार का नमक खाया है। बोलांदा बदरी के खिलाफ कुछ करेगा तो दरबार का नमक तुझे गला देगा।"

हमारे छोटे से गांव के लिए, जहां मेरे पांचों मामा रहते थे और अपने को बावन पीढ़ी का दीवान कहकर गौरवान्वित महसूस करते थे, यह एक बहुत बड़ी घटना थी। हमारे आंगन में सारा गांव जमा हो गया। सब मुझसे जवाब मांग रहे थे, लेकिन मैं गुम-सुम रहा। अंत में बड़े मामाजी ने कहा, "यह कंस का भाणजा पैदा हो गया है।"

वे कहना तो शायद कुछ दूसरी तरह से चाहते थे, पर मुंह से ये ही शब्द निकल गये। मैंने इसे अपने लिए आशीर्वाद माना।

हाईस्कूल की परीक्षा देने के बाद स्कूल की लंबी छुट्टियां पड़ गयी थीं। मैंने पहले से सुरकंडा देवी के मंदिर में गंगा दशहरे के मेले के मौके पर सुमनजी के साथ मिलने की सलाह की हुई थी। मां ने रास्ते के खर्चे के लिए साढ़े तीन आने और कुछ रोटियां रख लीं, सुरकंडा जाने के रास्ते में ही सुमनजी मिल गये, रातभर मेले में हमने शराबबंदी और पशुबलि निषेध का प्रचार किया और अगले दिन मैं घर लौटने के बजाय उनके साथ मसूरी चला गया। झाड़ू देते हुए और बरतन मांजते हुए बातचीत के दौरान सुमनजी मेरा शिक्षण करते। सन १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के सिलसिले में गिरफ्तारी के बाद जब वे सन १९४३ के अंत में छूटे, तो टिहरी में पुनः गिरफ्तार किये गये, जेल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

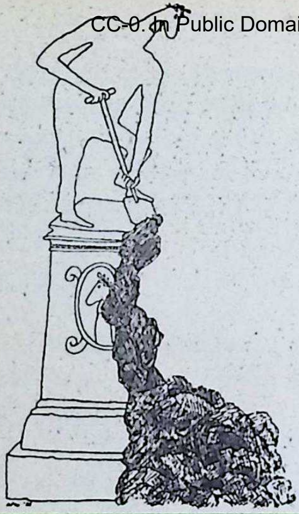

स्वेच्छारिता पर अवलंबित हो, उसके विरुद्ध विद्रोह करना प्रत्येक का मूल कर्त्तव्य है व यही मैंने भी किया है और शरीर में दम रहते हुए मैं बराबर यही करता रहूंगा ।...मां, बहिन, भाई व पत्नी के प्रेम पर देश-प्रेम ने और घर-बार, बच्चों व संबंधियों के कष्टों पर पीड़ितों व शोषितों की आहों ने विजय प्राप्त कर ली । मैं क्या करूं ? अंतरात्मा की आवाज यही है ।''

सात वर्ष हुए अलकनंदा के संवेदनशील जलागम क्षेत्र—बडियारगड पट्टी—में वृक्षों की कटाई के खिलाफ मैंने जंगल में उपवास प्रारंभ किया था । लोगों ने मुझे इसके बारे में

''जिस राज्य की नीति अन्याय, अत्याचार व स्वेच्छारिता पर अवलंबित हो, उसके विरुद्ध विद्रोह करना प्रत्येक का मूल कर्त्तव्य है । यही मैंने भी किया है और शरीर में दम रहते हुए मैं बराबर यही करता रहूंगा ।''

—श्री देव 'सुमन'

के अंदर ही उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला, मुझे भी गिरफ़ार कर नरेंद्रनगर की हवालात में बंद कर दिया गया । उन्होंने जनता के नागरिक अधिकारों की मांग के लिए ८४ दिनों का अनशन कर अपना बलिदान दे दिया । इससे मेरे संकल्प पर मुहर लग गयी । मेरे कानों में उनके शब्द गूंजते रहते थे कि 'क्या तुम चांदी के चंद टुकड़ों के बदले अपने को बेच दोगे ?'

सुमनजी के स्मारक के रूप में टिहरी के आजाद मैदान में उनकी मूर्ति बिराजमान है और उस पर अंकित है उनका यह संदेश : ''जिस राज्य की नीति, अन्याय, अत्याचार व

कई सवाल पूछे । मैंने पुनः अपने प्रेरणा-स्रोत को याद किया और स्पष्टीकरण के तौर पर उपवास-काल में जो पत्र लिखा, उसे अविकल रूप से प्रस्तुत कर रहा हूं—

''पिछले सौ वर्षों से हिमालय की वन-संपदा का जो निर्मम व्यापारिक दोहन होता रहा है और जो पिछले दशक में चरमसीमा पर पहुंच गया था, उससे हमारे पिता हिमालय का शरीर क्षत-विक्षत हो रहा है । हमारा पालन-पोषण करनेवाला पिता ही हम पर पत्थर बरसाने लगा है । सर्वत्र रेड़े-रेवाड़ों के रूप में उसके गहरे घाव देखे जा सकते हैं । 'चिपको' आंदोलन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसकी रक्षा और अंततोगत्वा प्रलयंकारी बाढ़ों से देश की रक्षा के लिए हरे वनों की कटाई पर रोक लगाने की मांग कर रहा है, लेकिन यह केवल अनसुनी ही नहीं कर दी गयी है बल्कि विनाश की प्रक्रिया को तीव्रतम किया जा रहा है।

हिमालय का एक विनम्र सेवक होने के नाते एक चौकीदार की हैसियत से यह चिल्ला-चिल्लाकर कि 'जागते रहो, चोर है' जागते रहो चोर है,' मैं लोगों को जगाता रहा हूं। परंतु हिमालय की अंधेरी से अंधेरी गुफाओं में प्रगाढ़ निद्रा में सोये हुए लोगों को जागने में अभी बहुत देर लगेगी। यह कार्य मेरे गुरु अमर शहीद श्रीदेव 'सुमन' ने पूरा किया था, इसलिए मैं इसे हिमालय के संकट की बेला में उन्हीं के बताए हुए रास्ते—सत्याग्रह के द्वारा आगे बढ़ाने का प्रयास अनिश्चित कालीन मौन उपवास के रूप में कर रहा हूं।"...हमारे पास कोई भौतिक साधन नहीं थे, यहां तक कि मैं यह पत्र एक ओर से छपे हुए एक इश्तिहार के पीछे लिख रहा था। मेरी पेंसिल का रिफिल भी समाप्त होनेवाला था, अतः मैंने लिखा, "सब भौतिक साधनों के अभाव में मेरे पास अपना जीवन है, जिसे मैं अपने गुरु शहीद 'सुमन'—की जलाई हुई ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने के लिए तेल के रूप में उपयोग कर रहा हूं—इस आशा से कि हिमालय की सेवा करने की उनकी प्रेरणा जीवित रहे।'

—नवजीवन आश्रम, पो. सिल्यारा,
टिहरी-गढ़वाल

कलाकार के अतिरिक्त वे वैद्य और ज्योतिषी भी थे !

नत्थाराम गौड़ : स्वांग मंच के एक प्रसिद्ध कलाकार। अलीगढ़ जिले के दरियापुर गांव में ब्राह्मण परिवार में जन्मे नत्थारामजी का बचपन बेहद कष्ट में बीता। उनके पिता नेत्रहीन थे, अतः नत्थारामजी पिता के हाथ की लाठी पकड़े हाथरस के बाजार में गीत गाते भिक्षा मांगने निकलते थे। अचानक एक दिन उस्ताद इन्दरमन के शिष्य श्री चिरंजीलाल की नजर उन पर पड़ी। वे उन दिनों अपना अखाड़ा चलाते थे। उन्होंने नत्थारामजी को उनके पिता से मांग लिया और उन्हें हिंदी, उर्दू, अंगरेजी के ज्ञान के अतिरिक्त नृत्य और गायन का अभ्यास कराया। बाद में नत्थारामजी की कला के कारण इन्दरमन अखाड़े की कीर्ति बढ़ी।

उनकी मंडली के एक कलाकार पं. रामचंद्र के अनुसार 'नत्थाराम कलाकार तो उच्चकोटि के थे ही, साथ ही वे वैद्य और ज्योतिषी भी थे। मंडली में किसी के बीमार होने पर स्वयं उसका उपचार करते थे और मुहूर्त देखकर स्वयं मंडली का कार्यक्रम निर्धारित करते थे। कहीं से भी कोई खाने-पीने की वस्तु आने पर उसे स्वयं सब कलाकारों में बांट देते थे, स्वयं नहीं खाते थे। मंडली में पहले सबको भोजन कराकर सबसे अंत में जो बचता था, उसे स्वयं खाते थे।'

—*'सांगीत : एक लोक नाट्य परंपरा' से*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

बचपन में गीता माता ने इस प्रकार मेरे बचपन को बल दिया, संबल दिया, एक सही दिशा दी और एक नयी भाषा सिखायी। अगर गीता का साथ नहीं मिलता तो क्या पता आंध्र के कोने में छोटे-से गांव में रहनेवाले इस साधारण व्यक्ति को राष्ट्रभारती की आराधना करने का सुयोग मिलता, न मिलता।

साक्षरता और साक्षात्कार

★ डॉ. इलपावुलूरि पांडुरंगराव

आज से लगभग पचास वर्ष पहले की बात है। पर बात आज भी अभी-अभी की लगती है। आंध्र प्रदेश में गुंटूर (अब प्रमाशम) जिले का छोटा-सा गांव, गांव का नाम तिम्मन पालेम। गांव मद्रास को दिल्ली और कलकत्ता से जोड़नेवाला महामार्ग (ट्रंक रोड) गांव का अंचल बनकर चलता है। सड़क किनारे एक धर्मशाला जिसके बाहर चबूतरे थे, पर प्रतिदिन कोई अनजान व्यक्ति रात के विश्राम के लिए रुक जाता था। इनमें कभी-कभी संत महात्मा भी हुआ करते थे। ऐसा ही एक संयोग था जब सबेरे उठकर नहा धोकर पूजा-पाठ आदि से निवृत्त होकर मैं बाहर निकला तो चबूतरे पर सफेद कपड़े पहने हुए एक साधु बैठे थे और कुछ धार्मिक ग्रंथों का पाठ कर रहे थे, एकदम अपने में लीन।

हिंदी के लिए अलौकिक प्रेरणा

उस समय मैं मुश्किल से सात साल का था, पर पूजा-पाठ में मेरा मन बहुत रम जाता था। सबेरे चार बजे उठकर पिताजी प्रभात-गीत गाया करते थे, तो मेरी नींद खुल जाया करती थी। उन्हीं के साथ नहा-धोकर उनके पूजा-पाठ के कार्यक्रम में उपद्रष्टा बनकर बैठा करता था। उस दिन शायद एकादशी थी, इसलिए कुछ विशेष अनुष्ठान का आयोजन था। फिर भी जब मैं बाहर निकला तो उसी समय सूर्य की किरणें पृथ्वी को आलोकित और पुलकित कर रही थीं। सूर्य के भी तेज से सुशोभित उस साधु का मुखमंडल देखकर मेरा मंन कुछ आंतरिक प्रसन्नता का अनुभव करने लगा तो मैं चुपचाप उनके पास जा बैठा। तरल-सरल और मृदुल मंदहास से उन्होंने मेरा स्वागत किया और पास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बैठने को कहा । मैं तो पास बैठा ही था, पर उन्होंने मुझे और नजदीक बिठा लिया । मुझे लगा कि मैं लगभग उनकी गोद में बैठा हूं । थोड़ी देर तक उनकी वाणी का आनंद लेने के बाद उन्होंने पूछा कि "तुम हिंदी पढ़ते हो ?"

वास्तव में मैं उस समय इतनी हिंदी नहीं जानता था कि उनके प्रश्न का जवाब दे सकूं । पर सिर हिलाकर मैंने उन्हें अपनी अनभिज्ञता सूचित करने का प्रयास किया तो उन्होंने उसको स्वीकारोक्ति समझकर एक किताब मेरे हाथ में दी । उस समय मैं हिंदी बिलकुल नहीं जानता था, ऐसी बात भी नहीं है । हालांकि आंध्र प्रदेश में सन १९३६ के आसपास एक छोटे-से गांव में छह-सात साल के लड़के से हिंदी के ज्ञान की अपेक्षा करना कुछ अजीब-सा ही लगता है । पर संयोग से जिस प्राइमरी स्कूल में मैं पढ़ता था, उसके प्रधानाध्यापक उन दिनों दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की कुछ परीक्षाओं के लिए तैयारी कर रहें थे और स्कूल में उनके साथ मैं अधिक समय बिताया करता था । इसी सुयोग ने मुझे नागरी लिपि का परिचय कराया । एक-एक अक्षर जोड़कर मैं नागरी लिपि में लिखी हुई कोई भी पुस्तक पढ़ सकता था । पिता के साथ बैठकर श्रीविष्णु सहस्र नाम का स्तोत्र पढ़कर मैंने इस लिपि का काफी अभ्यास भी कर रखा था । इसी पूर्वरंग के आधार पर मेरे हाथ में उस साधु ने जो किताब दी थी, उसको खोलकर एक-एक श्लोक पढ़ने लगा । पुस्तक खोलते ही मेरी दृष्टि पड़ी एक सुंदर नामावली पर :

गीता गंगा च गायत्री सीता सत्सा सरस्वती
ब्रह्म विद्या ब्रह्म वल्ली त्रिसंध्या मुक्त गेहिनी

अर्धमात्रा चिदानंदा भवानी भयनाशिनी
वेदत्रयी परानंता तत्वार्थज्ञान मंजरी

उस समय मुझे मालूम नहीं था कि वह कौन-सी किताब थी और यह प्रसंग क्या था पर नामावली की चार पंक्तियां पढ़ने के बाद उस संत ने मुझे समझाने की कोशिश की कि जो पुस्तक मेरे हाथ में थी उसको गीता कहते हैं और ये अठारह नाम उसी गीता के हैं ।

कहीं साधु न बन जाऊं

इतने में हमारे पिताजी बाहर आये । उनको हमेशा इस बात का भय रहता था कि मैं अकसर साधु-संतों से अधिक बात करता हूं और कहीं मैं उनके साथ साधु-संन्यासी न बन जाऊं । एक-दो बार कुछ संतों ने इस प्रकार का प्रस्ताव भी रखा था । इसलिए पिताजी मेरे बारे में और मेरे संत-महात्माओं के प्रति काफी सजग रहते थे । जैसे ही महात्मा ने हमारे पिताजी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखा, उनको भी बैठने को कहा और उनको कई बातें समझायीं, कुछ मेरे बारे में और कुछ गीता के बारे में। इस वार्तालाप का निष्कर्ष यह निकला कि उस दिन से उस पुस्तक में से कम-से-कम चार-पांच श्लोक और अगर हो सके तो एक पूरा अध्याय पढ़ लेना मेरी दिनचर्या का पहला अंश हो गया। उस पुस्तक में गीता का मूल पाठ तो है ही, उसके साथ-साथ सरल हिंदी में उसका भावार्थ भी है। मूल पाठ और भावार्थ के बीच में प्रत्येक शब्द की सरल, सुंदर व्याख्या की है। मुझे इस प्रकार एक अच्छी पुस्तक पढ़ने को मिल गयी और साथ ही देवनागरी लिपि और हिंदी में अनायास प्रवेश भी मिल गया।

कुछ ही दिनों में मुझे सारी पुस्तक कंठस्थ हो गयी हिंदी भावार्थ सहित। बिना पूरा आशय समझे तोता रटंत विद्या के रूप में मैंने गीता और गीतार्थ का बड़ी तत्परता से अभ्यास किया। जब मैं रोज गीता का पाठ किया करता था, तब कई लोग आकर मेरे पास बैठकर सुन लेते थे। कभी-कभी कुछ वयोवृद्ध और विद्वान भी मेरी गीता के माध्यम से मेरी हिंदी सुनकर प्रसन्न होते

पाप व कर्ज की गठरी क्यों ले जाऊं?

● शिवकुमार गोयल

मेरे बाबा लाला नारायणदासजी (बझैड़ेवाले) क्षेत्र के अच्छे बड़े जमीदारों में थे। उनकी पिलखुवा के आसपास के अनेक गांवों में जमींदारी थी। भूमि पर काश्त करनेवाले किसानों से लगान या मालगुजारी मिलती थी।

यह लगभग पैंतीस वर्ष पुरानी बात है। जमींदारी प्रथा दम तोड़ ही रही थी। पास के ग्राम सिखेड़ा का एक किसान हमारे घर आया। मैं अपने पिताश्री (भक्त रामशरण दासजी) के पास बैठा हुआ था। उसने आकर राम-राम की और बोला—"लालाजी कहां हैं?"

पिताजी ने बताया कि उघाई में गये हैं किसी गांव, आने ही वाले हैं। वह पास में बैठकर प्रतीक्षा करने लगा।

एकाएक उसने अपनी धोती की फेंट में से गंदे-से कपड़े की पोटली निकाली और उसे खोलकर उसमें से रुपयों की गड्डी निकाल ली। रुपयों की गड्डी पिताजी के पास रखकर बोला, "भगतजी यह रकम लालाजी को देनी है। उन्होंने मुझ पर अदालत में नालिश की हुई है। और मैंने वकील के बहकावे में आकर झूठा ही बयान दे दिया कि मैं २७० रुपये लालाजी के पुत्र भगतजी को दे गया था। मुझे कई रात से नींद नहीं आ रही है, झूठे बयान के कारण। मैं रकम मारकर अपना परलोक नहीं बिगाड़ना चाहता।" यह कहते-कहते वह हिड़की मारकर रो पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे और मुझे आशीर्वाद दे जाते थे।

एक बार हम किसी गांव से दूसरे गांव जाते समय बीच में नदी पार कर रहे थे, बैलगाड़ी में बैठकर। अचानक नदी में बाढ़ आ गयी और गाड़ी पीछे की तरफ चल पड़ी। इस भगदड़ में मेरी गीता नदी में गिर पड़ी और उसके साथ-साथ मैं भी गिर पड़ा। पर प्रभु-कृपा से दोनों सही-सलामत किनारे पहुंच गये।

बचपन में गीता माता ने इस प्रकार मेरे वचपन को बल दिया, संबल दिया, एक सही दिशा दी और एक नयी भाषा सिखायी। अगर गीता का साथ नहीं मिलता तो क्या पता आंध्र के कोने में छोटे-से गांव में रहनेवाले इस साधारण व्यक्ति को राष्ट्रभारती की आराधना करने का सुयोग मिलता, न मिलता। इसलिए यह छोटी-सी घटना मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना है जिसमें मेरे सारस्वत हृदय ने अक्षरमय ब्रह्म से न केवल साक्षरता की शिक्षा पायी है, बल्कि अक्षर भारती का साक्षात्कार करने का सुयोग भी प्राप्त किया है।

—३६ ए शेक्सपीयर सरणी,
कलकत्ता

एक छोटा-सा गरीब किसान खचेडू। गरुड़ पुराण सुनते वह पाप-पुण्य, सत्य-असत्य के मर्म को जान गया!

"खचेड़ू सिंह तुमने तो अदालत में झूठा बयान दे दिया था, फिर यह बदलाव मन में कैसे आया ?"—पिताजी ने कुरेदा।

"सच बात बताऊं आपको"—उसने कहा, "मेरे पड़ोस में एक पंडितजी की मौत हो गयी। मैं उनके यहां गरुड़ पुराण सुनने गया। गरुड़ पुराण में एक कथा आयी कि जो बेईमानी करता है, झूठ बोलता है, ठगी करता है, उसे परलोक में घोर यातनाएं सहनी पड़ती हैं। कर्ज मार लेनेवाले को दूसरे जन्म में चुकाना पड़ता है। बस, उसी रात से मुझे नींद नहीं आ रही है। वैसे भी सत्तर वर्ष का हो गया हूं, न जाने कब भगवान के यहां से बुलावा आ जाए। झूठ का पाप व कर्ज का बोझ कंधे पर क्यों ले जाऊं ?"

पिताजी ने उस भोले किसान की बातें सुनीं तो उनकी आंखें भी भीग गयीं, उसकी निश्छलता देखकर। रुपये देकर वह चला गया—जैसे किसी बहुत बड़े भार से मुक्त हो गया हो। और दूसरे ही दिन जब पिताजी से किसी ने आकर कहा, "रात खचेड़ू मर गया" तो वे हिड़की देकर रो पड़े। बोले, "बड़े कहे जनेवाले आदमी संत-महात्माओं के उपदेश सुनते हैं, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करते हैं, परंतु उन पर अमल कोई बिरला ही करता होगा। किंतु खचेड़ू छोटा-सा गरीब किसान एक बार गरुड़ पुराण का अंश सुनते ही पाप-पुण्य, झूठ-सत्य के मर्म को गहराई से समझ गया, वह जरूर महान आत्मा था।"

पिताजी ने चबूतरे की उस जगह की मिट्टी उठाकर सिर से लगा ली, जहां पहले ही दिन खचेड़ू पैर रखे बैठा हुआ था।

—बीचपट्टी, पिलखुवा
(गाजियाबाद)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

याद में अंकित अपमान का एक बिंदु कविता भरे दिन

● डॉ. रामदरश मिश्र

बाढ़ में घिरा रहने के कारण कई दिनों तक मैं गांव में ही रह गया। गांव के साथियों में बहुत-से लोग बाहर थे। बस, कपिलदेव और मैं स्थायी साथी थे, बाकी लोग कभी-कभी मिलते थे। आठ-दस दिन बीत गये। गांव से दूर रहकर उससे अपना संबंध इतना गहरा गया था कि गांव में अकेलापन अनुभव करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। बरहज के अजनबीपन के अनुभव के बाद गांव में रहना बहुत अच्छा लग रहा था। बाढ़ का होना बरहज न जाने का एक बहाना भी बन गया था। जमीन का एक टुकड़ा उभरा, दूसरा उभरा, तीसरा उभरा और जमीन उभरती ही चली गयी। मैंने इन दस-बारह दिनों की फुरसत में एक राष्ट्रीय भाव का खंड काव्य लिखना शुरू कर दिया था। कथा चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु की थी। छंद था कवित्त-सवैया।

रास्ता साफ होते ही मैं अपने दस-बारह छंद लेकर मदनेशजी के पास पहुंच गया। उन्होंने छंद सुने, उनमें आवश्यक सुधार किये और आगे लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

नियत दिन पर हम बरहज के लिए रवाना हुए। थके-मांदे शाम तक बरहज पहुंचे, तो पंडितजी ने अपना क्रोध जाहिर किया, "कहां रहे इतने दिन? ऐसे कैसे तैयारी होगी? कितना कुछ पढ़ा दिया गया है।"

मैंने उन्हें अपनी कथा सुनायी तो वह शांत हुए।

सब कुछ यों ही चलता रहा। समय बीतता गया। मैं कवि रूप में यहां जान लिया गया था। एक दिन एक निमंत्रण-पत्र मिला, पड़रौना से आया था। पड़रौना में एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन हो रहा था। पंडित सिंहासन तिवारी के पास भी निमंत्रण आया था। मैं बहुत चकित था कि इतने बड़े कवि-सम्मेलन का निमंत्रण मुझ-जैसे अत्यंत अनाम व्यक्ति के पास कैसे आया। उसी दिन शाम को सत्यव्रतजी मिले। उन्होंने पूछा कि 'पड़रौना से निमंत्रण आया है?' मैंने कहा, "हां।"

"ठीक है।" कहते हुए वे आगे बढ़ गये और मैंने अनुमान कर लिया कि बाबाजी ने ही कवि-सम्मेलन के आयोजक रामवचनजी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

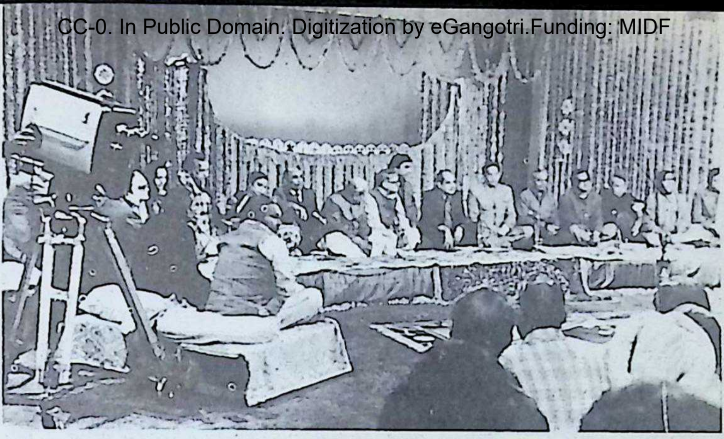

मुझे बुलाने के लिए कह दिया होगा।

मन में बड़ा उत्साह था और प्रतीक्षा थी उस शुभ दिन की। भीतर-भीतर एक दहशत भी थी कि बड़े-बड़े कवियों के बीच कैसे कविता पढ़ूंगा। आखिर, वह दिन आ गया। कई लोग पड़रौना के लिए रवाना हुए। बरहज से ट्रेन द्वारा भटनी। भटनी से गोरखपुर, गोरखपुर से पड़रौना। हम वहां पहुंचे तो एक टेंट में ठहरा दिये गये। पड़रौना के राजा आतिथेय थे। उन्हीं की ओर से सारी व्यवस्था हुई थी। टेंट के खंभों में बिजली के स्विच और ऊपर बल्ब लगे थे। बिजली लगे कमरे में या जगह में रहने का यह मेरा पहला अवसर था। स्विच को दबाते ही फट से प्रकाश का हो जाना और दबाते ही उसका गुल हो जाना मेरे लिए कौतूहल का विषय बन गया था। जहां टेंट लगा था, वह गंडक नदी के कछार की रेतीली जगह थी। चारों ओर हरियाली फैली थी और कार्तिक पूर्णिमा का अवसर होने के कारण मेले का जनसमूह भी फैला हुआ था। इस वातावरण में अद्‌भुत-अद्‌भुत वेशभूषा में आये हुए कवियों को देखना भी एक अनुभव था। अपने पास क्या था? बचपन से ही मामूली धोती, मामूली कुरता या कमीज, सिर पर टोपी, पांव नंगा। याद नहीं इस समय मैं नंगे पांव था या जूता पहने था। ऐसा नहीं है कि मैंने इसके पहले जूता पहना ही नहीं था। कई बार चमरौधा जूता लिया था और शादी में पंप शू भी पहने था, लेकिन जूते पैर काट-काट देते थे इसलिए मैं यह मान बैठा था कि मेरा पांव जूते

कवि-सम्मेलन शुरू हुआ। न जाने कहां से लोग कंबल-दरी लेकर आये थे। आज कवि-सम्मेलनी परिदृश्य को देखता हूं तो वह दृश्य याद आता है। तब के परिदृश्य में कितनी काव्य-निष्ठा और सहज गंभीरता थी...जबकि आज कवि-मंच पर भड़ैती होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के लायक है ही नहीं। देहात में नंगे पांव होना उस समय कोई बेइज्जती की बात भी नहीं थी, क्योंकि अधिकांश लोग बगैर जूते के ही होते थे। इसलिए जूंता-विहीन होने पर भी तब हम हीनता-बोध के शिकार नहीं थे। लेकिन जब दूसरे लोगों को विशेष-विशेष वेषभूषा में सजे-बजे देखा, तो अपने भीतर हीनता-बोध हुआ हो या न हुआ हो, मैं इस माहौल से चमत्कृत अवश्य हुआ।

पड़रौना के चूड़ीदार पायजामा, अचकन और टोपी में बहुत विशिष्ट लग रहे थे। वे आये थे और प्रबंध का मुआइना कर गये थे। बच्चनजी भी काली शेरवानी में थे। श्यामनारायण पांडे धोती, कुरता, जवाहर जैकेट और टोपी में थे। सनेहीजी की अपनी छवि थी। आसपास के शहरों से कई ख्यात कवि आये थे, उन सबकी अपनी-अपनी छवि थी। कुछ लोग कोट-पैंट में भी थे।

टेंट के भीतर ही टेंट के परदों से कुछ कमरे बनाये गये थे, जिनमें विशिष्ट कवियों को ठहराया गया था। हम लोग तो टेंट के हाल में ठहराये गये थे। मालूम पड़ा कि उस टेंट में बच्चनजी हैं। मैं उन्हें देखना चाहता था। उन दिनों बच्चनजी की ख्याति का क्या कहना था! उनकी मधुशाला किशोर, जवान, बूढ़े सबके भीतर छलक रही थी। अतः उन्हें एक झलक देखने की इच्छा मुझे थी, साथ आये लोगों को भी थी। हम उनके टेंट के पास जाकर खड़े हो गये। उस टेंट-कक्ष में कई आराम कुरसियां लगी थीं। कवि-सम्मेलन में जाने का समय हो गया था, अतः कई कवि तैयार होकर बैठे थे। चूड़ीदार पायजामा और शेरवानी पहने घुंघराले बालोंवाले एक कवि का मुंह द्वार की ओर ही था, उन्होंने आंख उठाकर हमारी ओर देखा। हम संकोच से द्वार पर से खिसक गये। सिंहासन तिवारीजी ने कहा, "यही बच्चनजी हैं।" स्वप्निल आंखोंवाले बच्चनजी की पहली झलक मुझे अभिभूत कर गयी। सहज ही इच्छा हुई कि काश बच्चनजी मुझे जानते। लेकिन, बच्चनजी मुझे क्यों जानने लगे? मुझमें अभी था क्या, जिसके नाते वे मुझे जानते। और मेरा स्वभाव ऐसा कि उनके देखते ही द्वार पर से ऐसे खिसका, मानो चोरी करते हुए देख लिया गया होऊं।

कवि-सम्मेलन शुरू हुआ। न जाने कहां-कहां से लोग कंबल-दरी लेकर कविता सुनने आये थे। आज के कवि-सम्मेलनी परिदृश्य को देखता हूं तो वह दृश्य याद आता है। तब के परिदृश्य में कितनी काव्य-निष्ठा और सहज गंभीरता थी। लोग कविता सुनने आते थे और कवि लोग कविता ही पढ़ते थे। जबकि आज कवि -मंच पर भड़ैती होती है, या गाना होता है और श्रोता शोहदों की तरह उनका मुजरा लेते हैं, और रिमार्क कसते हैं।

कवि-सम्मेलन में मंच की तीन बड़ी हस्तियां थीं—बच्चनजी, श्याम नारायण पांडे और गयाप्रसाद शुक्ल सनेही। बच्चनजी का अपना रंग था। पहली बार उन्हें सुना। मधुशाला सुना रहे थे। कविता पारदर्शी, कवि का कंठ मीठा, कवि और श्रोता के बीच मानों प्रेषणीयता की सहज लय तन गयी हो। बच्चनजी बंद की चार पंक्तियां पढ़कर जब पांचवीं पंक्ति के आधे पर आते थे, तो शेष आधा भाग उनके साथ ही जनता बोल उठती थी। मधुशाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ . . . मधुशाला आ . . . की एक अनुगूंज उस रात के सन्नाटे में तैर रही थी। बच्चनजी उस समय मुझे कितने प्रभावशाली लगे थे। कह नहीं सकता।

कुछ दिनों बाद जब मैं रामानुज के साथ गांव आ रहा था, तब रामानुज अपने मधुर कंठ से बच्चनजी की पंक्तियां गा रहे थे। मैंने उनसे कहा, "मेरी भी इच्छा होती है कि बच्चनजी की तरह शेरवानी-पायजामे में रहूं और कवि-सम्मेलनों में जाऊं।" तो रामानुज ने कहा, "पोशाक से कुछ नहीं होता, वैसा गुण भी होना चाहिए। पहले बच्चनजी-जैसी ऊंचाई तो प्राप्त कर लो तभी ऊंची पोशाक भी अच्छी लगेगी।" उनकी बात सुनकर मैं हतप्रभ रह गया।

मैं कहां चला गया। कवि-सम्मेलन की बात कह रहा था। दूसरे कवि थे श्यामनारायण पांडेय। उनकी 'हल्दीघाटी' भी मधुशाला की तरह छायी हुई थी। मधुशाला की तरह इसमें भी अद्भुत प्रेषणीयता थी। श्यामनारायणजी की भी छटा प्रभावशाली थी। उन्हें भी पहली बार कविता पढ़ते देख रहा था। वे बघौआं बैठ गये और एक ठसकभरी आवाज में एक विशेष अंदाज के साथ हल्दीघाटी का युद्धसर्ग पढ़ने लगे। वे प्रताप, चेतक, तलवार आदि की त्वरा का मानों दृश्य उपस्थित करते चले जा रहे थे। मधुशाला के भीगे मादक वातावरण के बाद युद्ध का शौर्य-उत्तेजक, गतिशील प्रवाह-सा बहने लगा था। पांडेयजी मादक-मधुर कविता के पक्षपाती नहीं थे। उन्होंने 'हल्दीघाटी' पढ़ने के पहले अपना परिचय दिया था, जिसकी दो पंक्तियां याद आ रही हैं—

शिष्य हरिऔध का हूं, कविता
कहने में न पानी पिया करता हूं
कविता मैं जनानी नहीं करता
कविता मरदानी किया करता हूं

उनकी इन पंक्तियों से और कुछ प्रारंभिक व्यंग्यात्मक टिप्पणी से यह बात जाहिर हो गयी थी कि वे बच्चनजी की मधुशाला या उनकी कविता की श्रृंगारिक-प्रवृत्ति को पसंद नहीं करते।

तीसरे कवि सनेहीजी थे। मदनेशजी के माध्यम से सनेहीजी को, मैं दर्जा छह में था, तब से जानने लगा था। और उन्हें हिंदी का उस काल का सबसे बड़ा कवि मान लेने का अज्ञान भी पाल बैठा था। जब मैं ढरसी में था, तो 'सुकवि' में मेरी कुछ समस्या-पूर्तियां भी छप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक

चुकी थीं। अतः मैं सनेहीजी से एक भीतरी लगाव-सा महसूस करता था। उन्हें मंच पर देखा, तो बहुत अच्छा लगा। सुना था वे भांग लेकर पढ़ते थे। उनकी आंखों में भांग का असर भी दिखायी पड़ा। धोती-कुरते में उनकी भारी काया अपना अलग असर छोड़ रही थी। उन्होंने कविता-पाठ आरंभ किया, तो लगा कविता तीसरा माहौल धारण कर रही है। कवित्त की लय पर डग-डग हिलती हुई, ठिठक-ठिठककर बढ़ती हुई आवाज का अपना वैशिष्ट्य था। एक चरण पूरा होने पर बिना सांस लिये दूसरे चरण की प्रारंभिक पदावली पर उतर आना, पढ़ने की एक विशेष अदाकारी का सूचक था। सनेहीजी ने वहां पर ब्रजभाषा काव्य का रंग उतार दिया था, और उसकी यमक तथा श्लेष मूलक वक्रता की छवि बिखेर दी थी। श्रोता इनकी कविताओं का उसी प्रकार रस ले रहे थे जिस प्रकार मधुशाला और हल्दीघाटी का लिया था।

कवि-सम्मेलन दो दिन तक चला—रात को भी, दोपहर को भी। मैंने भी कविता पढ़ी। मेरे-जैसे बहुतों ने पढ़ी। मुझे यह बोध नहीं था कि बड़े कवियों में से किसकी कविता अपने समय के चरित्र के साथ अधिक जुड़ी है, किसकी कम और किसकी बिलकुल नहीं जुड़ी है। इस समय तो मैं रस-भोक्ता था। जो कविताएं लग रही थीं, अच्छी लग रही थीं, उनमें मैं भीग रहा था।

कवि-सम्मेलन के समापन पर मैं भीतर से बहुत भरा हुआ अनुभव कर रहा था—प्रसन्न और तृप्त। बाद में बहुत से कवि-सम्मेलन देखे, प्रसिद्ध होने पर बहुत से कवि-सम्मेलनों में खूब तारीफ भी पायी, लेकिन पहली बरसात पड़ने पर जमीन से उठनेवाली पहली खुशबू की तरह कवि-सम्मेलन की जो प्रथम हलकी गंध मुझे ढरसी में मिली थी, उसी का घनीभूत रूप पड़रौना में मिला। यह मेरे लिए एक सहज अनुभव था, बाद में तो कविसम्मेलन अभ्यास बनता चला गया।

कवि-सम्मेलन का आखिरी दृश्य वैसा ही था, जैसा बाद के वर्षों में भी अनुभव करता रहा। बड़े कवियों को तो उनकी मांग के अनुसार अच्छे पैसे दे दिये गये होंगे, किंतु नये या अप्रख्यात कवियों को किराया मिलना भी कठिन हो गया। कवि-गण रामवचन को घेरे हुए पैसे मांग रहे थे, किंतु वे बड़े-बड़े पेमेंट कर लेने के बाद अपनी जेब के नंगेपन का रोना रो रहे थे। हमें भी कठिनता से किराया मिला था।

पड़रौना के कवि-सम्मेलन से मेरे मन में बड़े और प्रसिद्ध कवियों से परिचय की लालसा पैदा हो गयी। इसका एक अवसर कुछ समय बाद आया, तब मैं बरहज छोड़कर दोबारा ढरसी जा चुका था। मैंने सुना कि पड़रौना में एक कवि-सम्मेलन हो रहा है। इच्छा हुई वहां जाने की। गुरुवर रामगोपाल शुक्ल ने भी उत्साहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया। वहां गया। अनाहूत गया था फिर भी कविता सुनाने का अवसर मिला। श्यामनारायण पांडेय वहां गये थे। उन्होंने मेरी कविता सराही। इस बहाने मैंने उनके निकट हो लेना चाहा। उनसे बात करने लगा। कवि-सम्मेलन चल ही रहा था कि वे उठ गये मैं भी उनके साथ हो लिया। वे खाना खाने गये। मैं भी गया। खाना परोसनेवाले ने पांडेयजी और उनके साथी को खाना परसकर मुझसे पूछा, "आप आमंत्रित हैं।"

मैंने कहा, "नहीं।"

उसने तिक्तता से कहा, "अभी सारे आमंत्रित कवि बाकी हैं, उनसे पहले तुम्हीं खाने चले आये!"

मैं बहुत अपमानित हुआ। पांडेयजी ने उसे डांटा, "क्या हो गया ? आपको इस तरह नहीं बोलना चाहिए। ये ही लोग कल के कवि हैं।" गुस्सा आया कि इस बदतमीज रसोइए के सर पर एक ईंट मारकर भाग जाऊं, तब तक पांडेजी ने मुझसे साधिकार कहा, "बैठो।"।

मैं संकुचित होकर बैठ गया। खाना भी खाया, लेकिन लगा खाना नहीं अपमान खा रहा हूं। मन ही मन निश्चय किया कि जब मैं बड़ा कवि हूंगा, तब पड़रौनावालों के निमंत्रण को लात मार दूंगा। आज इस कस्बे ने मेरा अपमान किया है, कल मैं करूंगा। जब मैं जाना जाने लगा और कवि-सम्मेलनों में मेरी खूब पूछ होने लगी, तब कई बार पड़रौना भी गया, वहां सम्मान भी खूब पाया, किंतु उस बदतमीज रसोइए के उस अपमान का एक बिंदु जो मेरी याद में अंकित हुआ, वह आज तक बना हुआ है।

(शीघ्र प्रकाश्य जीवन का सफरनामा—'रोशनी की पगडंडियां' का एक अंश)

— आर-३८ वाणी विहार,
उत्तमनगर, नयी दिल्ली-५९

कलाकार का सम्मान

गुलाबजान : नौटंकी की एक ख्यातनामा कलाकार। एक बार देवी शरफी के अक्तूबर के मेले में उनकी नौटंकी हो रही थी। उसी मेले में एक संगीत-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था। उसमें स्वर्गीय तबलानवाज पद्मविभूषण उस्ताद अहमद जान थिरकवा भी पधारे थे। उन्होंने देखा कि आम जनता संगीत-सम्मेलन के बजाय नौटंकी में अधिक रुचि ले रही है। मन में जिज्ञासा जगी और यह देखने चले गये कि आखिर नौटंकी में ऐसी कौन-सी विशेषता है ? नौटंकी में गुलाबजान की कला चरमोत्कर्ष पर थी। थिरकवा साहब मुग्ध हो गये। उन्होंने उसी समय जेब से सौ रुपये का नोट निकालकर उन्हें भेंट किया। जब गुलाबजान को पता चला कि यह भेंट देश के प्रख्यात तबलावादक की ओर से मिली है, तो वे आनंद से गद्गद् हो गयीं। उन्होंने तुरंत अपने पास से सौ रुपये का एक नोट निकाला और थिरकवा साहब के सौ रुपयों में अपनी ओर से सौ रुपये मिलाकर उन्हें श्रद्धापूर्वक भेंट किये।

छाया : देवव्रत बनर्जी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छाया : देवव्रत बनर्जी

विघ्ननाशक गणेश

गणेश-पूजा की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । कोटि-कोटि जनों का विश्वास है कि गणपति-पूजन के बाद प्रारंभ प्रत्येक कार्य निर्विघ्न, सफलतापूर्वक समाप्त होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

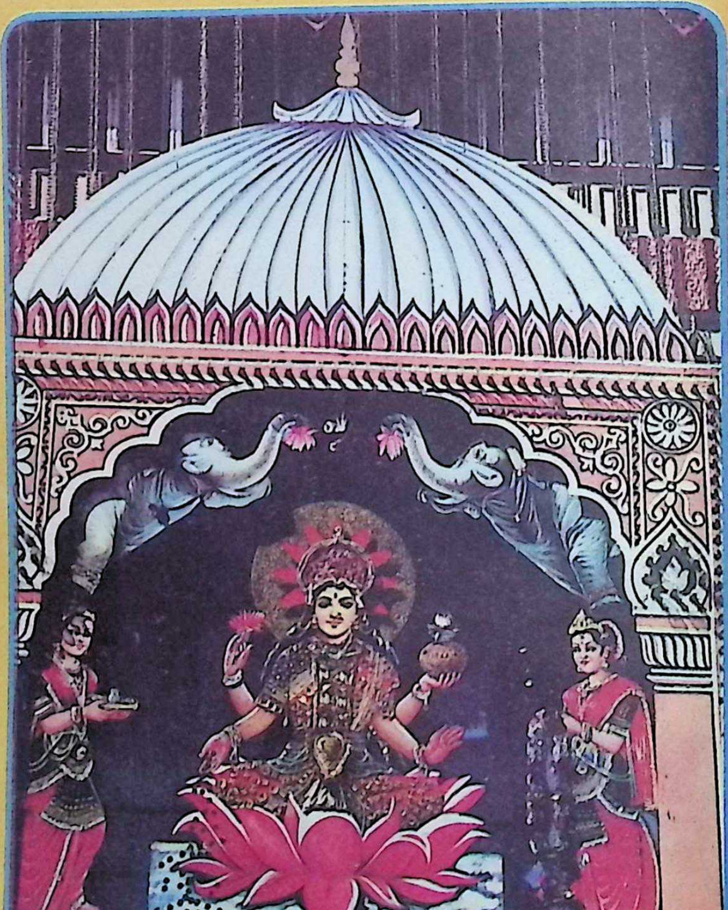

सुख-समृद्धि की देवी लक्ष्मी

दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी-पूजन की बेला सभी वर्गों के लोगों में उल्लास की सृष्टि करती है। दीपावली के अवसर पर पाठकों को हमारी भेंट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौंदर्य, सौभाग्य और संपदा की देवी : लक्ष्मी

● डॉ. वैस्सिलिस जी विट्सक्सिस

विष्णु की संगिनी (शक्ति) हैं लक्ष्मी जो सौंदर्य, सौभाग्य और संपदा की देवी हैं। उनके हाथों से स्वर्ण-मुद्राएं ऐसे गिरती हैं—जैसे झरने से जल। उनके साथ दो सफेद हाथी हैं, सौभाग्य के प्रतीक। उन्हें सामान्यतः कमल पर बैठे या खड़े अंकित किया जाता है।

पुष्प का प्रतीक सभी 'महान' देवताओं के साथ जुड़ा हुआ है, यद्यपि मुख्यतः वह ब्रह्मा के साथ जुड़ा है जो दिव्यता के नर-रूप हैं, जिन्हें सृजन के कार्य के लिए विशेष रूप से उत्तरदायी ठहराया गया है। यही कारण है कि किन्हीं देवकथाओं में हमें ब्रह्मा की पत्नी के रूप में लक्ष्मी का उल्लेख मिलता है। यह विभ्रम, जो हिंदू देवकथामाला में कोई अकेला विभ्रम नहीं है, सभी महान देवताओं की आंतरिक 'समरूपता' से संगत ठहराया जा सकता है। किंतु इस मामले में एक अतिरिक्त कारण भी है : कमल पर बैठी हुई देवी मां (पृथ्वी) की पूजा, आर्यों के आगमन से पहले ही, भारत के अत्यंत प्राचीन निवासियों में प्रचलित थी। आर्यों ने देवी को उसके आसन से उतारा और वहां सृष्टि के नर-देवता, ब्रह्मा को बिठा दिया यानी प्रतीकात्मक कमल पर देवी की पूजा

कमल के आसन पर बैठी देवी मां (पृथ्वी) की पूजा, आर्यों के आगमन से पहले ही, भारत के अत्यंत प्राचीन निवासियों में प्रचलित थी। आर्यों ने देवी को उसके आसन से उतारा और वहां सृष्टि के नर देवता ब्रह्मा को बैठा दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डॉ. वैस्सिलिस जी. विट्साक्सिस ग्रीक के प्रख्यात लेखक एवं चिंतक हैं। वे भारत सहित अनेक देशों में अपने देश के राजदूत रह चुके हैं। सिर्फ देवी-देवताओं के संबंध में उनका अध्ययन गहन एवं विशद है। उन्होंने भारत में घर-घर में रखे जानेवाले देवी-देवताओं के लोकप्रिय चित्रों की उनके पौराणिक व मिथकीय प्रसंगों के साथ प्रतीकात्मक व्याख्याएं की हैं। यहां प्रस्तुत है उनका लक्ष्मी विषयक लेख।

डॉ. विट्साक्सिस आजकल ग्रीक लेखक संगठन के अध्यक्ष हैं।

स्थायी बने रहने के दबाव के फलस्वरूप, देवी ने अपना स्थान फिर प्राप्त किया, पहले ब्रह्मा के ही स्तर पर और बाद में उनसे भी ऊपर विष्णु और शिव के साथ।

जिस देवकथा में कूर्म अवतार का हवाला दिया गया है, उसमें लक्ष्मी, यूनानी देवकथा की एफ्रोडाइट की ही तरह, आदि-सागर से उस ख़जाने के साथ निकली थीं, जिसको देवों ने सागर-मंथन करके निकाला था। जैसे ही शिव ने उन्हें देखा, उनको पत्नी रूप में प्राप्त करना चाहा, किंतु वे चंद्रमा को ले चुके थे, इसलिए लक्ष्मी दी गयीं विष्णु को। कहा जाता है कि इस क्षति से दुखी होकर शिव ने विष पी लिया, जिससे उनका कंठ नीला पड़ गया और इसी कारण उनका नाम नीलकंठ भी पड़ा।

विष्णु की पतिवता पत्नी होने के कारण पृथ्वी पर उनके हर अवतार के साथ लक्ष्मी भी आती हैं। जब वे वामन अवतार के रूप में आये, तो लक्ष्मी पृथ्वी के जल में कमल के रूप में आयीं और इसलिए पद्मा कहलायीं। जब विष्णु परशुराम के रूप में प्रकट हुए तो लक्ष्मी उनकी पत्नी धरणी के रूप में आयीं। जब राम का अवतार हुआ तो वे सीता बनीं। उन्होंने कृष्ण के जीवन के दो चरणों में उनका अनुगमन किया; बालपन में वे उनकी प्रेमिका राधा थीं और बाद में उनकी पत्नी रुक्मिणी।

लक्ष्मी के कुछ और भी नाम हैं : हरिप्रिया (हरि की प्रेमिका), जलधिजा (समुद्र की पुत्री), चंचला (एक जगह न ठहरनेवाली या चंचल मनवाली), लोक-माता (दुनिया की मां) आदि।

लोकप्रिय देवांकन में लक्ष्मी अकसर विष्णु के साथ दिव्य गिद्ध, गरुड़ पर बैठी दिखायी जाती हैं और गरुड़ पंजों में सांप पकड़े होता है। गरुड़ और सांप दोनों ही समान रूप से विष्णु के प्रतिनिधि हैं और वैसी ही लक्ष्मी भी हैं। इस तरह एक ही चित्र में हमें ऐसे दो व्यक्ति और दो पशु दिखायी देते हैं जो एक देवता विष्णु के रूप हैं। यह न केवल इस सिद्धांत की अभिव्यक्ति है कि भगवान अनगिनत रूप धारण कर सकते हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

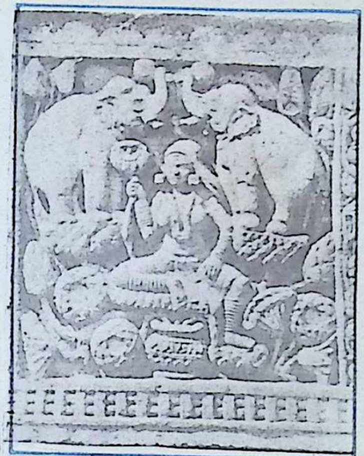

बल्कि चित्रात्मक रूप से अंतर्विरोधी तत्वों की एकता संबंधी मूल हिंदू-विश्वास को पुष्ट भी करता है। अपने नर-रूप में भगवान अपनी शाश्वतता को व्यक्त करते हैं तो नारी रूप में सृष्टि रचने की प्रवृत्ति (शक्ति) को। दैवी तत्व इन दो के संश्लेषण से ही निर्मित है। यही बात गरुड़ और सर्प के विषय में कही जा सकती है। जैसा कि जिम्मर ने लिखा है, मनुष्य ने विरोधी शक्तियों के प्रतीक-स्वरूप सदा इन दो जीवों का उपयोग किया है। यहां पर वे न केवल एक-दूसरे के विरोधी हैं, बल्कि पूरक भी हैं। आकाश और सूर्य का प्रतीक गिद्ध, पृथ्वी और उसके जल की द्रव शक्तियों के प्रतीक सर्प से संघर्ष रत रहता है। सूर्य पृथ्वी को जलाता और झुलसाता है; इस तरह वह जीवनदायी जलीय तत्व के अवतार और संरक्षक सर्प के विरुद्ध बराबर लड़ता रहता है। यह अंतर्विरोध, जिसका न तो कोई अंत है और न जिसमें किसी की विजय है (पानी भाप बनकर उड़ जाता है, किंतु बादलों से वर्षा के रूप में फिर पृथ्वी पर वापस आ जाता है), सृष्टि और विनाश के अनंत चक्र के मूल में है; दूसरे शब्दों में यही दिव्य तत्व का आधार है।

'विष्णु (जैसा कि नीत्शे का जरदुश्त भी है) दो शाश्वत प्रतिद्वंद्वी विरोधों से समान और घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं : एक ओर साँप है, जो जीवन, जल के स्रोत का प्रतिनिधि है और दूसरी ओर उसका आदि शत्रु, गिद्ध (गरुड़) है।'

विष्णु परम तत्व हैं—शाश्वत और अनंत दिव्य तत्व, जिसमें हर वस्तु अंतर्निहित है।

अभिनय का मतलब है, अपनी मृत्यु और अपने भीतर पराये का पुर्नजन्म। यानी असल को मार डाल और नकल को सींच। फिल्म का अभिनय तो और

—ग्रेटा गार्बो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्तपात

● कुलदीप सिंह बेदी

वह जब मुझे उस दिन मिली, तो बहुत उदास थी। अभी कुछ दिन पूर्व ही उसकी सगाई हुई थी। सगाई तो मेरी भी हो चुकी थी। इस बात को भी वह अच्छी तरह जानती थी।

मैं पहले जब कभी भी उसके घर जाता, तो उसकी माता मुझे कहती, 'इस के लिए भी कोई लड़का तो देखिए... ।' मैं पूछता, 'लड़का कैसा हो ?' तो अपनी माता के कुछ कहने से पूर्व ही वह कह देती, 'कोई प्रोफेसर, डॉक्टर अथवा वकील— ।'

जब मैं उसके घर से बाहर आता तो मुझे अहसास होता कि न तो मैं प्रोफेसर हूं, न ही डॉक्टर और न ही वकील।

मुझे स्मरण है, जब वह चंडीगढ़ में कोई कोर्स कर रही थी, तो मैं उसके आग्रह पर उससे मिलने गया था। मुझे देखकर उसकी सखियों ने उसे कनखियों से देखा था। तब वह उन्हें कह रही थी, 'नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।'

"लड़कियां क्या कहती थीं ?" मैंने पूछा तो उसने कहा, "लड़कियां तो कुछ-न-कुछ कहती ही रहती हैं।"

"फिर भी ?"

"कह रही थीं, तुमने अच्छा मोर्चा सर कर लिया है...जिस तरह की तू ऊंची-लंबी है, वैसा ही... ।"

"हूं, तूने कहा नहीं कि तुम्हें तो किसी प्रोफेसर, डॉक्टर अथवा वकील की तलाश है।"

"तुम्हें बातें बहुत बनाना आने लगी हैं...मैं तो आपको पसंद करती हूं...मगर क्या करूं, मेरे पिता और चाचा लोग कभी नहीं मानेंगे। मम्मी को पता है कि मैं आपको कितना चाहती हूं...मगर वह अकेली क्या कर सकती हैं... ।"

और उसी दिन संध्या के समय जब हम रॉक गार्डन घूमने जाने के लिए तैयार हुए तो उसकी एक रूममेट ने उसको आलिंगन में भरते हुए कहा था, 'लाओ, काला टीका लगा दूं, इतनी सजीली जोड़ी को तो मेरी ही नजर लग जाएगी।' तब पता नहीं उसकी आखों में आंसू क्यों डबडबा आये थे ?

बाहर निकले, तो वह कहने लगी, 'अरे वाह, तुम ने हीलवाले जूते क्यों पहने हुए हैं... ? ठहरिए, मैं भी हीलवाले सेंडल पहनकर आती हूं... ।' और वह भागकर कमरे में गयी। शायद, उसकी इसी आदत ने उसे कैरियरिस्ट बना दिया था।

जब वह हीलवाले सेंडल पहने हुए मेरे साथ रॉक गार्डन में टहल रही थी, तो वह अत्यंत प्रसन्न थी। उसने बताया था कि कोर्स समाप्त

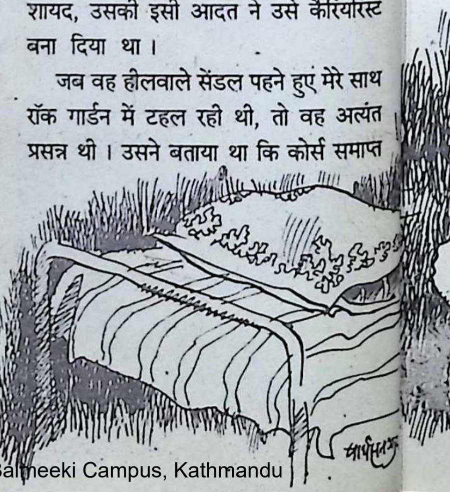

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होने में केवल तीन महीने ही शेष हैं। फिर लुधियाना लौट जाना है। तब मिलने में सुविधा रहेगी।

मुझे अगले दिन लौटना था। जब मैंने उससे कहा, 'चल, तुम्हें भी ले चलूं।' तो वह बिना किसी संकोच के तैयार हो गयी। अगले दिन रविवार था। उसने अपनी रूममेट को एक दिन की छुट्टी का आवेदन-पत्र थमाया और तैयार होने लगी, तो उसकी रूममट ने कहा, 'बहुत चाव है तुम्हें...जैसे तुम्हारा गौना जा रहा हो।'

'चुप, इस तरह शोर नहीं किया करते। रवि के साथ इस तरह चलने का अवसर रोज-रोज नहीं मिलेगा।'

हम बस स्टैंड की ओर जा रहे थे।

"कभी मैं तुम्हें इसी तरह ही ले जाऊंगा...।"

उसने मेरे कंधे पर हाथ रख लिया, बोली, "अब भी तो ले चले हो।"

"नहीं, इस तरह के जाने में और उस जाने

पुल पर पहुंचकर मैंने पीछे मुड़कर देखा, वह बिजली के खंबे के साथ लगी हुई अभी भी सिसक रही थी। फिर अगले क्षण उसने अपनी चूड़ियांभरी कलाइयां बिजली के खंबे पर दे मारी। चूड़ियों के टूटने की आवाज मेरे कानों तक भी पहुंची। टूटी हुई चूड़ियां जैसे मेरे दिल को तोड़ गयी हों

में बहुत अंतर है।...तब तुम ने गुलाबी जोड़ा पहना होगा...कलाइयों में लाल चूड़ा, सजा-संवारा चेहरा और आंखों में एक विचित्र-सी प्रतीक्षा...।"

"बस करो, काफी प्यारी कविता है यह।" वह चुप हो गयी और फिर कहीं दूर देखती हुई

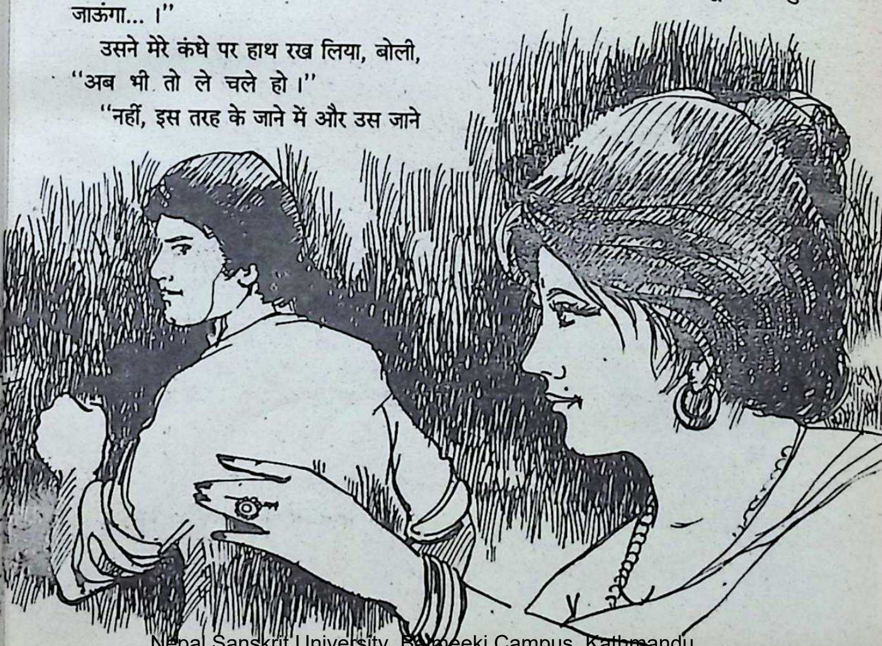

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बोली, "केवल दिखनेवाली वस्तुओं की ही कमी है...मेरा हृदय तो आपके साथ परणाया हुआ है...मुझे तो अब भी यही लग रहा है कि हमारा विवाह हो चुका है...सामाजिक स्वीकृति नहीं मिली तो क्या ?"

● ● ●

फिर मेरी बदली पठानकोट हो गयी ।...एक दिन मेरे घर के दरवाजे पर दस्तक हुई । दरवाजा खोला, तो सामने वह नजर आयी । उसने नीली जींस पहनी हुई थी और धूप का बड़ा-सा चश्मा लगा रखा था । मुसकराकर कहने लगी, "होश उड़ गये कि नहीं...अगर कहो, तो अंदर आ जाऊं... ?" मैं चुपचाप उसे देखता रहा । वह जल्दी से अंदर आ गयी और उसके पीछे मैं भी ।

"पानी का एक गिलास तो पिला दो," उसने चश्मा उतारते हुए कहा ।

"तू कहां से आ गयी ?"

"क्यों, मैं यहां नहीं आ सकती थी क्या ?"

सैंडल उतारकर वह चारपाई पर लेट गयी । उसने बताया कि वह यहां किसी कैंप में आयी

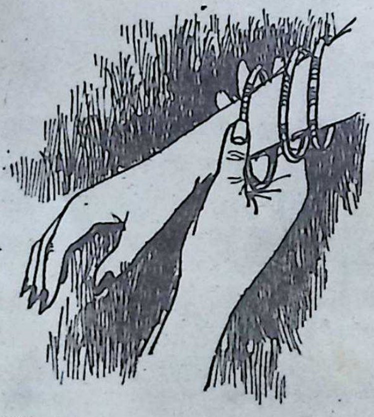

है । मैंने चाय बनायी और हम दोनों ने साथ बैठकर पी । फिर वह जाने के लिए यह कहती हुई उठ बैठी कि 'मैं चलती हूं । कैंप में सात बजे से पहले पहुंचना चाहिए । हाजरी लगनी है ।' और उसका वह कैंप सात दिन चला । किसी दिन दोपहर को, तो किसी दिन संध्या को, वह मेरे पास होती । अंतिम दिन वह कैंप से विदा होकर सुबह नौ बजे ही चली आयी । उसके कंधे पर एयर-बैग था ।

"आज दफतर मत जाइए...कोई फिल्म देखते हैं..." उसने कहा । जब भी मुझे कुछ करने के लिए कहती तो मैं खामोशी से करता जाता । 'किनारा' फिल्म देखते हुए वह सिसकने लगी—"शायद, मेरा भी यही अंत है... ।"

फिल्म देखने के बाद हमने ढाबे पर खाना खाया । शाम को शापिंग करते रहे । वह छोटी-मोटी चीजें खरीदती रहीं । मैं उसके साथ-साथ चलता रहा । रास्ते में यकायक मोहन मिल गया । पूछने लगा, "भाभीजी हैं ?" उसने चेहरा नीचे की ओर कर लिया और आगे बढ़ गयी । कमरे में पहुंचकर वह फिर रोने लगी ।

"मुझे नहीं मालूम, मैं आपके साथ क्यों चल रही हूं । तुम्हारे यार-दोस्त क्या सोचते होंगे ?"

"सोचना क्या है ? मोहन अभी कह रहा था कि माल अच्छा है, काबू करले ।"

"मुझे मर्दों की यही बात अच्छी नहीं लगती । लड़की को देखते ही उस पर अधिकार जमाना चाहते हैं ।"

रात में हम एक ही कमरे में थे । मेरे पास एक ही चारपाई थी । एक बिस्तर जमीन पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगा लिया । वह जमीन पर पड़े बिस्तर पर लेट गयी । मैंने कहा कि वह चारपाई पर सो जाए । मगर उसने कहा कि यह कैसे हो सकता है । आखिर में मुझे कहना ही पड़ा, "इस तरह तो हम दोनों ही नहीं सो पाएंगे....आ जा, तू भी चारपाई पर ही आ जा !"

"यह कैसे हो सकता है ?" उसने दृढ़ता से कहा ।

"ऐसी कोई बात नहीं है," मैंने उसे समझाया, परंतु व्यर्थ... ।

"नहीं, मैं यहीं ठीक हूं," उसने दूसरी ओर मुंह मोड़ते हुए कहा ।

"तू क्या सोचती है, अगर मेरे मन में मंदभावना हो, तो मैं क्या नीचे नहीं आ सकता ?"

"मुझे मालूम है, तुम इतने बुरे नहीं हो ।"

"फिर इधर ही आ जा ।"

वह आहिस्ता से उठी और मेरे पास लेट गयी ।

"अब क्यों आयी हो ?"

"मेरे दिल ने कहा कि तुम मुझे कुछ नहीं कह सकते । तुम एक वफादार दोस्त हो ।"

और फिर वह दूसरी ओर मुंह करके लेट गयी ।

उस रात हम दोनों में से कोई भी नहीं सो सका । जैसे हम दोनों की अलग-अलग चिता जलती रही हो । एक दीवार ऐसी थी, जिसे हम दोनों गिरा नहीं सके थे । जब वह सुबह के समय जागी, तो उसकी आंखें अंगारों की तरह जल रही थीं ।

फिर एक मुद्दत तक वह मुझ से नहीं मिली ।

मुझे इस बात का पता जरूर चलता रहा कि उसकी मां उसके लिए लड़का ढूंढ़ रही है । मेरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सगाई हो चुकी थी। तीन वर्ष के बाद एक बार फिर वह पठानकोट कैंप पर आयी थी। मैं जब दफ़्तर से लौट रहा था, तो उसने रिक्शा रोककर मुझे आवाज दी। फिर उसने रिक्शावाले को पैसे देकर चलता कर दिया। मैंने उसे बधाई दी और उसने मुझे। उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि मुखौटे ऐसे अवसरों के लिए कितने अनिवार्य होते हैं। फिर भी उसकी मुसकराहट का उत्तर मैंने मुसकराहट में ही दिया। उसकी इस मुसकराहट ने मेरे शरीर में एक मीठे-से कंपन का अहसास भर दिया। उसका एयर-बैग उसके कंधे पर ही था।

"तुम बहुत खुश हो न ? सुना है, अच्छे लड़के के साथ तेरी सगाई हो गयी है।"

जवाब में उसने मुसकराकर कहा, "सुना है, तुम्हें भी अच्छी लड़की मिल गयी है।"

"यह अंगूठी सगाई की है... ?" अब हम कमरे में बैठे थे। अंगूठी देखने का बहाना बनाकर उसने मेरा हाथ पकड़ लिया था।

"हां...." मैंने उसके गेहुंए चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"मुझे भी उन्होंने सगाई की अंगूठी भेजी है।" मुझे घूरते हुए उसने कहा। "मगर...अंगूठी से मेरी उंगली पर छाले पड़ गये हैं... ।"

"सच कहती हो !" मैंने छाले देखने के बहाने उसका हाथ पकड़ लिया। उसकी पतली-सी उंगलियों को मैं चूमना चाहता था, परंतु मुझे महसूस हुआ, जैसे अंगूठी मुझे अंगूठा दिखा रही हो। फिर मैं उसकी उंगलियों को अपने दोनों हाथों से दबाने लगा।

वह कितनी ही देर तक खाली नजरों से मेरी ओर देखती रही। फिर वातावरण की नीरवता को भंग करती हुई उसकी आवाज थिरक उठी, "तुम्हारी मंगेतर कैसी है ?"

"सांवली-सी है...मगर उसका कद-बुत मुझसे बहुत छोटा है... ।" मैंने उसे देखते हुए पूछा, "तेरा मंगेतर कैसा है ?"

"मेरे मंगेतर का भी कदबुत छोटा है।" कहकर उसने एक गहरी सांस ली।

मैं उसकी कही हुई अतीत की बात को याद करने लगा, जब वह कहा करती थी, 'रवि, जब हम कहीं जाते हैं, तो लोग हमें बड़ी हसरतभरी नजरों से देखते हैं। आपके साथ चलने का भी एक अलग ही मजा है...लोग कहते तो हैं, कितनी सुंदर जोड़ी है... ।'

फिर पता नहीं उसे क्या हुआ, कहने लगी, "हम इस तरह न करें...तुम अपनी मंगेतर का विवाह मेरे... ।"

"फिर ?"

"हां...फिर...फिर...मोतियों-जैसे अपने दांतों से वह अपना नीचे का ओंठ चबाती रही और फिर एक गहरी सांस लेकर खामोश हो गयी कि 'मनुष्य की हर इच्छा पूरी नहीं होती।'

"आओ, कहीं बाहर घूमने चलें, यहां तो दम घुटने लगा है।"

हम दोनों एक काफी हाऊस में जा बैठे। धीमा-सा प्रकाश जैसे किसी का मातम कर रहा हो।

"विवाह पर आओगे न !" वह जैसे मुझे घर बुलाने का निमंत्रण दे रही थी।

"देखूंगा— ।"

"क्या देखेंगे ?"

"यही...कि अगर मैं गया तो लोग क्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

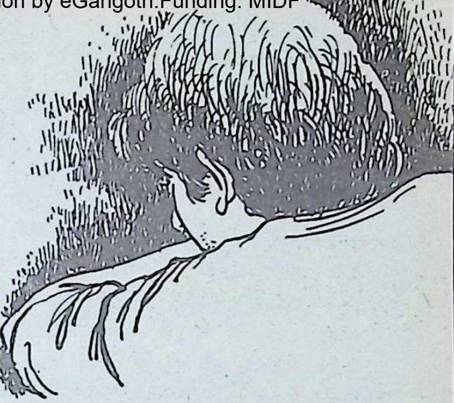

कहेंगे ?"

"तुम न आये, तो लोग क्या चुप रहेंगे ?"

"मैं तेरी डोली को जाते हुए न देख सकूंगा... ।"

"यह काम कठिन नहीं है...तुम डोली को अपनी समझ लेना...बस ।"

जब वह यह बात कह रही, तो उसकी आंखें आंसुओं से डबडबायी हुईं थीं ।

"आज मेरे साथ बाजार चलो ।" वह तुरंत उठ खड़ी हुई ।

'अब हम कब तक एक दूसरे से मिलते रहेंगे ?"

"शायद, आज आखिरी बार !"

"आखिरी बार...यह बात तो तुमने कई बार कही है ।"

"तुम्हें पता नहीं, आज क्या है ? आज करवा चौथ है ।"

"फिर ?"

"मैंने आज व्रत रखा हुआ है...इसीलिए इतनी दूर से चलकर तुम्हारे पास आयी हूं ।"

हम बाजार की ओर चल दिये । करवा चौथ के अवसर पर बाजार में खूब रौनक थी ।

"मुझे चूड़ियां पहनवा दो ।" वह एक दुकान के सामने रुककर कहने लगी ।

"चूड़ियां ?"

"हां, चूड़ियां...चूड़ियां सुहाग का प्रतीक होती है ।"

"मगर...मैं कैसे खरीद दूं...यह मेरा अधिकार तो नहीं ।" कहते हुए मैंने उसकी खाली कलाई की ओर देखा ।

"क्यों...आज तुम्हें ही पहनवानी पड़ेंगी...अगली साल का पता नहीं... ।"

उसकी आवाज कांप गयी, इसलिए वह और कुछ न कह सकी ।

"तू खुद ही देख ले ।"

"नहीं, ये चूड़ियां तो आपकी पसंद की ही पहननी हैं ।"

मैंने हरे रंग की ओर संकेत किया । उसने वही पहनवा लीं ।

"पैसे दे दो ।" उसने एक पत्नी की भांति आदेश दिया और मैंने एक आज्ञाकारी पति की भांति पैसे दे दिये ।

"आज ऐसा लग रहा है, जैसे मेरा विवाह हो चुका है...और अगर मैं आनेवाले दिनों को ध्यान में न रखूं, तो आज मैं बेहद खुश हूं ।"

एक बाग में प्रवेश करते ही उसने मेरा हाथ पकड़ लिया । अतीत की स्मृतियों के चिह्न मेरी आंखों के सामने साकार होने लगे ।

फिर हम वहीं पड़ी हुई एक बेंच पर बैठ गये । उसने अपना सर मेरी गोद में रख दिया और बेंच पर लेट गयी । जैसे वह अतीत की स्मृतियों को आज दफन करना चाहती हो ।

"काश ! जीवन आज की रात में ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाप्त हो जाए... ।"

"इस तरह कभी नहीं होता... ।"

"यह मेरी भटकन कितने जन्मों तक चलेगी ?" वह एक टूटी हुई मूर्ति की तरह पड़ी हुई बुदबुदा रही थी । और मैं अंधेरे में कुछ खोजने का प्रयास कर रहा था । यकायक उसने वृक्षों के बीच से उगते हुए चंद्रमा को देख लिया । तत्काल उठी और बैठ गयी, बोली, "चांद निकल आया है...अब मुझे चंद्रमा को अरध्य देना है... ।"

फिर हम बाजार की रोशनी में से गुजर रहे थे । उसने हलवाई की दुकान से कच्चा दूध लिया और चंद्रमा को अरध्य दे दिया ।

खामोश वातावरण में हम दोनों भी खामोशी से चल रहे थे । माल रोड भी सुनसान पड़ा था । फिर एक ऐसा दोराहा आया, जहां से हमें अगल-अलग रास्तों पर चलना था । उसे अपने कैंप में पहुंचना था । वह मेरे गले लगकर रोने लगी और मेरा बेजान-जैसा हाथ उसकी पीठ सहलाने लगा ।

कुछ क्षणों के बाद मैंने उसकी बाहें अपने गले से अलग कीं और बिना कुछ कहे पुल की ओर बढ़ गया । पुल पर पहुंचकर मैंने पीछे मुड़कर देखा, वह बिजली के खंबे के साथ लगी हुई अभी तक सिसक रही थी । फिर अगले क्षण उसने अपनी चूड़ियांभरी कलाइयां बिजली के खंबे पर दे मारीं । चूड़ियों के टूटने की आवाज मेरे कानों तक भी पहुंची । टूटी हुई चूड़ियां जैसे मेरे दिल को तोड़ गयी हों ।

अब मैं पुल की उतराई पर से उतर रहा था और वह अपने आपको घसीटती हुई-सी दूसरे पुल पर चढ़ रही थी ।

—४ न्यू प्रीत नगर, जालंधर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपहास को चुनौती ही समझा !

● उस्ताद विलायत खां

उस्ताद विलायत खां : सुप्रसिद्ध सितारवादक । उनके पिता थे सुप्रसिद्ध सितारवादक इनायत खां साहब । उनके देहांत के बाद बेगम इनायत खां अपने बच्चों—विलायत खां और इमरत खां के साथ अपने पिता के पास सहान चली आयीं । यहां विलायत खां ने अपने भाई के साथ अपने नाना बंदे हसन खां साहब से गायकी तथा सुरबहार की तालीम लीं । यहां भी रियाज पर विशेष ध्यान दिया जाता था । यहां प्रस्तुत है उस्ताद विलायत खां का एक संस्मरण :

मेरे दादाजी बहुत कठोर अनुशासनप्रिय शिक्षक थे । संगीत ही उनकी जिंदगी था । लंबी रेलयात्रा में वे प्लेटफार्म पर ही गलीचा बिछाकर रियाज प्रारंभ कर देते थे ।

एक बार की बात है । उनकी बेटी मृत्यु शैया पर थी और वे दूसरे कमरे में बैठे सितार पर रियाज कर रहे थे । इधर सितार के परदों पर अंगुलियां चल रहीं थी, उधर उनकी आंखों से अविरल आंसुओं की धारा बह रही थी । उनके रियाज का समय पूरा नहीं हुआ था । उनके लिए संगीत उनकी दुख्तर, उनकी संतति से भी अधिक था ।

मेरे दादाजी के समय बिजली नहीं थी । वे आठ मोटी-मोटी मोमबत्तियों के सहारे वक्त नापा करते थे ।

स्वयं मेरे पिताजी भी बेहद अनुशासनप्रिय थे । बचपन में मेरा ध्यान खेलकूद पर अधिक था । रियाज की ओर मैं खास ध्यान नहीं दे पाता था । एक दिन मेरे वालिद बहुत नाराज हुए । उन्होंने मुझे पीटा और कहने लगे कि जी करता है कि तुम्हारे हाथ तोड़ दूं । तब कम से कम दुनिया यही कहेगी कि इनायत खां का लड़का अपंग होने के कारण सितार नहीं बजा पाया । इस दिन की पिटाई का चिह्न अभी भी मेरे शरीर पर बना हुआ है ।

वालिद साहब के इंतकाल के पहले ही सितार पकड़ना और अंगुलियां चलाना आ गया था ।

पर उनके चले जाने के बाद मेरे सितारवादन के स्तर में गिरावट-सी आने लगी । मुझे नीचा भी दिखाया जाता, पर इसे मैं चुनौती के रूप में लेता और रियाज करने जुट जाता यह सिद्ध करने के लिए मैं भी सितार बजा सकता हूं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वर्ग की अप्सराएं

● मन्मथ नाथ गुप्त

स्वर्ग की अप्सराएं यौथ समाज की प्रसिद्ध स्त्रियां हैं। घृताची, मेनका, रंभा, पूर्वीचित्ति, स्वयंप्रभा, उर्वशी, मिश्रकेशी, दंडगौरी, वरूथिनी, गोपाली, सहजन्या, कुंभयोनि, प्रजागरा, चित्रसेना, चित्रलेखा, सहा, मधुस्वरा आदि अप्सराएं आदिम यौथ समाज की स्त्रियां थीं। यह द्रष्टव्य है कि इनका विवाह कहीं उल्लिखित नहीं। ये यथेच्छा विहार करती थीं, फिर भी इनका सम्मान किसी से कम नहीं था। ऋग्वेद में (१०/१२३/५) उनके परम व्योम में रहने की बात, आकाश-मार्ग में उनके पथ के चित्रित होने की बात (१०/१३६/६) तथा वशिष्ठ के अप्सरा की संतान होने की बात (ऋक ७/३३/१२) है। ऋग्वेद में अप्सराओं का संबंध गंधर्वों के अतिरिक्त मनुष्यों से भी वर्णित है (१०/९५/९)। देवताओं की सभा में ये बड़े चाव से बुलायी जाती थीं और देवतागण इनका उपयोग मनुष्यों को वश में करने के लिए या उन्हें अपने दायरे के अंदर रखने के लिए करते थे।

उर्वशी शब्द की व्युत्पत्ति

उर्वशी और अर्जुन के उपाख्यान से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि ये अप्सराएं सचमुच ही यौथसमाज की स्त्रियों की तरह थीं। वे इसकी परवाह नहीं करती थीं कि जिस व्यक्ति से ये संबंधित रही हैं, वे उनके कौन हैं ? नाम लेकर केवल एक ही अप्सरा, उर्वशी, के माता होने का उल्लेख ऋग्वेद में है। वशिष्ठ एक स्थान पर उर्वशी—पुत्र और दूसरे स्थान पर नाम न देकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केवल अप्सरा के पुत्र बताये गये हैं (ऋग्वेद७/३३/११-१२)। इससे श्री भगवतशरण उपाध्याय यह सही उपसंहार निकालते हैं कि यह उर्वशी अप्सरा ही होगी। एक अन्य अप्रत्याशित तरीके से यह बात साबित होती है कि उर्वशी अप्सरा मात्र है। उर्वशी शब्द उरू+अशी दो शब्द से बना है। या एक ने अपने निरूक्त में इस शब्द की व्युत्पत्तियों लिखी है कि उर्वशी उरू से पैदा हुई, इसलिए उसका नाम उर्वशी हुआ। कालिदास ने अपने विक्रमोर्वशीय नामक काव्य में उर्वशी को नारायण के उरू या जांघ से उत्पन्न माना है। पर लोकमान्य तिलक ने खाल्दिय आधार पर यह माना है कि उरू का अर्थ परलोक या जल से है। वैदिक साहित्य में उरूक्रम (ऋक १/९०/९) उरुक्षय (ऋक १०/११८/९) उरूगाय (ऋक १५४/१) शब्दों में उरू शब्द आया है। लोकमान्य तिलक का कहना है कि इन सभी क्षेत्रों में उरू का अर्थ यदि परलोक किया जाए, तो एक ही तरह घट जाता है। खाल्दिय साहित्य में जललोक तथा परलोक या निम्न लोक एक ही है। इस प्रकार यदि उर्वशी शब्द की व्युत्पत्ति की जाए तो उसका अर्थ अप-सरा (अंगरेजी शब्द निम्फ) का हो जाता है।

अर्जुन-उर्वशी उपाख्यान

अर्जुन जब भ्रमण करते हुए अपने पिता देवराज इंद्र के यहां गये, तो कई बार देवराज इंद्र ने यह देखा कि उनको जब भाइयों और माता की याद आ जाती, तो वह दुःख से विह्वल हो जाते थे। एक दिन की बात है कि इंद्र ने देखा कि अर्जुन निर्मिमेष नेत्रों से उर्वशी

सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं कथाकार मन्मथनाथ गुप्त ने पचास वर्षों के गहन अध्ययन के बाद एक शोधपूर्ण कृति की रचना की है। शीर्षक है—'नारी युग-युग में'। अपनी इस कृति में गुप्तजी ने स्त्री-पुरुषों के वैक्तिक-सामाजिक संबंधों का इतिहास प्रस्तुत किया है। यहां प्रस्तुत है—इस कृति के एक अध्याय का अंश

की ओर देख रहे हैं। उन्होंने चित्रसेन को एकांत में बुलाकर कहा कि 'तुम उर्वशी के पास जाकर कहो कि वह अर्जुन के पास जाए।' इस पर चित्रसेन ने उर्वशी के पास जाकर एक आदर्श बिचौलिए की तरह अर्जुन की तारीफ के पुल बांध दिये। उर्वशी ने सब कुछ सुनकर कहा, "तुमने अर्जुन के जिन गुणों का बयान किया, उन्हें सुनकर मैं पहले से ही उन पर मोहित हो चुकी हूं। मैं अर्जुन से प्रेम करती हूं और उन्हें पहले से वर चुकी हूं।...मैं अर्जुन की सेवा करूंगी।" तद्नुसार उर्वशी अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषण पहनकर सुगंध-स्नान कर मुसकराती हुई अर्जुन के स्थान पर जा पहुंची। अर्जुन मन ही मन अनेक प्रकार की शंका करने लगे। उन्होंने संकोचवश आंखें बंद कर लीं और ऐसे व्यवहार करने लगे, मानो वह उनकी पूजनीया हो। उर्वशी इधर-उधर की बात छोड़कर कहने लगी, "आपके पिता इंद्र और गंधर्व चित्रसेन की आज्ञा से मैं आपकी सेवा करने आयी हूं, केवल आज्ञा की बात नहीं, मैं आप पर मुग्ध भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हूं। बहुत दिनों से मैं लालसा कर रही थी, आप मुझे स्वीकार कीजिए।"

अर्जुन ने उत्तर दिया,—"देवी, मैंने निःसंदेह देवसभा में तुम्हें निर्निमेष नेत्रों से देखा था, पर मेरे मन में कोई बुरी भावना नहीं थी। मैं यही सोच रहा था कि पुरूवंश की यही आनंदमयी माता है। तुम्हें पहचानते ही मेरी आंखें आनंद से खिल उठीं, हंसी से मैं तुमको देख रहा था। तुम मेरे लिए बड़ी से बड़ी और मेरे पूर्वजों की जननी हो।"

उर्वशी ने इस पर जो कहा, वह द्रष्टव्य है। वह बोली, "वीर, हम अप्सराओं का किसी के साथ विवाह नहीं होता, हम स्वतंत्र हैं। इसलिए मुझे गुरुजन की पदवी पर बैठाना उचित नहीं है। तुम मुझ पर प्रसन्न हो जाओ मेरा त्याग न करो। और मेरा दुःख मिटाओ।"

अर्जुन ने कहा, "देवी, मैं तुमसे सत्य कह रहा हूं, जैसे कुंती, माद्री और इंद्र पत्नी शची मेरी माताएं हैं, वैसे ही तुम भी पुरूवंश की जननी होने के नाते मेरी पूजनीया माता हो। मैं तुम्हारे चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करता हूं।"

उर्वशी नाराज हो गयी। उसने अर्जुन को शाप दिया कि 'स्त्रियों में तुम्हें नर्तक होकर रहना पड़ेगा और सम्मानरहित होकर नपुंसक रूप में प्रसिद्ध होगे।'

उर्वशी के संबंध में यह द्रष्टव्य है कि यद्यपि वह पुत्रगमन के लिए उद्यत है, और वह इसमें कोई दोष नहीं देखती, फिर भी उसमें इतनी शक्ति है कि वह शाप दे देती है और अर्जुन को उस शाप को भोगना पड़ता है। किसी को शाप दिया जा सकता है या नहीं, शाप देने पर किसी का कुछ बन या बिगड़ सकता है या नहीं, यह प्रश्न यहां नहीं है। यहां प्रश्न केवल इतना ही है कि किसी भी कारण वह देवताओं से कम दरजे की नहीं समझी जाती थी। यौथ समाज में लोग उस युग की स्त्रियों के विषय में यही दृष्टिकोण रखते थे।

अप्सराओं के कार्य

इन अप्सराओं का एक काम तो यह था कि वे देवसभा में नृत्य-गीत आदि से देवताओं का मनोरंजन करती थीं। इसके अतिरिक्त उनका शरीर भी जिस किसी के साथ वे राजी हो जाएं, उसके कब्जे में रहता था। देवराज इंद्र ने जिस प्रकार उर्वशी को अर्जुन के यहां जाने का हुक्म दिया, उससे यह पता चलता है कि अतिथियों का यौन-सत्कार भी अप्सराओं के द्वारा कराया जाता था।

स्त्री देकर अतिथि सेवा

बाद के युग में जब स्त्री संपूर्ण रूप से पुरुष की संपत्ति हो गयी, उस समय तो बहुत-सी जातियों में अतिथि सत्कार के लिए स्त्रियों को अतिथि की सेवा में भेजा जाता था। अमरीका की छिनुक जाति के संबंध में यह कहा जाता है कि वे अतिथि की सेवा में अपने घर की श्रेष्ठ कन्या को और उसके अभाव में किसी अन्य स्त्री को भेज देना बहुत ही ऊंचे दरजे का कर्तव्य समझते थे। इसी प्रकार चुकची जाति के संबंध में भी यह ज्ञात है कि वे अतिथि के सामने अपनी स्त्री को ही नहीं बल्कि कन्या को भी पेश कर देते थे।

कप्तान लायंस और सर जॉन लवक एस्कीमो जाति, कमस्कटका के निवासियों और कालमुख लोगों के संबंध में भी अतिथि-सेवा का ब्यौरा लिखा है। हर्बर्ट स्पेंसर ने अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'डिस्क्रिप्टिव सोशियालॉजी' नामक ग्रंथ में प्लस और पैलेस भ्रमण-वृतांत से लेकर इस प्रकार की बहुत-सी कहानियां दी हैं। (नारी का मूल्य-शरतचंद्र चटर्जी पृ १५)

विल्वमंगल भक्तिमूलक नाटक में भी इस प्रकार लिखा है कि एक वणिक अतिथि सेवा में स्त्री पेश कर देता है। अतिथि ने आकर स्त्री मांगी। इस पर वणिक अपनी स्त्री से कहता है उसने तुम्हें मांगा है और तुम भी मेरी स्थावर तथा अस्थावर संपत्ति में ही हो, इत्यादि। राबर्टसन स्मिथ ने लिखा है कि प्राक मुहम्मद युग के अरब में अतिथि को स्त्री-दान की प्रथा थी। कभी-कभी इसका उद्देश्य अच्छी संतान प्राप्त करना होता था अर्थात् इसका स्वरूप नियोग या यहूदियों में वैध 'लेविरेट'—जैसा होता था।

महाभारत का उदाहरण

महाभारत में एक कथा ऐसी है, जिससे ज्ञात होता है कि अतिथि की सेवा में पत्नी भेजना उचित समझा जाता था। सुदर्शन अपनी पत्नी ओघवती के साथ रहते थे। सुदर्शन ने ओघवती से कह रखा था कि अतिथि से कभी कोई चीज इनकार न करना। एक दिन सुदर्शन समिधा लाने के लिए बाहर गये हुए थे। उस समय एक अतिथि आया और ओघवती ने विधिवत उसका आदर-सत्कार किया और पूछा, 'कहिए किस प्रकार आपका प्रिय किया जाए।' इस पर अतिथि ने कहा 'मुझे तुम्हीं प्रिय लग रही हो, अपना शरीर-दान देकर अपना प्रिय दान करो।' ओघवती ने बहुत कुछ समझाया, पर अतिथि नहीं माना, तब उसने लजाते-लजाते, 'हां' कहकर उस अतिथि का कथन स्वीकार किया। थोड़ी देर बाद सुदर्शन लौटे और अपनी पत्नी का नाम लेकर पुकारते रहे, पर वहां कौन जवाब देता क्योंकि वह अपने को दूषित मान रही थी। आश्रम के भीतर बैठे हुए ब्राह्मण ने कहा, 'यह सुमुखी मेरी सेवा में उपस्थित है, तुम अपना काम करो।' इस पर सुदर्शन ने हंसते हंसते कहा, 'विप्रवर आप अपनी इच्छा पूर्ण कीजिए। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि अतिथि-सत्कार हो रहा है।' यहां भारतकार ने इसके बाद कथा को यों बदल दिया कि अतिथि के रूप में स्वयं धर्मराज थे और वे फौरन सुदर्शन को वरदान देने लगे। इस कथा का स्पष्ट आशय यह है कि किसी न किसी युग में स्त्री को अतिथि के लिए देना न केवल असभ्य देशों में बल्कि भारत में भी उचित समझा जाता था। वह यौथयुग के संबंध का अवशेष था, इसमें संदेह नहीं।

जौनसार बावर में

जौनसार बावर में खासा जाति में न केवल अतिथि को कन्या देकर संतुष्ट करने की प्रथा थी, बल्कि डॉक्टर मजूमदार ने सन १९४४ में लिखते हुए कहा है कि उस समय भी देहात में यह रिवाज था कि जिन अतिथियों को कन्या को लेने में इनकार नहीं है, वे उनके साथ रात्रिवास कर सकते हैं। राजपूताना, फिरोजपुर, सिरसा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में फैले हुए वौरिया कबीले के लोगों में यह प्रथा थी कि वे अपनी स्त्रियों को जिस किसी से मिलने देते थे। (फारच्यून ऑव प्रिमीटिव ट्राइब्स' पृ. १६३) उत्तर प्रदेश के करीब-करीब सब जिलों में नट व बेड़िया जाति के लोग देहातों में अपनी औरतों से पैसा कमाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपना कर-दायित्व कम करें

आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के अंतर्गत 15-वर्षीय सार्वजनिक भविष्य निधि में पूंजी निवेश करें ।

* एक वर्ष में एकमुश्त अथवा 12 किश्तों में कम से कम 100 रु० और अधिक से अधिक 60,000 रु० की पूंजी निवेश ।
* वर्ष 1986-87 के लिए 12% कर-मुक्त वार्षिक ब्याज ।
* ऋण तथा आंशिक धन निकालने की सुविधा ।
* अदालत की डिग्री से सुरक्षा ।
* स्वतंत्र व्यापार चलाने वालों के लिए एक आदर्श योजना ।
* आश्रित पत्नी और बच्चों के नाम में निवेशित पूंजी पर आयकर तथा सम्पदा कर में छूट ।
* खाते सभी प्रधान डाकघरों, भारतीय स्टेट बैंक की शाखाओं या राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाओं में खोले जा सकते हैं ।
* निवेशित पूंजी पर सम्पदा कर से छूट 6 माह तक पूंजी निवेश रहने की शर्त अब लागू नहीं होती है ।

राष्ट्रीय बचत संगठन
भारत सरकार, वित्त मंत्रालय

डीएवीपी 86/160

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे, यह तो सभी को पता है। अतिथि को स्त्री देने के साथ पैसा देने का संबंध होते ही वह वेश्यावृत्ति हो गयी।

इस प्रकार बहुत से सूत्रों में से एक सूत्र से वेश्यावृत्ति की कैसे उत्पत्ति हुई, यह समझ में आती है। ब्रिटिश युग में छावनियों के पास रहनेवाले इस प्रकार के कबीलों में अकसर वेश्यावृत्ति बहुत जोरों पर थी। इनमें अतिथि को कन्यादान के रूप में जो प्रथा थी, उसके इस प्रकार विस्तार हो जाने से कबीले के जीवन में बहुत परिवर्तन हो गया।

अप्सराओं का विविध उपयोग

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो अप्सराओं में भी कई सोपान हुए होंगे। एक तो वह जब वे देवताओं की यौथ स्त्रियां रही होंगी, दूसरे सोपान में स्त्रियां भी रहीं और अप्सराएं भी रहीं। अब इनसे अपने मनोविनोद के अतिरिक्त अतिथियों के मनोविनोद तथा राजकार्य में उपयोग भी होने लगा। अर्थात् देवताओं के राज्य की रक्षा के लिए उनके रूप—लावण्य का उपयोग होने लगा।

अकसर हम पुराणों में अप्सराओं की कहानियां पाते हैं। उनमें उनके इसी रूप का उल्लेख है।

—ई-१४ ईस्ट निजामुदीन,
नयी दिल्ली

ज्ञान-गंगा

यावद् वित्तोपार्जनसक्तस्तावत् निजपरिवारो रक्तः।

(भज गोविन्दम् ५)

मनुष्य जब तक धन के उपार्जन में समर्थ होता है, तभी तक उसका परिवार उससे प्रसन्न रहता है।

चित्तनदी नाम उभयतोवाहिनी, वहति पापाय च वहति पुण्याय च।

(योगवाशिष्ठ १६/२५)

यह चित्त एक नदी है, जो दोनों ओर बहती है—पाप की ओर भी और पुण्य की ओर भी।

मूले सति हि सिध्यन्ति गुणाः सर्वे फलोदयाः।

(वाल्मीकि रामायण ४/६५/२५)

मनुष्य के अंदर मौलिक संस्कार होने पर ही उसकी गुण सिद्ध एवं फलप्रद होते हैं।

सर्पोऽग्निर्दुर्जनो राजा जामाता भगिनीसुतः।
रोगः शत्रुनविमान्योऽप्यल्प इत्युपचारितः॥

(शुक्रनीतिः ३/१०६)

रोग, शत्रु ये सब छोटे अर्थात् बालक या हीन हैं, इस खयाल से कभी उनका तिरस्कार या उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

यश्च पूर्वं प्रमाद्य पश्चात् स न प्रमाद्यति।
स इमं लोकं प्रभासयत्येभ्रान्मुक्त इव चन्द्रमा॥

(उत्तराध्ययन २३/५३)

कषायों को अग्नि कहा गया है। उसे बुझाने के लिए ज्ञान, शील और तप शीतल जल है।

दीयमानं हि नाऽपैति भूय एवाऽभिवर्तते।

(स्कन्दपुराण कौमारीखण्ड २/६१)

जो कुछ दिया जाता है वह घटता नहीं है बल्कि उससे भी अधिक बढ़ता है।

अनुत्सेकः खलु विक्रमालंकारः।

(सोमदेवनीतिवाक्यामृतम् ५/२२)

नम्रता पराक्रम का अलंकार है।

—महर्षि कुमार पाण्डेय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईश्वर अगले जन्म में मनुष्य योनि न दे !

● लाल प्रदुम्न सिंह

मैं अपने जीवन के लगभग चौवन पचपन वर्ष विभिन्न न्यायालयों में बिता चुका हूं। इनमें से करीब पंद्रह वर्ष सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ. कैलाश नाथ काटजू के सानिध्य में बीते। आज मैं अस्सी वर्ष का हो रहा हूं। कभी-कभी बीते दिनों की यादें आ जाती हैं। यहां ऐसी ही कुछ यादें हैं।

न्यायालयों के जीवन में एक व्यक्ति को एक साथ तीन प्रकार के लोगों से काम पड़ता है। एक तो न्यायाधीश, जिसके संरक्षण में सब कार्य होता है। दूसरा साथी अभिभाषक, जो पक्ष में या विरोध में साथ काम करता है। तीसरा मुवक्किल, जिससे एक वकील का पेट चलता है। इन तीनों के संबंध में आज जब मैं पचपन साल के अंतराल में विचार करता हूं तो समझ में नहीं आता है कि किसको भूलूं, किसको याद करूं। वर्तमान समय में पेट का सवाल सबसे महत्त्वपूर्ण हो गया है। इसलिए मैं सबसे पहले अपने मुवक्किलों का विवरण दूंगा।

सबसे पहले जिनके संपर्क में मैं आया, वह थे राजा रामसिंह। शंकरगढ़ (जिला इलाहाबाद) के राजा। विलक्षण प्रतिभा और चरित्र के धनी व्यक्ति थे। उनकी पढ़ाई-लिखाई दसवीं क्लास की थी, पर अनुभव के बड़े धनी थे। वे हम पर पूर्ण विश्वास करते थे तथा उनकी रियासत का सभी कार्य मुझे ही करना पड़ता था। वे रीवां रियासत में भी बड़े ओहदों पर रहे। वहां से अवकाश पाने के बाद वे इलाहाबाद जिला बोर्ड के चेयरमैन चुने गये। उस वक्त उनकी उम्र करीब ७५ साल की थी। लोगों ने यह सोचकर कि वृद्ध हैं, उनकी चेयरमैनी में मनमानी करने का मौका मिलेगा किंतु हुआ उलटा। एक प्रसंग। जिला बोर्ड के एक इंजीनियर ने एक सड़क बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसका एस्टिमेट २० हजार रु. का था। राजा साहब ने कहा कि 'एस्टिमेट ज्यादा है। थोड़ा कम कीजिए।' वह इंजीनियर पंद्रह हजार का बनाकर ले आये। अब राजा साहब ने कहा, 'जिला बोर्ड के बहुत काम हैं, यदि सड़क न बने तो क्या नुकसान है ?' इंजीनियर घबरा

लाल प्रदुम्न सिंह : एक प्रख्यात वकील, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एवं मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग के भूतपूर्व सदस्य। प्रस्तुत हैं उनके कुछ संस्मरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"जब कोई मुवक्किल राय लेने आये तो वकील को जज के माफिक राय देनी चाहिए। इस पर भी यदि वह न माने तो फिर वकील की हैसियत से उसकी जितनी मदद कर सकते हो, करनी चाहिए।"

—स्व. डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू

गये। उन्होंने सोचा, अब तो खाली हाथ रहना पड़ेगा। अतः वे १० हजार रु. का एस्टिमेट बनाकर लाये। राजा साहब ने हंसकर यह कहते हुए स्वीकृति दी कि इसमें दो हजार गुंजाइश आपके लिए दी है।

राजा की आमदनी में सबका हिस्सा

राजा साहब बड़ी संख्या में नौकर रखते थे। उन्हें पशु-पक्षी पालने का भी शौक था। अपने कार्यालय में पेपरवेटों के साथ शंकरगढ़ के सफेद पत्थर भी रखते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा था, 'राजा की आमदनी में सबका हिस्सा होता है। उन्हें साधारण नागरिक की तरह ही जीवन बिताना चाहिए, नहीं तो लोग व्यर्थ में ईर्ष्या से जल-भुन जाएंगे।'

उनके स्वर्गवास के समय एक अद्‌भुत घटना घटी। राजा साहब ने सैकड़ों कबूतर पाले थे। उनके स्वर्गवास के बाद वे कबूतर जो उड़े तो फिर लौटकर नहीं आये।

मैं दैया के राजा भगवतीप्रसाद सिंह के संपर्क में भी आया। वे दिवंगत हाईकोर्ट जज श्री एस. पी. सिंह एवं केंद्रीय वित्तमंत्री श्री विश्वनाथप्रताप सिंह के प्राकृतिक पिता थे। कार्यपटु, उद्यमी, साथ ही भाग्यशाली भी। वे अत्यंत मृदुभाषी थे। मैं उनकी बहन की ओर से उनके विरुद्ध वकील था, पर राजा साहब ने इस बात का कभी खयाल नहीं किया। वे इलाहाबाद जिला बोर्ड के बारह वर्षों तक चेयरमैन रहे, पर इस बीच उन्होंने मुझे बोर्ड के वकील के पद से नहीं हटाया।

राजा साहब में गजब का आत्मविश्वास था। एक बार की बात है। मुकदमेबाजी के कारण उनकी आर्थिक दशा क्षीण हो गयी थी। फिर भी वे एक उपचुनाव में खड़े हो गये। उन्होंने शंकरगढ़ के लिए मुझे एजेंट बनाया।

चुनाव के एक दिन पूर्व उन्होंने सारे एजेंटों को बुलवाया। मैं भी गया। लगभग सौ एजेंट एकत्र हुए। राजा साहब सबसे हंसकर बातें करते रहे। साथ ही बीच-बीच में कहते भी जाते, 'कमबख्त मुख़्त्यार तिजोरी की चाबी लेकर ही जाने कहां चला गया है।

एजेंटों को व्यवस्था आदि के लिए रुपया देने में विलंब हो रहा था। काफी देर हो गयी तो उन्होंने मुझे संकेत से एकांत में बुलवाया और कहा, 'लाल साहब, अब आप ही रुपये का इंतजाम कीजिए। लगता है, मुख़्त्यार इंतजाम नहीं कर सका। तभी नहीं लौटा है।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर तेज बहादुर सप्रू

मैं आश्चर्यचकित रह गया। कितना आत्मविश्वास है राजा साहब में। कल चुनाव है। पास में पर्याप्त रुपया नहीं है। फिर भी माथे पर कोई शिकन नहीं। वही प्रसन्नता। वही उल्लास ! मैंने विनम्र भाव से कहा, 'ठीक है, राजा साहब ! प्रयत्न करता हूं।'

मैं वहां से निकल पड़ा। थोड़ी दूर ही गया था कि राजा साहब का बुलावा आया। लौटा तो पता चला कि मुख्त्यार रुपयों का प्रबंध कर लाया था। राजा साहब हंस-हंसकर दरियादिली से रुपया एजेंटों में बांट रहे थे।

कोई भांप भी नहीं सकता था कि वे आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहे थे।

ईमानदार सब रजिस्ट्रार

श्री विश्वनाथप्रताप सिंह के गोद जाने का किस्सा भी अनोखा है। मेरे सीनियर वकील मुंशी नवल किशोर ने उनका गोदनामा तैयार किया था। उसमें मैं भी एक गवाह था। मांडा के राजा साहब दांपत्य जीवन से दुःखी होकर एकांत जीवन बिता रहे थे ! गोदनामा रजिस्ट्री करने के लिए एक सब रजिस्ट्रार आये थे। रजवाड़ों में प्रचलित परिपाटी के अनुसार उन्हें इनाम के बतौर पांच सौ रुपये दिये जाने लगे लेकिन उन्होंने यह राशि लेने से इनकार कर दिया। उनके इस व्यवहार से हम सबको बेहद आश्चर्य हुआ, क्योंकि आम तौर पर विश्वास है कि ऐसे लोग बिना कुछ लिये काम ही नहीं करते। निस्संदेह वह सब रजिस्ट्रार ईमानदार अधिकारी था। सोचता हूं कि क्या इस अधिकारी के ईमानदारी से भरे बरताव ने भी विश्वनाथ प्रताप सिंह के मानस पर प्रभाव डाला था !

पहला मुकदमा

मैंने पहला मुकदमा राजा मोतीचंद्र के विरुद्ध एक गरीब काश्तकार के वकील की बतौर लड़ा था। किस्सा यह था कि नजराने में राजा मोतीचंद्र ने कुछ जमीन देने का वायदा किया था और नजराने के एवज में केवल रुक्का लिखा था। इसी आधार पर मुकदमा दायर किया गया था। मेरे मुवक्किल का कहना था कि पांच एकड़ जमीन देने का 'मुवाहिदा' हुआ था, लेकिन बाद में केवल तीन एकड़ जमीन दी गयी। इसलिए रुक्के के अनुसार रुपया नहीं दिया गया। प्रतिपक्ष के गवाहों ने स्वीकार किया कि उनके सामने कोई लेन-देन नहीं हुआ। नजराने की बात चल रही थी। पता नहीं, जमीन दी गयी या नहीं। मेरे गरीब मुवक्किल के पास कोई गवाह न था। अदालत ने अपना निर्णय मेरे मुवक्किल के पक्ष में दिया। इससे मेरा भी प्रचार हुआ और मुझे देहात से भी मुकदमे मिलने लगे।

वकील के लिए मुवक्किल 'अन्नदाता' की भांति होता है। उसके बाद साथ में कार्य करनेवाले वकीलों का नंबर आता है। उनसे वह काफी-कुछ सीखता है।

सर तेज बहादुर सप्रू : कोई लालच नहीं

उन दिनों हाईकोर्ट में सर तेज बहादुर सप्रू, डॉ. कैलाशनाथ काटजू, श्री गोपाल प्रसाद पाठक आदि का बड़ा नाम था। इन सबकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी-अपनी विशेषताएं थीं। सर तेज बहादुर की विद्वत्ता, डॉ. काटजू की सूझबूझ और डॉ. प्यारेलाल की वाक्‌-पटुता सुनने लायक थी।

सर तेज बहादुर सप्रू संबंधी एक प्रसंग—

राजा शंकरगढ़ का एक मुकदमा उनके सहोदर भाई से चल रहा था। इसी सिलसिले में मुझे भी उनकी राय लेने के लिए भेजा गया था। सर तेज बहादुर सप्रू मुख्त्यार से कुछ दस्तावेज लाने के लिए कह रहे थे और वे वायदा करने पर भी उन्हें नहीं लाते थे। उस दिन भी यही हुआ। दस्तावेज न मिलने पर सर तेज बहादुर सप्रू क्रोधित हो उठे। उन्होंने तत्काल स्टेनोग्राफर को बुलाकर राजा शंकरगढ़ के नाम पत्र लिखवाया कि चूंकि आपका मुख्त्यार बार-बार कहने पर भी दस्तावेज नहीं ला रहा है। अतः आपके मुकदमे से भविष्य में मैं कोई संबंध नहीं रखूंगा।'

पत्र मिलते ही राजा साहब दौड़े-दौड़े आये, पर सर तेज बहादुर सप्रू ने मुकदमा लड़ने से इनकार कर दिया।

सन्‌ ४२ में रीवां महाराजा गुलाब सिंह की जांच के लिए कमीशन की नियुक्ति हुई, जिसमें सर तेजबहादुर सप्रू, सर जैकर व सर तेज बहादुर सप्रू के पुत्र वकील थे। सर तेज और सर जैकर की फीस पंद्रह सौ रुपये रोज थी। अन्य लोगों की फीस तीन सौ रुपये रोज थी। मुकदमा इंदौर में चल रहा था। मैं महाराजा की तरफ से पैरवी के चार्ज में था। सबूत खत्म होने पर मैं सफाई के एक सौ पचास गवाहों की लिस्ट सर तेज बहादुर सप्रू के पास ले गया। हर एक गवाह के सामने संक्षेप में लिखा गया कि वे क्या कहेंगे या क्या बयान देंगे। मैं समझता था कि सर तेज बहादुर सप्रू को १५०० रुपये प्रतिदिन मय सब खर्च के मिलता था, अतः वह इस मुकदमे को बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। सर तेज बहादुर सप्रू लिस्ट देखने के बाद कुछ देर तक विचारते रहे और फिर कहा, "कोई सफाई देनी है। सबूत की तरफ से मुकदमा साबित नहीं है।" मैं अवाक्‌ रह गया। उन्हें फीस का कोई लालच नहीं था।

डॉ. काटजू : हमेशा सही राय

डॉ. काटजू हाईकोर्ट के यशस्वी वकीलों में से थे। इसके अतिरिक्त उनका हिंदू शास्त्रों का गहन अध्ययन था। वे गरीब विद्यार्थियों की चुपके से भरपूर मदद करते थे। जमीदारी संबंधी एक मुकदमे में जब सहादत का समय आया तो गवाह दोनों पक्षों का भला चाहने लगे और सुलह के लिए दबाव डालने लगे। मुझे राजा साहब ने मुकदमे की सफलता के संबंध में डॉ. काटजू से राय लेने भेजा। उन्होंने मुझसे कहा कि 'अपने पक्ष में जो कानूनी राय लिखकर दे सकते हो दो। तभी मैं राय दूंगा।' मैंने बड़ी मेहनत से सब लिखा और आशा करता रहा कि डॉ. साहब मेरे व अपने हित में मुकदमा लड़ने की राय देंगे। किंतु सब देखने के बाद वे हंसकर बोले, 'नवीनतम प्रिवी कौंसिल की जो नजीर आयी है, वह तुम्हारे विरुद्ध है। जल्द से जल्द सुलह करना। दूसरे जब पक्षकार सुलह

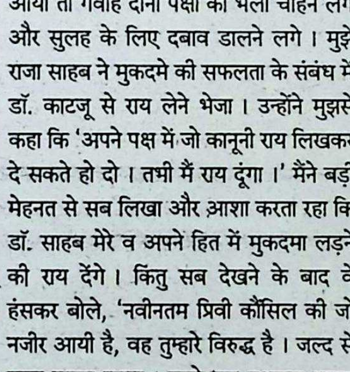

डॉ. कैलाशनाथ काटजू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नये रूप-रंग और कलेवर में दिनों-दिन लोकप्रियता की
ओर अग्रसर

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

एक समग्र साप्ताहिक

'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में वह सब कुछ है, जिसे प्रबुद्ध ही नहीं, आम पाठक भी पढ़ना चाहता है।

0 ताजा से ताजा राजनीतिक घटनाओं का सम्यक विश्लेषण

0 विचारोत्तेजक लेख 0 रोचक कहानियां

0 अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उपन्यास धारावाहिक रूप में

0 'विश्व चिंतन' के अंतर्गत महान मनीषियों के उद्बोधक विचार, जीवन-वृत्त

0 नये-नये स्तंभ : शिकायतें, स्वास्थ्य चर्चा, युवा शक्ति : पीढ़ियां आमने-सामने, आपके कानूनी अधिकार और दायित्व इत्यादि

0 विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, फिल्म, खेल और प्रत्येक विषय से जुड़ी सामग्री—क्या कुछ नहीं है 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में ?

0 एक और धारावाहिक चित्रकथा : बुद्धि की परछाइयां

आपके संपूर्ण परिवार की पहली पसंद

साप्ताहिक हिंदुस्तान

अब 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' का संपादन कर रहे हैं—

राजेन्द्र अवस्थी

विख्यात कथाकार एवं 'कादम्बिनी'-संपादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की बातें करें तो वकील को मदद करना चाहिए ।' इसके बाद डॉ. साहब ने स्टेनो को बुलाया और सुलह करने की राय देने लगे । मैंने कहा कि यह राय लिखवाइए कि मुकदमा बहुत अच्छा है और लड़ने लायक है ।

इस पर वे नाराज होकर मुझे समझाने लगे कि 'जब कोई मुवक्किल राय लेने के लिए आये तो वकील को जज के माफिक राय देना चाहिए । इस पर भी यदि वह न माने तो फिर उसके वकील की हैसियत से उसकी जितनी मदद कर सकते हो, करनी चाहिए ।' मैंने कहा कि 'मैं यही करूंगा । किंतु यदि यह राय दूसरे पक्ष को मिल गयी तो मेरे मुवक्किल मुझ पर ही नहीं, आप पर भी शक करने लगेंगे ।' इस पर उन्होंने कहा कि 'जैसा समझो, तुम लिख लो । मैं दस्तखत कर दूंगा ।'

मैंने राजा साहब को उनकी असली राय व लिखित राय भी बता दी ।

राजा साहब दौड़कर डॉक्टर काटजू साहब के पास गये और उनसे वास्तविकता जाननी चाही । डॉक्टर काटजू ने स्वीकार किया कि मौखिक रूप से उन्होंने समझौता करने की सलाह दी थी । उन्हें ठीक बताया गया है ।

मेरे इस कार्य से डॉ. काटजू इतना प्रभावित हुए कि वे जब म्युनिसिपल बोर्ड, इलाहाबाद के चेयरमैन हुए तो मुझे उसका स्थायी वकील बना दिया । फिर जब वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हुए तो मुझे लोकसेवा आयोग का सदस्य नियुक्त किया । मैं डॉक्टर काटजू के बहुत नजदीक आ गया था । वे मध्यप्रदेश के तत्कालीन राजनीतिज्ञों से बहुत दुखी थे । वे एक संत की भांति सब पर विश्वास करते थे किंतु मध्यप्रदेश के राजनीतिक लोग उनकी ईमानदारी व कार्यपटुता से इतने असंतुष्ट हो गये थे कि उनको विधान क्षेत्र से हराकर छुटकारा पाया गया ।

डॉक्टर काटजू के स्वर्गवास के एक माह पूर्व मैं इलाहाबाद में उनसे मिला था । उन्होंने हंसकर कहा था, 'मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि अब ईश्वर दूसरा जन्म दे तो मनुष्य न बनाये और चाहे जो बना दे ।'

मैंने पूछा, 'आप ऐसा कहें, आश्चर्य है । मनुष्य योनि तो देव योनि से भी अच्छी मानी जाती है ।' उन्होंने हंसकर कहा, 'शास्त्र तो ऐसा कहते हैं किंतु मनुष्य ऐसा प्राणी है, जो सोचता कुछ है, कहता कुछ है और करता कुछ है । वह करता कुछ दूसरा ही है, जैसा मैंने मध्यप्रदेश में देखा । पशु जो करता है वह खुल्लमखुल्ला करता है । किंतु मनुष्य के लिए यह नहीं कहा जा सकता ।'

—हरदर्शन सदन, व्यंकट रोड, रीवां

समुद्रमार्ग से भारत पहुंचनेवाला सर्वप्रथम यूरोप का निवासी सन १४६९ में आया था । उसका नाम था अफानासी निकीतान और वह रूसी था । उसके चालीस वर्ष बाद वास्को डिगमा आया था ।

☆

भारत में सर्वप्रथम सेना-गदर सन १७५७ में हुआ और अंगरेजी सेना ने किया । इससे पहले हिंदुस्तानी सिपाहियों ने संगठित सेना-विद्रोह नहीं देखा था । यह विद्रोह पलाशी के युद्ध के बाद लूट के माल के बंटवारे को लेकर हुआ था ।

☆

प्रसिद्ध गायक शंकर राव पंडित के बारे में कहा जाता है कि वे अपनी सिद्ध तान लेते थे तो दीपक की लौ तेज हो जाती थी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेगम समरू के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन उनके प्रारंभिक जीवन के संबंध में विशेष लिखित सामग्री नहीं मिलती । यदि किसी ने कुछ लिखा भी है तो गलत है । यहां प्रस्तुत है—बेगम समरू के संबंध में कुछ नये तथ्य ।

बेगम समरू : कुछ नये तथ्य

● राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह

महाकवि अकबर ने एक बार ऐनी बेसेंट के संबंध में लिखा था, 'अब मिसेज बेसेंट नज़्मों में कहानी बन गयीं ।' यही कुछ बेगम समरू के बारे में भी कहा जा सकता है । मुगल साम्राज्य के ढहते हुए दिनों के इतिहास में बेगम समरू को नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता । वह एक अद्भुत महिला थीं, परम सुंदरी होने के साथ-साथ एक उच्च कोटि की कुशाग्र बुद्धि, दूरंदेशी, कूटनीति में पारंगत और समय आने पर एक सख्त शासिका भी । कितेकलाम न होगा यहां यह बताना कि सन् १७९७ में फ्रेंकलिन नामक अंगरेज उनसे मिला था । उनकी उस समय अधेड़ अवस्था थी । फिर भी उनका व्यक्तित्व कैसा था, इसके संबंध में उसने अपनी डायरी में जो लिखा था, वह इस प्रकार था, ' बेगम समरू की उम्र करीब पैंतालिस साल की होगी, नाटा कद, भरा हुआ बदन, गौर वर्ण, काली बड़ी और जीवित आंखें । बहुमूल्य कपड़ों की बनी हुई त्रुटिहीन पोशाक । हिंदुस्तानी तथा फारसी धड़ाके के साथ बोलती हैं । वह तथा उनकी बातें हृदयग्राही, विवेकपूर्ण तथा जोश से भरी हुई होती हैं ।'

यह उस समय की बात है जब बेगम ने इसलाम मजहब छोड़कर ईसाई धर्म को अंगीकार कर लिया था, यह शायद समरू के प्रभाव का फल था ।

बहरहाल, बेगम के संबंध में बहुतों ने लिखा है और काफी लिखा है, पर यह भी एक ताज्जुब की बात है कि उनके प्रारंभिक जीवन के संबंध में किसी ने कुछ नहीं लिखा है और यदि लिखा भी है तो गलत लिखा है । उनकी दृष्टि में बेगम के जीवन का इतिहास फकत उस समय से शुरू होता है, जब वह समरू से विवाह करके बेगम समरू कहलाने लगती हैं और अपने तूफानी जीवन का आरंभ करती हैं ।

पिछले दिनों मेरी मुलाकात उस परिवार की कुछ महिलाओं से हुई और हम काफी घनिष्ठ भी बन गये, जो उस परिवार की हैं, जिसमें अपनी षोडसी अवस्था में बेगम ब्याही गयी थीं । इस परिवार में कई ऐसे पुराने दस्तावेज पाये गये हैं, जिनसे ऐसा लगता है कि बेगम का निकाह बड़ी धूम-धाम के साथ उस परिवार में हुआ था ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

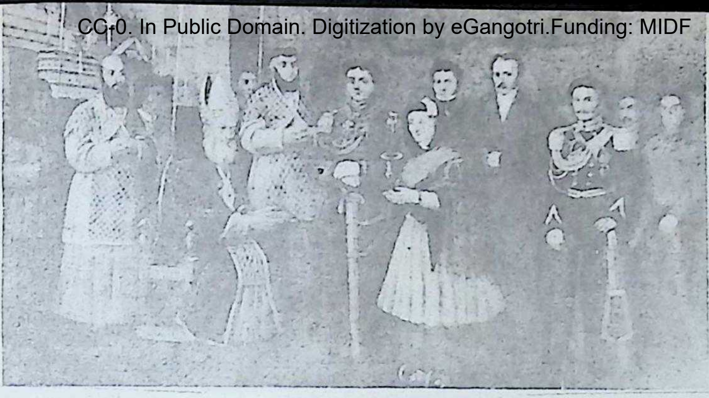

बिशप को 'युकरिस्ट' के लिए स्वर्णपात्र भेंट करतीं बेगम समरू । साथ में पादरी और अफसर

महत्त्वाकांक्षी बेगम

बेगम का जन्म गाजियाबाद से कुछ मील की दूरी पर स्थित दासनामसूरी नामक गांव में हुआ था—एक छोटे जमींदार परिवार में, जिनकी जमींदारी की आय लगभग ३५,००० रुपये सालाना थी और कुछ आम के बाग भी । उसके पिता ने एक कश्मीरी मुसलमान लड़की से शादी की थी (शायद इसी ने इस धारणा को जन्म दिया कि बेगम एक कश्मीरी तवायफ की बेटी थी) बेगम के कौमार्य अवस्था का नाम फातिमा था । वह बड़ी हुई और माता-पिता को उसके निकाह की चिंता हुई, वह चिंता दिन-ब-दिन बढ़ने लगी । बेगम के मायके में एक पुकार का नाम भी था और लोग इसी नाम से उन्हें संबोधित करते थे, 'अच्छी दीदी' । इस नाम को सार्थक करते हुए, पिता-माता की चिंता को दूर करने के उद्देश्य से फातिमा ने निकाह के मसले को हल खुद कर दिया—उसने सरधाना के एक नवाब जिनकी आमदनी जमींदारी से दो ढाई लाख रुपये सालाना की थी और मुगल बादशाह से उन्हें बजाफ़्ता नवाब का खिताब भी मिला था । उनकी मुलाकात दासनामसूरी में फातिमा के पिता के घर पर उससे हुई और फातिमा ने उन्हें फौरन आकृष्ट कर लिया । शादी आसानी के साथ नवाब साहब से हो गयी, पर सरधाना आकर वह बहुत खुश नहीं हुई । चूंकि वह नवाब साहब की छठी बेगम बनी । घर में नवाब खानदान में जैसे रहने की पुरानी परिपाटी थी, उसी परिपाटी के अनुसार उसे रहना पड़ा, मसलन नवाब साहब के वालदा से जब भी देखा-देखी होती, तब उन्हें फर्शी सलाम करना पड़ता तब तक उनके पास खड़ा रहना पड़ता, जब तक कि वे वहां से हट न जाएं । इस तरह दिन में करीब दर्जनों बार उसे फर्शी सलाम करने पड़ते थे—सास को नहीं, बड़ी सौतों को भी । फातिमा एक बड़ी महत्त्वाकांक्षिणी नारी थी, उसे यह कहां बर्दाश्त । फिर उसका एक सौतेला लड़का था जिसने उसके साथ छेड़खानियां शुरू कर दीं और उसे महबूबा बनाने की कोशिश में लग गया । बेगम को यह कतई मंजूर न हुआ । बोली, 'आप किस खानदान के हैं, इसे न भूलिए,' पर वह कब माननेवाला था और वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्हें तंग करता ही रहा। उसने उसके खिलाफ नवाब साहब के कान भरने शुरू कर दिये। और इन सब का नतीजा यह हुआ कि फातिमा आजीज होकर अपने मायके चली गयीं और वहां से कुछ दिनों बाद अपनी मां को साथ लेकर दिल्ली चली आयीं, जहां उसकी महत्वाकांक्षाओं के पूरे होने की सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं। मां के कहने पर उन्होंने संगीत और नृत्य की शिक्षाएं लीं, फिर तो सारी दिल्ली में उनके गाने की शोहरत हो गयी। वह अकसर शाम के वक्त लोगों को गाने—खासकर गजलें सुनाने लगीं और जो गाने सुनकर उपहार स्वरूप रुपये या अशर्फियां हाजिर करते, उन्हें वह ग्रहण भी करने लगीं। इस तरह उसके पास काफी धन इकट्ठा हो गया। उन दिनों वो चांदनी चौक के उस मकान के पीछे रहा करती थी जो आगे चलकर स्टेट बैंक की ब्रांच बनी। उन्हें चांदनी चौक इतना प्यारा था कि जब वह सरधने की रानी बनीं तब उसने समय-समय पर दिल्ली आकर रहने के लिए एक मनपसंद बड़ा-सा मकान भी बनाया, जो आज 'भगीरथ पैलेस' के नाम से मशहूर है।

दूसरी शादी

फातिमा ने काफी नाम कमा लिया बहुत से लोग नियमपूर्वक उनके गाने आने लगे, इन्हीं में एक फ्रांसीसी भी था, गजलों का बहुत शौक था और वही चलकर समरू के नाम से मशहूर हुआ। फ्रांसीसी नाम सोमब्रे था, पर चूंकि उसका बड़ा सौम्य था, उसके मित्र और पलटन सिपाही उसे समरू नाम से पुकारने लगे उसने एक दिन फातिमा से शादी का प्रस्ताव डाला, वह उससे प्रभावित थी और उस के तूफानी जीवन में हिस्सा बंटाने की महत्त्वाकांक्षा पूर्ण होने की उससे संभावना होती थी, अतएव उसने उनका विवाह प्र स्वीकार कर लिया। फातिमा की मां को भी मंजूर हुआ और दोनों के बीच शादी हो ग यूरोपिये इतिहासकार बेगम का जीवन-वृत्त से शुरू करते हैं।

फातिमा के गानों की शोहरत दिल्ली में इतनी फैल चुकी थी कि बहुत से लोग नियमपूर्वक उसके गाने सुनने आने लगे थे। इन्हीं में एक फ्रांसीसी भी था जिसे गजलों का बहुत शौक था और वही आगे चलकर समरू के नाम से मशहूर हुआ। एक दिन समरू ने फातिमा से शादी का प्रस्ताव कर डाला, वह उससे प्रभावित थी और उसने विवाह-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

मैंने सरधने के जिस नवाब परिवार का किया है, उसके कुछ लोगों से, जैसा कि कथित है, मेरी खासी जान-पहचान हो गयी दो भाईयों में बड़े भाई सपत्नीक पाकिस्तान पर पाकिस्तान चले गये, पर छोटे भाई यहं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गये। पाकिस्तान में बड़े नवाब साहब (अभी वो नवाब ही नाम से पुकारे जाते थे) तो रह गये, पर उनकी बीबी साहिबा का वहां दिल न लगा, खासकर इसलिए कि वहां पान कहां मयस्सर और पर्दे का बंधन भी था। अंत में उन्होंने पति से यह कहकर कि आप चाहें तो यहां रहें, मगर मैं नहीं रह सकती, मैं अपने वतन को लौट जाऊंगी और वह हिंदुस्तान लौट आयीं। आज वही सारी संपत्ति की देखरेख करती हैं पान का डिब्बा उनके हाथ से कभी अलग नहीं होता, वह पर्दानशीन भी रहीं। आमों के बाग और हर हफ़्ते लगनेवाले बैल हट्टे (बैलों का बाजार) से उनकी आय लाख डेढ़ लाख सालाना से कतई कम नहीं है।

बादशाह की देवी

बादशाह शाह आलम की मराठों के साथ आगरा की लड़ाई के समय पूरी ताकत के साथ बेगम ने मदद की तो शाह आलम ने खुश होकर आगरा से लेकर सरधना तक का इलाका बेगम को जागीर में दे दिया। बादशाह बेगम से इतने प्रसन्न हो गये थे कि वह उन्हें अजीज दुख्तर कहकर संबोधित करते थे जिसका अर्थ होता है—देवी। बेगम ने सरधना आकर कई बड़ी-बड़ी इमारतें बनवायीं और सबसे बड़ी चीज, एक चर्च बनवाया, जिसमें ईसा मसीह की मां 'मेरी' की एक बड़ी-सी संगमरमर की मूर्ति स्थापित करवायी। कहते हैं, इस मूर्ति का शुद्धिकरण स्वयं पोप ने अपने हाथों से किया था। मूर्ति इटली से बनकर आयी थी, मैं वहां जब भी गया हूं और उस मूर्ति के सामने कुछ देर खड़ा रहा हूं, तब एक बड़ी आंतरिक सुख शांति का अनुभव करता हूं। चर्च के अलावा

बेगम समरू : वृद्धावस्था का चित्र

बेगम ने एक बड़े-से पैलेस का भी निर्माण करवाया। उसके तीन हिस्से हैं जिनमें एक हिस्से को उन्होंने अपने पुराने ससुरालवालों को रहने के लिए दे दिया। आज भी वे अपना पुराना घर छोड़कर उसी में रह रहे हैं। एक बहुत बड़ी दौलत मंद महिला हो जाने पर भी बेगम समरू अपनी पुराने ससुरालवालों को नहीं भूलीं और उनकी सुख सुविधाओं का बराबर खयाल करती रहीं। उनके इस काम से याद आती है एक मशहूर शायर की यह उक्ति—

गो मैं रहा रहीने-सितम हाय, रोज़गार
लेकिन तेरे ख्याल से गाफिल नहीं रहा।

और सच पुराने ससुराल की यादें बेगम को हमेशा बनी रहीं।

१८वीं सदी का वह जमाना था जबकि यूरोप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक

हिन्दुस्तान

एक सम्पूर्ण पत्र

बाकी सभी अखबारों से अलग है

१५ लाख से अधिक पाठक इसे पढ़ते हैं

क्योंकि

- यह महत्वपूर्ण खबरों का आईना है
- हिंदी का एकमात्र अखबार है जो अपनी धरती से जुड़ा है
- हर आयु, वर्ग और स्तर के पाठकों की जरूरत पूरी करता है, उन्हें कुछ सोचने को मजबूर करता है

●

हर बुधवार तथा रविवार को विशेष परिशिष्ट
मनोरंजक एवं उपयोगी सामग्री का खजाना जो अन्यत्र दुर्लभ है।

आप अपने क्षेत्र के समाचार पढ़ना चाहते हैं
और हम वही देते हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से हजारों लोग यह सुनकर कि भारतवर्ष में मुगल बादशाह, मराठों और अंगरेजों के बीच लड़ाइयां बार-बार छिड़ती रहती हैं और उनकी फौज में यूरोप के सिपाहियों की बड़ी मांग है, यूरोप के, फ्रांस, जरमनी आदि देशों से एक बड़ी संख्या में फौजों में सिपाही बनकर धनोपार्जन के आकांक्षी जब तब हिंदुस्तान आने लगे। इन्हीं को लेकर समरू जैसे साहसी आदमियों ने फौज के टुकड़े बनाये और मुगल, मराठे और अंगरेजों की नौकरी करके उन्हें फौजी सहायता प्रदान की और मालो-माल हो गये।

इतिहास : समरू का

समरू का जन्म एक कसाई परिवार में हुआ था। भारत आकर फ्रांसीसी और अंगरेज दोनों को ही उसने चकमा दिया और अंत में मीरकासिम से जा मिला। मीर कासिम की आज्ञा से पटना में जो अंगरेजों की हत्याएं हुई थीं, उसमें उसने प्रमुख रूप से भाग लिया था। फिर बारी-बारी से उसने अवध के वजीर ए नंवाब तथा रोहिलखंड के सरदार हाफिज रहमत खां के यहां नौकरी की, पर अधिक दिनों तक वह कहीं न ठहरा। अंत में सन १७७२ में उसने पलटन की दो टुकड़ियां कायम कीं और भाड़े पर कभी जाट सरदार की ओर से, कभी जयपुर राजा की ओर से, कभी नजफ ख़ां, कभी मराठों की ओर से लड़ाइयों में हिस्सा बटाता रहा। यूरोप से अर्थ लोभ में आये हुए व्यक्तियों को लेकर उसने एक बड़ी पलटन बना ली। जिन्हें पैसों की चाह थी, आसानी से उन्होंने समरू के पलटन में अफसर बनना स्वीकार कर लिया।

पलटन की इन टुकड़ियों का भी विचित्र हाल था। पैसे की कमी से किसी सैनिक का वेतन तब तक नहीं मिलता था, जब तक कि वह विद्रोह करने पर उतारू न हो जाए। यही नहीं, जब तक पलटन के अफसरों को बंदी बनाकर उनके गाड़े हुए धन को बाहर निकालने को बाध्य न करें, पर चूंकि सबका एक ही उद्देश्य था, धनोपार्जन। अतः इनमें एक मजबूरी की एकता थी। लड़-झगड़कर भी वे एक बने हुए थे। समरू सब से अधिक चालाक़, धूर्ताधिराज था, अतएव उसकी अधीनता सबको मंजूर थी।

लड़ने का खास अंदाज

समरू के लड़ने का भी एक खास ढंग था, जिसका वह हर लड़ाई में प्रयोग किया करता था। युद्ध क्षेत्र में वह सबसे सुरक्षित कोने की ओर से घुसता और बगैर देखे-सुने दस-बीस गोलियां दाग देता। फिर चुपचाप लड़ाई के नतीजे का इंतजार करता, यदि एक दल जीत गया तो वह फौरन अपनी पलटन के साथ उससे जा मिलता, यदि हार जाता तो विजेता के रूप में लूट-पाट में पूरी तरह शामिल हो जाता।

सन १७७८ की ३ मई को आगरा में उसकी मृत्यु हुई। अपने बाग के ही एक कोने में उसकी कब्र बनी। पर, बाद में जब उसकी पत्नी बेगम समरू ने सन् १७८१ में ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया, तब उसके शव को वह आगरा गिरजाघर के कब्रिस्तान में ले आयीं तथा वहीं उसकी कब्र बनवायी, जो आज भी मौजूद है। समरू ने आगरा की लड़ाई में जो शाह आलम और मराठों के बीच हुई थी, बादशाह की जमकर मदद की और युद्ध क्षेत्र में बेगम समरू भी पालकी पर सवार होकर उसकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्या आप का टूथपेस्ट केवल सांस की बदबू
और दांतों की सड़न को रोकता है?

दांतों का पोषण नहीं करता?

दांतों का पोषण?
जी हां. दांतों के स्वास्थ्य के लिये केवल सफ़ाई और चमक-दमक ही काफ़ी नहीं. पोषण भी अत्यन्त ज़रूरी है.

ऐसा पोषक टूथपेस्ट है प्राइज़. इसका विशेष फ़्लोराइड कम्पाउण्ड दांतों के अनैमल का अभिन्न अंग बन जाता है, जिससे दांतों में कीड़ा लगने की संभावनाएं कम हो जाती है. इतना ही नहीं, इसका घना झाग और दोहरा पोदीना युक्त स्वाद आपकी सांस में ताज़गी लाता है.

नया
प्राइज़ फ़्लोराइड
टूथपेस्ट ही नहीं... पोषण भी.

अंतर्राष्ट्रीय स्तर का भारतीय टूथपेस्ट
बलसारा —
टूथपेस्ट विशेषज्ञ

CHAITRA-BLS-773 B-R- HIN

पलट
को य
कहने
विजय
सरध
दिया
मृत्यु

इ
और
सेनाध
आठ
महत्त्व
परिण
भीषण
स्थापि
फ्रांस,
अफ
ली मे
विवा
उनके
था।
कुड़कु
रखने
कुछ
समस्
समस्

श
ने स
खुदस
यद्यपि
नवम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पलटन के साथ-साथ गयीं, जिससे बादशाह को यह एहसास हो गया कि समरू ने बेगम के कहने पर ही उनकी मदद की है। लड़ाई में विजय प्राप्त कर शाह आलम ने आगरा से सरधना तक का इलाका बेगम को जागीर में दे दिया। ठीक इसके कुछ दिनों बाद ही समरू की मृत्यु हो गयी।

बेगम सेनाध्यक्ष बनीं

इसके कुछ दिन बाद फौज के सिपाहियों और अफसरों के आग्रह पर बेगम स्वयं सेनाध्यक्ष बन गयीं। तब तक सेना की प्रायः आठ टुकड़ियां हो गयी थीं और बेगम एक बड़े महत्त्व की महिला समझी जाने लगी थीं। परिणाम यह हुआ कि अंगरेजों तक ने असई के भीषण युद्ध के बाद बेगम से दोस्ताना संबंध स्थापित किये। बेगम की सेना में आयरलैंड, फ्रांस, जरमनी आदि देशों से आये हुए कई अफसर बहाल हो गये। इसमें से एक फ्रांसीसी ली मेसो नामक अफसर के साथ बेगम ने पुनः विवाह कर लिया, पर इसे गुप्त ही रखा, चूंकि उनके फौज के सिपाहियों को यह कतई पसंद न था। जब उन्हें इसकी कुछ भनक मिली तो वे कुड़कुड़ाये किंतु बेगम में अनुशासन बनाये रखने का कुछ ऐसा माद्दा था कि वे मारे भय के कुछ कर न सके। पर बेगम ने अपने नाम से समरू का नाम अलग नहीं किया। क्योंकि समरू से उसे गहरा प्रेम था।

उदार हृदय बेगम

शाह आलम से जागीर पाकर बेगम समरू ने सरधना को अपनी राजधानी बनाकर एक खुदसर रानी की तरह शासन करने लगीं। यद्यपि उसने आगरा में इसलाम मजहब

बेगम समरू द्वारा चलाया गया सिक्का

त्यागकर ईसाई धर्म अंगीकार कर लिया था और पूरी पाश्चात्य रीति से रहने लगी थीं। उसने अपने मुसलमान ससुरालवालों को भुलाया नहीं, उन्हें पूरी तरजीह दी, कुछ रुपये और गहने, उन्हें समय-समय पर वह देती रहीं, यह उनकी इदारता थी। धीरे-धीरे सरधना एक कस्बे का रूप धारण कर गया और आज भी वहां जाने पर बेगम के गुणों का सौरभ फैला हुआ, उनकी याद दिलाता रहता है। बेगम ने गरीबों को काफी दान दिये, अच्छे-अच्छे कामों में पैसों से मदद की और सरधना को एक प्रसिद्ध स्थान बना डाला। जहां वो बड़े शानो-शौकत के साथ जीवन के अंतिम दिन बिताती रहीं। वो कितनी सम्माननीय व्यक्ति बन गयी थीं, यह बड़े लाट विलियम बेंटिक के इस

"अरे, आज तो कमाल हो गया ?"

"क्या हुआ ?"

"बीस साल में आज पहली बार भैया और भाभी साथ-साथ घर से बाहर निकले हैं ?"

"ऐसा कैसे हुआ ?"

"हुआ यह कि रसोईघर में स्टोव फट गया और आग लग गयी। इसी से बचने के लिए वे दोनों हड़बड़ी में एक ही साथ एक ही दरवाजे से बाहर निकले।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हारिए न हिम्मत !

चुनाव के लिए प्रत्याशियों का चयन करनेवाले दल ने उन्हें सुझाव दिया, राजनीति में आने की बजाय वे घर में बच्चों की देखभाल करें तो ज्यादा अच्छा होगा। महिला ने उनका सुझाव न माना। अंततः दल के लोगों को झुकना पड़ा। महिला को चुनाव के लिए टिकट देना पड़ा। वह विजयी बनीं और अंततः अपने देश की प्रधानमंत्री भी।

यह प्रसंग ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मार्गरेट थेचर से संबंधित है।

☆

फ्रेडरिक फार्सिथे—एक लेखक। उन्होंने एक उपन्यास लिखा, जिसमें फ्रांस के राष्ट्रपति दगाल की हत्या को लेकर कहानी का ताना-बाना बुना गया था। प्रकाशक ने उपन्यास लौटा दिया कहा, 'पाठक इसे पसंद नहीं करेंगे।'

फ्रेडरिक ने हार नहीं मानी। वे एक अन्य प्रकाशक के पास गये। उसने साहस कर उपन्यास छाप दिया। प्रकाशित होते ही उपन्यास खूब बिका। चर्चित भी हुआ। इस उपन्यास का नाम है—'द् डे ऑव द् जैकल'!

☆

सोफिया लारेन: एक ख्यातनामा फिल्म अभिनेत्री। लेकिन फिल्मों में प्रवेश के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। उन्हें निर्देशकों और फिल्म-निर्माताओं ने कई बार निराश किया। सोफिया को पहले अंगरेजी का ज्ञान नहीं था, फिर भी वे 'कुओ वाडिस' फिल्म में काम मांगने के लिए निर्देशक मेरविन ले रॉय के पास गयीं। उन्होंने उनके हर प्रश्न का उत्तर एक ही शब्द में दिया। और यह था 'यस'। सोफिया अपनी कमी जानती थीं। इस बार भी निराश हो चली थीं, लेकिन मेरविन ने और नहीं तो उनके साहस के लिए ही फिल्म में कार्य दिया।

खत से जिसे उन्होंने भारत छोड़ते समय बे को लिखा था, जाहिर होता है—

कलकत्ता, मार्च १७, १८३५

मेरी सम्माननीय मित्र,

बगैर यह जताये कि मैं आपके चरित्र के कितना प्रशंसा का भाव अपने दिल के अंदर रख हूं, मैं हिंदुस्तान नहीं छोड़ सकता। मैं कल इंग के लिए जहाज पर चढ़ूंगा, मेरी प्रार्थनाएं शुभकामनाएं आपके साथ होंगी, इत्यादि इत्यादि

आपका मित्र बेंटि

बेगम अकसर अपने घर पर या दिल आकर चांदनी चौक वाले अपने मकान में, लाट, जंगी लाट आदि उच्च अंग पदाधिकारियों को दावतें देती थीं जो इत शानदार होती थीं कि शहर में वे एक शोह का कारण बन जाती थीं।

बेगम की मृत्यु जनवरी १८३६ में हुई। अपने पीछे वारिस डाइस नामक पुत्र के लि ६० लाख रुपये और लाखों का जेवरात छो गयीं। उनकी मृत्यु के बाद डाइस इंगलैंड च गया और वहां उसे लार्ड की उपाधि प्राप्त हुई वह या उसके वारिसान पुनः भारत नहीं आये बेगम ने मृत्यु के पहले एक ट्रस्ट चर्च संचालन के लिए बना दिया, जिसमें सरध कस्बे की सालाना आमदनी उसको दे दी, ता उससे चर्च के सारे खर्च वहन किये जा सकें वह ट्रस्ट आज भी चर्च का संचालन कर है। चर्च आगरा के रोमन कैथोलिक विशप अंदर है।

सरधना में बेगम का नाम अमर तो हो चुका है, मेरठ का प्रसिद्ध बेगमपुल भी उन याद हमेशा दिलाता रहता है।

—बी/२, महारानी बाग, नयी दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **एक** सभा में पुरुष तथा महिलाएं दोनों हैं। महिलाओं की संख्या ११० है, जो कुल उपस्थिति का २० प्रतिशत है। बताइए, सभा में कुल कितने व्यक्ति हैं?

२. **सौर-मंडल** के किस ग्रह को सूर्य की एक परिक्रमा करने में सबसे अधिक समय लगता है?

३. **अब** तक वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर जिस चीज के अस्तित्व की खोज की है, वह क्या है और कितनी दूर है?

४. **प्रथम** भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम (१८५७) के समय भारत का गवर्नर-जनरल कौन था?

५. **इस** समय दुनिया में सबसे बड़ी परमाणु-भट्टी (न्यूक्लियर रिऐक्टर) कहां है और उसकी कितनी क्षमता है?

६. **दुनिया** का सबसे बड़ा परमाणु-बिजलीघर किस देश में है? उसकी बिजली-उत्पादन क्षमता कितनी है?

७. **सबसे** अधिक दूरी तक मार करनेवाला बमवर्षक अब तक किस देश ने बनाया है?

८. **सर** रिचार्ड अटेनबरो की 'गांधी' फिल्म के दुनियाभर में प्रदर्शन से अब तक कितना धन अर्जित हुआ है?

९. **दुनिया** में अस्त्रों पर होनेवाला खर्च, जो निरंतर बढ़ता जा रहा है, पांच वर्ष पूर्व की तुलना में अब कितना पहुंच चुका है?

१०. **महिलाओं** के क्रिकेट टेस्ट-मैचों में अब तक किस महिला-खिलाड़ी ने अकेले सबसे अधिक रन बनाये हैं?

११. **वह** कौन-सा तत्त्व है, जो हड्डी और सीमेंट दोनों में मौजूद रहता है?

१२ **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

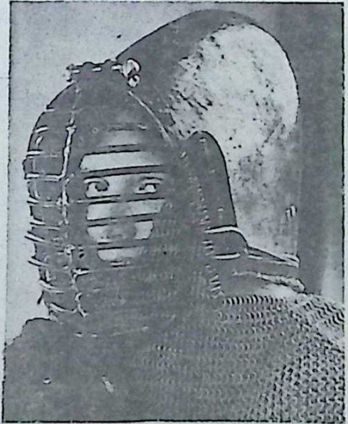

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहानी

तपते सीखचों के बीच

● पुष्पा अवस्थी

बगैर सीढ़ी या लिफ्ट के कभी कोई मंजिल पर पहुंचा है... ? फिर मैं जब किसी से लिफ्ट लेती हूं या किसी को सीढ़ी बनाती हूं तो शेखर अब क्यों कहता है कि फलां से लिफ्ट लेकर तुम अपनी पहचान का गला घोंट रही हो। यही शेखर था, जो पहले कहा करता था, 'तुम्हें तो लोगों से काम निकालना नहीं आता है, परिचय से कैसे मतलब हल किया जाता है अब तक तो सीख लेना चाहिए था।' इन मर्दों का मिजाज कुछ समझ में नहीं आता है कब किस बात पर क्या कह बैठेंगे। कभी किसी बात से चिढ़ बैठेंगे...कभी आग...कभी बर्फ...कभी पानी।

सोचते हुए लीला महसूस कर रही थी कि इस घर में आये उसे दो वर्ष हो गये हैं, लेकिन अब भी उसे यह घर अपना नहीं महसूस होता है। कहने को इस घर में कुछ भी पराया नहीं है। शेखर अपना है...बेडरूम अपना है...रसोईघर अपना है। तो क्या औरत की जिंदगी में सिर्फ तीन ही जगह अपनेपन की पहचान देती हैं। पति, प्रायः जिससे उसके मानसिक कम शारीरिक संबंध अधिक होते हैं। बेडरूम, जहां वह उसके साथ सोती है या बच्चे सेती है। रसोईघर, जहां उसे खाना बनाना पड़ता है पति, बच्चे, सास, ससुर के लिए औरत के लिए कितनी छोटी-सी परिधि है जिसमें वह अपनेपन को पहचानती है और इस में भी उसे तलाशने और महसूस करने को कहा जाता है। लेकिन, हर बार अपनेपन को पहचानने या आजमाने की कोशिश में उसे अपने के चेहरे पर बेगानेपन की सूरत सा दिखायी देती है। किसी को अपना कहना जितना आसान है, उससे अपनापन महसूस करना उतना ही कठिन है। कई बार लीला का जी किया कि शेखर से कह दे कि 'अपनापन कोई चाय नहीं है कि तुम बेमन के जबरदस्ती पिला दो और मैं महसूस करूं कि उसका हर घूंठ मीठा है।

कुछ दिन पहले ही शेखर ने लीला से त आवाज में कहा था—"इस घर को तुम अ

क्यों नहीं महसूस करती हो... ?" लीला उसी भाव से जवाब दिया था—"कौन है अपना, अगर कहूं, तुम्हारी मां, तो मैं बोलूंगी। अगर कहूं तुम्हारे भाभी-भा और तुम्हारे पिता, तो मितली आने लगे अगर कहूं, तुम, अपने हो तो अपने को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूंगी।"

लीला की इतनी बात सुनकर अपेक्षाकृत ऊंची आवाज में शेखर ने पूछा—"आखिर तुम कब सीखोगी इस घर में अधिकार से रहना।"

लीला ने बिफरते हुए कहा—"कभी नहीं...। क्योंकि कब मिला है मुझे 'अधिकार' तुम्हारे घर में?" सुनते ही न्यायाधीश की आवाज में शेखर बोला—"अब तो तुम्हें सारे अधिकार हैं, एक बहू...।"

शेखर बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि लीला रुंधे गले से चीखते हुए बोल पड़ी—"हां, ठीक ही तो कहते हो तुम, मुझे अधिकार है इस घर में बहू का, तो सिर्फ इस रूप में—सबके लिए समय पर खाना बनाऊं। परसूं। मेहमानों को 'इंटरटेन' करूं। जहां तक पत्नी के अधिकारों का सवाल है तो...?"

करता हूं। मेरे लिए तुम ही तो हो।"

लीला को यह झूठे शब्द एक तरह की लीला लगी। खुद को मोह जाल से मुक्त करते हुए बोली—"इतना झूठ मत बोलो शेखर, अब बहुत घिस गया है। प्यार करते थे तब, जब तुमने मुझसे शादी की थी। मैरिज करने से पहले तुमने मुझसे प्यार किया था और भीतरी मन से किया था...।" कहते-कहते लीला सजल हो आयी थी। भारी आवाज में फिर बोली—"तुम्हीं बताओ ईमानदारी से, शादी के बाद तुमने कभी मुझसे प्यार किया है उस मन से, जिस मन से पहले किया था। कहां गया तुम्हारा वह मन, मैं तो तुम्हारे भीतर और तुम्हारे चारों तरफ हमेशा खोजती हूं वह मन, जो हमें प्यार करता था। कभी तुमने खोजा है...अपने पहले वाले मन को...?

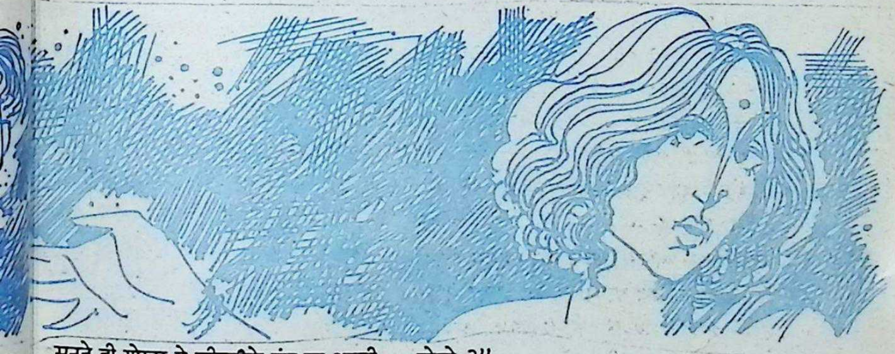

सुनते ही शेखर ने लीला के मुंह पर अपनी हथेली रख दी थी। जो गरम थी और कांप रही थी। लीला की आंखें शेखर की आंखों के सामने स्तब्ध खड़ी थीं। लीला के सिहरते ओंठों पर से अपना हाथ हटाते हुए शेखर ने कहा—"ऐसा मत कहो लीला, मैं तुम्हें प्यार

बोलो?"

"हां, कभी-कभी, खाली वक्त मिलने पर..."

"दूसरा झूठ...! तुम्हारे पास तो हमारे लिए ही वक्त नहीं है फिर खालीपन के लिए कहां वक्त मिलता है। साफ-साफ क्यों नहीं कहते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि शादी के बाद हमारे प्रति तुम्हारा प्यार न जाने कहां गुम हो गया । अगर नहीं, तो तुम्हारी बहन ने जब मुझसे कहा था—'हां-हां जैसे आयी हो, वैसे चली जाओ । कौन हमलोग बारात लेकर गये थे तुम्हारे दरवाजे । नहीं एडजस्ट करते बनता है तो चली जाओ । तुमको झुकना होगा । यह बात-बात पर रोया क्या करती हो । और हमारे भाई को सालती और कोंचती क्यों रहती हो ?' सुनकर भी तुम कुछ नहीं बोले थे शेखर । सूखे तने की तरह खड़े सुनते रहे थे । झुकने का मतलब तो यह नहीं कि मैं अपनी रीढ़ की हड्डी ही तोड़ डालूं ।

सांसों से तुम्हें देख रही थी । हम दोनों के उस दिन ताला लगा बंद दरवाजा था, जो भी है । खरगोश की तरह मैं डरी-डरी करती थी । हमेशा दुबकी-दु भूखी-भूखी । तुम कभी कुछ नहीं बो तुम्हारी मां जब-तब गालियां दिया करती है घर में खुद रहने आयी हो, इसलिए जैसे जाया करे, वैसे रहा करो' ।"

लीला अपने भीतर खुदे हर दृश्य के गाइड की तरह बताते हुए जख्म दिखाती थी । शेखर को महसूस हुआ जैसे लील अपने विवाह के बाद के एलबम की

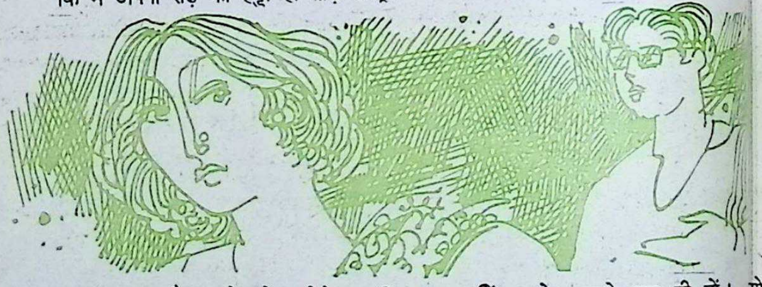

"—याद है, तुम्हारे बड़े भाई ने एक दिन ऊपर वाले कमरे की दहलीज पर चीते की तरह चीत्कारते हुए तुम्हारे सामने मुझसे कहा था—'चली जाओ घर से तुम, किस हैसियत से रहती हो यहां...' बोलो ना । याद है न तुम्हें, तब भी तुम चुप थे । ऐसे जैसे तुम्हारे भीतर जबान ही न हो । और तुम्हारे भाई ने मुझे अपनी जबान से धक्का देकर सीढ़ी के नीचे उतार दिया था । सीढ़ियों के बंद दरवाजे के उस तरफ तुम थे और सीढ़ियों के नीचे बंद दरवाजों के इस तरफ मैं थी । दरवाजे पर ताला लगने के बाद मैं सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आयी थी दरवाजों की

तसवीरें उसके सामने रख दी हों।

लंबे समय तक बोलने के कारण हांफने लगी थी, और गिरने-गिरने को थी । शेखर अपनी बांहों का सहारा दे बोला—"लीला सम्हालो अपने को...

सुनते ही लीला जैसें होश में आ गई शायद, इस घर ने ही उसको बेहोश हो होश में रहने का प्रशिक्षण दिया हो। आंचल को कंधे पर कुछ ऐसे समेटते हु वह आंचल के बहाने साहस समेट रही को स्थिर करते हुए बोली—"शेखर, इस घर में नहीं रह पाती हूं । तुम कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कहो । मेरी ही कोशिशों का अब मुझ पर असर नहीं होता है । मेरा दम घुटता है, चेहरे पर पड़ी हुई झांइयां क्या तुम्हें नहीं बतातीं कि तुम्हारा घर भीतर ही भीतर मुझे किस तरह झुलसा रहा है । मैं अंदर ही अंदर खतम हो रही हूं शेखर ! जिसके जिम्मेदार तुम भी हो । सिर्फ यह घर ही नहीं ।"

सुनते ही शेखर चीख पड़ा—"लीला ! आज यह आखिरी बार है । फिर कभी मत कहना कि मैं इस घर में नहीं रह सकती । इस घर में जैसे मेरा अधिकार है, वैसे ही तुम्हारा अधिकार है ।"

"लेकिन क्यों ?" शेखर सब कुछ जानते हुए भी पूछ बैठा ।

लीला गवाही के स्वर में बोली—"यहां कुछ भी तो मेरा नहीं है । यह बिस्तर, यह कमरा, यह घर, यहां के लोग, बोलो क्या है मेरा... ?"

लीला के आर्त्त स्वर से शेखर पीड़ित हो उठा था और हमदर्दी के साथ समझाने के अंदाज में बोला—"तुम इसे अपना घर समझो... । यहां की हर चीज से अपनापन महसूस करो लीला ! तभी तुम्हें लगेगा कि यह घर तुम्हारा है । असल में तुम कोशिश ही नहीं करती हो ।"

लीला को लगा कि जिस रस्सी को पकड़कर वह सीढ़ियां चढ़कर आयी थी, वह जैसे टूट गयी हो । पूरी एक मंजिल भहराकर उसके ऊपर गिर पड़ी हो । लीला को महसूस हुआ जैसे उसके भीतर का बचा खून भी सूख गया हो । और एक साथ ही वह बांझ और बेवा दोनों हो गयी हो ।

लीला ने सच उघारते हुए कहा—"नहीं शेखर ! यह घर सिर्फ तुम्हारा है... ? हां, जितना हमारा है उतना ही तुम्हारा है ।" कहते हुए शेखर ने लीला के संवाद में अपनी बात जोड़ दी और आगे कहा—"तुम अब कमाती हो । मैं भी कमाता हूं । खर्च में हिस्सेदारी है फिर क्यों रहती हो किसी से दबकर । यह घर तुम्हारा घर है, इसे अपना महसूस करो । मेरी पत्नी हो आखिर ।"

इस बार लीला ने खुद की सहमी कांपती अंगुलियां शेखर के मुंह पर रख दीं और कहा—"मत बार-बार कहो कि मैं कमाती हूं...और यह घर हमारा है... ।"

बच्चों की तरह हामी भरते हुए लीला बोली—"करती हूं शेखर, इस घर से अपनापन महसूस करने की हर चंद कोशिश करती हूं । लेकिन जब भी आत्मीयता के अहसास को साथ लेकर भाभी से बात करती हूं या घर के बचे काम में हाथ बंटाने को आगे बढ़ती हूं, तभी दुत्कार दी जाती हूं । मुझे 'हटो...जाओ, तुम इस घर की कहां हो, कब से तुम इस घर को अपना समझने लगी हो । अपने घर से तो भागकर आयी हो । खानदान की इज्जत का कुछ खयाल है तुम्हें । न जाने किस हिम्मत से यहां पड़ी रहती हो, सच बड़ी बेशर्म हो ।'—जैसे तेल से खौलते जुमले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुनने को मिलते हैं. " कहकर लीला रोने लगी' और रोते हुए फिर कहने लगी—"शेखर, मैं अब इस घर में नहीं रह सकती । यह घर मुझे अपना नहीं लगता है । नहीं लगता है अपना । मैं कैसे समझाऊं अपने मन को... ।"

शेखर हिम्मत बंधाते हुए टेप की तरह फिर बोला—"महसूस करो लीला ! कुछ दिन की ही तो बात है । जब तक अपने अलग घर का इंतजाम नहीं हो जाता है, तब तक इसी घर में और यहीं रहना पड़ेगा । फिर तुम हमारी पत्नी हो । आखिर...तुमने हमसे कोर्ट मैरिज की है । कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता ।" कहकर शेखर गुसलखाने चला गया ।

निढाल बिस्तर पर पड़ी लीला सोचने लगी— किस तरह से इस घर को अपना समझूं, जहां कोई अपना नहीं है । इस घर के हर व्यक्ति ने मेरे साथ ऐसा सलूक किया है कि मेरा मन भीतर से हदस गया है । हिम्मत बांधकर जब भाभी से बात करने को सोचती हूं तो उनके आंचल से ढके चेहरे पर उस चेहरे का वीभत्स रूप मुखौटे की तरह चिपका हुआ दिखता है,जब उन्होंने मुझसे कहा था— जिस पत्तल में खाती हो उसी में छेद करती हो । पता नहीं कैसे घर की हो ।

शेखर अकसर कहता है कि इस घर में फारमेलिटी के तौर पर ही घर के लोगों से बात कर लिया करो । कोई बताये हमें, कैसे बात कर लिया करें ? इस घर की दीवारें गवाह हैं हमारे साथ हुए हादसों और मेरे दर्द की । इस घर के हर व्यक्ति के साथ हमारे रिश्ते हैं—कोई मां है, कोई भाभी, पर हर रिश्ते के सामने दीवार है ऊंची, काली और डरावनी । रिश्तों की अंधेरी दीवारों के भीतर मैं कैद हूं, पत्नी, बहू होते हुए भी कुछ नहीं हूं । अगर इस घर के लिए कमानेवाली बंधुआ म और तड़पती हुई एक बेसहारा औरत।

मेरा बेडरूम मेरी सिसकियां सुनता आंसू देखता है । और वही सोखता है शेखर तो रात गये थककर आता है और की तरह बिस्तर पर पड़ा रहता है । जहां मैं बचाने की कोशिश में करवटें लिया करती सिसकियां भरा करती हूं । पर बगल में शेखर को इसकी खबर नहीं लगती है । बहुत प्यार तो करता है, लेकिन मेरी सिस नहीं सुनता है या उसे सुनायी नहीं देता शायद,मेरे आंसू और सिसकियां उसे म नहीं होती हैं ।

लीला सोचती है—आखिर क्या हो पुरुष का प्रेम । या तो विवाह करके वह को पत्नी बनाकर अपने घर में कैद कर देता अपनी जरूरतभर की उसे सुविधा देता है औरत को रखैल बनाकर अपनी तृष्णा मि है । पुरुष के प्रेम की अगली कड़ी का यही स्वरूप होता है । क्या इसके अला पुरुष के प्रेम का कोई रूप होता है । ली दिमाग के भीतर यह सवाल चक्कर लगा ।

दूसरे दिन शेखर के फिर कहने प 'भाभी आज शिकायत कर रही थीं कि तु रहती हो', सुनकर लीला दुःखी होकर औ हो गयी । शेखर से भी बात नहीं की । एक कोने में बैठी सोचती रही—शेखर, मुझसे कहता है कि 'तुम हमारी पत्नी हो,' प्यार करता हूं ।' भला मैं किस दिल से से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि वह मुझे प्यार करता है। जब वह हमारे दर्द को अपना दर्द नहीं महसूस करता है। शेखर को शायद नहीं मालूम कि लीला के दिल पर शेखर के घर वालों ने इतना बड़ा पत्थर रख दिया है कि उसके नीचे से अब अपनेपन का पौधा अंकुरित ही नहीं हो सकता है। लीला का दिल अब एक दीवार हो गया है, जिस पर समाज के और उसके घर के खौफनाक डरावने चित्र लगे हुए हैं। जब भी वह अपने दिल को देखती है, उसे डरावनी दीवार दिखती है, वह चीख पड़ती है। डर जाती है। चेहरा स्याह पड़ जाता है।

करता-कमाता नहीं है तो फिर यह क्यों पाल लिया है? अभी इसे बैठकर खिलाओ-पहनाओ। फिर इसके बच्चे को पहनाओ-पिलाओ।" भाभी ने ताने की कसर को पूरी करते हुए कहा—"हां अपने लिए रोटी-कपड़े के तो लाले पड़े हैं, उस पर यह लफड़ा पाल लिया।" सास ने और रंग भरते हुए आगे जोड़ा था—"एक तो घर में आकर रखैल की तरह बैठ गयी है। उस पर खिलाओ-पहनाओ। अगर नहीं करो तो समाज में इज्जत घटती है।"

सास की यह बात सुनते ही लीला बच्चों की

लीला के बीते दिनों के घाव से आज तक पानी रिसा करता है। अब तो बेहोश होने के समय भी वह इतने होश में रहती है कि उसके बेहोश होने की खबर किसी को न हो। मां बनने के कारण होनेवाली उल्टियां भी वह छिपकर करती थी। लेकिन मां बनने के चौथे महीने बाद आखिर घर के लोगों को पता चल गया था। फैमिली प्लानिंग की औरतों की तरह भाभी और सास गर्भपात कराने की सलाह दिया करती थीं। एक दिन शेखर की मां और भाभी ने आखिर लीला से कह ही दिया था—"जब जानती हो कि शेखर कुछ

तरह उठकर अपने कमरे में चली गयी थी और अपनी अटैची से कोर्ट मैरिज का सर्टिफिकेट सास के सामने रख दिया था और हिम्मत भरकर कहा था—"मांजी, आपके बेटे से मेरी शादी हुई है। मैं पत्नी हूं उसकी...। आप लोग इस तरह उन्हें मत कहा करिए। ऐसी बातें आप हमें नहीं अपने लड़के को ही कहती हैं।" सुनते ही भाभी ने सर्टिफिकेट के टुकड़े कर डाले थे और मां ने भाभी से छीनकर गैस के चूल्हे में लगा दिया था और कहा था—"पता नहीं किसका बच्चा पाल रही है पेट में...।" लीला अपने विवाह के एकमात्र प्रमाणपत्र को जलते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए देखती रही एक गीली लकड़ी की तरह। शेखर के साथ लीला के विवाह का गवाह न तो समाज रहा और न ही घर का कोई व्यक्ति था। शेखर से विवाह का अगर कोई सबूत था, तो सिर्फ कोर्ट का कागज। उसे भी खतम कर दिया गया था। लीला को लग रहा था, जैसे यह कागज नहीं बल्कि उसे ही आग में झोंक दिया गया हो।

चुपचाप वह अपमान का धुआं दिल में समेटे रही। शेखर को हवा न लगने दी। आखिर एक दिन इंटरव्यू से वापस आकर बिस्तर पर पड़ते हुए शेखर ने बहुत गहरी

आवाज में लीला से कहा था—"लीला, मेरा कहीं कोई एपाइंटमेंट नहीं हो पा रहा है। हम लोगों के बीच उस तीसरे का आना ठीक नहीं है।"

सुनते ही लीला लपक पड़ी—"तीसरा कोई पराया नहीं, हमारा ही तो है। बल्कि वही हमारा अपना है। उससे तो तुम्हें खुश होना चाहिए।"

लीला की बातों को अनसुनी करते हुए शेखर ने फिर कहा था—"तुम्हारा पेट निकलने लगा है। सबको पता चलने लगा है। मेरे दोस्त मुझसे पूछते हैं। अजीब-सी छेड़खानी करते हैं। हफ़्तेभर पहले मां और भाभी भी कह रही थीं।" सुनते ही लीला के सामने हफ़्तेभर पहले का दृश्य उभर आया। और बोली—"शेखर, कम-से-कम तुम्हें तो नहीं कहना चाहिए। यह तुम्हारा बच्चा है। कोई नाजायज तो नहीं।"

शेखर बोला—"भाभी को इसमें भी संदेह है।"

लीला ने हिम्मत से कहा—"मुझे इसकी परवाह नहीं है।" सब-कुछ साफ करते हुए शेखर ने आगे कहा—"अभी तो हम दोनों को ही खिलाना-पहनाना पड़ता है, जो घरवालों को भारी पड़ता है। कल को उसके लिए दूध चाहिए। आखिर तुम एबार्शन क्यों नहीं करवा लेती हो?"

शेखर के आवेश की आक्रामकता में खुद को ठहराते हुए लीला साहस से कह बैठी—"क्योंकि, मैं मां बनना चाहती हूं। तुम्हारे प्यार को खिलता-खेलता हुआ देखना चाहती हूं, शेखर! आखिर कोई तो हो जिसे अपना समझूं। मन लगाऊं। दिनभर तो तुम बाहर रहते हो। क्या जानो कि सबकी आंखों में मैं किस कदर अपनेपन का पानी तलाशती रही हूं। पर मिलती हैं हर एक की आंख में परायेपन की पर्तें। रिश्तों का पानी मर गया है शेखर। तुम तो आधी रात गये घर आते हो। खाते हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिस्तर पर पड़ जाते हो...ऊंघते ऊंघते... । कभी हिम्मत कर अगर पूछती हूं 'उदास क्यों हो ?' तो लंबी सांस खींचकर कहते हो, 'आजकल नौकरी की तलाश में हूं ।' लेकिन सारे ऑफिस शाम छह बजे बंद हो जाते हैं । आखिर रात गये तुम कहां एप्लीकेशन दिया करते हो... । मैं मां बनूंगी शेखर... ! मैं बेबी पैदा करूंगी । कम से कम वह तो मेरा होगा । जिससे मैं अपनेपन का अहसास करूंगी... । जानूंगी क्या होता है अपनापन... । पालूंगी बड़ा करूंगी अपनेपन के उस बीज को ।"

शेखर सारी संवेदना और संवाद को नजरअंदाज करते हुए कह बैठा—"लीला, तुम्हारी सारी बातें अपनी जगह ठीक है । लेकिन फिलहाल, इस घर में सुख-चैन से रहने के लिए तुम्हें एबार्शन करवाना होगा । आखिर, मैं कमाता नहीं हूं । लीला, फिर तुम्हीं सोचो, डिलीवरी और उसके बाद के लिए भी तो पैसा चाहिए । कहां से आयेगी इतनी रकम... ?"

यह सब सुनकर लीला को महसूस हुआ कि शेखर यह सुझाव और सलाह नहीं दे रहा है बल्कि जिद पर उतर आया है । शेखर के भीतर एक अहसास का बीज रोपती हुई लीला बोली—"शेखर, क्या तुममें बाप बनने की जरा भी खुशी नहीं है । क्या तुम्हें कल्पना करना, सपने देखना भी नहीं आता है ?"

"चुप रहो लीला ! किसे कहते हैं लोग खुशी । मुझे नहीं मालूम । फिर इन हालात में खुशी तो एक ऐसा नाम लगता है, जिससे मैं मिलने के काबिल नहीं हूं ।"

"शेखर, इस हालत में कल्पना करना और सपने देखना ही खुशी है । और यही खुशी है । तुम्हीं सोचो, मेरे भीतर जो पल रहा है वह तुम्हारा प्यार है, तुम्हारा है । बिलकुल तुम्हारी तरह होगा । तुम्हारे अपनेपन की पहचान होगी । तुम्हारी कसम...बिलकुल सच बोलना ।" लीला ने शेखर को हालात के अनुसार अपने पक्ष में करते हुए एक पत्नी नही साथी की तरह बोलते हुए कहा था—"सुनो फिर एबार्शन के लिए भी तो पैसे चाहिए । कहां से आयेंगे इतने पैसे ? कहां से करायेंगे एबार्शन ?" सुनते ही शेखर ने एक सांस में कह दिया—"सरकारी अस्पताल में...वहां लगते नहीं हैं बल्कि, दिये जाते हैं पैसे... ।"

सर्विस का न मिलना शेखर को इतना क्रूर बना डालेगा... । लीला ने कल्पना भी नहीं की थी । आजकल हालात बदलने से पहले व्यक्ति बदल जाता है बल्कि व्यक्ति ही स्वयं बदलकर हालात बदलता है और वक्त को दोष देता है । सुनते ही शेखर के चेहरे को देखकर लीला को लगा, क्या यह वही शेखर है जो प्यार करता था । और बाप बनने की तमन्ना रखता था । लेकिन, अब शेखर के चेहरे पर पड़ी नफरत की पर्तों को देखकर और इन कड़े शब्दों को सुनकर लीला को एकाएक लगा—जैसे शेखर ने उसे लाठी मारी हो । और वहीं उसके भीतर पल रहा प्यार मर गया हो ।

'अस्पताल में लगते नहीं बल्कि दिये जाते हैं पैसे,' सुनकर लीला चुप हो गयी थी । लेकिन सारी रात सिर धुनती रही और आखिर में जिंदगी को दांव पर लगाकर गर्भ में पल रहे अपने तीन महीने के प्यार का एबार्शन करा आयी थी । जिसे वह 'अपना' कहकर अपने गर्भ में पाल रही थी, उसे वह सरकारी अस्पताल में गिरवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारी कोई शाखा नहीं है।
सलाह एवं प्रदर्शन मुफ्त
श्रीमती अजीत गारकल की देखरेख में

सौंदर्य सम्बन्धी किसी भी समस्या के लिए अब आप को परेशान होने की आवश्यकता नहीं है.

दिल्ली इलेक्ट्रोलिसिस एंड ब्यूटी क्लीनिक : यहाँ आप की हर सौंदर्य सम्बन्धी समस्या को भारत की प्रसिद्ध इलेक्ट्रोलिसिस विशेषज्ञ श्रीमती अजीत गारकल सुलझाती हैं जिन के 25 से भी अधिक वर्षों के गहरे अनुभव का लाभ आप भी उठा सकती हैं.

इलेक्ट्रोलिसिस :
जो अनचाहे बालों को स्थायी रूप से हटाने का एकमात्र उपाय है. (हजारों महिलाएं इस समस्या से छुटकारा पा चुकी हैं). पुरुषों के लिए भी इलेक्ट्रोलिसिस की नई व्यवस्था

ब्यूटी ट्रीटमेंट
फेशियल्स, एक्ने ट्रीटमेंट, ऐंटी रिंकल ट्रीटमेंट, वैक्सिंग, ब्लीचिंग, ब्राइडल मेकअप, पेडीक्योर, मेनीक्योर इत्यादि.

हेयर ड्रैसिंग
पर्म, कटिंग, हेयर डाइंग, हिना और स्कैल्प ट्रीटमेंट आदि में विशेषज्ञ.

ADVEL-DB-294

दिल्ली इलेक्ट्रोलिसिस एंड ब्यूटी क्लीनिक,
40, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001. टेलीफोन : 311297. 1957 में स्थापित.

अगर आपकी उंगली पर ही ब्रश बना होता...

तो आप दाँतों के पीछे भी सफ़ाई कर पाते. आम टूथब्रश तो उंगली की तरह पीछे मुड़कर दाँतों के पीछे नहीं पहुँच पाते. लेकिन अब पेश है प्रॉमिस १५ जो अनूठे ढंग से १५° पर आगे की ओर मुड़ा है. इससे दाँतों के पीछे की भी सफ़ाई एकदम आसान हो गयी है. तभी तो दाँतों के डॉक्टर इसे पूरी तरह से वैज्ञानिक मानते हैं.

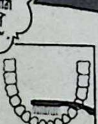

नया प्रॉमिस १५ टूथब्रश जो दाँतों के पीछे भी सफ़ाई करे.

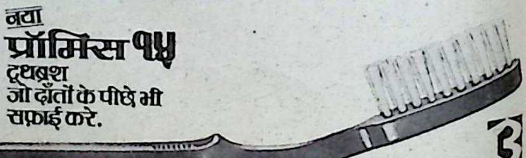

CHAITRA-B-BLS-678 HIN

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आध्यात्मिक कथा

निष्ठा, भक्ति और समर्पण

एक दूध बेचने वाली, नदी के दूसरी तरफ रहने वाले एक ब्राह्मण को दूध पहुंचाया करती थी। नौका के चलने का कोई नियत समय न होने के कारण उसे प्रायः दूध पहुंचाने में देर हो जाती थी। एक बार जब वह देर से पहुंची तो ब्राह्मण ने उसे फटकारा। इस पर वह बेचारी स्त्री बोली, "मैं क्या कर सकती हूं ? मैं अपने घर से तो सुबह ही चल पड़ती हूं पर नदी के किनारे काफी समय तक मुझे नौका तथा अन्य यात्रियों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।" ब्राह्मण ने कहा, "ईश्वर का नाम लेकर तो लोग भवसागर के पार उतर जाते हैं, तुम इस छोटी-सी नदी को भी पार नहीं कर सकतीं ?" वह सरल हृदया स्त्री नदी पार करने के इस आसान उपाय को जानकर बहुत प्रसन्न हुई। अगले दिन से ब्राह्मण को प्रातःकाल ही दूध मिलने लगा। एक दिन ब्राह्मण ने उस स्त्री से पूछा, "क्या कारण है कि आजकल तुम्हें यहां पहुंचने में कभी देर नहीं होती।" उसने कहा, "आपके कहने के अनुसार, मैं ईश्वर का नाम लेती हुई नदी पार कर लेती हूं, और अब मुझे नाविक के इंतजार में खड़ा नहीं रहना पड़ता।" ब्राह्मण को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा, "क्या तुम मुझे दिखा सकती हो कि तुम नदी कैसे पार करती हो ?" वह स्त्री उसे अपने साथ नदी के तट पर ले आई और पानी पर चलने लगी। स्त्री ने जब पीछे मुड़कर देखा तो उसने ब्राह्मण को बहुत परेशान पाया। उसने कहा, "महाराज ! यह क्या बात है कि आप मुंह से ईश्वर का नाम ले रहे हैं और हाथों से अपने कपड़ों को भीगने से बचा रहे हैं, क्या आपको ईश्वर पर पूरा भरोसा नहीं है ? ईश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण और अटूट आस्था ही सभी चमत्कारी कार्यों के मूल में स्थित है।"

—**श्री रामकृष्ण परमहंस**

आयी थी। जहां नर्सों ने बगैर बेहोश किये नृशंसतापूर्वक उसका एबार्शन किया था। वह ऑपरेशन रूम में भी जीभर कर ऐसे चिल्ला रही थी, जैसे अभी ही उसे खुलकर चिल्लाने का मौका मिला हो। अपनी उस चीख में लीला अपनी सारी घुटन निकाल देना चाहती थी। तीन घंटे अस्पताल की बेंच पर अकेली पड़ी रही थी। चलने लायक हुई तब घर आयी।

लीला दीवार का सहारा लेकर रस्सी पकड़-पकड़कर घर की सीढ़ियां चढ़ रही थी। उसे आज महसूस हो रहा था कि घर सिर्फ 'दीवार' का होता है, जिसकी जमीन और छत पत्थर की होती हैं। बरामदे में लीला ने कदम ही रखा था कि देखते ही भाभी और सास ने कहा—"जरूर दूसरे का होगा तभी तो शेखर ने एबार्शन करवा कर ही दम लिया।"

सुनते ही लीला को लगा कि जिस रस्सी को पकड़कर वह सीढ़ियां चढ़कर आयी थी, वह जैसे टूट गयी हो। पूरी एक मंजिल भहराकर उसके ऊपर गिर पड़ी हो। लीला को महसूस हुआ जैसे उसके भीतर का बचा खून भी सूख गया हो। और एक साथ ही वह बांझ और बेवा दोनों हो गयी हो।

—गांधी विद्या संस्थान, राजघाट, वाराणसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रख्यात हिंदी आलोचक किस प्रकार पहले अंगरेजी के अध्यापक बने और नौकरी शुरू करने के लिए कैसे-कैसे हुआ उनका साक्षात्कार ! जीवन की संगति-विसंगतियों का रोचक लेखा-जोखा प्रस्तुत करनेवाला संस्मरण ।

मेरा पहला साक्षात्कार

● डॉ. नगेन्द्र

अप्रैल, १९३७ में मैं नागपुर से हिंदी एम.ए. की परीक्षा देकर आया था और अतरौली (अलीगढ़) में अपने घर पर परीक्षाफल का इंतजार कर रहा था । प्रश्नपत्र अच्छे नहीं हुए थे, इसलिए मन में थोड़ा अवसाद भी था और उधर परीक्षा की थकान तो थी ही । इसलिए अभी मैंने जीवन के भावी कार्यक्रम के बारे में सोचना शुरू नहीं किया था । इसी बीच में मेरे धर्मबंधु ('साला' शब्द का अर्थापकर्ष हो जाने के बाद हिंदी के भाषाविदों ने अब उसके एक समादृत पर्याय 'धर्मबंधु' का निर्माण कर लिया है) प्रो. शांडिल्य की ओर से उनके पुत्र चि. सत्यस्वरूप का पत्र मिला कि दिल्ली के कॉमर्शियल कॉलेज में अंगरेजी के ट्यूटर की जगह खाली है । अर्द्धकालिक पद होने के कारण वेतन तो केवल ५० रुपये प्रति मास ही है, किंतु आगे उन्नति के लिए काफी अवकाश है ।

प्रो. शांडिल्य कॉमर्शियल कॉलेज में वरिष्ठ प्राध्यापक थे और तत्कालीन प्रिंसिपल से उनके अच्छे संबंध थे । उन्होंने यह सुझाव मेरे पास विशेष आशा लेकर नहीं भेजा था, उनकी धारणा यही थी कि मेरे पिताजी और मुझे यह स्वीकार्य नहीं होगा । बात एक हद तक ठीक भी थी, क्योंकि पचास रुपये महीने (उन दिनों के पचास रुपये आज के चार सौ रुपये से ज्यादा होते हैं) तो मैं अपने अध्ययनकाल में ही खर्च कर रहा था । अपने एकाध संबंधी भी, जिनका पिताजी के साथ स्नेह-सद्भाव था, भारत सरकार में बहुत ऊंचे पद पर थे और वे मुझे अच्छी सरकारी नौकरी दिलाने में मदद कर सकते थे—उधर अतरौली के हाई स्कूल में ही घर बैठे इससे कहीं ज्यादा वेतन मिल सकता था । परंतु मुझे निर्णय करने में एक मिनट भी नहीं लगा और मैं तत्काल आवेदनपत्र देने के लिए तैयार हो गया । मेरे सामने वेतन का प्रश्न नहीं था, क्योंकि सामान्यतः साधन-संपन्न होने पर भी मैं सादा रहन-सहन का अभ्यस्त था । मेरी सबसे प्रबल इच्छा थी कॉलेज में आने की । पिताजी के सामने जब यह प्रस्ताव आया तो अधिक उत्साहित न होने पर भी उन्होंने मेरे निश्चय को स्वीकार कर लिया । क्योंकि, जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत उदार एवं प्रगतिशील था, जिसमें साध्य और साधन का विवेक स्पष्ट था। पद या वेतन को वे साध्य न मानकर किसी उच्चतर साध्य का साधन ही मानते थे।

पचास रुपये और डबल एम.ए.

दिल्ली आकर मैंने आवेदनपत्र दे दिया। अंगरेजी एम.ए. में अपने थर्ड क्लास की सफाई में मैंने यह भी लिख दिया कि मेरा पिछला परीक्षाफल निरंतर अच्छा रहा है—शादी की वजह से एम. ए. में गड़बड़ हो गयी। इस पर शांडिल्य साहब ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'आवेदनपत्र में अपने गुणों का ही उल्लेख करना चाहिए, दुर्गुणों का नहीं।' खैर, प्रिंसिपल ने अपनी संस्तुति के साथ वह आवेदनपत्र कॉलेज के तत्कालीन सचिव लाला शंकरलालजी के नाम अग्रसारित कर दिया और लिख दिया कि पचास रुपये पर डबल एम.ए. मिलना कठिन है। लालाजी ने एकाध दिन बाद मुझे मिलने के लिए तलब किया और यह निश्चय हुआ कि प्रो. जयनारायण वैश्य, जिनकी सर श्रीराम व उनके परिवार में बड़ी मान-प्रतिष्ठा थी, मुझे लेकर जाएंगे। लाला शंकरलाल बी.ए., सर श्रीराम के अनुज थे और बाद में स्वयं भी सर का खिताब प्राप्त कर चुके थे। उन दिनों वे अपनी नयी कोठी (२२, कर्जन रोड) में रहते थे। उनसे मिलने का समय तय हुआ मध्यान्ह में एक बजे, जब वे मिल से लंच के लिए कोठी पर आते थे।

उन दिनों कार बहुत कम लोगों के पास थी—सामान्य सवारी तांगा ही थी। लेकिन संयोगवश कॉलेज के एक सहयोगी प्राध्यापक

को एक निहायत पुरानी कार दो सौ रुपये में मिल गयी थी और वे काफी शौक से उसे चलाते थे। प्रो. शांडिल्य ने प्रस्ताव किया कि हम लोग उस कार में ही जाएं और तांगे का जितना किराया लगता हो, उतने का पेट्रोल उसमें डलवा दिया जाए। मुझे थोड़ा संकोच था कि कहीं वे सहयोगी बंधु बुरा न मान जाएं, लेकिन उन्होंने सहज भाव से यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मुझे आश्चर्य जरूर हुआ, लेकिन यह सोच लिया कि यह कॉमर्शियल कॉलेज है। हम लोग ठीक समय पर पहुंच गये। मैं व प्रो. जयनारायण वैश्य कोठी के अंदर चले गये और कुछ देर बाद लालाजी भी तशरीफ ले आये। लालाजी ने बड़ी ही वेतकुल्लफी से जयनारायणजी से 'जयरामजी की' की और मेरा परिचय प्राप्त करने के बाद हम लोगों से पास ही बैठ जाने को कहा। उन दिनों वातानुकूलन का रिवाज नहीं था। इसलिए रईस लोग, गरमी के मौसम में दोपहर के समय आराम करने के लिए प्रायः अपनी कोठियों में तहखाने बनवाया करते थे। कोठी के तहखाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में कुछ कुरसियां पड़ी थीं और एक पलंग।

कर्सेज ऑव वैल्थ

लालाजी ने आते ही जूते-मोजे, टोपी और शेरवानी उतारी। फिर मेरी ओर देखकर कहा, 'माफ करना भाई', और कुरता उतारकर पलंग पर लेट गये। लेटे-लेटे पहला प्रश्न उन्होंने मुझसे किया, 'आपने कुछ लिखा भी है।' मेरे पास एक छोटी-सी पुस्तिका थी 'साईज', जिसमें 'निःश्वास' नाम से संकलित हिंदी के कुछ गद्य गीतों के अनुवाद थे। मैंने वह आगे बढ़ा दी। उसके कुछ सफे उलटने-पलटने के बाद जब वे बोले कि यह तो कुछ नहीं है, तो मैंने अपना एक भारी-भरकम लेख 'मिल्टन्स ब्लेंक वर्स', जिसे मैंने किसी सेमिनार के लिए लिखा था, उनके सामने उठाकर रख दिया। उस पर भी एक नजर मारकर उन्होंने लौटा दिया और कहने लगे, 'इन सबसे काम नहीं चलेगा। रेडियोवालों ने मुझसे एक 'टॉक' देने के लिए कहा है, जिसका शीर्षक है, 'कर्सेज ऑव वैल्थ।' आप इस पर लेख लिखकर दिखाइए।' मेरे पास कोई चारा नहीं था। दो-तीन दिन में उनकी फरमाइश पूरी करने का वायदा कर प्रो. जयनारायण के पीछे-पीछे मैं तहखाने से बाहर आ गया, जहां हमारे कारवाले मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे। कार में बैठकर हम लोग वापस चल दिये। जयनारायणजी को उनके घर छोड़कर कार दो-तीन फरलांग ही बढ़ी थी कि एक साथ रुक गयी। अपनी ओर से काफी कोशिश करने पर भी जब मित्र को कोई सफलता नहीं मिली, तो वे मुझसे कहने लगे, 'क्या आप हैंडिल लगा सकते हैं ?' मैंने जवाब दिया कि 'मैं हैंडिल तो नहीं लगा सकता, लेकिन धक्का जरूर दे सकता हूं।' काफी संघर्ष के बाद एक-आध जानकार आदमी की सहायता से वह कारनुमा चीज चली और हम लोग पसीने से तर-ब-तर होकर होस्टल में आ गये।

लेख के बदले नियुक्ति

लिखने का मुझे थोड़ा-बहुत अभ्यास था, इसलिए दो दिन में मैंने लेख तैयार कर लिया। उसकी पहली समीक्षा की शांडिल्य साहब ने और दूसरी जयनारायणजी ने। हालांकि, दोनों ही कॉमर्स के अध्यापक थे, फिर भी साहित्यिक रुचि से अछूते नहीं थे। दोनों से पास हो जाने के बाद लेख प्रिंसिपल साहब के सामने पेश किया गया, जो अंगरेजी के कुशल अध्यापक और प्रभावशाली वक्ता थे। कुल मिलाकर लेख को उन्होंने भी पसंद किया। लेख की भाषा-शैली तो उन्हें काफी पसंद आयी, लेकिन उसमें व्यक्त विचार प्रिंसिपल महोदय को सर्वथा ग्राह्य नहीं थे। उसमें एक वाक्य था 'डिबॉचरी इज फैड ऑन दि वैनोमस ब्रेस्ट्स ऑफ वैल्थ।' प्रिंसिपल महोदय के मत से यह वाक्य बहुत सख्त था जबकि प्रो. जयनारायण को इसकी वचन-भंगिमा अत्यंत प्रिय लगी। थोड़ी-सी बहस के बाद यह निर्णय हुआ कि वाक्य को यथावत् रहने दिया जाए। टाइप कराके लेख लाला शंकरलालजी के पास भेज दिया गया। दो-तीन दिन में ही उनका संदेश आ गया कि मेरी नियुक्ति कर दी जाए।

विदिन ब्रेकिट्स-दिल्ली यूनिवर्सिटी

कॉलेज का नाम उस समय था—कॉमर्शियल कॉलेज और वह ८, दरियागंज की एक कोठी में अवस्थित था। लोग उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शॉर्टहैंड-टाइपराइटिंग का प्राइवेट शिक्षण-संस्थान न मान लें, इसलिए नाम के नीचे कोष्ठक में 'दिल्ली विश्वविद्यालय' अनिवार्यतः लिखा रहता था—नाम-पटल आदि पर ही नहीं, पत्राचार में भी कॉलेज के अधिकारी यह लिखना नहीं भूलते थे। यह बात इतनी प्रसिद्ध हो गयी थी कि दूसरे कॉलेज के विद्यार्थी और कभी-कभी अपने कालेज के विद्यार्थी भी आपस में इसे लेकर प्रायः मजाक किया करते थे : 'यू नो, आई बिलांग टू दि कॉमर्शियल कॉलेज—विदिन ब्रैकिट्स—दिल्ली यूनिवर्सिटी।' उस समय शायद आठ अध्यापक थे और नवां मैं था। इसमें संदेह नहीं कि कालेज में कोई विशेष आकर्षण नहीं था, न उसके पास आलीशान इमारत थी, न अच्छा वेतनमान आदि, फिर भी वहां एक अत्यंत सुखद पारिवारिक वातावरण था। अध्यापक सभी एक-दूसरे के काफी निकट थे और दुःख-दर्द में सदा सहायक रहते थे।

व्यावसायिक हितों के संघर्ष या स्पर्धा का एकदम अभाव नहीं था, लेकिन उससे संबंधों में कटुता प्रायः नहीं आती थी। जयनारायण वैश्य और राधिकानारायणजी की थोड़ी-बहुत व्यावसायिक स्पर्द्धा शांडिल्य साहब के साथ हो सकती थी लेकिन वह कभी उभरकर नहीं आयी। और उसका प्रमाण यह था कि शांडिल्य साहब का आत्मीय संबंधी होने पर भी मुझे इन दोनों का स्नेह अंत तक प्राप्त रहा। वास्तव में आरंभ के उस संघर्ष में जयनारायणजी ने मुझे बड़ा बल दिया और विकास के प्रत्येक चरण में मेरी सहायता की।

खूबियां थीं मरनेवालों में

साहित्यिक दृष्टि से वह मेरा निर्माणकाल था। सन १९३७ से ४७ तक पूरे दस वर्ष मैं वहां रहा। इन दस वर्षों में उपलब्धि की अपेक्षा साधना ही मैंने अधिक की। पहले कविता-संग्रह 'वनवाला' के अतिरिक्त मेरी आरंभिक चार समीक्षात्मक कृतियों की रचना और प्रकाशन इस दशक में ही हुआ और इसी अवधि में मैंने अपने शोधग्रंथ के दोनों खंडों—(१) 'रीति काव्य की भूमिका', (२) 'देव तथा उनकी कविता' की रचना की। हिंदी जगत में आलोचक के रूप में मुझे मान्यता प्राप्त होने लगी थी और मैं निरंतर उत्साह के साथ उस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए परिश्रम कर रहा था। अंगरेजी पढ़ता-पढ़ाता था और हिंदी में साहित्य-रचना करता था। एक नया आत्मविश्वास मुझ में जग गया था और भावी जीवन का मानचित्र मेरी कल्पना में तैयार हो रहा था। उस जीवन की सुखद स्मृतियां आज भी मेरे मन में बनी हुई हैं, २४ नं. दरियागंज में स्थित कॉमर्शियल हायर सेकंडरी स्कूल की इमारत से सटे आवासगृह के पास से गुजरते हुए अब भी अकसर ताजा हो जाती हैं।

आज लाला शंकरलाल, प्रिंसिपल शैलेश्वर सेन और प्रो. शांडिल्य केवल स्मृति-शेष रह गये हैं, किंतु उनकी स्मृतियां मेरे व्यावसायिक जीवन की इस पहली घटना का अभिन्न अंग बन गयी हैं : खुदा बख्शे बहुत-सी खूबियां थी मरनेवालों में।

—ई ४/१८ माडल टाउन,

दिल्ली-९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुल्हन बनी सरकार !

● स्व. होरीलाल वर्मा

सन १९२०-२१ : गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन अपने पूरे यौवन पर था। गांधीजी के आह्वान पर सहस्त्रों विद्यार्थी सरकारी स्कूल और कॉलेज छोड़कर राष्ट्रीय विद्यालय में पढ़ने लगे थे। सरकारी नौकरों ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी और रचनात्मक कार्य में लग गये थे। मैं भी सरकारी हाईस्कूल, हरदोई छोड़कर राष्ट्रीय विद्यालय, हरदोई में पढ़ने लगा और कांग्रेस के कार्य में जुट गया।

मैं सात जनवरी, १९२२ को हरदोई जनपद के पिहानी में गिरफ्तार हुआ। मेरा हरदोई जेल के अंदर ही मुकदमा प्रारंभ हुआ और मैं छह मास के कठोर दंड से 'सम्मानित' हुआ। दो-तीन ही दिनों में लखनऊ जिला जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। साढ़े तीन मास जेल में रहकर फैजाबाद जिला जेल में फिर स्थानांतरण हुआ। उन दिनों सभी बंदियों का, जिन्हें कठोर दंड दिया जाता था, सिर मुंडवा दिया जाता था। गले में एक लोहे का तौक 'सुतिया' पहना दी जाती थी और इसी तौक में एक छोटी-सी तख्ती डाल दी जाती थी, जिसमें कैदी को सजा पड़नेवाली दफा, सजा की तारीख, सन व रिहाई आदि दर्ज होती थी, ताकि परेड के समय सुपरिंटेंडेंट व जेल आई.जी. आसानी से देख सकें। उस समय कोल्हू चलाना, चक्की चलाना, राम बांस कूटना, बान बटना आदि कठोर सजाएं मानी जाती थीं।

इसी दशा में जिस समय लखनऊ जेल पहुंचा, पं. मोतीलाल नेहरू और पं. जवाहरलाल नेहरू इत्यादि लखनऊ जेल में स्थानांतरित कर दिये गये थे। पहले वे केंद्रीय कारावास, लखनऊ में थे। सरकार का सारा प्रशासन अस्त-व्यस्त हो गया था। लखनऊ जेल पहुंचते ही बेड़ियां-हथकड़ियां काट दी गयीं और समस्त कैदियों की सजाएं सादी सजा में बदल दी गयीं। पं. जवाहरलाल नेहरू नित्य ही हम लोगों से मिला करते थे। राशन मिल जाता था। खाना हम लोगों को अपने हाथ से ही बनाना पड़ता था। मिलाई जाली द्वारा होती थी, जिसे हम लोगों ने अपमानजनक समझकर अस्वीकार कर दिया था। स्वामी भास्करानंद भी हम लोगों के साथ थे।

जेल में मेले-जैसा दृश्य उपस्थित हो गया था। मार्च के महीने में होलिका उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पं. नेहरू और खलीफुज्जमा आदि नेताओं ने कांग्रेस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वर्गीय होरीलाल वर्मा :
स्वाधीनता-संग्राम के सेनानी ।
वे अठारह वर्ष की अवस्था में आजादी की लड़ाई में शामिल हुए थे
और बाद में छह बार जेल गये ।
यहां प्रस्तुत हैं,
उनकी जेल यात्रा के संस्मरण । प्रस्तुति : सुशीला वर्मा ।

कार्यकर्ताओं को खूब घुल-मिलकर होली मनायी । लगभग साढ़े तीन महीने लखनऊ जेल में रहने के बाद हममें से बहुतों का स्थानांतरण फैजाबाद हो गया । उस समय लखनऊ की जेल और जिला जेल जुदा-जुदा होते थे । ढाई महीने फैजाबाद जेल में रहने के पश्चात हमें रिहा कर दिया गया । थोड़े समय बाद मैं कानपुर चला आया ।

उल्लू बोलेंगे

सन १९२८ में साइमन कमीशन का आगमन हुआ । गणेश शंकर विद्यार्थी के नेतृत्व में उसका जोरों से बहिष्कार हुआ । सन १९२९ में लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास हुआ । २६ जनवरी, १९३० को सारे देश में बड़े-बड़े जलूस निकाले गये और सभाएं हुईं । इस प्रकार आजादी के मतवाले आगे बढ़ते गये । कौंसिलों का बहिष्कार कानपुर में इस उमंगभरे गाने से प्रारंभ हुआ—

नेहरू ने इसको छोड़ दिया
मालवीय ने नाता तोड़ दिया,
पहुंचे जो कहीं यह चरण,
यह होंगे लाटें लद !
यह चोच चोंच कर खेलेंगे,
कौंसिल में उल्लू बोलेंगे

तत्पश्चात विदेशी कपड़े और शराब-गांजे की दुकानों पर धरना और नमक बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ । कौंसिलों के बायकाट और मतदाताओं को वोट न डालने के लिए भड़काने तथा इस आंदोलन का इनचार्ज होने के नाते मुझे धारा—१७ए के अंतर्गत गिरफ़ारकर छह मास का कठोर दंड दिया गया । आधी रात को जगाकर, जोड़े से बिठाकर गिनती देने तथा जोड़े में न बैठने के कारण दो मास के लिए मेरे पैरों में बेड़ियां डाल दी गयीं । इसके विरोध में मैंने अनशन प्रारंभ कर दिया । इसी दशा में मेरा बदायूं जेल में स्थानांतरण हो गया । तीन मास बाद लखनऊ कैंप जेल में आ गया । यहां भी तनहाई में रखा गया । उन दिनों मि. लैंग जेल के सुपरिंटेंडेंट थे, जिनका व्यवहार कैदियों के साथ बड़ा कठोर और अमानुषिक था । इसके विरोध में बंदियों ने जोड़े से न बैठने, परेड न देने और चक्की चलाने व आटा पीसने से साफ इनकार कर दिया । लैंग ने तनहाई के बंदियों को छोड़कर सभी बंदियों का खाना बंद कर दिया । मेरी तनहाईवाली कोठरी के पास ही दूसरी कोठरी में कानपुर के राजाराम जालिम भी अपनी सजा काट रहे थे । उन्होंने तथा दो एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्य नेताओं ने सारी जेल को भड़का दिया और सारी जेल में तोड़-फोड़ होने लगी। इस पर जेल में अलार्म का घंटा बजने लगा। फिर क्या था! कैदियों पर लाठी चार्ज और धारा—५२ के द्वारा मुकदमे चलाये जाने लगे। इसी अवसर पर गांधी-इरविन पैक्ट हो गया और हम लोग आठ मार्च, १९३१ को रिहा कर दिये गये। इसी अवसर पर, कदाचित चार मार्च, १९३१ को होली का त्योहार पड़ा। सभी बंदी भाई होली के उन्माद में लैंग को गाना सुनाने लगे।

होली पर सभी बंदी एक दूसरे से गले मिले और प्रेम-आंसुओं से भरे हुए रिहा होने की तैयारी करने लगे।

प्रथम गोल मेज कांफ्रेंस में गांधीजी को सफलता न मिली और वे निराश होकर भारत वापस आये। आंदोलन जोर-शोर से छिड़ गया। विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरना और लगान बंदी का आंदोलन प्रारंभ हो गया। लगान बंदी की धारा—१७ बी के अनुसार मुझे पुनः दो वर्ष का कठोर कारावास और मजिस्ट्रेट मिस्टर लायड के इजलास में नारे लगाने के कारण तीन मास कठोर तनहाई का कारावास मिला। पुलिस के सिपाहियों ने मेरे सर पर लाठी मारी, फलतः सर से खून की धारा बहने लगी। पर मेरा जोश और उत्साह बढ़ता ही रहा और नारेबाजी कम न हुई। फिर मुझे कानपुर की जेल से बाराबंकी जेल भेज दिया गया।

हम लोग जून में बाराबंकी जेल पहुंचे। यह जेल कड़ी यातनाओं के लिए प्रसिद्ध थी और 'पसिया जेल' कहलाती थी। बाराबंकी में साधारण वकीलों तक की गांधी टोपियां उतरवा ली जातीं थीं और कभी-कभी जूतों से उनकी 'आवभगत' होती थी।

चरखा चालू रहे

कानपुर के जत्थे के पहुंचते ही उन पर सख्ती होने लगी। हम लोग भी इसके लिए तैयार थे। हम लोगों के जोड़े से बैठने, परेड लगाने व काम करने से इनकार से जेल का सारा प्रबंध अस्त-व्यस्त हो गया। बेड़ी-हथकड़ी की धारा-५२ से कोई कार्य न चला। जिला मजिस्ट्रेट भी आये पर कोई प्रभाव न पड़ा। ज्यों-ज्यों सख्ती होती जाती थी, हम लोगों का रुख भी वैसा ही सख्त होता जाता था। अधिकारियों ने मुझे ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। मेरी तनहाई के सामने कभी दोपहर को रामायण और नाटक का अभिनय होता था, जिसमें सारे के सारे बड़े रुचि लेते थे। फिर इसी उमंग में मेरा 'चरखा चालू रहे' गाना होता था। वह इस प्रकार था—

गांधी बाबा दुल्हा बने है
दुलहन बनी सरकार
चरखा चालू रहे
वीर जवाहर बने सहबोला,
अर्विन बने नेकसार,
चरखवा चालू रहे।
वालंटियर सब बने बराती
जेलर बने बाजन्दार नाई थानेदार,
चरखवा चालू रहे।
बुढ़उ गांधी जेवन बैठे
दैजे में मागे स्वराज्य,
चरखवा चालू रहे
लार्ड बिलिंगटन दौरत आये,
जीजा गौने में दीबो स्वराज्य,
चरखवा चालू रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

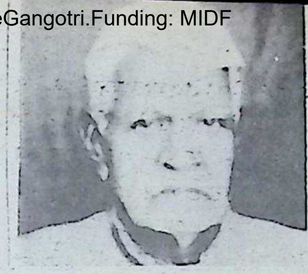

यह गाना फागुन महीने में और विशेषकर होली के दिन खूब गाया गया। अधिकारी लोग इसमें अपना अपमान समझते थे। फलतः उनके जुल्म भी बढ़ जाते थे। एक दिन आई. जी. के आने की सूचना आयी तो अधिकारियों के होश उड़ गये। शाम को एक दिन गश्त लगाने के बहाने मेरी तनहाई के सामने आये और बड़ी नम्रता से बोले कि 'आई. जी. आनेवाले हैं। हम लोगों की नौकरियों पर आ बनेगी। हम बंदियों को सभी सुविधाएं देंगे। हमारी नौकरी बचाओ।'

मैंने उन्हें कुछ सुझाव दिये। उन्होंने उन्हें स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन सभी बंदियों की सजाएं रद्द कर दी गयीं और काम करने पर भी जोर न दिया गया। जेल का सारा वातावरण शांति में बदल गया। आई. जी. आये। परेड भी लग गयी। अधिकारी बड़े प्रसन्न हुए।

थोड़े दिनों में हममें से बहुतों से पहले रिहाई का आदेश आ गया। कुछ समय के बाद गांधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया और हरिजन उत्थान के लिए देश व्यापी दौरे पर निकल पड़े।

सन १९४० में फिर व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। सन १९४१ में मैं फिर गिरफ़ार हुआ। कानपुर की जेल में प्रथम श्रेणी में रखा गया। उस समय जेल में मेरे साथ डॉ. जवाहरलाल, शिवनारायण टंडन, इकबाल कृष्ण कपूर, रामदुलारे त्रिवेदी और कृष्णचंद्र बेरी थे।

सन १९४२ के आंदोलन 'करो या मरो' नारों के साथ सारे देश में भीषण आंदोलन होने लगा। बहुत से लोग गोली और लाठियों के शिकार हुए। मुझे गिरफ़ार कर बरेली जेल लाया गया। बरेली जेल में अत्याचार की पराकाष्ठा थी। परेड पर बंदी खड़े होकर यदि शिकायत करता और नियम के अनुसार अपनी मांगें रखता तो डंडों से पिटाई साधारण बात थी। यहां भी सर्वप्रथम कानपुर के जत्थों ने दृढ़तापूर्वक अत्याचार का सामना किया। मैंने अपनी मांगें पेश कीं और वे स्वीकार कर ली गयीं और होली का त्योहार सभी बंदियों ने बनाया।

संक्षेप में सन १९२२, ३०, ३२ व ४२ में होली का त्योहार मुझे जेल में ही व्यतीत करना पड़ा। उस समय और आज के समय में बड़ा अंतर है। तब सारे देश में उत्साह था। देशभक्ति की भावना प्रबल थी और बिना प्रलोभन के हम लोग हंसते-हंसते जेल काटते थे। ओठों पर ऐसे गीत होते थे—

वर्षों से स्वर्ण संयोग मिला
सेनापति गांधी-सा पाया
इसलिए दास रणगंगा में
खुलकर खूब नहाएंगे
पतियों को पत्नियां बढ़ाएंगी,
माताएं बलि-बलि जाएंगी।
गोदी के लाल लुटायेंगी,
माथे पर सिकन न लाएंगी।

—३ए/३७ आजाद नगर, कानपुर-२०८००२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे मुंहफट नहीं : स्पष्टवादी थे

● शंकर दयाल सिंह

भारतीय राजनीति में दादा कृपलानी अपने ही ढंग के व्यक्तित्व थे, जिनकी स्पष्टवादिता तथा विनोदप्रियता कभी-कभी अश्लील और मुंहफट के रूप में ली जाती थी। लेकिन वह थे हृदय से उदार, विनोदी, स्पष्ट तथा लाग-लपेट से अलग। जो भी बात मन में आयी, मुंह से उगल देना भी एक ऊंचाई है। आचार्य कृपलानी के समान उस युग में और भी कई लोग थे, लेकिन दो-तीन बातें इस समय कृपलानीजी की ऐसी याद आ रही हैं, जिनका कोई जवाब नहीं।

सन १९३० में गांधीजी नमक-सत्याग्रह के बाद जब जेल गये तो वहां से कुछ अस्वस्थ-से बाहर आये और फिर से उन्होंने उसी स्थिति में देश का दौरा शुरू कर दिया। डॉक्टरों की सलाह थी कि वे कुछ दिन आराम करें, लेकिन वे माननेवाले न थे। अंत में उनके कार्यक्रमों में सख्ती के लिए तथा अधिक लोगों से न मिलें और लोग तंग न करें, इसके लिए दादा कृपलानी को गांधीजी के साथ कर दिया गया कि अपनी खरी-खोटी बातों से वही गांधीजी को भीड़-भाड़ से बचा सकते हैं।

इस क्रम में कहा जाता है कि गांधीजी एक बार दिल्ली से कलकत्ता की राह में थे कि इलाहाबाद स्टेशन पर हजारों लोगों ने प्लेटफार्म पर गाड़ी को घेर लिया तथा रात के समय बापू के दर्शन की मांग करने लगे। कृपलानीजी ने दरवाजे पर आकर लोगों को समझाया कि 'बापू बीमार हैं और आराम कर रहे हैं, अतः इतनी देर रात में आप लोग जिद्द न करें।' लेकिन भीड़ थी, जो नारों से आसमान गुंजा रही थी, टस-से-मस नहीं हो रही थी। इस क्रम में गांधीजी की नींद भी टूट गयी और वह उठने को हुए तो गांधीजी को कृपलानीजी ने बहुत मना किया कि 'आप बीमार हैं और बाहर न जाएं।' लेकिन बार-बार कृपलानीजी के आग्रह तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिड़गिड़ाने के बाद भी गांधीजी न माने और उठकर दरवाजे की ओर जब बढ़े, तो कृपलानीजी ने तमतमाकर उन्हें ढकेलते हुए कहा, 'जाओ, मरो, हम क्या करें।' और वह बैठकर बच्चों के समान रोने लगे।

इसी भांति एक अन्य घटना का तो मैं चश्मदीद गवाह हूं। कृपलानीजी कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से बिहार का दौरा कर रहे थे, उसी के दौरान दानापुर में उनकी सभा हुई। औरतें सबसे आगे मंच के पास ही बैठी थीं। मंच बहुत ऊंचा नहीं था। कृपलानीजी ने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि सभी को आदतन खादी पहननी चाहिए और बहनों को तो निश्चित रूप से सूत भी कातना चाहिए तथा खादी पहननी चाहिए।

इसी समय मंच के नीचे किसी बहन ने दूसरी बहन को कहा, 'क्या खादी पहनें, वह तो गड़ती है।'

कृपलानीजी ने इसे सुन लिया और तुरंत बोले, 'अभी-अभी मैंने एक बहन को दूसरी बहन से यह कहते सुना कि 'खादी तो गड़ती है, इसे क्या पहनें।' में कहना चाहता हूं कि आप अपने सुकुमार गालों पर जब पतिदेव के भाले के समान मूंछों के प्रहार को सह सकती हैं, तो खादी को बदन पर क्यों नहीं सह सकतीं ?'

सारी सभा सन्न थी। न हंसते बनता था और न चुप रहते। इधर वह महिला पानी-पानी हो रही थी।

दादा कृपलानी की पत्नी तथा सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्रीमती सुचेता कृपलानी समाजवादी दल की एक वरिष्ठ सदस्या थीं और उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्या भी। वहां

गांधीवाद के वे प्रारंभिक चितेरों में से एक थे। वे गांधीजी के साथ सन १९१७ में चम्पारण-सत्याग्रह में शामिल हुए और अंत तक गांधीजी के साथ रहे और इस नाते भी स्पष्टवादिता, विनोदप्रियता और उदारता आदि गुणों को उन्होंने गांधीजी से ग्रहण किया था।

एक बार जब मुख्यमंत्री पद की खींचातानी चली तो उस जमाने के सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री चन्द्रभानु गुप्त ने रातों-रात श्रीमती सुचेता कृपलानी को अपनी ओर मिलाकर, कांग्रेस की ओर से उन्हें विधानमंडल दल का नेता घोषित करवाकर मुख्यमंत्री के पद पर बैठा दिया।

दादा कृपलानीजी उस समय प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के कर्ता-धर्ता और बड़े नेता थे, अतः पत्रकारों ने जब उनसे इस पर प्रतिक्रिया पूछी, तो सहज भाव से बोले, 'कांग्रेसियों ने मेरी अनुपस्थिति में मेरे घर पर डाका डाला और उसमें मेरी पत्नी को ही भगा ले गये।'

इस प्रकार दादा कृपलानीजी के अनेक उदाहरण ऐसे मिलेंगे, जिनमें उनकी विनोदप्रियता तथा स्पष्टवादिता की झलक मिलती है।

गांधीवाद के वे प्रारंभिक चितेरों में से एक थे। वे गांधीजी के साथ सन १९१७ में चम्पारन-सत्याग्रह में शामिल हुए और अंत तक गांधीजी के साथ रहे और इस नाते भी इन बातों को उन्होंने गांधीजी से ग्रहण किया था।

—कामता-सदन, बोरिंग रोड, पटना-८०००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाइफ़बॉय है जहां
तन्दुरुस्ती है वहां

लाइफ़बॉय है तन्दुरुस्ती का नाम. दिन-भर की कड़ी मेहनत के बाद...या जोशीले फुर्तीले खेल के बाद लाइफ़बॉय से नहाने का मज़ा ही कुछ और है...यह आप में फिर से सफ़ाई और तन्दुरुस्ती की उमंग जगाता है!

लाइफ़बॉय
मैल में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है.

LINTAS L 95 1511 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

B399

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

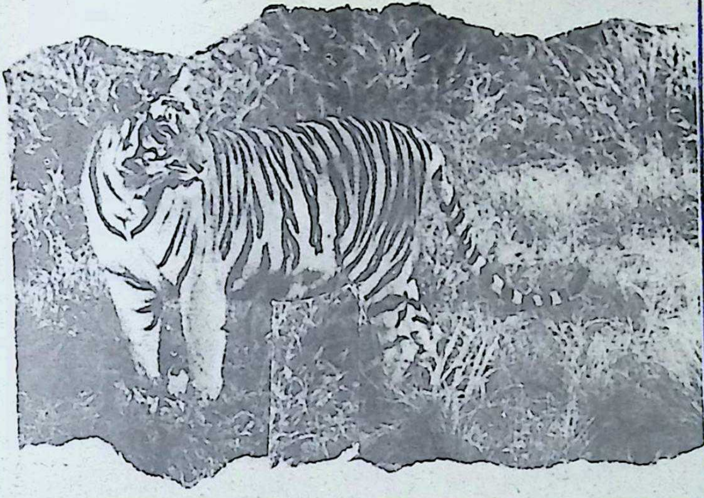

सेमलपानी का शेर

● कुंवर प्रेमिल

सेमलपानी के जंगल में चहल-पहल थी। झुंड के झुंड आदमी-औरतें इकट्ठे हो रहे थे। श्यामपुर, निमोटा, खातागांव, सेमलपानी, कन्नौज और न जाने कहां-कहां से भीड़ की भीड़ जुट रही थी।

वजह थी, भोपाल के नवाब के आने की वह महत्त्वपूर्ण सूचना। नवाब तो नवाब, पर उनका विमान भी कम आकर्षण लिये हुए नहीं होता था। बेचारी जंगली-जनता जहां रेल, मोटर देखने के लिए तरसती थी, यहां हवाई-जहाज का दर्शन उसे सहज में सुलभ हो जाता था। नवाब साल में एक बार शिकार खेलने सेमलपानी अवश्य आते। सेमलपानी में उनका स्वयं का हवाई अड्डा था। यह इटारसी इंदौर (म.प्र.) रोड पर भैरोंदा से छह किलोमीटर दूरी पर है।

अव्वल तो नवाब बहुत अच्छे शिकारी थे। दूसरे, वह जितने मुसलमानों के अजीज थे, उतने हिंदुओं के भी। उनके अधीनस्थ जमींदार,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दरबारी इत्यादि उन्हें भेंट चढ़ाते थे। नवाब साहब उन्हें वसन-पगड़ी भेंट करते थे। इन तीन-चार दिनों के ठहराव में छोटा मेला-जैसा माहौल बन जाता था। यही वजह थी कि नवाब का आगमन लोगों का दिली आकर्षण हुआ करता था।

अचानक घरर-घरर की आवाज ने लोगों को सचेत कर दिया। आसमान में चील की नाईं हवाई जहाज दिखायी देने लगा था। कुछ ही देर में वह गोल-गोल घूमकर हवाई पट्टी पर उतर गया।

जहाज के जमीन पर उतरते ही कीमती पांवड़ा बिछा दिया गया। फूल-मालाएं पहनाने की होड़-सी लग गयी। इत्र का छिड़काव किया जाने लगा। शरबत, लौंग, इलायची और पान के बीड़े। नवाब सबका अभिवादन स्वीकारते, धीरे-धीरे पांवड़े पर चलते जा रहे थे।

रास्ते के दायें-बायें सुहागनें मंगल-कलश धारण किये मंगलाचरण गा रही थीं। नवाब उनके कलश में चांदी का रुपया डालकर शामियाने की तरफ मंथर गति से बढ़ रहे थे। आगे-आगे स्वागत-गीत बज रहा था। ब्राह्मण और मौलवी दोनों ही नवाब के दीर्घायु होने की कामना कर रहे थे।

पहला चरण समाप्त हुआ, तो दूसरा प्रारंभ। शिकारी दल को छोड़कर बाकी सभी स्त्री-पुरुष वहां से विदा हो गये। रह गये नवाब और शिकारी। लाठी, भाला, नगाड़े और बंदूकें।

"भई, कोई नमकीन हस्ती हो, तो मजा आ जाए।" नवाब ने बात चलायी।

"हुजूर, बिलकुल नमकीन हस्ती। बल्कि यूं कहिए, ऊपर से नीचे तक नमकीन ही नमकीन", शिकारियों में से एक ने जानकारी दी।

"सेमलपानी का शेर है यह, पर निमोटा, श्यामपुर, खातागांव, निम्नागांत तक में उसके चर्चे बुलंद हैं। अभी बचपना गया है और यूं समझिए कि मूंछों की रेख अभी उगनी शुरू हुई है।"

नवाब आश्वस्त हुए! उन्होंने लगभग प्रण-सा कर लिया था कि मारेंगे तो वहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमकीन हस्ती, वरना खाली लौट जाएंगे । रात्रि के अंतिम पहर में कूच करने की योजना तय करके सभी अपने-अपने तंबू में सोने चले गये ।

पहला दिन मनहूस साबित हुआ । नमकीन हस्ती कहीं नजर ही नहीं आयी । झिरिन्या, निम्नागांव तक खोज की गयी । अंत में एक-दो रोजड़े मारकर शिविर लौट आया गया ।

दूसरा दिन नदी-तालाब और नालों के लिए सुरक्षित रखा गया । आदमियों के द्वारा बकरियों की आवाजें निकलवायीं पर सब व्यर्थ । ये डाल-डाल तो वह पात-पात ।

इधर शिकारी दल जंगल में उसे खोज रहा था, उधर वह नाजुक उमर घने जंगलों के बीच बहती कोलार में जल-क्रीड़ा कर रहा था । जंगल के चौकीदारों से खबर पाकर दल कोलार की तरफ । भूख-प्यास की किसे सुधि थी । छकड़े के बैल हांफ-हांफ रहे थे । मुंह से झाग निकलकर, उनकी थूथन पर जमा हो गयी थी ।

नतीजा, वही ढाक के तीन पात । शेर और सूरज का क्या भरोसा ? कब छुप जाए और कब प्रगट हो जाए । शिकारियों की पदचाप ने उसे चौकन्ना कर दिया था और वह वहां से नौ-दो ग्यारह हो गया था ।

तीसरा दिन कांटेदार जंगल की भेंट चढ़ गया । शिकारी दल जंगल में टापता ही रह गया । चौथे दिन के लिए विशेष तैयारी की गयी । भैंसा और बकरे बुलाये गये । हांका कराया गया । जालिम को न आना था, सो नहीं आया । बुरी तरह मायूस होकर शिकारी दल वापस लौट आया ।

कहते हैं, जब सियार और शेर की मौत आती है, तो वह गांव की तरफ दौड़ता है । शिकारी दल की यह भूल सुखद रही कि भैंसा शिविर में ही बांधकर वह घोड़े बेचकर सो गया । उसी भैंसे की गंध ने कमाल ही दिखा दिया आखिर ।

शेर दो गोलियां खाकर उठ नहीं सका था । इधर शिविर में जाग पड़ गयी थी । सब लोग हड़बड़ाकर बाहर आ रहे थे । शेर को काफी देर बाद घसीटकर उजाले में लाया गया तो सभी हक्का-बक्का ।

अर्धरात्रि में अचानक नवाब की नींद उचट गयी । जानवरी गंध ने उन्हें उठने के लिए विवश कर दिया । उन्होंने बंदूक उठायी तभी जानवर की आशंका में उनकी छठी इंद्री फड़क उठी ।

चांदनी रात थी । पूरा शिविर गहरी नींद में सो रहा था । भैंसे के पंद्रह-बीस फीट की दूरी पर नवाब साहब ने एक शेर को कातिलाना अंदाज में टहलते देखा, तो उनका दिल भी धड़कने लगा । रात्रि का समय और मददगार कोई नहीं । जरा-सी देरी और हो जाती, तो भैंसा मार दिया जाता । शेर शिविर से भैंसा तोड़ ले जाता और शिकारियों को करारी चोट दे जाता ।

अभी शेर भी गुपचुप घात लगा रहा था । वह भी अपनी उपस्थिति को उज़ागर नहीं करना चाहता था । भैंसे पर आक्रमण करने से पहले,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शर्तिया कद लम्बा कीजिये!!!

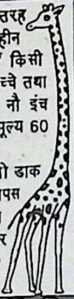

छोटा कद अब तक एक अभिशाप था लोग तरह तरह के उपनामों द्वारा छोटे कद वाले में हीन भावना पैदा करते थे। छोटा कद चाहें किसी कारण हो अब 50 वर्ष तक की आयु के बच्चे तथा स्त्री पुरुष हमारी दवा द्वारा दो इंच से नौ इंच तक कद लम्बा कर सकते हैं। दवा का मूल्य 60 रूपये डाक खर्च 10 रुपये अलग।
गारंटी :- अगर कोई परिवर्तन न हो तो डाक खर्च तथा अन्य खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है। रूपये कभी पत्र या रजिस्टरड पत्र में मत भेजिये। मनी आर्डर द्वारा या केवल पत्र लिखकर वी० पी० द्वारा मगायें। एक बार अवश्य आजमायें

मोटापा खत्म कीजिये

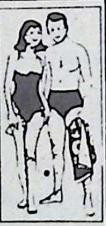

भारत में पहली बार बने कैप्सूल जिस के केवल एक महीना सेवन से बिना हानि पहुँचाये 2 किलो से लेकर 15 किलो तक वजन कम करें आपको किसी प्रकार का व्यायाम या डाईटिंग (भूखे रहने) की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसमें कोई संदेह नहीं मोटापा सौंदर्य का शत्रु है और आयु भी घटाता है मोटापा घटाने का सबसे अच्छा उपाय मोटापा हरन कैप्सूल है। पूरा कोर्स 30 कैप्सूल मूल्य 60/= डाक खर्च 10/=अलग।

याद शक्ति वर्धक गोलियां

यह औषधि विशेष तौर से विद्यार्थीयों के लिये तैयार की गई है। 60 गोलियां एक माह लगातार खाने से जो विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर हों याद किया सबक भूल जाते हों शरीर को कमजोरी ने घेर रखा हो आश्चर्यजनक परिवर्तन महसूस करेंगे। विद्यार्थीयों के अलावा हर आयु के स्त्री पुरुष उत्तम स्वास्थ्य उत्तम याद दाश्त के लिये सेवन कर सकते हैं। एक महीना दवा सेवन के बाद लाभ न होने पर कुछ खर्च काट कर मूल्य वापस की गारंटी है। विद्यार्थी अपने माता पिता से पूछ कर हमें साफ साफ हिन्दी में पत्र द्वारा वी. पी. भेजने का आर्डर लिखें। अपना नाम पूरा पता भी साफ साफ लिखें। आप को आप के लिखे एडरैस पर दवा पोस्टमैन देकर रुपये ले लेगा। एक महीने से कम दवा वी. पी. द्वारा नहीं भेजी जाती है। एक महीने की दवा का मूल्य तीस रुपये है डाक खर्च दस रुपये अलग लगेगा। दवा निर्माण तथा मंगाने का एक मात्र पूरा पता :-

मेहरा क्लिनिक 450 इस्लामाबाद,
P.O. खालसा कालेज, अमृतसर

वह स्वयं भी आदमियों की उपस्थिति का जायजा ले रहा था।

नवाब निशाना लेकर, चुपचाप शेर के उजाले में आने का इंतजार करने लगे। अभी निशाने में भैंसा मध्य में पड़ता था। गोली शेर के बजाए भैंसे को लगती। वह उसी ऊहा-पोह में थे कि शेर ने पहलू बदला। उसने एक चक्कर भैंसे का लगाकर ज्योंही उसकी पीठ की तरफ उछलकर झपट्टा मारने का उपक्रम किया, त्यों ही नवाब की गोली ने उसे बीच में ही लपक लिया।

"धांय"—"धांय" दो गोलियां शेर के सीने में उतर गयीं। नवाब चक्कर में थे कि यह दूसरी गोली किसने चलायी। तब तक उनका प्रिय शिकारी बाबू खां मैदान में आ गया।

नवाब ने बाबू खां को गले लगा लिया।

"बाबू, तुम कभी गफलत की नींद नहीं सोते। मैं आज फिर मान गया," बाबू खां को गले लगाते हुए नवाब बोले।

शेर दो गोलियां खाकर उठ नहीं सका था। इधर शिविर में जाग पड़ गयी थी। सब लोग हड़बड़ाकर बाहर आ रहे थे। शेर को काफी देर बाद घसीटकर उजाले में लाया गया तो सभी हक्का-बक्का।

यह तो वही नमकीन हस्ती थी, जिसे वह तीन-चार दिन से खोज रहे थे। 'नमकीन हस्ती' के रूप में लोगों ने उसे पहचानकर नवाब साहब को अचानक ही खुशियों से लाद दिया था।

—४५८, मोती भवन, आमनपुर,
जबलपुर-४८२००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शहनाई बजाते समय बालाजी के दर्शन

◎ उस्ताद बिसमिल्ला खां

उस्ताद बिसमिल्ला खां : देश के प्रख्यात शहनाईवादक। यद्यपि वे शिया मुसलमान हैं, तथापि सरस्वती के कट्टर भक्त हैं। बारह वर्ष की अवस्था में उन्हें एक दैवी अनुभव हुआ। वह उन्हीं के शब्दों में –

मेरे मामू ने बालाजी के मंदिर में अठारह वर्षों तक रियाज किया था। उन्होंने मुझसे भी ऐसा ही रियाज करने के लिए कहा। मैं सुबह सात बजे मंदिर में रियाज शुरू करता। यह रात ग्यारह बजे तक चलता रहता। इस बीच में चार राग बजाता। कोई डेढ़ वर्ष बाद मामू ने मुझसे कहा, 'यदि तुम कुछ देखो तो उसका जिक्र किसी से न करना।'

एक रात की बात है। मैं एकाग्रचित्त होकर शहनाई बजा रहा था। एक तरह से गहरे ध्यान में डूबा था। सहसा एक सुगंध चारों ओर छा गयी। इस सुगंध का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह चंदन, जस्मीन और अगरबत्ती की मिली-जुली सुगंध थी। मुझे लगा, शायद यह गंगा की ओर से आ रही है। पर धीरे-धीरे यह सुगंध तेज होती गयी। अपनी आंखें खोलीं। जो देखा, उसे याद कर आज भी रोमांचित हो उठता हूं। मेरे सामने बालाजी खड़े थे। हाथों में कमंडल था। ठीक वही रूप, जो चित्र में था।

मेरा दरवाजा भीतर से बंद था। जब मैं रियाज करता था, तो किसी को भीतर आने की इजाजत नहीं थी। उन्होंने कहा, "बेटा, बजाओ।" पर मैं तो पसीने से तर-बतर हो गया। मैंने शहनाई बजाना बंद कर दिया।

वे मुसकराये और फिर अदृश्य हो गये। मैंने दरवाजा खोला। सोचा, शायद कोई फकीर आ गया होगा। लालटेन उठायी और गलियां छान मारी। वे सूनीं थीं। मैं घर की ओर भागा और जल्दी-जल्दी खाना खाकर सो गया। मामू सब कुछ समझ गये, पर उन्होंने ऐसा भाव दिखाया मानो कुछ जानते नहीं हों। उन्होंने मुझे ताना मारीं। इस पर मैंने उन्हें घटना बतानी शुरू ही की थी तो उन्होंने थप्पड़ मारा, कारण उन्होंने पहले ही मना किया था कि अगर कुछ घट जाए तो मैं किसी को कुछ नहीं बताऊं। उसके बाद मामू ने मुझे प्यार से पुचकारा और कुछ शाक-सब्जी लाने के लिए कहा। मामू मुझसे हमेशा कहा करते थे, 'कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना। हमेशा आगे की ओर नजर रखना। आज भी मैं बालाजी के मंदिर अकेला जाता हूं और एकांत में शहनाई बजाता हूं! ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

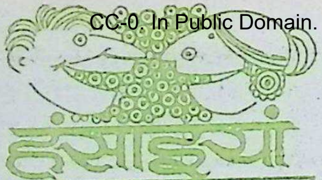

वे बड़े अधिकारी थे। उनके निशाने की धाक उनके चमचों ने जमा रखी थी। एक दिन पकड़ में आ गये। पेड़ पर चिड़ियों का झुंड बैठा था। अधिकारी से एक भाई ने कहा, 'सुनते हैं आपका निशाना अचूक है। जरा हो जाए।'

अधिकारी महोदय ने बंदूक संभाली और चिड़ियों की ओर दाग दी। और जब सभी चिड़ियां चिचियातीं हुईं उड़ गयीं, तब भाई ने पूछा, 'जनाब, ये तो सब उड़ गयीं। एक भी नहीं गिरी।'

अधिकारी इत्मीनान से बोले, 'घर पहुंचकर सब मर जाएंगी।'

☆ ☆

हजारों चूहे भाग रहे थे—बदहवास, भयभीत। एक नागरिक ने उन्हें रोककर इस भगदड़ का कारण पूछना चाहा, पर किसी ने जवाब नहीं दिया—बस भागते रहे। आखिरी चूहा लंगड़ा होने के अलावा बूढ़ा भी था। नागरिक ने कहा, 'चाचा, रुको तो सही। आखिर ये भगदड़ क्यों?'

बूढ़ा चूहा बोला 'रुककर क्या हमें मरना है। अरे, शहर में शेर का कतल हो गया है और पुलिस हम पर शक कर रही है।'

"जब भी क्रिकेट टेस्ट मैच होता है, ये बल्ला घुमाना शुरू कर देते हैं...।"

व्यंग्य-चित्र : सुरेश गुप्ता

"साड़ी तो ले लूंगी, मगर एक वायदा करो कि मेरे पति अगर इसे वापस लौटाने आएं, तो तुम वापस लेने से मना कर देना।"

व्यंग्य चित्र : प्रमोद बम्ब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बॉर्डर पर पुलिस चौकी । फिल्म डिवीजन की टीम की जीप रोक ली गयी । कांस्टेबिल बोला, 'क्या है जीप में ।'

भाई बोला, 'कैमरा है, लाइट हैं वगैरह वगैरह । फिल्मवाले हैं हम लोग ।'

कांसटेबिल ने मूंछों पर ताव देकर कहा, 'कोई भी हो, तलाशी तो ली ही जाएगी । ठहरो मैं हवलदार को बुलाता हूं ।'

हवलदार साहब गिरती पतलून को संभालते हुए आये और कड़ककती आवाज में बोले, 'सब के सब पहले जीप से नीचे उतरो । तलाशी ली जाएगी ।'

फिल्मवाला भाई बोल, 'हमारे पास तो कैमरा वगैरह है, हवलदार साहब और कुछ भी नहीं । भैया, हम भी सरकारी नौकर हैं ।'

हवलदार साहब खरज स्वर में बोले, 'सरकारी हो या दरबारी' तलाशी तो ली ही जाएगी । डिप्टी साब का फून भी आ गया है । शहर में दो ट्रक चोरी चले गये हैं, समझे । तलाशी तो ली ही जाएगी ।'

''अब हमें रात में चोरी करना छोड़ना पड़ेगा । काले धंधों पर सरकार की कड़ी नजर है ।''

व्यंग्य-चित्र : चंचरीक

सीपिकाएं

कलियुग

आज दुर्योधन भी है
और
द्रौपदी का चीर भी
बस लापता है
एक कृष्ण

—कविता शर्मा

सभ्यतारोपण

पश्चिमी सभ्यता
पूरब के देश में
यानी—
चाय की खेती
गेहूं के खेत में

—जगदीश मिश्र 'अरुण'

फिर क्यों ?

मेरे भीतर
मेरे बाहर
तुम
फिर क्यों
तम
आवृत
मेरे भीतर
मेरे बाहर

—आलोक देशवाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गंगा के मायके की लोककला

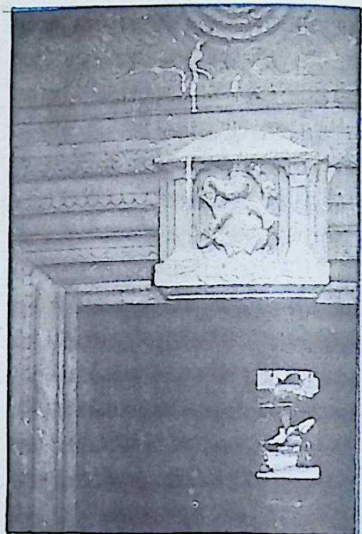

अलंकृत प्रवेशद्वार पर विराजमान गणेश

● पूर्णिमा पांडेय-

बरफ-ढंके हिमालय की गुरुगंभीर शिलाओं के बीच स्मित-रेखा-सी फूट पड़ी भागीरथी गंगा की चंचल धारा गोमुख होकर गंगोत्तरी पहुंचती है, फिर बहुत-से पथरीले उतार-चढ़ाव पार कर घने जंगलों को उलांघती छोटी-छोटी बस्तियों को जीवन देती हुई मैदान में उतर जाती है। गंगाजल के प्रथम स्पर्श का सौभाग्य मध्यहिमालय की गढ़वाल भूमि को मिला है। पावन जलधाराओं से सिंची हुई पंचप्रयाग और अनेक तीर्थों की यह धरती सचमुच गंगा का मायका है।

अस्तित्व के किस काल-बिंदु पर, कब से और कैसे मानव-जातियां यहां रहने लगीं—यह प्रश्न ऐसा है, जैसे यह पूछना कि गंगा का जल कब से बह रहा है! अनेक मिथकीय संदर्भ इस प्रदेश को यक्ष, किन्नर, गंधर्व, नाग, किरात तथा भील जातियों की भूमि बताते हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यों के प्रकाश में इसे तंगण, पुलिंद, दस्यु, खस तथा आर्य जातियों का निवास स्थान कहा जाता है। सुदूर अतीत से इस क्षेत्र में रहती आयीं ये जातियां एक दूसरे को विजित करती और परस्पर मिलती हुई मानव-जीवन की इतिहास-धारा को गति देती रही हैं।

अनेक मतों का प्रभाव

बौद्ध, शैव, शाक्त, नारायणीय तथा खस मतों का प्रभाव यहां के जनजीवन की धार्मिक पृष्ठभूमि में समाया हुआ है। वैदिक और पौराणिक देवशक्तियों के साथ-साथ लोकविश्वास से उपजे भूत-प्रेत-परी-अप्सरा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हंत्या, भैरों, घंटाकर्ण आदि का पूजन किया जाता है। परिणामतः यहां वैदिक मंत्रों और शास्त्रोक्त कर्मकांड के साथ तांत्रिक अभिचार और क्षेत्रपाल, नागराज, पांडव जैसी शक्तियों को समर्पित आवेशमय नृत्यगीतवाली पूजन-पद्धतियों का व्यापक प्रचलन है।

इस क्षेत्र की लोक-संस्कृति का कलापक्ष अत्यंत पुष्ट है। साहित्य, संगीत, नृत्य और अभिनय के माध्यम से आकार पानेवाली लोकधर्मी अभिव्यक्ति के अतिरिक्त अन्य चाक्षुष कला रूपों का भरापूरा संसार भी यहां मौजूद है। इनमें आनुष्ठानिक रूपवाली अल्पना-जैसी रचनाओं और लकड़ी, पत्थर, एवं धातु पर किया जानेवाला कलापूर्ण काम तथा वस्त्र-निर्माण की गिनती की जा सकती है। स्थानीय लोगों के जीवन में सुविधा, व्यवस्था और सुंदरता लानेवाली इन रचनाओं का अधिकांश किसी प्रत्यक्ष उपयोग और प्रयोजन से जुड़ा है। अतः इन्हें हम व्यावसायिक प्रकृति की निर्मितियां कह सकते हैं।

सामान्यतः अल्पना-जैसी रचनाएं अव्यावसायिक कही जाती हैं। क्योंकि घरों में महिलाएं निजी स्तर पर, व्यक्तिगत आवश्यकता और अभिरुचि के अनुसार इन्हें बनाती हैं। लेकिन गढ़वाल क्षेत्र में यह काम ब्राह्मण-पुरोहितों के द्वारा किया जाता है। यह एक तरह से उनके पौरोहित्य का अंग है। वही अवसर तथा अनुष्ठान के अनुसार इन्हें बनाते हैं। इस कार्य को व्यावसायिक रूप में किये जाने से एक अंतर आया है, यहां बननेवाली नवग्रह, गणेश तथा मातृका-पूजन की चौकियां और सर्वतोभद्र एवं हवन की वेदी-जैसी

पारंपरिक आभूषण पहने गढ़वाली महिला

रचनाओं में केवल अनुष्ठान विषयक प्रतीकार्यवाली अनिवार्य आकृतियां ही बनती हैं। देश के अन्य भागों की अल्पनाओं में मिलनेवाले विस्तार और अलंकारिकता का यहां अभाव है। इसी प्रकार विवाह आदि पर रसोई घर की दीवार पर महिलाओं द्वारा लगाये जानेवाले हाथ के थापे (थ्यापगे) प्रतीकात्मक महत्त्व रखते हैं। अलंकारिकता और विस्तार उनमें भी नहीं मिलता।

रचनाधर्मिता का दस्तावेज

लकड़ी पर किया जानेवाला कलात्मक काम यहां के लोकशिल्पियों की रचना-क्षमता का प्रामाणिक दस्तावेज है। स्थानीय परिपाटी से बने मकानों के लकड़ी के भागों पर उकेरी गयी आकृतियों का सौंदर्य शब्दों में बांध पाना संभव नहीं है। घने जंगलोंवाले पहाड़ों की गहरी हरी छाया में छिटके हुए गेरू और पीली मिट्टी से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिपे-पुते मकानों के अलंकृत भागों की सही परख उन्हें स्वयं देखकर ही की जा सकती है।

लकड़ी में सामान्य स्तर का काम भी यहां होता है, जिसमें दैनिक उपयोग की वस्तुएं, विभिन्न नाप और आकारों के पात्र, वाद्ययंत्रों के भाग और बांस, रिंगाल, अनाज के डंठल, घास की बनी छोटी-बड़ी अलग-अलग बुनावटों की टोकरियां ली जा सकती हैं। किसी प्रकार की बाहरी सजावट से मुक्त इन निर्मितियों में आकार की सादगी और उपयोगिता का महत्त्व है।

लकड़ी पर सजावट का विशेष काम घर के प्रवेश-द्वार से ही दृष्टि को बांध लेता है। चौखट के बीचोंबीच प्रायः मंगल-दाता गणेश की आकृति उकेरी जाती है और ऊपर-नीचे के भागों पर मत्स्य-युगल, पत्तियों से युक्त पूर्णकलश, फूल-पत्तियां, बेलें तथा पशु-पक्षियों के रूप रचे जाते हैं। पहली मंजिल के खुले बरामदे में अनेक कटावोंवाले खंभों पर अर्द्ध चंद्रकार मेहराबोंवाली 'तिवारी' शोभा पाती है, इसमें खुदाई का बहुत बारीक काम किया जाता है। अन्यत्र खिड़की, कपाट, कोष्ठक, लिंटल आदि पर घोड़ा, हाथी, सिंह, नंदिनी, मयूर, तोता, कमल, लहरदार बेलें, मनुष्य तथा देवाकृतियां खोदी जाती हैं।

खंभों के आधार जिन पत्थरों के होते हैं उन्हें गहरी रेखाएं काटकर सजाया जाता है। पत्थर की कठोरता को यहां के शिल्पियों की छेनी ने मनचाहे आकार में तराशा है। दीवारों, द्वारों तथा खंभों पर कृष्ण-गोपिकाएं, द्वादश अवतार, द्वारपाल, कीर्तिमुख, तथा फूल-पत्तियों के यथार्थ और ज्यामितीय रूपवाले अलंकरण उभरे हुए मिलते हैं। पूजन के लिए देव शक्तियों के रूप में जहां-तहां स्थापित कर दी गयी लोक-रूपाकृतियों का सहज सौंदर्य यहां के निवासियों की सरल श्रद्धा और विश्वास को प्रकट करता है। मंदिरों में शंख, चक्र, गदा, पद्म तथा सूर्य, चंद्रमा की आकृतियों से सुशोभित दिवंगत महंतों के चरण-चिह्न भी देखे जा सकते हैं।

निर्माण कला का उज्ज्वल पृष्ठ

देवाकृतियां धातु से भी बनायी जाती हैं। तांबे और चांदी पर उभारी और तराशी गयी, वैदिक पौराणिक तथा स्थानीय देवी-देवताओं की पूरी आकृतियां एवं मुखौटे मंदिरों में देखने को मिलते हैं। धातु के पत्रों पर मानव-आकृतियां, गाय, घोड़ा, सर्प आदि बनाकर देवताओं के निमित्त अर्पित करने की प्रथा यहां है। दैनिक उपयोग के पात्र, तथा भिन्न-भिन्न आकार-प्रकारों के वाद्य-यंत्रों की गणना भी धातु-शिल्प के अंतर्गत की जा सकती है। स्थानीय शैली के आभूषण धातु-निर्माण-कला में एक जगमगाता हुआ पृष्ठ जोड़ते हैं। हंसली, हार, सुत्ते-धागुले, नथ, बुलांक, पौंछी, कड़वा, शीशफूल, झंवेंरा...इन सुंदर आकार और अभिनव गढ़न वाले आभूषणों की संख्या पर्याप्त है। नन्हें शिशुओं, किशोरियों तथा महिलाओं के अंगों पर सजे हुए आभूषण लोकशिल्पी के श्रम को सार्थक करते हैं।

गढ़वाल के निवासी पुराने समय में अपनी आवश्यकता के वस्त्र अपने आप बुनते थे। जलवायु की भिन्नता से ठंडे स्थानों में ऊन से और गरम स्थानों में कपास के धागे से सूती वस्त्र बनाये जाते थे। भांग के पौधे के रेशों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गंगा के मायके की लोककला के प्रतिरूप आकर्षक गलीचे

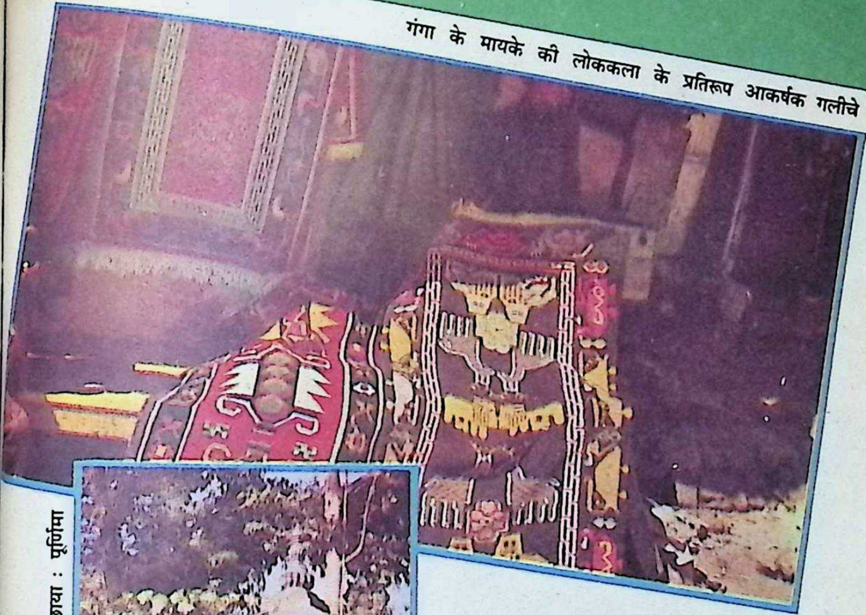

छाया : पूर्णिमा

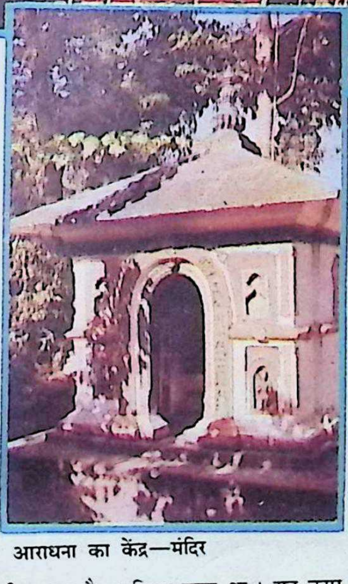

आराधना का केंद्र—मंदिर

भी कपड़ा तैयार किया जाता था। यह काम अब वहुत कम देखने को मिलता है। ऊनी वस्त्र और गलीचे बुनने का काम अब भी होता है, जिसे प्रायः भोटिया जनजाति के लोग करते हैं। यहां की महिलाएं काले रंग के ऊनी वस्त्र को जिसे 'लावा' कहते हैं, साड़ी की तरह लपेटकर पहनती हैं। इसे कंधे पर समेटकर चांदी का सुंदर पिन लगा दिया जाता है।

यह विवरण गंगा के मायके के निवासियों की हस्तकला और सौंदर्य अभिरुचि की अत्यंत संक्षिप्त रूप-रेखाभर है। लोककला के ये प्रतिमान अभी स्मृति-शेष होने की स्थिति से बचे हुए हैं, लेकिन नासमझी और उपेक्षा से गंगा के जल में बढ़ते हुए प्रदूषण की तरह लोक-मन से प्रवाहित इस ऊर्जा का निर्मल प्रवाह आधुनिकता की दौड़ में गंदला होता जा रहा है। इस ओर ध्यान न देकर हम क्या खो रहे हैं? यह समय रहते जान लिया जाए तो श्रेयष्कर है।

पोस्ट बाक्स नं २० श्रीनगर-गढ़वाल (उ. प्र.)।

BLACK

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

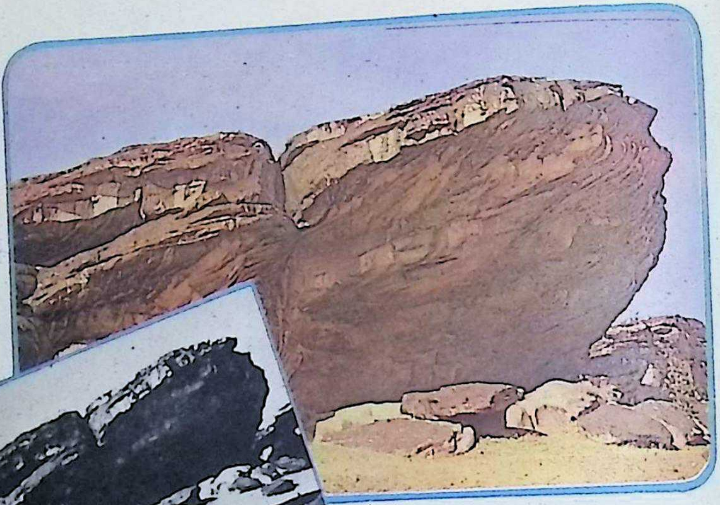

आदमगढ़ की चट्टानें

धीर-गंभीर गति से बहती नर्मदा ! एक ओर विंध्याचल की पर्वत श्रृंखला । घने जंगल । दूसरी ओर हरे-भरे खेत, पठारी क्षेत्र ! धरती की अनेक छोटी-छोटी बाहों-सी उठीं ढलानदार विशाल चट्टानें !

रेलगाड़ी से गुजरते हुए अकसर इन चट्टानों पर नजर पड़ती थी । फिर एक दिन होशंगाबाद से इटारसी जानेवाले एक सहयात्री ने बताया, "साहब, आप इन चट्टानों को देख रहे हैं, हजारों वर्ष पुरानी ये चट्टानें हैं । दरअसल ये प्रकृति निर्मित आश्रय स्थल हैं । यहां अद्‌भुत शैलचित्र बने हैं ।"

सहयात्री की बातों ने मन में उत्सुकता जगायी । जाना था चंद्रपुर, उतर पड़ा इटारसी में । सामान रेलवे के क्लॉक रूम में रखा और कैमरा लेकर चल पड़ा किसी वाहन की खोज में । एक टैक्सीवाले से चलने के लिए कहा । उस स्थान का नाम तो मालूम नहीं था । बस, यही बताया कि होशंगाबाद से आते वक्त कुछ चट्टानें दिखायी दी थीं, वहीं जाना है ।

"आदमगढ़ जाएंगे ।" टैक्सीवाले ने अनजाने ही उस स्थल का नाम बता दिया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नर्मदा से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित आदमगढ़ के शैलाश्रय, जहां कभी रहता था प्रागैतिहासिक मानव। यहां सदियों से सुरक्षित हैं कुछ अद्भुत चित्र !

आदमगढ़ के शैलाश्रय

● सविन्दर

अब उस वीरान क्षेत्र में मैं था और सामने थीं धरती की बांहों-सी उठी चट्टानें। यह भी लगा, जैसे समुद्र से उछली मछलियां किसी अभिशाप के कारण पत्थर की मूर्तियां बन हवा में थम गयी हों !

मैंने दूर से चट्टानों के कुछ चित्र खींचे और फिर उनकी ओर बढ़ा।

आदमगढ़ में अनेक राक शैल्टर या शैलाश्रय हैं। वीरान। जाने कितनी सदियां बीत गयी हैं इन्हें इस वीरानगी में बने हुए। मैंने एक-एक कर सारे शैलाश्रय देख डाले। कहीं कोई चित्र नहीं नजर आया।

अकेला उन्हें देखता रहा। कुछ शैलाश्रय काफी बड़े हैं। बीस-पच्चीस लोगों को आसानी से शरण दे सकें, इतने बड़े। कई तरह के विचार आये। कल्पना की आंखों से देखता रहा, कैसे लोग होंगे, जो यहां रहते होंगे। कैसा

एक शैलाश्रय में अंकित दृश्य : युद्ध-अभियान अथवा आखेट की तैयारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्हीं शैलाश्रयों में अंकित हैं चित्र

होगा, तब उनका जीवन ! तब शायद आसपास घने जंगल होंगे । उनमें हिंसक पशुओं का वास होगा । शैलाश्रय की धरती पर रेत की जैसे चादर बिछी थी । सिगरेट के खाली पैकेट, माचिस की खाली डिब्बियां—और कहीं कुछ नहीं ।

एक घंटा घूमने के बाद लौटा । तभी देखा, एक युवक मेरी ओर चला आ रहा है । वह पुरातत्व विभाग की ओर से नियुक्त शैलाश्रयों का रखवाला—मार्गदर्शक—सभी कुछ था ।

उसने पूछा, "साहब, आपने चित्र देखे ?"

"कहां देखे ? कहीं नजर नहीं आये ।"

"मेरे साथ आइए ।"

और एक बार फिर मैं उसके साथ शैलाश्रयों की ओर मुड़ पड़ा ।

इस बार जैसे मैं एक नयी दुनिया में था । मार्गदर्शक ने कुछ शैलाश्रयों में बने चित्र दिखाये । ये काफी ऊंचाई पर बने थे । उन तक हाथ पहुंचना भी मुश्किल था । 'कैसे बनाये गये होंगे चित्र ?' मन में प्रश्न उठा । मार्गदर्शक से पूछा तो उसने कहा, "साहब, उस जमाने के लोगों का कद बहुत लंबा था । इस चट्टान पर चढ़कर उन्होंने ये चित्र बनाये होंगे ।" उसने एक चट्टान की ओर संकेत किया ।

ये चित्र छत पर बने हुए थे । आखेट के लिए जाते लोग ! हाथ में तीर, धनुष, तरह-तरह के आदिम हथियार ! कुछ चित्र अभी भी अच्छी अवस्था में हैं अर्थात आसानी से उनके चित्र खींचे जा सकते हैं ।

मार्गदर्शक से कई सवाल किये । शक्तिभर उसने उनके उत्तर दिये । पर जिज्ञासा शांत नहीं हुई । पुरातत्व विभाग की ओर से कहीं कोई सूचना पट भी नहीं लगाया गया था, इन शैलाश्रयों का परिचय देने के लिए ।

अतीत के अंधकार में जब कुछ नहीं दिखायी दिया तो मैं विवश हो वर्तमान में लौट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शैलाश्रय में अंकित एक चित्र

आया। मार्गदर्शक से शैलाश्रयों की आज की अवस्था के बारे में पूछने लगा। उसने जो बताया, उसका सार :

भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी से लोग अवकाश के दिन पिकनिक मनाने यहां आते हैं। तब जगह काफी गुलजार रहती है। कोई प्रेमी युगल शाम के झुटपुटे में भी यहां आ पहुंचता है। और कभी-कभी असामाजिक-अनैतिक कार्यों के लिए भी उपयुक्त सिद्ध होते हैं ये शैलाश्रय !

शैलाश्रय के आसपास का दृश्य बेहद मनोरम है। नीचे घुमावदार, सूनी काली सड़क। चट्टानों की कगार के नीचे थमा हुआ जल—एक प्राकृतिक सरोवर-जैसा !

चित्र खींचकर, मार्गदर्शक को धन्यवाद देकर मैंने आदमगढ़ से विदा ली।

०००

दिल्ली लौटकर आदमगढ़ के बारे में पुस्तकों में कुछ जानना चाहा। कोई विशेष जानकारी नहीं मिली। हां, प्रसिद्ध पुरातत्वशास्त्री श्री एच. डी. सांकलिया की एक कृति 'द इंडियन आर्कालॉजी टुडे' में इस क्षेत्र के बारे में अवश्य कुछ विवरण मिला।

श्री सांकलिया के अनुसार, मध्य भारत में नर्मदा के आसपास प्रागैतिहासिक मानव रहा करते थे।

आदमगढ़ से काफी दूर, नर्मदा के उस पार विक्रम विश्वविद्यालय के डॉ. वी. एस. वाकणकर और पुणे विश्वविद्यालय के डॉ. वी. एन. मिश्र ने भीमबैठका में कुछ शैलाश्रयों और उनमें बने चित्रों की खोज की थी। आज से दस वर्ष पूर्व सन—७५-७६ में भीमबैठका के संबंध में पत्र-पत्रिकाओं में काफी लेख छपे थे और डॉ. वाकणकर तथा डॉ. मिश्र ने अपनी खोज निष्कर्ष प्रकाशित किये थे। यहां प्रागैतिहासिक मानव द्वारा उपयोग में लाये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज़िंदगी नाम चढ़ाव और उतार का...

जीवन बीमा–
प्रतीक एक प्यार का.

भारतीय जीवन बीमा निगम

३० वर्षों से जन सेवा में रत.

daCunha/LIC/194/86 Hin

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जानेवाले पत्थरों के औजार भी मिले थे। यह अनुमान किया जाता है कि अपने समृद्ध पर्यावरण के कारण यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक काल से ही निवास के लिए उपयुक्त रहा है। तब प्रागैतिहासिक मानव के लिए यहां आखेट एवं जीवन की गुजर-बसर के लिए पर्याप्त सुविधाएं थीं।

तो क्या भीमबैठका और आदमगढ़ के निवासी समकालीन थे ? पुरातत्वशास्त्री ही इस विषय पर प्रकाश डाल सकते हैं।

सामान्य व्यक्ति के नाते इन शैल चित्रों को देखकर अनेक प्रश्न मन में उभरते हैं। जिज्ञासा होती है, ये चित्र किस काल के हैं ? चित्रों को देखकर एक बात अवश्य स्पष्ट होती है। जिन्होंने भी ये चित्र बनाये, वे धनुष-बाण से, घुड़सवारी से अच्छी तरह परिचित थे। वे, तलवार-जैसा हथियार भी बना चुके थे। शैलचित्रों की रेखाएं लयात्मक हैं। उनमें एक गति है।

एक बात अवश्य मुझे कचोटती है। आदमगढ़ जाने क्यों अभी भी अपरिचय के अंधकार में उपेक्षित-सा पड़ा हुआ है। उसके संबंध में आसपास के लोगों को भी विस्तृत तो दूर, बहुत कम जानकारी भी नहीं है। उनके लिए तो आदमगढ़ मात्र पिकनिक स्पॉट है—आदिम वृत्तियों को शांत करने के लिए एक अच्छा, निरापद स्थल !

— डी-४०, पुराना कविनगर, गाजियाबाद

एक क्रांतिकारी का गर्व

फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए भगतसिंह ने एक अंगरेज मजिस्ट्रेट को संबोधित करते हुए कहा, "मजिस्ट्रेट साहब, आप वास्तव में बड़े भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपको यह देखने का अवसर प्राप्त हो रहा है कि एक भारतीय क्रांतिकारी अपने महान आदर्श के लिए किस प्रकार हंसते-हंसते मृत्यु का आलिंगन करता है।"

फांसी से कुछ पहले भाई के नाम अपने अंतिम पत्र में उसने लिखा था, 'मेरे जीवन का अवसान समीप है। प्रातःकालीन प्रदीप के प्रकाश के समान टिमटिमाता हुआ मेरा जीवन प्रदीप भोर के प्रकाश में विलीन हो जाएगा। हमारा आदर्श, हमारे विचार बिजली की कौंध के समान सारे संसार में जागृति पैदा कर देंगे। फिर यदि यह मुट्ठीभर राख विनष्ट भी हो जाए, तो संसार का इससे क्या बनता-बिगड़ता है!"

जैसे-जैसे भगतसिंह के जीवन का अवसान समीप आता गया देश तथा मेहनतकश जनता के उज्ज्वल भविष्य में उसकी आस्था गहरी होती गयी। मृत्यु से पहले सरकार के नाम लिखे एक पत्र में उसने कहा था, 'अति शीघ्र ही अंतिम संघर्ष के आरंभ की दुंदुभी बजेगी। उसका परिणाम निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद और पूंजीवाद अपनी अंतिम घड़ियां गिन रहे हैं। हमने उसके विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था और उसके लिए हमें गर्व है।'

—'संस्मृतियां'—शिव वर्मा से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिछले बारह बरसों से रतन सिंह के हाथ में ट्रक का स्टीयरिंग था और वह स्टैंडर्ड स्टील फैक्ट्री में पक्की नौकरी पर लगा हुआ था और हर साल उसे एक महीने की तनख्वाह समेत छुट्टी मिलती थी। पर पता नहीं क्यों वह ट्रक के स्टीयरिंग के सामने बैठा मुझे कभी भी ड्राइवर नहीं लगा था।

कहानी

दो हाथों की दूसरी मौत

• सुखबीर

स्टैंडर्ड स्टील फैक्ट्री की इस सबसे बड़ी और सबसे लंबी, लेकिन अंत में असफल हो गयी हड़ताल में अन्य कई मज़दूरों के साथ रतन सिंह भी जख्मी हुआ है, और उसकी दायीं बांह दो जगह से टूट गयी है। फैक्टरी के फाटक के सामने वह रोज दूसरे मजदूरों के साथ जाकर बैठता था, ताकि नये भर्ती किये गये मजदूरों को अंदर जाने से रोका जा सके। आखिर, जब फैक्टरी का मालिक किसी तरह भी उन्हें वहां से न हटा सका, तो पुलिस आयी, और लाठीचार्ज हुआ, और उस लाठीचार्ज में पुलिस की कुछ लाठियां गुस्से से भरे मजदूरों के हाथों में चली गयीं, और फिर दोनों ओर से लाठियां चलीं, औत अंत में जब गोली चली, तो रतन सिंह अन्य जख्मी मजदूरों के साथ अपनी टूटी हुई बांह संभाले गिरा पड़ा था।

रतन सिंह 'स्टैंडर्ड स्टील फैक्टरी' में ट्रक का ड्राइवर था। पता नहीं क्यों, रतन सिंह मुझे कभी ड्राइवर नहीं लगा था, यद्यपि पिछले बारह वर्षों से वह ड्राइवरी करता आ रहा था, और उसके बारे में मशहूर था कि अढ़ाई-अढ़ाई सौ मन बोझ लादे जाने पर भी ट्रक उसके हाथों में कभी डगमगाया नहीं था। आज रतन सिंह के उन दो हाथों की मौत हो गयी है, जो ट्रक चलाते थे।

मैं रतन सिंह को तब से जानता हूं, जब से हम दोनों ने होश संभाला और गांव की गलियों में दौड़ना शुरू किया था। वह मेरी उम्र का था। चौथी कक्षा तक हम एक साथ पढ़े थे। तब वह बहुत छोटा-सा था, और पढ़ने में सबसे होशियार।उसने कभी मास्टर गुलाम हैदर की मार नहीं खायी थी, जो कि अपनी मार के लिए बहुत मशहूर था, और खास मौकों पर विद्यार्थियों को अपने काले रंग के डंडे से मारता था, और कहा करता था कि यह मार तो घी की नलियों के समान है। सरदियों के दिनों में सुबह जब लड़के एक घुटने के बल बैठे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुच्छम-गुच्छा बने, सलेटों पर सवाल कर रहे होते, तो मास्टर गुलाम हैदर हाथ में शीशम की ताजी छड़ी पकड़े विद्यार्थियों की पंक्तियों में घूम रहा होता और हर विद्यार्थी की पीठ पर एक-एक छड़ी जमाता हुआ कहता, गरम हो जाओ, लड़को, गरम हो जाओ !' और गुच्छम गुच्छा बने लड़के एक बारगी सीधे होकर बैठ जाते । लेकिन वह छड़ी सबसे आगे बैठे रतन सिंह की पीठ पर आकर रुक जाती । वह कभी भी उसकी पीठ पर नहीं पड़ी थी ।

रतन सिंह तीसरी कक्षा में था, तो उस-जैसी जिल्दें और कोई नहीं बांध सकता था । लड़के उससे दोस्ती गांठकर अपनी पुस्तकों की जिल्दें बनवाते । उन दिनों वह इतनी सुंदर कलमें घड़ लेता था कि परीक्षा के दिनों में स्कूल के सभी विद्यार्थी उससे कलमें बनवाते । चौथी की परीक्षा में वह प्रांतभर में प्रथम रहा था, और उसे छात्रवृत्ति मिली थी । लेकिन आठवीं में फिर छात्रवृत्ति पाने के बाद वह आगे नहीं पढ़ सका था । हाई स्कूल उसके गांव से आठ कोस की दूरी पर था, और छात्रवृत्ति के आठ रुपयों से वहां की शिक्षा और सायकल का खर्च कहीं अधिक था । उसका पिता अकेला ही सारी गृहस्थी का बोझ उठाने में असमर्थ था । एक बेटा, छह बेटियां, मर चुकी पत्नी का गम, और गिरवी पड़ी हुई अढ़ाई बीघा जमीन ने उसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवन को जैसे पहाड़ के नीचे दबाया हुआ था, और उसकी कमर झुक गयी थी, और उसे जरूरत थी कि उसका जवान हो रहा बेटा अब काम-काज में उसका हाथ बंटाये।

पिछले वर्षों में मैं रतन सिंह को ट्रक का स्टीयरिंग पकड़े देखता था, तो मुझे रह-रहकर बचपन की एक घटना याद आती थी, जब हमारे गांव के चौधरी के लड़के का विवाह था, और बारात बैलगाड़ियों में जाने की बजाय बसों में जानी थी। दो बसें हमारे गांव में आयी थीं। हम सभी छोटे-छोटे लड़के उनके इर्द-गिर्द घूमते हुए उन्हें हैरान देखते रहे थे। इससे पहले हमने बसों को कभी इतनी निकटता से नहीं देखा था। शायद रतन सिंह को सबसे ज्यादा हैरानी थी, और सबसे ज्यादा खुशी कि वह उनमें बैठेगा। लेकिन हममें से कोई भी उसमें बैठ नहीं सका था। बसों के ड्राइवर हमें वहां से दूर-दूर हटाते रहे थे, और हम तरसते रहे थे कि काश कहीं एक बार खड़ी हुई बसों में ही हमें बैठ लेने दिया जाए। फिर, जब बरात चली थी, तो हम बसों के पीछे दौड़े थे और तब तक दौड़ते गये थे, जब तक कि उनकी उड़ती हुई धूल ने उन्हें हमारी आंखों से ओझल नहीं कर दिया था। उस दिन रतनसिंह घर जाकर बहुत रोया था। और जब मां के बार-बार चुप कराने पर भी चुप नहीं हुआ था, तो उसके पिता ने, शायद अपनी लाचारी पर खीझकर, उसे बहुत मारा था।

पिछले बारह बरसों से रतन सिंह के हाथ में ट्रक का स्टीयरिंग था, और वह स्टैंडर्ड स्टील फैक्टरी में पक्की नौकरी पर लगा हुआ था, जहां उसका प्राविडेंट फंड कटता था, और साल में एक बोनस मिलता था, और हर साल एक महीने की तनख्वाह समेत छुट्टी मिलती थी। पर, पता नहीं क्यों, वह ट्रक के स्टीयरिंग के सामने बैठा मुझे कभी भी ड्राइवर नहीं लगा था।

अपने आस-पड़ोस में वह बहुत हरमन प्यारा था। मौके-बेमौके पर वह हर किसी के काम आता। किसी घर में बत्ती का फ्यूज चला जाता, तो रतन सिंह ठीक कर देता। किसी की घड़ी में छोटा-मोटा नुक्स पड़ जाता, तो वह रतन सिंह के पास मरम्मत के लिए आ जाती। किसी को कहीं अर्जी देनी होती, तो रतन सिंह अर्जी के छपे हुए फार्म की खानापूर्ति कर देता। किसी को घर में पलस्तर करने के लिए सीमेंट की जरूरत पड़ती, तो रतन सिंह कंट्रोल होने के बावजूद कहीं न कहीं से सीमेंट का प्रबंध कर देता। किसी को डाक्टर इंजेक्शन लेने को कहता, तो वह दवाई खरीदकर रतन सिंह के घर आकर इंजेक्शन लगवा लेता, और इस तरह डॉक्टर से इंजेक्शन लगवाने के पैसे बचा देता। कोई चीज जो किसी को कहीं से भी न मिलती, और वह ढूंढ़कर हार जाता, रतन सिंह वह चीज ला देता। गाड़ियों के समय के लिए किसी को टाइम टेबल रखने की जरूरत नहीं पड़ती थी, सभी खास-खास गाड़ियों के समय रतन सिंह को ज़ुबानी याद थे। शहर के किसी भी भाग में किसी को जाना हो, रतन सिंह बता सकता था कि किस नंबर की बस वहां जाएगी। कोई बाजार, कोई खास जगह, कोई बड़ा दफ़्तर उससे भूला हुआ नहीं था। बस, एक बार वह कहीं से गुजर जाता, एक बार किसी चीज को देख लेता, वह उसके दिमाग पर अंकित हो जाती। और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF.

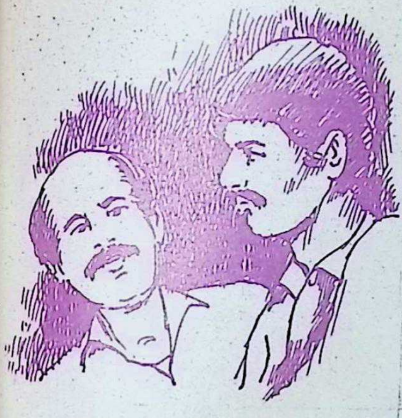

उसके आस-पड़ोसवालों को पता था कि कभी भी कोई मुश्किल आने पर रतन सिंह की बदौलत वह दूर हो जाएगी।

वह हर विषय पर बातें कर सकता था, और अगर किसी विषय पर वह पूरी तरह बात न भी कर सकता, तो बातों-बातों में उस बात को अपने किसी विषय पर ले आता, और फिर सब पर छा जाता। कभी कोई बात करता कि अमुक होटल में मांस बहुत स्वादिष्ट मिलता है, तो रतन सिंह बंबई के विभिन्न इलाकों के विभिन्न होटलों का जिक्र करता कि किस होटल में किस किस्म का मांस अच्छा मिलता है और फिर, वह मुर्गा बकरा, सूअर, हिरन, खरगोश, बटेर, तीतर, मुर्गाबी आदि विभिन्न जानवरों के मांसों के स्वाद और गुणों के बारे में बताता, और तब सुननेवालों को पता ही न लगता कि कब मांस की किस्मों से हटकर उसने पोल्टरी-फार्म के बारे में बोलना शुरू कर दिया है कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार की देशी और अंगरेजी मुर्गियां पालने पर साल का इतना खर्च और इतना लाभ हो सकता है। कभी बात शराब के बारे में होती, तो यद्यपि उसे कभी किसी ने शराब पीते नहीं देखा था, वह शराब की 'खाद-ब्रांड' से लेकर उस शराब तक का जिक्र कर जाता, जो जहांगीर नूरजहां के हाथों से पिया करता था, फिर, वह उन अलग-अलग किस्मों की शराबों के स्वादों और नशों के बारे में बताता कि किस शराब का नशा किस तरह शुरू होता है, किस तरह बढ़ता है, किस किस्म की हिलोर देता है, और अंत में किस तरह उतरता है। आखिर, वह शराब से हटकर अफीम, चरस, भांग, पोस्त आदि के नशों के बारे में बताता, और सुननेवालों में से जिस किसी को जिस नशे का थोड़ा-बहुत अनुभव होता, वह उसकी बातों की पुष्टि किये बिना न रहता।

इसी प्रकार, पिछले दिनों जब मैं गांव गया तो लोगों से पता लगा कि पिछले वर्ष रतन सिंह गांव आया था, तो उन्हें खेती-बाड़ी के नये तरीकों के बारे में बता रहा था कि किस प्रकार नयी और अच्छी नस्ल की फस्लें पैदा की जा सकती हैं, किस प्रकार वैज्ञानिक तरीकों से अनाज की उपज बढ़ायी जा सकती है, और साल की दो फसलों के बजाय चार-चार, छह-छह फसलें पैदा की जा सकती हैं। लोग उसकी बातों पर पहले हैरान हुए थे, और फिर हंसे थे कि बाप के अढ़ाई बीघा खेत में तो कभी मकई की फसल भी गेहूं जितनी बड़ी नहीं हुई, और बेटा सारे गांव को बाजरे जितनी ऊंची गेहूं की फसल उगाने के बारे में बता रहा है। क्यों नहीं वह पहले अपनी जमीन में ही बेरों जितने बड़े दानोंवाली गेहूं की फसल पैदा कर लेता!

मैं सोचता था कि रतन सिंह अगर ट्रक की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ड्राइवरी न करता, तो शायद गेहूं की बाजरे से भी ऊंची फसल पैदा कर लेता। पर बाप-दादा से चली आ रही अढ़ाई बीघा जमीन को उस गिरवी पड़े खेत में वह समा नहीं सका था, और आठवीं पास करने के बाद, पढ़ाई छोड़कर उसने अपने बूढ़े बाप के साथ उस धरती की मिट्टी में छह-सात वर्ष बरबाद किये थे, और अपनी उठती जवानी के सपने बोकर, जो उग नहीं सके थे, नौकरी की खोज में बंबई आ गया था। अढ़ाई बीघा जमीन में वह अपने बूढ़े बाप के साथ शायद समा भी जाता, पर जमीन उसकी छह बहनों की शादियों का दहेज नहीं उगल सकती थी। आखिर रतन सिंह झुकी हुई कमरवाले अपने पिता और अपनी छह बहनों को छोड़कर बंबई आ गया था, और पांच-सात महीने इधर-उधर धक्के खाने के बाद उसकी किस्मत चमकी थी, और उसे स्टैंडर्ड स्टील फैक्टरी में ट्रक-ड्राइवर की नौकरी मिल गयी थी। उसके साथी हैरान थे कि उसे ड्राइवरी तो आती ही नहीं थी, यह नौकरी कैसे मिल गयी है!

ट्रक चलाते हुए उसे बारह वर्ष हो गये थे। इस अरसे में उसने गिरवी पड़ी अपनी जमीन छुड़ा ली थी, और अपनी शादी के अलावा अपनी तीन बहनों की शादियां कर ली थीं, और चौथी की शादी अगले वर्ष होनेवाली थी। छोटी दोनों बहनों को वह पढ़ा रहा था। उसके बूढ़े बाप की दिन प्रति दिन झुकती जा रही कमर कुछ सीधी हो गयी थी। और रतन सिंह सोचता था कि यद्यपि वह स्वयं अधिक नहीं पढ़ सका था, उसके चारों बच्चे शिक्षा से वंचित नहीं रहेंगे, और पढ़-लिखकर बड़ी नौकरियों पर

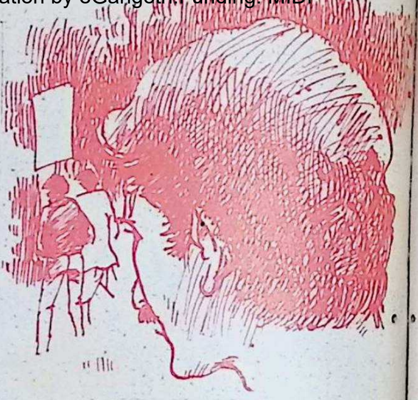

लगेंगे, और आज की तरह टीन की बनी हुई कोठरी में घुटनभरे जीवन नहीं बिताएगी।. . .

पिछले बारह वर्षों से रतन सिंह सोच रहा था कि वह उस टीन की कोठरी को छोड़ दे, जो गरमी के दिनों में तपकर आग की भट्टी बन जाती थी। लेकिन वह उसे अभी तक छोड़ नहीं सका था। पहले तो मकान ही नहीं मिलता था, और अगर कहीं मिलता भी था, तो उसकी पगड़ी उसकी एक बहन की शादी के खर्च से कम नहीं थी। सो, छोड़ने के बजाय वह आहिस्ता-आहिस्ता उस कोठरी को सजाता आया था। रात के समय मर्करी-ट्यूब के प्रकाश में वह आस-पास की कोठरियों की अपेक्षा कहीं अधिक चमकती थी। उस कोठरी में के सारे फर्नीचर ने रतन सिंह के हाथों में जन्म लिया था। लोहे की स्प्रिंगोंवाली चारपाई उसने स्वयं ही बनायी थी। पता नहीं, कहां से उसको स्प्रिंगोंवाला फ्रेम मिल गया था। फिर क्या था, रतन सिंह ने लोहे की चार मोटी सलाखें लेकर और कूट-पीट कर उसके साथ जोड़ दी थीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरकारी रखनेवाली टोकरी भी उसने स्वयं ही तारों को मोड़-जोड़कर बनायी थी। जूते रखनेवाला बहुत ही सादा-सा स्टैंड भी उसके ही दिमाग का चमत्कार था। एक मेज, दो कुरसियों, दो अल्मारियां, जिनमें से एक के दो खानों में उसके खरीदे हुए सामाजिक और जासूसी उपन्यास भरे पड़े थे, उसने खुद ही बनायी थी, यद्यपि उसमें किसी अच्छे कारीगर के हाथों के स्पर्श की कमी थी। उसके बारे में मशहूर था कि उसे कोई भी टूटी-फूटी चीज मिल जाती, कुछ समय के पश्चात् वह कोई नयी चीज बन जाती। इसी प्रकार उसने अपने बड़े पुत्र के लिए तीन पहियोंवाला सायकल बनाया था। वह कहीं से पुराने पहिये लाया, कहीं से फ्रेम लाया, और उस पर एक सलाख के दोनों सिरों को मोड़कर हैंडल फिट कर दिया, और उस पर ऐसी घंटी लगायी, जिसकी आवाज में घुंघरू बजते हुए प्रतीत होते थे।

काम के अतिरिक्त उसे अपने बच्चे भी इतने प्यारे थे कि कई बार तो वह आंखें मूंदकर उनके लिए खर्च कर देता, और तब घर में पत्नी के साथ झगड़ा होता। एक दिन वह अपनी छोटी बेटी के लिए बहुत सुंदर बूट ले आया, और फिर जिस दिन अपने लिए छतरी खरीदने गया, उसके लिए फूलोंवाली बरसाती भी ले आया। देखकर उसकी पत्नी तमतमा उठी कि बिटिया रानी अभी खड़ी होना तो सीखीं नहीं, यह बूट और बरसाती पहनकर वह किन बाजारों की सैर करेंगी!

रतन सिंह बहुत अच्छा मोटर-मैकेनिक था, और प्रायः मोटरों की गराज खोलने की योजना बनाता। मैं पहले सोचता था कि वह स्वयं ऐसी गराज क्यों नहीं शुरू कर लेता, ताकि और ज्यादा कमा सके। लेकिन ऐसी योजना के लिए उसके पास पूंजी कहां थी? हर दो-तीन वर्षों के पश्चात् वह जो रुपये जमा करता, वे उसकी बहन के विवाह पर खर्च हो जाते। अभी तीन बहनों के विवाह बाकी थे, और स्वयं उसके चार बच्चों की शिक्षा और विवाहों का खर्च था। सो, वह उस नौकरी को छोड़ने का खतरा मोल नहीं ले सकता था।

रतन सिंह की उस पक्की नौकरी पर यद्यपि और सभी बहुत खुश थे, और उसके भाग्य को सराहते थे, पर पता नहीं क्यों, मैं हमेशा यही समझता रहा हूं कि यह उन दो हाथों की मौत थी, जो घड़ियों और मोटरों की मरम्मत कर लेते थे, जिनमें लोहा और लकड़ी और टूटी-फूटी चीजें नयी शक्लों में ढल जाती थीं, और जिनमें उसके दिमाग का कोई भी विचार साकार होने से वंचित नहीं रह सकता था।...वे हाथ, जिनमें हुनर के करिश्मे थे, और जो पिछले बारह वर्षों से ट्रक के स्टीयरिंग पर जमे हुए थे।

इस मौत को केवल मैं ही जानता था। पर आज, जब उन हाथों की दूसरी बार मौत हो गयी है, तो आस-पड़ोस के सभी लोग सोच रहे हैं कि रतन सिंह अब क्या करेगा?

—बी-१९-सन एंड सी, वरसोवा रोड,
बंबई-४०००६१

वे भी क्या दिन रहे होंगे। सन १८६८ में अमरीका में कनास पैसेफिक रेल चला करती थी। यह ट्रेन जहां-तहां रोक दी जाती थी ताकि यात्री उससे उतर कर पास से गुजरते भैंसों का शिकार कर सकें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्तिवाहिनी के जवान अपने कैंप पर एंटी एयर क्राफ्ट गनों के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बमों के साथ वह जोखिमभरा सफर

श्री एन. त्यागराजन : सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर तथा अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता। 'हिंदुस्तान टाइम्स' के लिए वे बंगला-देश युद्ध के दौरान चित्र खींचने अगरतला गये थे। उनके उन्हीं दिनों के कुछ संस्मरण :

● एन. त्यागराजन

बंगला देश-युद्ध के दिनों की बात है। भारतीय सेना बंगला देश में प्रवेश करने ही वाली थी और वहां मुक्तिवाहिनी के लोग सक्रिय थे। मुझे अगरतला की ओर से इन गतिविधियों को 'कवर' करने के लिए कहा गया था। मैं जब अगरतला पहुंचा, तब वहां तो चारों ओर शांति थी, लेकिन सीमा के पार काफी कुछ हो रहा था। सीमा कहां से पार करूं, यह नहीं जानता था, अतः एक-दो दिन यहां-वहां घूमता रहा।

एक दोपहर बाजार में मैंने ढाका की नंबर प्लेटवाली एक मिनी वैन देखी। मन में जिज्ञासा हुई कि आखिर ढाका में 'रजिस्टर्ड' यह गाड़ी भारतीय सीमा के भीतर कैसे आ गयी! मैं निर्भीकतापूर्वक ड्राइवर की ओर बढ़ा। वह एक चुस्त-दुरुस्त व्यक्ति था। मैंने उससे पूछा कि वह कहां का रहनेवाला है। उसने धमकीभरे स्वरों में पूछा कि 'आपको इससे क्या वास्ता ?' मैंने उसे अपना परिचय-पत्र दिखाया और अगरतला आने का उद्देश्य बताया। 'ओह-आप तो हमारे दोस्त हैं। आइए-वैन में बैठिए। हम रात में आपको वापस छोड़ देंगे,' उसने तपाक से कहा।

वैन में मेरे साथ 'बैठे' थे—बम और पेटियों में बंद हथगोले! कच्ची सड़क पर वह तेज रफ़्तार में वैन दौड़ाने लगा। लकड़ी के एक पुल को पार कर वह मुझे जंगल में स्थित एक बंगले में ले गया। पूरे सफर में मैं भय के कारण प्रार्थना करता रहा कि ऊबड़-खाबड़ सड़क पर आती वैन में धक्का लगने के कारण कहीं बम न फट जाएं। पर जब सुरक्षित पहुंच गया तो मैंने चैन की सांस ली। मेरा कई चुस्त लड़कों से परिचय कराया गया। वे सब हाथों में मशीनगन लिये हुए थे—युद्ध की मुद्रा में। उन्होंने मेरी पूरी तलाशी ली और फिर बाद में यहां-वहां घूम-फिरकर अपनी गतिविधियां देखने की इजाजत भी दी। सहसा वहां आ उपस्थित हुए अफसरों ने सीटी बजायी और चिल्लाकर बोले, 'टेक शेल्टर', 'टेक शेल्टर'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैं भौंचक्का रह गया। कुछ समझ ही नहीं पाया कि क्या करूं ! छिपने के लिए कहां जाऊं ! मैं बिना जाने-बूझे किसी पागल की भांति यहां से वहां दौड़ने-भागने लगा। कंधे पर कैमरा और अन्य सामान था। मैं पसीने से तर-बतर हो गया। इसी बीच मेरे सिर पर आसमान में कुछ विमान मंडराने लगे। सोचा, 'जीवन का अंत आ गया !' फिर यह भी सोचा कि शत्रु के ये विमान बमवर्षक हैं और मेरे सिर पर बम गिराने ही वाले हैं। हार-थककर मैं एक छिद्रवाले स्थान पर बैठ गया और मन-ही-मन गायत्री मंत्र का जाप करने लगा। शायद इसी मंत्र के कारण मेरी जान बची।

कुछ ही पलों बाद आवाज आयी—'ऑल क्लियर'—'ऑल क्लियर'! उन्होंने मुझे एक शेड के नीचे देखा और मुझे हुई दिक्कतों के लिए क्षमा मांगने लगे। बोले, 'भारतीय विमानों को

जीप जिसमें लेखक ने यात्रा की

मुझे उस हेलमैट के पास पड़े शव का ध्यान हो आया। मैं भयभीत हो उठा, कहीं उस सैनिक का प्रेत मेरा पीछा न करने लगे। मैं सारी रात सो नहीं सका।

हमने पाकिस्तानी विमान समझ लिया था।' पर मुझे पूरी तरह से होशो-हवास में आने में लगभग आधा घंटा लगा। मुझे अपने परिवार का ध्यान आया। यह भी विचार आया कि किसी को मेरे बारे में पता भी नहीं चलता कि कहां था। इसके बाद उन्होंने मुझे भूनी हुई मछली और पकौड़े खिलाये। शाम होते ही उन्होंने मुझे एक दूसरी वैन में बैठाया और वापस अगरतला भेज दिया।

उसी सप्ताह की बात है। एक दिन मैं सीमा पर घूम रहा था। एक दिलचस्प बात यह थी कि वहां पता ही नहीं चलता था कि आप भारतीय क्षेत्र में हैं अथवा पाकिस्तान के। कारण ! चारों ओर धान के खेत ही खेत थे और दोनों देशों को अलग करनेवाली सीमा रेखा उनके बीच से गुजरती थी। उस दिन मैंने एक छोटी-सी नदी के उस पार एक शिविर देखा। मैंने नदी में मछली मार रहे स्थानीय लोगों से पूछा कि 'वह किसका शिविर है' और मछली मारने के लिए उपयोग में लायी जानेवाली एक नाव में बैठकर नदी के उस पार पहुंच गया। जैसे ही मैं शिविर के पास पहुंचा मेरी जान सूख गयी। शिविर पर पाकिस्तानी झंडा लहरा रहा था। मैं किसी तेज धावक की भांति पीछे की ओर दौड़ा। नदी पारकर भारतीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीमा में आया तो सीमा सुरक्षा बल के लोगों ने मुझे फटकारा कि आखिर मैं पाकिस्तानी सीमा में क्यों गया था । यदि पाकिस्तानी सैनिक मुझे देख लेते तो बंदी बना लेते ।

उस दिन की याद कर मैं आज भी कांप उठता हूं ।

एक दिन भारतीय सेना के लोग हमें पदमा नदी के तट पर ले गये, वहां आधा घंटा पहले ही लड़ाई हुई थी । चारों ओर आग और पाक सैनिकों के क्षत-विक्षत शव ! साथ के पत्रकारों ने स्मृति-चिह्न के रूप में चीनी चिह्नवाले खाली खोल उठा लिये । मैंने भी युद्धभूमि से एक अमरीकी हैलमैट उठा लिया और अपने होटल ले आया । काफी रात बीत चुकी थी और हैलमैट पास की टेबल पर रखकर मैं सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया । सहसा मैंने सोचा कि यही हैलमैट मुझसे बातें करने लगा है । मैं बेहद बेचैन हो उठा । मुझे उस हैलमैट के पास पड़े शव का ध्यान हो आया । मैं भयभीत हो उठा, कहीं उस सैनिक का प्रेत मेरा पीछा न करने लगे ! मैं सारी रात सो नहीं सका । अंततः मैंने बत्ती जलायीं और हैलमैट हाथ में उठाकर बटन दबाकर घंटी बजायी । जब बैरा आया तो मैंने वह हैलमैट उसे उपहार-स्वरूप भेंट कर दिया । क़ारण ? मैं जब जा रहा था, तब उसने अनुरोध किया था कि मैं उसके लिए रणभूमि से कोई स्मृति-चिह्न ले आऊं । जब मैंने उसे वह हैलमैट भेंट किया तो वह थोड़ा भौंचक्का रह गया ! इतनी रात गये कोई स्मृति-चिह्न भेंट करने की क्या तुक ! यह तो सुबह भी दिया जा सकता था ।

पर उसे मेरे मन की दशा क्या मालूम थी !

हैलमैट भेंट करने के बाद ही मैं चैन से सो सका ।

विदेशी फोटोग्राफर सचमुच की लड़ाई के चित्र खीचना चाहते थे और उनकी यह इच्छा पूरी करने के लिए तीन-चार निर्दोष युवकों को देखते-देखते संगीनों से छलनी-छलनी कर दिया गया । यह दृश्य एक भयानक दुःस्वप्न की तरह ही था ।

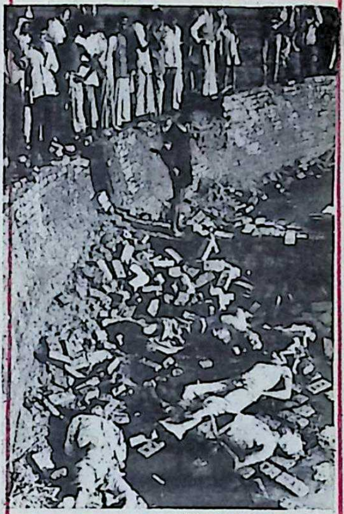

'ऐसा फिर कभी न हो'—ढाका में पाकिस्तानियों के नरसंहार के शिकार बुद्धिजीवी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रणभूमि से पलायन : पद्मा नदी के तट पर पाक सेना द्वारा छोड़ दिये गये वाहन

क्या आपने कभी सुना है कि केवल फोटोग्राफरों द्वारा फोटो खींचे जाने के लिए लोगों की नृशंस हत्याएं की जा सकती हैं ? शायद, आप ऐसा सोच भी नहीं सकते ! लेकिन बंगलादेश में यह भी हुआ । वह दृश्य आज भी मुझे एक भयानक दुःस्वप्न-सा प्रतीत होता है ।

पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया था । हेलीकोप्टरों से फोटोग्राफरों को ढाका ले जाया गया था, ताकि वे पाकिस्तानी सेना द्वारा निर्दोष नागरिकों पर किये गये अत्याचारों को स्वयं देख सकें । जब हम ढाका पहुंचे तो चारों ओर लाशें ही लाशें पड़ी थीं । जिन लोगों की ये लाशें थीं, उन्हें चौबीस घंटे पहले ही मौत के घाट उतारा गया था । बेहद दर्दनाक और आक्रोश उपजाने वाला दृश्य था वह ।

रेलगाड़ी की जगह पैटन टैंक : पद्मा नदी पर बने रेल पुल का पाकिस्तानी सेना ने टैंकों के लिए उपयोग करना चाहा था ।

सहसा कुछ विदेशी फोटोग्राफरों की इच्छा हुई कि सड़क पर सचमुच की लड़ाई के दृश्य फिल्माये जाएं । उन्होंने मुक्ति वाहिनी के कुछ लोगों से अपनी इच्छा व्यक्त की । और फिर जो कुछ हुआ, उसके पीछे पता नहीं क्या था—डॉलरों का लालच या और कुछ । कुछ पूर्वी बंगाली, फोटोग्राफरों और पत्रकारों को एक मसजिद के पास ले गये । वहां बिहारी मुसलमानों का एक शरणार्थी शिविर था—भयभीत और आतंकित ! भेड़-बकरियों की तरह भरे । यह बात ठीक थी कि बंगालियों के मन में बिहारी मुसलिमों के प्रति जबरदस्त घृणा का भाव था । वे उन्हें बंगलादेश के प्रति गद्दार मानते थे, लेकिन जो कुछ उन्होंने बदले में किया, वह अमानुषिक था ।

उन बंगालियों ने शिविर से तीन-चार युवकों को खींचा और फिर देखते-देखते उनके शरीर में संगीनें घुसेड़ दीं—एक बार, दो बार, तीन बार ! जाने कितनी बार !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैं हतप्रभ रह गया। सांस थम-सी गयी। ऐसे दृश्य की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।

लेकिन कुछ फोटोग्राफर थे, जो इस अमानुषिक, बर्बरता से भरे दृश्य को फिल्मा रहे थे, उसके चित्र खींच रहे थे। घर्रर-घर्रर-क्लिक-क्लिक ! वे सभी विदेशी थे। भारतीय फोटोग्राफर तो जैसे पक्षाघात के शिकार हो गये थे। केवल एक को छोड़कर ! वे भारतीय फोटोग्राफर भी धड़ाधड़ चित्र खींच रहे थे।

होश आते ही मैं चीखा, "नहीं, नहीं, ऐसा मत कीजिए।"

मेरे साथ दो अन्य भारतीय फोटोग्राफर भी थे। वे भी उन्हें रोक रहे थे। पर यह सब अरण्य-रोदन की भांति था।

बाद में ए. पी. ए. द्वारा लिया गया चित्र विश्व के अनेक प्रमुख समाचारपत्रों में प्रकाशित भी हुआ और यही नहीं, उसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ चित्र भी घोषित किया गया !

लेकिन उस रात हम सो नहीं पाये। मेरे एक मित्र फोटोग्राफर तो रातभर इस दर्दनाक दृश्य को याद कर सिहरते रहे, रोते रहे।

बंगला देश का ध्वज लगाते हुए एक मुक्ति सैनिक

दिल्ली आकर मैंने श्रीमती इंदिरा गांधी को पत्र लिखकर सारी घटना से अवगत कराया। मैंने 'टाइम' (न्यूयार्क) पत्रिका के संपादक को भी पत्र लिखा। उन्होंने मुझे उत्तर दिया कि वे इस बात की जांच करा रहे हैं।

—६, बाबर प्लेस, बंगाली मार्केट, नयी दिल्ली

यातायात के कारण मार्ग आजकल ही नहीं, पहले भी अवरुद्ध हुआ करते थे। और इसी कारण जूलियस सीजर में आदेश दिया था कि रोम में दिन के समय कोई पहियेदार वाहन नहीं चलेंगे।

☆

अठारहवीं शती में वेनिस जुए के पीछे दीवाना था। सन १७६२ में एक शाम एक पादरी एबे गिरोमी ने जुए में अपना सब कुछ, यानी यहां तक कि शरीर के वस्त्र तक दांव पर लगा दिये। फिर भी विजय उनसे दूर रही। फलतः एबे गिरोमी को विवस्त्र हो अपने चर्च लौटना पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"मैंने राग-रागिनियों से साक्षात्कार किया है"

● जगदीशचन्द्र दीक्षित

नवम्बर, १९३५। उन दिनों मैं लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था। सूचना मिली कि कानपुर में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन हो रहा है और उसमें पंडित ओंकारनाथ ठाकुर भाग लेंगे। पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के शिष्य पंडित ओंकारनाथ ठाकुर हाल ही में विदेश यात्रा से लौटे थे। कहा जाता था कि अपनी इस विदेश यात्रा में पंडितजी ने यूरोप के कई देशों में भारतीय संगीत की धूम मचा दी थी, यहां तक कि मुसोलिनी के समान पाषाण हृदय व्यक्ति को भी अपने स्वरों से प्रभावित कर उसके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित कर दी थी तथा उसका अनिद्रा रोग दूर कर दिया था। मैंने छात्रावास के कुछ मित्रों को साथ लिया और हम लोग कानपुर पहुंच गये।

उस दिन रविवार था और सबेरे का समय। गायन-वादन के अनेक कार्यक्रम होने के बाद घोषणा हुई कि अब ओंकारनाथजी का गायन होगा। स्टेज पर मखमल का एक गलीचा बिछाया गया, फिर दो युवा कलाकार बहुत बड़े आकार के दो तानपूरे लेकर गलीचे के दोनों ओर बैठ गये। फिर सारंगी और तबलावादक आये और अपने साज मिलाने लगे। इस कार्रवाई के पश्चात् पंडितजी स्टेज पर पधारे। उनके आते ही सारा कक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

स्वरूप वर्णन रागिनी का

पंडितजी ने बैठने के बाद पहले अपने गुरु का स्मरण किया फिर वादकगण को रुकने का आदेश देकर धीमे गंभीर स्वरों में बोले—

"मैं इस समय आपको 'तोड़ी' रागिनी

ललित कलाओं में भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे अधिक सशक्त माध्यम संगीत ही है, क्योंकि वह सार्वलौकिक है, सर्वव्यापी है और इसकी संभावनाएं अनंत और असीम हैं। एक उच्च कोटि की रूसी कविता एक ऐसे व्यक्ति के लिए बेमानी है जिसे रूसी भाषा का ज्ञान नहीं। किंतु संगीत की भाषा के लिए कोई बंधन नहीं है। उससे मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी विमुग्ध हो जाते हैं। हमारे यहां इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पं. ओंकारनाथ ठाकुर

सुनाने जा रहा हूं। मैं गाना आरंभ करूं इसके पूर्व इस रागिनी का जो स्वरूप मैंने देखा है और अनुभव किया है उसके संबंध में दो शब्द यदि मैं आपको बता दूं तो आप मेरे संगीत का अधिक आनंद और रस ले सकेंगे। मेरे मतानुसार तोड़ी एक प्रौढ़ा नारी है जिसके पति का हाल ही में अवसान हो गया है। किसी भारतीय नारी के जीवन में पति के वियोग से बढ़कर दूसरा दुःख हो नहीं सकता। पति की मृत्यु से उसके जीवन का समस्त संबल और आधार नष्ट हो जाता है। उसका दुःख असीम है, वेदना अपार है। यदि वह तरुणी होती तो चीखती, चिल्लाती, दीवार से अपना सर फोड़ती। किंतु वह प्रौढ़ा है। अपने छोटे-छोटे बच्चों की देख-भाल का, उनके संरक्षण का भार उस पर है। यदि वही आक्रोश करने लगे, तो इनकी ओर कौन देखेगा ? इन्हें कौन सांत्वना देगा ? यही उसकी लाचारी है। वह खुलकर अपनी व्यथा प्रकट नहीं कर सकती। वह अपना सारा दुःख-अपनी समस्त वेदना जकड़कर अपने अंतस्तल में दबोच लेती है और बच्चों को समझाती है—'तुम्हारे पापा बाजार गये हैं। वह लौटकर आएंगे तो तुम्हारे लिए बहुत सारे खिलौने लाएंगे।'—बच्चों को तो वह समझा लेती है, किंतु खुद को कैसे समझाए ? वह अंदर-ही-अंदर वेदना के अथाह सागर में डूबी हुई घुटती रहती है।

"रात के अंतिम प्रहर में, जब सारी दुनिया नींद में खोयी रहती है, बच्चे भी गाढ़ी नीद में सोये रहते हैं, वह विरहिणी जागती रहती है। उसकी आंखों में नींद कहां ? इसी अवसर की तो प्रतीक्षा थी। जब वह देखती है कि रात के इस प्रशांत वातावरण में, उसकी सुनसान दुनिया में अब अन्य कोई व्यवधान नहीं है, तब वह अपने अंतस्तल में दबोची हुई पीड़ा की गांठ धीरे-धीरे खोलती है। अपने पति की एक-एक बात याद करती है और हलकी धीमी सिसकियों द्वारा अपनी संचित वेदना को अभिव्यक्ति देती है। उस समय भी वह खुलकर रो नहीं सकती कि कहीं उसकी आवाज से बच्चे जाग न जाएं। कितनी लाचारी है। उस करुणामयी नारी का यह मूक रुदन, उसकी घनीभूत पीड़ा की यह विगलित अभिव्यक्ति—यही तोड़ी रागिनी है। अब मैं आरंभ करता हूं। आप इसे ध्यान से सुनें।"

इस प्रस्तावना के बाद पंडितजी ने गाना आरंभ किया। अत्यंत सरस और धीमी गंभीर आवाज में उन्होंने तोड़ी के स्वर भरना आरंभ किया। धीरे-धीरे, ठहर-ठहरकर वह एक-एक स्वर का विस्तार करने लगे। लोग दम साधे उत्कंठापूर्वक उस अलौकिक संगीत का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रसास्वादन कर रहे थे। मैंने अपने जीवन में इतना मधुर कंठ, ऐसा सरस संगीत पहले कभी नहीं सुना था।

मेरे सामने गाना गाते हुए पंडित ओंकारनाथ ठाकुर नहीं बल्कि एक श्वेतवसना नारी का रूप था। सूनी मांग, बिखरे केश, बड़ी-बड़ी आंखों से बूंद-बूंद टपकते आंसू और उसी कंठ से निकलती हुई हलकी सिसकियों की आवाज वह नारी मूर्ति इतनी वास्तविक थी कि किसी प्रकार का संदेह भी मेरे मन में नहीं आया।

मैं नहीं जानता कि कितनी देर मेरी यह स्थिति रही। किंतु जब होश आया तब मैंने देखा कि मेरी हिचकी बंध गयी है और मेरी कमीज आंसुओं से भीग गयी है। मैंने अपनी आंखें पोछीं और चारों ओर निगाह डाली। मैंने देखा उस कक्ष में, जहां लगभग दो हजार श्रोता बैठे थे, शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति था, जिसकी आंखें गीली नहीं थीं।

नागपुर में दूसरी भेंट

ओंकारनाथजी से मेरी दूसरी मुलाकात करीब चार साल बाद नागपुर में हुई। वहां एक स्थानीय सिनेमा थियेटर में उनके संगीत का आयोजन था। चूंकि मैं नजदीक बैठकर उनका गायन सुनना चाहता था, मैंने स्पेशल क्लास का टिकिट खरीदा और थियेटर में दाखिल हुआ। वहां जाकर देखा कि बैठने की व्यवस्था सिनेमा के ही अनुरूप थी—अर्थात स्पेशल क्लास बालकनी में सबसे पीछे और थर्ड सबसे आगे। बड़ी झल्लाहट हुई। टिकिट बाबू से लड़-झगड़कर स्पेशल क्लास का टिकिट वापस कर थर्ड का खरीदा और भीड़ में ठेलम-ठेल के बाद जैसे-तैसे अपनी सीट पर पहुंचा। भाग्यवश सामने ही जगह मिल गयी।

आरंभ उन्होंने राग दरबारी कानडा से किया। विलंबित लय में एक-एक स्वर राजकीय पोषाक में नानालंकरणों से सुसज्जित होकर बड़े अदब से, बड़ी गंभीरता से सामने आता और अत्यंत शालीनता से अपने सौंदर्य की छटा चारों ओर बिखेरकर किसी दूसरे स्वर में कब समा जाता किसी को पता ही न चलता। सारा वातावरण अत्यंत गंभीर, शांत और आनंद-सागर में डूबा हुआ था।

भावाभिव्यक्ति का सार्वलौकिक माध्यम

उसके बाद मैं उनसे अकसर मिलता रहा और उनसे मेरी काफी घनिष्टता हो गयी। घर पर उनसे भारतीय संगीत के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होती। वे हमें स्वरों की भाषा समझाते। स्वरों द्वारा विभिन्न रसों की उत्पत्ति कैसे होती है यह बात वे हमें उदाहरण देकर स्पष्ट करते।

उनका कहना था कि 'विभिन्न परिस्थितियों में हमें जो अनुभूतियां होती हैं, उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए सबसे सशक्त और प्रभावशाली माध्यम संगीत ही है, साथ ही यह सबसे अधिक अमूर्त है। अपने विचारों और भावनाओं को प्रगट करने के लिए हम प्रायः भाषा का सहारा लेते हैं किंतु विभिन्न परिस्थितियों में अंतस्तल में उपजी सूक्ष्मतम भावनाओं को प्रगट करने के लिए भाषा का यह माध्यम नितांत अपर्याप्त एवं असमर्थ रहता है। तब हमें कहना पड़ता है कि मैं जो कुछ अनुभव कर रहा हूं, उसे कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। यह सही है क्योंकि शब्दों की संख्या और सामर्थ्य सीमित है। ऐसी परिस्थितियों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हम उन सूक्ष्मतर भावनाओं को व्यक्त करने के लिए ललित कलाओं का सहारा लेते हैं, और इनमें सबसे अधिक सशक्त माध्यम संगीत ही है, क्योंकि वह सार्वलौकिक है, सर्वव्यापी है और इसकी संभावनाएं अनंत और असीम हैं। एक उच्च कोटि की रूसी कविता एक ऐसे व्यक्ति के लिये बेमानी है जिसे रूसी भाषा का ज्ञान नहीं। किंतु संगीत की भाषा के लिए कोई बंधन नहीं है। उससे मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी विमुग्ध हो जाते हैं। हमारे यहां इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

'ज्योति में ज्योति मिलाजा'

नागपुर में उनका एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। नगर के अनेक प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य संगीत प्रेमी नागरिक उस आयोजन में उपस्थित थे। बैठक का आरंभ पंडितजी ने पूरिया धनाश्री से किया। दूरस्थ प्रियतम के वियोग में व्याकुल विरहिणी के मन की व्यथा उस रात पूरिया धनाश्री के रूप में वास्तव में अत्यंत मुखर और प्रभावशाली हो उठी थी। लगता था पंडितजी का मन भी उस दिन काफी भरा-भरा था। उनके स्वरों से विरहिणी नायिका की आकुलता, बेचैनी और छटपटाहट स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित हो रही थी। सारा वातावरण अत्यंत करुणामय हो या था। इसके बाद [illegible] में नीलांबरी गया—'[illegible] बालमवा जाय बसे परदेस' इसमें भी वही भाव। उस दिन जाने क्या बात थी, उस पूरी बैठक में करुण रस का ही प्राधान्य था। अंत में उन्होंने भैरवी में मीराबाई का पद—'जोगी मतजा'—उठाया। लगा सारे विश्व की व्याकुलता और पीड़ा उनके स्वरों में मुखरित हो रही है। उन्होंने आगे गाया—'अगरु चंदन की चिता रचायी अपने हाथ जलाया' यह गाते समय तो उन्होंने गजब कर दिया। लपलपाती अग्नि शिखाओं से धधकती चिता जैसे श्रोताओं के सामने मूर्तिमंत हो गयी। पूरे कक्ष में सन्नाटा छा गया। श्रोतागण दम साधे, आत्मविभोर होकर इस दृश्य को आत्मसात् कर रहे थे। और अंत में आया—'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर ज्योति में ज्योति मिलाजा।' यह ज्योति में ज्योति मिलने की बात—सारी विरह वेदना की समस्त व्याकुलता की चरम परिणति थी।

पंडितजी ने सहसा गाना बंद कर दिया। चुपचाप उठे, बिना किसी की ओर देखे बगल के कक्ष में गये और बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगे। मैं और मेरे दो एक साथी उस कक्ष में गये और यह दृश्य देखा। कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। कैसे उन्हें सांत्वना दें। कुछ करने की आवश्यकता भी नहीं थी। हम स्वयं इस करुणामय दृश्य से विगलित हो

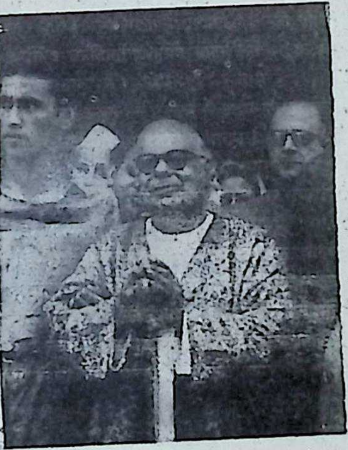

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सेहतमंद व्यक्तियों की पहली पसंद
– पकवान

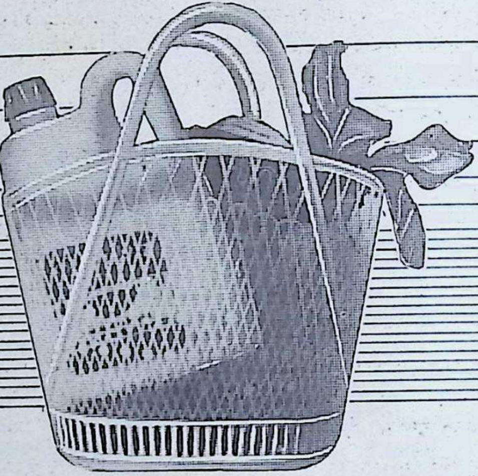

ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसिस,
नई दिल्ली की रिपोर्ट के अनुसार :

"पकवान माइक्रो रिफाइंड तेल चिकित्सा परीक्षणों में मधुमेह (डायबिटीज़) और साधारण स्वास्थ्य लाभ कर रहे रोगियों के लिए बहुत लाभकारी पाया गया है।"

"पकवान सभी प्रयोगशाला परीक्षणों में उत्तम व माइक्रोस्कोपिक जांच में स्वच्छ एवं पारदर्शी पाया गया है।"

पकवान
माइक्रो रिफ़ाइंड तेल
Kocher Oil Mills Ltd.

Available in 1, 2 & 5 kg. poly-jars and 15kg. tins.

Sarup

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहे थे और स्तंभित चित्रलिखित से इस दृश्य को देख रहे थे। मानव सभ्यता के विकास में जब से मानव मन ने सुसंस्कृत होकर स्वयं को पहचानने का प्रथम प्रयास किया, और उस परमतत्व को खोजने का प्रयत्न किया, जिसका वह स्वयं एक अंश मात्र है, और उसे पा सकने की अपनी असमर्थता से उद्भूत, युगों-युगों से संचित, मीरा, सूर, तुलसी आदि अनेक संतों और सूफी कवियों द्वारा वर्णित, आत्मा और परमात्मा के अनंत विछोह की वह व्यथा-कथा, वह असीम पीड़ा, व्याकुलता और छटपटाहट ही थी जो आज विगलित होकर, शिष्टता के आवरण को तोड़ती हुई, पंडितजी की सुबकियों और हिचकियों में प्रस्फुटित हो रही थी, और उनके नयनों से अश्रुधारा के रूप में प्रवाहित हो रही थी। वह गोपियों की विरह व्यथा थी, मीरा का विष का प्याला था, जयशंकर के आंसू थे और महादेवी की नीरभरी दुःख की बदरी थी। वह अलौकिक दृश्य था। वह ऐसी स्वर्णिम अनुभूति थी जिसके लिए देवता भी तरसते हैं।

इसके बाद कई बार विभिन्न नगरों में मुझे उनके संगीत का रसास्वादन करने के अवसर मिले। हर बार वही अनूठापन, वही माधुर्य, वही अलौकिक रसाभिव्यक्ति। एक बार उन्होंने मुझसे कहा था—"मैंने राग-रागिनियों का साक्षात्कार किया है। मैं उन्हें उतना ही प्रत्यक्ष देखता हूं, और अनुभव करता हूं जितना आपको। घंटों उनसे वार्तालाप करता हूं।" मुझे उनके इस कथन में कभी भी संदेह नहीं था। ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी कभी-कभार ही इस धरा पर अवतरित होते हैं।

—ई-१/२००, अरेरा कालोनी, भोपाल,

लघु कथा

होड़

● कमल चोपड़ा

जूनियर्स के शक के साथ ही बात इंचार्ज के माध्यम से नारंग साहब तक पहुंच गयी। सुबह से यह चौथा केस है। जरूर कुछ गड़बड़ है. . .। नारंग साहब चकरा गये। अब क्या होगा! ये साला दत्ता मरवायेगा! उसे अभी बुलवाना पड़ेगा. . .।

दवाइयां नकली तो हैं ही। चाक और मिट्टी से बनी गोलियां, हल्दी-चूना भरे हुए कैप्सूल और पानी के टीके. . . इनसे मरीज मर थोड़े ही सकता है। हमने दत्ता को पहले ही कहा हुआ है तुम्हारी दवाइयों से फायदा तो खैर क्या होना है उलटा नुकसान करनेवाली दवाई मत सप्लाई करना. . . लगता है साला दत्ता इस बार कहीं चूक गया है।

खैर वैसे कोई हमारा क्या बिगाड़ सकता है फाइलें पूरी हैं। खरीद और पेमेंट के बाकायदा कागज हैं पर. . .।

इतने में दत्ता साहब आ गये। कहने लगे, "नारंग साहब क्या बताएं बस. . . यह काम इतना ज्यादा चलने लगा है कि. . . नकली दवाई बनानेवाले लोगों में इतना ज्यादा कंपीटीशन चल रहा है कि. . . हमारी फैक्टरी में रात को धोखे से किसी ने पेटियां बदल दीं ताकि आप आगे से मुझसे माल न लें. . . वर्ना. . . आप ही बताइए. . . मिट्टी से सस्ती क्या चीज इस्तेमाल कर हम ज्यादा मुनाफा कमा सकते हैं. . . ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साहित्यिक मतभेद के कारण वैयक्तिक संबंध बिगड़ जाते थे !

● मुकुटधर पांडेय

पंडित मुकुटधर पांडेय : हिंदी में छायावाद-युग के संस्थापक सदस्य । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी उनकी रचनाओं की कटु आलोचना करते थे, लेकिन उन्हें 'सरस्वती' में ससम्मान प्रकाशित भी करते थे ।

मैंने जब लिखना शुरू किया था, तब श्रीधर पाठक, हरिऔध, पूर्ण कवि, मैथिलीशरण गुप्त आदि की धूम थी । मैं उन्हें बड़े चाव से पढ़ता था । पुरानी पीढ़ी के प्रति मेरे मन में एक आदर का भाव था । पर नये अनुभवों के लिए कभी किसी का द्वार बंद नहीं हुआ । उस समय की रचनाओं में भावों का अभाव नहीं था, पर वे पुराने ढंग के थे और उनकी अभिव्यक्ति की शैली भी पुरानी थी । मैं कुछ नयापन चाहता था । नित्यप्रति देखने में आनेवाली प्रकृति की छोटी-छोटी घटनाओं को मैंने अपना विषय बनाया । 'अस्तोन्मुख सूर्य सम्मान', 'ओस की निर्वाण', प्राप्ति, मेरी ऐसी ही कविताएं थीं । अंगरेजी की छोटी-छोटी कविताएं मैंने पढ़ीं थीं । उसी समय पं. कामता प्रसाद गुरु ने कुछ अंगरेजी कविताओं के अनुवाद प्रस्तुत किये थे । मुझे उनसे भी प्रेरणा मिली । उस समय पाठकजी और हरिऔध में जहां भारतेंदु युग की झलक दिखायी पड़ती थी, वहीं आधुनिकता के भी दर्शन होते थे । पाठकजी अंगरेजी कविताओं का अनुवाद प्रस्तुत कर हिंदी जगत को पाश्चात्य विचारधारा से परिचित करा रहे थे । हरिऔधजी ने अपने 'प्रिय प्रवास' में राधा और कृष्ण को मानवीय रूप दिया । ये भी एक नयी बात थी ।

आज का साहित्यकार न जाने क्यों,. . . अमृता प्रीतम ठीक ही कहती हैं,. . . 'हंग्री' और 'एंग्री' हो गया है । आज

आज का साहित्यकार न जाने क्यों 'एंग्री' और 'हंग्री' हो गया है । आज के लोग पुरानी पीढ़ी को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं ।. . . आपसी सद्भावों का रचना-प्रक्रिया पर असर पड़ता ही है !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के लोग पुरानी पीढ़ी को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। हमारे जमाने में मनमुटाव नये-पुराने में नहीं, समसामयिक लेखकों में समालोचना के क्षेत्र में देखने में आता था। कालिदास की निरंकुशता को लेकर द्विवेदीजी और पंडित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी और देव-बिहारी को लेकर कतिपय विद्वानों में इसकी पराकाष्ठा हुई है। साहित्यिक मतभेद के कारण वैयक्तिक संबंध बिगड़ जाते थे। पर आज की स्थिति उलटी है, आज किसी रचनाकार को यदि मालूम हो जाए कि फलां कवि या लेखक ने उसकी रचना की आलोचना की है तो वह उसे अपना विरोधी मान लेता है, ये स्वस्थ परंपरा नहीं है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि

इन आपसी सद्भावों का रचना-प्रक्रिया पर असर पड़ता ही है।

माधवराव सप्रे ने हमारे अग्रज को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया था और वे उनको गुरुवत मानते थे। पद्मसिंह शर्मा ने 'कैकेयी कापट्य' शीर्षक मेरी प्रारंभिक रचना का संशोधन किया था और मैं उनके प्रति बड़ी श्रद्धा रखता था। **प्रस्तुति : अमरेश्वर दुबे**

"मैं अपने भाग्य को बदल डालूंगी"

● डॉ. इंदिरा हिंदुजा

डॉ. इंदिरा हिंदुजा : 'भारत के प्रथम टैस्ट ट्यूब बेबी' के जन्म को संभव बनानेवाली, बंबई के के. ई. एम. अस्पताल की ख्यातनामा चिकित्सक। वे डॉक्टर कैसे बनीं ? एक संस्मरण :

"हमारे घर एक महिला-ज्योतिषी आया करती थी। घर में सबका उसकी भविष्यवाणियों पर अगाध विश्वास था। चूंकि मेरे परिवारवाले मुझ पर विवाह करने के लिए जोर डाल रहे थे, मैंने भी उसे अपना हाथ दिखाया। उसने कहा, "तुम ज्यादा से ज्यादा ग्रेजुएट तक। इससे अधिक कुछ नहीं कर पाओगी।" उसकी इस बात से मैं विचलित हो उठी। मैं काफी हताश थी। फिर मैंने एक दृढ़ निश्चय किया—'ठीक है। मैं तुम्हें दिखाऊंगी। मैं यह सिद्ध कर दूंगी कि तुम गलत हो।' मैंने मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए अच्छे प्रतिशत नंबर लाने हेतु कड़ी मेहनत की। और जब सन १९६४ में मुझे नायर (मेडिकल कॉलेज) में प्रवेश मिल गया तो मैं बेलगांव गयी।

वहां मैंने अपनी भाभी से कहा, "कहां है वह महिला-ज्योतिषी ? उन्हें बताओ कि मैं मेडिसिन में पढ़ने जा रही हूं। उन्हें बता दो कि मैं डॉक्टर बनने जा रही हूं। मैं अपने हाथ की रेखाएं बदल दूंगी। मैं अपने भाग्य को बदल डालूंगी।" ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोलियों की बौछारों के बीच फोटोग्राफी

● जयवंत उल्लाल

बेरूत (लेबनान) की बात है। होटलों के एक समूह के पास ईसाइयों और मुसलिमों के बीच लड़ाई शुरू हो गयी थी। इन होटलों के पीछे मुसलिमों का बाहुल्य था। उन्होंने बंदूक की नोक पर इन होटलों पर अधिकार कर लिया था। ईसाइयों ने उत्तर की ओर से हमला कर, इन होटलों से बीस किलोमीटर दूर कुछ इमारतों में मोर्चा बना लिया था। इन दोनों पक्षों को विभाजित करनेवाली पट्टी ग्रीन लाइन कहलाती थी।

बेरूत में घमासान लड़ाई छिड़ी हुई थी। पास की ही एक इमारत में बम फटा। चूंकि वहां चारों ओर घने वृक्ष थे, हम देख नहीं पाये कि वहां क्या हो रहा है। हम तीन लोगों ने (एक अमरीकी, एक लेबनानी और मैं) वहां जाकर चित्र खींचने का फैसला किया। हम अपने स्थान से जलती हुई इमारत की ओर बढ़े। मैं साथ के दोनों पत्रकारों को छोड़कर इमारत की ओर बढ़ा। एक दीवार से चिपका-चिपका मैं धीरे-धीरे बढ़ने लगा। दोनों साथी दूसरी ओर चल रहे थे। सहसा गोली चली और उनमें से एक वहीं मारा गया। दूसरा भी घायल हो गया था। मैं पीछे मुड़ता कि एक गोली मेरे पैर में आकर लगी और खून बहने लगा। मैं चल नहीं पा रहा था। अपना 'निकॉन' कैमरा संभाले-संभाले मैं स्वयं को घसीटता हुआ आड़ में हो गया। बाद में कुछ लोगों ने मुझे देखा और अस्पताल पहुंचाया। मुझे अस्पताल में भरती किया और गोली निकाली गयी।

चारों ओर से गोलियों की बौछार हो रही थी। मैंने सोचा, कैमरा देखकर वे समझ जाएंगे कि हम लोग पत्रकार हैं। मैंने कैमरा ऊंचे उठाया और चीखा—'साकी!'

भयानक नरसंहार

बेरूत के पूर्व में करानटाइन नामक स्थान पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जयवंत उल्लाल : एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर। आजकल प. जरमनी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'स्टर्न' से संबद्ध। उनके द्वारा खींचे गये फोटो विश्व की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें हैं—'टाइम', 'लाइफ' और 'न्यूज वीक'। प्रस्तुत हैं उनके रोमांचक संस्मरण :

फिलीस्तीनियों का कब्जा था। यहां ईसाइयों ने मुसलिमों का नरसंहार किया। उन्होंने स्त्री-पुरुष, यहां तक बच्चों को भी गोली मार दी। दो दिन बाद मुसलिमों ने इसका बदला लिया और दामोर नामक ईसाई बहुल स्थान को नेस्तनाबूद कर डाला। यह बेरूत का सबसे सुंदर पर्वतीय स्थल है। वहां धनी-मानी ईसाइयों की कोठियां हैं। दामोर में लोग मक्खियों की तरह मारे जा रहे थे। जब दामोर की घेराबंदी हुई तो हम लोग अराफात के कार्यालय में गये। उन्होंने हमें एक कार दी और कुछ फिलीस्तीनियों को साथ कर दिया। वहां गोलियों की बौछार हो रही थी। पर यदि आप अच्छा फोटो खींचना चाहते हैं तो यह खतरा उठाना ही पड़ता है। पर इस 'मिशन' पर मुझे लगा कि 'अब तो अंत आ पहुंचा है।'

कारण, पहले तो फिलीस्तीनी घबराकर भाग खड़े हुए। दूसरे, मेरा साथी पत्रकार भी लौटने की इच्छा व्यक्त करने लगा। उसके शिकवा-शिकायतों से मैं भी परेशान हो उठा। मैंने अपना कैमरा ऊंचे उठाया। चारों ओर गोलियों की बौछार हो रही थी। मैंने सोचा, कैमरा देखकर वे लोग समझ जाएंगे कि हम पत्रकार हैं, बंदूकधारी नहीं। मैं सांस थामे कैमरा ऊंचा किये खड़ा रहा। फिर चीखा—'साकी' (पत्रकार)। शीघ्र ही मुझे जवाब सुनायी पड़ा। मैंने स्वयं से कहा, 'यह बहुत अच्छा लक्षण है, बहुत अच्छा।' पत्रकार ने पूछा, 'ये लोग कौन हैं?' मैं उन्हें नहीं जानता था। उन्हें जानने के लिए यही जरूरी था कि हमलोग उनके पास जाएं, इस आशा के साथ कि वे गोली नहीं चलाएंगे।'

एक बार की बात है। मैं फिलीस्तीनियों के साथ कहीं जा रहा था। सहसा किसी ने उन पर गोली चला दी। फिलीस्तीनियों ने एक मकान पर धावा बोल दिया। घर ध्वस्त हो गया और उसमें से एक परिवार निकला—माता-पिता और बच्चे। उनमें सबसे बड़ा बच्चा तेरह वर्ष का था। मैंने इस समय के सारे चित्र खींचे। मैं जानता था कि उनके साथ क्या किया जाएगा। एक फिलीस्तीनी मेरी ओर देखकर चीखा, 'इसे ले जाओ।' मैंने आड़ में होते हुए देखा कि उन्होंने परिवार से माता-पिता और लड़के को अलग कर गोली मार दी। सौभाग्य से मैंने इसके भी चित्र खींच लिये। तभी पीछे से मेरे सिर पर किसी ने चोट की। मैं धरती पर गिर पड़ा। बेहोश हो गया। उन्होंने मेरा 'जूम लैंस' और कैमरा तहस-नहस कर दिया। सौभाग्य से मैंने दूसरे कैमरे से चित्र लिये थे। मुझे होश आया तो उन्होंने मेरा परिचय-पत्र और अराफात के आफिस का पत्र मांगा। बाद में ये चित्र सारे संसार के समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंगरेजों की दृष्टि में भारतीय राजा-महाराजा

● क्रिकेट के अनोखे नियम

● विजयी कुत्तों का शौक

● चार्ल्स एलन

चार्ल्स एलन नामक एक लेखक ने अपने लेख में पराधीन भारत में भारतीयों के प्रति अंगरेजों के दृष्टिकोण के कुछ दिलचस्प संस्मरण दिये हैं। भारतीय राजा-महाराजाओं के जीवन का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है—

"महाराजाओं को धन एकत्र करने और उसे शानदार ढंग से खर्च करने, दोनों की छूट थी। इनमें सबसे ज्यादा धनवान हैदराबाद के निजाम थे। वे एक ओर अपनी कंजूसी के लिए मशहूर थे तो दूसरी ओर खर्च में दरियादिली के लिए भी। एक बार देखा गया कि निजाम ने मद्रास में 'स्पेंसर' (दुकान) से जूतों का सारा का सारा स्टाक खरीद लिया ताकि वे फुरसत से अपनी पसंद के जूतों का चुनाव कर सकें। इसी तरह महाराजा दरभंगा भी दरियादिली से खर्च करते थे। वे क्राफ्ट के शो में विजयी किसी कुत्ते को देखते तो उसे खरीदकर फौरन भारत भेज देते। वे लोगों को अपने इन कुत्तों को दिखाने के बेहद शौकीन थे। ऐसे कुत्ते के पीछे-पीछे एक व्यक्ति स्पिरट की बोतल और कपड़ा लिये चलता। जहां-जहां से कुत्ता जाता, बाद में वह व्यक्ति उस जगह को स्पिरट से साफ कर देता। फलतः कभी-कभी उनके बहुमूल्य फर्नीचर से स्पिरट की बदबू आती। कभी-कभी यह देखकर दुःख होता कि ऐसे पांच-छह प्रिय कुत्ते तो महल में रहते, पर पिछले वर्ष लाड़-दुलार के पात्र कुत्तों से उपेक्षा बरती जाती। उन्हें कभी बाहर नहीं लाया जाता।

●

कुछ महाराजा 'व्यावहारिक उपहास' करने में प्रवीण थे। कभी-कभी वे जानबूझकर कुरसियों का रंग गीला छोड़ देते। एक महाराजा

न्यायप्रियता

नेपोलियन का काल। फ्रांस और इंगलैंड के मध्य भीषण शत्रुता और युद्ध। लेकिन इस युद्ध के कारण मानवीयता लुप्त नहीं हुई। नेपोलियन ने इस पुरस्कार की घोषणा की थी। यह पुरस्कार बिजली के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य करनेवाले वैज्ञानिक को दिया जाना था। हम्फ्री डेवी एक अंगरेज रसायन शास्त्री थे। बिजली के क्षेत्र में उनकी खोजों से नेपोलियन प्रभावित हुआ था। उसने अपना यह पुरस्कार डेवी को देने की घोषणा की।

डेवी ने यह पुरस्कार स्वीकार भी किया, कहा : 'देश भले आपस में लड़ते रहें, पर वैज्ञानिक तो नहीं लड़ेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

● जूतों का सारा स्टाक ही खरीद लिया
● मेहमानों को परेशान करने में आनंद

की डिनर टेबल पर खिलौना रेलगाड़ी थी। उसमें सिगार, शराब तथा खाने-पीने की अन्य चीजें होतीं। कभी-कभी महाराजा अपने किसी मेहमान के आगे से गुजरती इस रेलगाड़ी की गति तेज कर देते और उसका बढ़ा हाथ खाली रह जाता।

●

कश्मीर के महाराजा की तरह कुछ अन्य महाराजाओं के क्रिकेट के खेल के अपने नियम थे। एच. टी. विकहैम ने लिखा है—

"दोपहर में तीन बजे महाराजा स्वयं मैदान पर पधारते। तब बैंड कश्मीर की धुन बजाता। उन्हें सलामी दी जाती। फिर महाराजा अपने विशेष शिविर में जाकर बैठ जाते। वहां वे अपना हुक्का पीते रहते। लगभग साढ़े चार बजे वे बल्लेबाजी करने का निर्णय करते। उस समय इस बात का कोई सवाल नहीं होता कि उनकी टीम बल्लेबाजी कर रही है या हमारी टीम। दो सेवक उन्हें पैरों में पैड बांधते और दो सेवक हाथों में दस्ताने पहनाते। कोई अन्य व्यक्ति उनका बल्ला लिये चलता। महाराजा बड़ी गरिमा से विकेट तक पहुंचते। उस समय उनके सिर पर साफा भी बंधा होता। एक बार एक मैच में मैं गेंदबाजी कर रहा था। मेरी पहली ही गेंद ने उनके स्टंप उखाड़ दिये; पर पीछे खड़ा विकेट-कीपर बिजली की गति से चीखा—'नो बाल।' और इस तरह मैच चलता रहा। महाराजा केवल 'एल बी डब्लू' के फैसले से ही 'आउट' किये जा सकते थे। पंद्रह-बीस मिनट बल्लेबाजी करने के बाद उन्होंने कहा कि 'थकान अनुभव हो रही है।' फलतः उन्हें 'एल बी डब्लू' करार दे दिया गया।"

●

ब्रेल लिपि का लाभ

प्रसिद्ध लेखक-दार्शनिक एडोल्स हक्सले नेत्रहीन नहीं थे, फिर भी उन्होंने ब्रेल लिपि सीखी। कारण, जब नेत्रों से पढ़ते-पढ़ते वे थक जाते थे तो उन्हें विश्राम देने के लिए ब्रेल लिपि में लिखी पुस्तकें पढ़ते थे। उनका कहना था, 'इसमें एक और फायदा है, आप अंधकार में भी लेटे-लेटे पढ़ सकते हैं।'

विचित्र सौगात

'अंकल टाम्स कैब्रिन' एक विश्वप्रसिद्ध कृति। उसकी लेखिका थीं—हैरियर बीयर स्टो। उपन्यास प्रकाशित हुआ तो उन्हें प्रशंसा के साथ-साथ नफरत भी मिली। उनकी डाक में नफरतभरी चिट्ठियां आती थीं। एक दिन डाक में उन्हें नीग्रो गुलाम का कटा हुआ कान मिला। रंगभेद के किसी उग्रवादी समर्थक ने ही उन्हें चिढ़कर यह 'सौगात' भेजी थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विधि विधान

ससुरालवालों की रुचि नहीं

क ख ग, मेरठ : मैं एक निस्संतान विधवा हूं। विवाह के एक सप्ताह बाद ही सड़क दुर्घटना में पति की मृत्यु हो गयी थी। पिता ने विवाह में २१ हजार रु. एवं अन्य सामान दिया था। ससुरालवाले मुझे अपनाने में कोई रुचि नहीं रखते। कृपया परामर्श दें।

ससुराल में क्या संपत्ति है और वह किसके नाम है इसका विवरण आपने नहीं दिया। आपके पति की संपत्ति में आपका तथा आपकी सास का बराबर का अधिकार है। आपके पिता द्वारा विवाह के अवसर पर दिया गया सामान भी आपकी संपत्ति है। उसे प्राप्त करने के लिए आप कार्रवाई कर सकती हैं। इस सब सामान को अपने ससुरालवालों से मांगें यदि, वह सामान देने में आनाकानी करें तो आप न्यायालय की शरण ले सकती हैं। पति की संपत्ति प्राप्त करने के लिए अपनी सास के विरुद्ध बंटवारे के लिए दावा करना होगा। अपना स्त्री धन प्राप्त करने के लिए आप भारतीय दंड संहिता की धारा ४०६ के अंतर्गत कार्रवाई कर सकती हैं। हमारे देश के उच्चतम न्यायालय ने इस संबंध में पहले ही स्थिति स्पष्ट कर दी है।

दांपत्य संबंध की पुनर्स्थापना

परेश दवे, अमदेली (गुजरात) : विवाह को पांच वर्ष हुए हैं। हमारा साढ़े तीन वर्ष का एक बेटा है। सामान्य से विवाद पर पत्नी के माता-पिता उन्हें साथ ले गये। दो वर्षों से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। बेटा भी पत्नी के पास है। मैंने पत्नी को समझाने-बुझाने का प्रयास किया, पर सारे प्रयास निरर्थक जानकर मैंने अदालत में दो याचिकाएं दायर कीं—१. विवाह-सूत्र निभाने का, २. बेटा वापस मिलने का। पर पत्नी अदालत में उपस्थित नहीं होतीं। क्या किया जाए ? पत्नी मायके में सर्विस करती हैं।

जो कार्य समझा-बुझाकर आप करवाने का प्रयास करते रहे, वह स्वयं ही पूर्ण होता देखता है। विवाह-सूत्र निभाने के दावे से आपका अभिप्राय दांपत्य जीवन की पुनर्स्थापना के दावे से है। इस स्थिति में आपको न्यायालय में वस्तुस्थिति बता देनी चाहिए तथा प्रार्थना करनी चाहिए कि आप तो दांपत्य जीवन चलाने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। न्यायालय आपकी पत्नी को आपके साथ रहने का आदेश दे सकता है। यदि आपकी पत्नी आपके साथ रहना स्वीकार न करे तो उनकी याचिका निरस्त होने का वह एक ठोस आधार बन सकेगा। लड़के का हक मिलने की याचिका से आपका क्या मतलब है ? लड़का तो अब भी अपनी मां के पास है और आपके अनुसार मां कार्यरत है। इससे ऐसा लगता है कि वह बच्चे का भरण-पोषण करने में सक्षम है।

दुकान खाली कराने का प्रश्न

कुंदनलाल, दुर्ग : मैं २८-२९ वर्ष से एक किराये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के मकान में दुकानदारी कर रहा हूं। दुकानदार वकील के जरिये नोटिस दे-देकर और बाद में आपसी सुलहनामे से किराया बढ़वाता रहा है। अब उसने नोटिस दिया है कि 'मेरी विधवा भाभी दुकान चलाना चाहती है, अतः दुकान खाली कर दें।' उसके अनुसार, यह संपत्ति सामूहिक है, जबकि नगर निगम में कर की अदायगी अलग-अलग नामों से है। भाभी के नाम दुकान वह पहले ही बेच चुका है। कृपया उचित सलाह दें।

भाभी का हिस्सा आपका मकान-मालिक बेच चुका है। परंतु वह आपवाली दुकान को भी परिवार की सम्मिलित संपत्ति बताता है। प्रश्न यह है कि आपवाली दुकान का मालिक एक व्यक्ति है या पूरा परिवार। अगर आपकी संपत्ति का स्वामी एक ही व्यक्ति है, तब तो वह अपनी भाभी की आवश्यकता के लिए दुकान खाली नहीं करवा सकता। मध्यप्रदेश एकोमोडेशन नियंत्रण अधिनियम १९६१ की धारा १२ (१) (एक) के अंतर्गत ही दुकान खाली करवाने के आधार का वर्णन है। इसके अंतर्गत मकान स्वामी की भाभी के लिए दुकान खाली करवाने की व्यवस्था नहीं है। यह उल्लेखनीय है कि अगर दुकान सामूहिक संपत्ति है तो स्थिति बदल सकती है।

ब्याज मिलने में विलंब

अजय कुमार, मेरठ : हमने अपने जीवन भर की संचित पूंजी बंबई की एक प्राइवेट कंपनी में तीन वर्षीय मियादी जमा में दिनांक १७.८.८४ को दी थी। लेकिन एक वर्ष से उन्होंने हमारे बार-बार प्रार्थना करने पर भी फिक्सड डिपाजिट नियमों के मुताबिक ब्याज अदायगी नहीं की है। परेशान होकर हमने पुलिस को इसकी जानकारी दे दी है तथा उनसे हमारी ब्याज की धनराशि दिलवाने और मूलधन की वापसी मियाद पूरी होने पर या उससे पहले भिजवाने की प्रार्थना की है। इस विषय में और क्या किया जा सकता है?

विधि-विधान के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त।

आपने स्वेच्छा से कंपनी में धनराशि जमा करवायी है। इसलिए पुलिस रकम या ब्याज की वसूली में आपकी सहायता नहीं कर सकती। मूलधन वापस होने का अभी समय ही नहीं आया। आपको अगस्त, १९८७ से पहले मूलधन वापस लेने का अधिकार नहीं है। यह ठीक है कि नियमानुसार आपको ब्याज मिलना चाहिए। ब्याज मांगने के लिए कंपनी को पत्र लिखें। इस पर भी ब्याज अदा न किया जाए तो रकम वसूली के लिए न्यायालय में जाना आवश्यक होगा।

पीहर की संपत्ति पर अधिकार

सुभाष चंद्र, जयपुर : विवाहित हूं। जीवन अभावों से भरा है। क्या मेरी पत्नी अपने पीहर की पुश्तैनी जायदाद पर हक का दावा कर सकती है? वह ऐसा करने के लिए तैयार भी है! कृपया उचित सलाह दें।

आपकी पत्नी को अपने पीहर की पुश्तैनी जायदाद में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं है। आपके ससुर की संपत्ति में उनके स्वर्गवास के बाद ही आपकी पत्नी का हिस्सा होगा। अभी किसी प्रकार का हिस्सा प्राप्त करना संभव नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्षा संबंधी विषयों पर
हिन्दी पुस्तकों को पुरस्कृत करने के लिए
रक्षा मंत्रालय की वर्ष 1986 की योजना

रक्षा मंत्रालय ने रक्षा संबंधी विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन और मानक पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद कार्य को बढ़ावा देने की योजना के अन्तर्गत इस वर्ष निम्नलिखित पुरस्कार रखे हैं :

1. हिन्दी में मौलिक लेखन

प्रथम पुरस्कार (एक)	7,500 रुपए
द्वितीय पुरस्कार (एक)	5,000 रुपए
तृतीय पुरस्कार (एक)	2,500 रुपए

2. मानक पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद

प्रथम पुरस्कार (एक)	5,000 रुपए
द्वितीय पुरस्कार (एक)	2,500 रुपए

अप्रैल, 1983 से मार्च, 1986 के बीच हिन्दी में लिखी/ प्रकाशित मौलिक रचनाओं और मानक पुस्तकों के अनुवाद निर्धारित फार्म सहित मंत्रालय में 31 दिसंबर, 1986 तक पहुंच जाने चाहिए।

पुरस्कार योजना से संबंधित विवरण और फार्म आदि के लिए इस पते पर पत्र-व्यवहार करें :

निदेशक (राजभाषा)
रक्षा मंत्रालय,
कमरा नं. 122, सेना भवन,
("ए" विंग) प्रथम तल,
नई दिल्ली-110011

डीएवीपी-686(187)/86

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

ये शब्द तो मुझे बोलने थे !

● विनोद भट्ट

यह सवाल—'मैं क्यों लिखता हूं ?' कुछ लोग मुझसे कौतूहलवश और कुछ लोग गुस्से में पूछते हैं। सच सच कहूं तो मैं 'हिस्टैरिक' न हो जाऊं इसलिए लिखता हूं। पर्सियस के शब्दों में कहूं तो 'आई मस्ट स्पीक आउट ऑर ब्रर्स्ट' (मैं चूप रहूंगा तो फट पड़ूंगा) मैं अपने आपको बचाने के लिए अपनी गरज से लिखता हूं। किसी पर उपकार नहीं करता।

फिर भी लेखन के दरमियान कुछ सुखद प्रसंग भी मेरे जीवन में आये हैं। चार साल पहले की बात है। सूरत शहर में मैं एक प्रवचन के लिए गया था। प्रवचन के बाद एक सज्जन 'टेप रेकॉर्डर' के साथ मेरे पास आये और विनम्रता से बोले "भाई साहब एक अर्ज गुजारनी है..."

"फरमाइए..."

"मेरी पत्नी बरसों से आपकी रचनाएं पढ़ती हैं और आपकी बड़ी प्रशंसक रही हैं...मैं जानता हूं आप बहुत व्यस्त हैं, फिर भी अगर आप इस 'टेप' में उसके लिए कुछ कहेंगे तो मुझ पर बड़ा कृपा होगी।"

"आप श्रीमतीजी को साथ क्यों नहीं लाये ?" मैंने यूं ही पूछा।

"पिछले दो साल से सुधा को लकवा मार गया है, आधा अंग जकड़ गया है। बिस्तर पर पड़ी है...उसको संबोधित करके दो-चार शब्द आप कहेंगे तो सुधा बेहद खुश होगी !"

मैंने कहा, "नहीं...मैं आपके साथ चलता हूं और उनसे खुद ही बात करूंगा।"

मैं उनके घर गया ! बिस्तर पर पड़ी अपनी प्रिय पाठिका के सिर पर मैंने हाथ रखा तो मेरा हाथ पकड़कर वह रोने लगी और बोली, "बस, इसी वक्त मैं मर जाऊं तो कितना अच्छा होगा !"

मुझे लगा कि यें शब्द तो मुझे बोलने थे।...

—७ धर्मयुग कालोनी, वेद मंदिर के पास,
कांकरिया रोड अहमदाबाद-३८००२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामचन्द्रा अपने एक पुत्र के साथ

व्यथा-कथा पड़ कलाकारों की

● रामकुमार

भगवान राम को त्रेतायुग में चौदह वर्ष का ही वनवास मिला था, लेकिन कलयुग में आधुनिक अनुसंधानों से वरदान के रूप में मिले अनेक मनोरंजन के साधन कुछ लोगों के लिए अभिशाप बन गये हैं। उन्हें लगता है कि इन आधुनिक अनुसंधानों ने उन्हें सामाजिक संदर्भों से काटकर सदा के लिए वनवासी बना दिया है। यह बात लोककलाओं के लिए पीढ़ियों से समर्पित लोगों पर ज्यादा लागू होती है। राजस्थान की लोक-शैलियों में चित्र-कथा की लोक-शैली 'पड़' चित्रण या 'फड़' चित्रण अत्यंत पुरानी है। धर्म और मनोरंजन, कथा और संगीत, नृत्य एवं अभिनय, गीत और वाद्य आदि को अपने में संजोकर लोगों का भरपूर मनोरंजन करनेवाले पड़-लोक कलाकारों याने 'भोपों' की पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों ने इस कला को विविधता, सरसता और पूर्णता देते हुए आज तक जीवंत बनाये रखा है।

परंतु समय के दौर में यह लोककला विस्मृत होने लगी है और लोक-कलाकार 'भोपों' का जीवन संघर्ष और घोर गरीबी का शिकार हो गया है। इस बात का एहसास राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में 'पड़' कंधे पर डाले और हाथ में लोक-वाद्य 'रांवटा' या रावण हथा लेकर दर-दर घूमनेवाले 'भोपा' युगलों को देखकर आसानी से किया जा सकता है।

'हाड़ौती उत्सव' कोटा में हर वर्ष आयोजित किया जाता है। इस उत्सव के लिए लोक-कलाकारों की तलाश में हम कोटा जिले के किशनगंज नामक स्थान पर गये। यह कोटा से लगभग ४० कि. मी. दूर है। किशनगंज के पास पार्वती नदी के सहारे-सहारे हम दूर-दराज के एक गांव 'बमोरी कागला' पहुंचे। इस छोटे से गांव के ऊंचे टीले पर झोंपड़ियों में हमें भोपा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामचंद्रा और उसका भरा-पूरा परिवार मिला।

जिंदगी कलाकारों की

अपनी जिंदगी 'पड़' बांचते-बांचते गुजार देनेवाले भोपा रामचंद्रा की आयु ७५ वर्ष के आसपास होगी। जीवनभर रामचंद्रा ने 'रावण-हथा' बजाया। पाबूजी और देवनारायण की 'फड़' या 'पड़', बांच-बांचकर उसने सैंकड़ों रातें रोशन और रंगीन बनायीं। लाखों लोगों का मनोरंजन किया। अब उसके पांच बेटे, बहुएं, बेटियां और परिवार के लोग जिंदगी की तरह खड़ा हो गया है।

रामचंद्रा के झोंपड़ियोंवाले घर के सामने ही बने छोटे से चबूतरे पर 'पाबूजी का थान' था।

रामचंद्रा के बेटों ने 'पाबूजी' और 'देवनारायण' की पड़ खोली। फिर हमें 'रामदेवजी' की 'पड़' भी दिखायी। रामदेवजी की पड़ बहुत पुरानी नहीं है। पहले ये भोपे केवल पाबूजी की पड़ ही बांचते थे। देवनारायण की 'पड़' बांचनेवाले 'भोपे' अलग होते थे। भोपों के अलग-अलग

आधुनिक मनोरंजन के साधन जैसे-जैसे हमारे जीवन में प्रवेश कर रहे हैं, वैसे-वैसे हम अपनी परंपरागत धरोहर को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। इसी संदर्भ में राजस्थान की लोककला—'पड़' के लोक-कलाकारों की व्यथा-कथा मन को झकझोर रही है। यह स्थिति सिर्फ राजस्थान की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत की है।

'पड़' लेकर गांव-गांव घूमते हैं। परिवार की परंपरा तो जारी है, परंतु कठिनाइयों और तकलीफों का लंबा सिलसिला रामचंद्रा के परिवार के समक्ष भी अन्य लोक कलाकारों की समुदाय अलग-अलग लोक-देवताओं की 'पड़ों' का पठन करते थे। लेकिन अब जिंदा रहने के लिए वे पाबूजी, देवनारायण और रामदेवजी की 'पड़' में से जो 'जजमान'-जैसे

रामचन्द्रा अपने परिवार के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

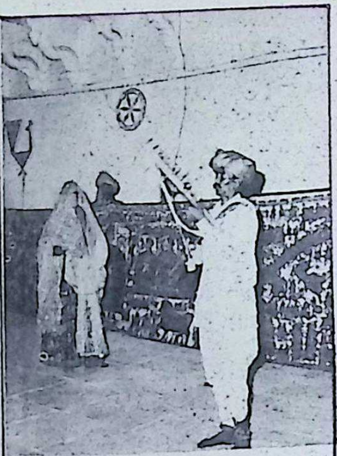

पड़ बांचते हुए भोपा और भोपी

पड़ बंचवाना चाहे, वही बांचने खड़े हो जाते हैं।

'पड़ वाचन' युगल के रूप में होता है। भोपा और भोपी की जोड़ी यह कार्य एक साथ करते हैं। लेकिन हमारा उद्देश्य तो रामचंद्रा के परिवार की प्रतिभा देखना था। अतः राजस्थानी लोक-वाद्य 'रावणहथा' लेकर रामचंद्रा का एक बेटा और एक बेटी परंपरागत ढंग से कभी एकल और कभी युगल स्वरों में 'पड़' बांचने लगे।

पार्वती नदी के लंबे और बहुत चौड़े दूर-दूर तक अपने सर्पाकार रूप में फैले पाट के पास ही उस ऊंचे टीले पर 'रावण हथा' का धीमा स्वर तरंगित होने लगा और भोपा एवं भोपी का मधुर स्वर ग्रामीण मौन को तोड़कर वातावरण को अलमस्त बनाने लगा। रामचंद्रा की जिंदगी के आसपास की खामोशी की तरह चारों ओर फैला मौन हमें लगा कि एकाएक वाचाल हो गया है। सारा वातावरण भोपों की आवाज और लोकवाद्यों के स्वरों में ढलकर सरस और जीवंत हो गया था। नीम की ठंडी छांव और भोपों की लोककला ने हमें उस बोझिल मनःस्थिति से मुक्त कर दिया था, जो रामचंद्रा की जिंदगी की फटेहाली को देखकर पैदा हुई थी।

भोपी का स्वर को धीमा करना और ऊंचा खींचना फिर तीखेपन के साथ एक गहन ऊंचाई को छूकर फिर एकाएक स्वर को तोड़ देना-कुल मिलाकर जादुई लगता था। कमाल का स्वर और कमाल का अभ्यास। 'पाबूजी' और 'देवनारायण' की कथा के कुछ अंश सुने। फिर टेप बंद किया। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। रामचंद्रा से हमने कुछ सवाल किये। रामचंद्रा कहने लगा, "पहले 'पाबूजी' की पड़ ही चलती थी। देवनारायण या बगड़ावतों की पड़ का भी प्रचलन पुराना है। पर अब हम रामदेवजी की पड़ भी बांचते हैं।"

बातचीत के दौरान यह भी पता चला कि रामचन्द्रा के पास २० बीघा जमीन भी है, परंतु इतने बड़े परिवार का गुजारा चलाना मुश्किल हो रहा है। एक जमाना था जब रामचन्द्रा और उसकी पत्नी दोनों, दूल्हा और दुलहन की तरह सजकर रात के अंधेरे में -किसी गांव के बीचों-बीच तेल का दीपक जलाते थे, रामचन्द्रा 'रावणहथा' का तार कसता था, पांवों में घुंघरू होते थे—ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ती थी। श्रद्धा, विश्वास और मनोरंजन की त्रिवेणी— 'पड़' को सुनने और देखनेवालों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'देवनारायण' या बगड़ावतों की पड़

बीच रामचन्द्रा का स्वर गूंजने लगता था। भोपा-भोपी दोनों के स्वर गूंजते थे। पांव थिरकते थे। लोग चढ़ावा चढ़ाते थे और पड़ का आनंद लेते थे। ये सब बातें सोचते-सोचते और कहते-कहते रामचन्द्रा की आंखों में विगत का वह समय जीवित होकर घूमने लगा, जब लोक कला 'पड़' चित्रण को देखने और पड़ कथा सुनने की धूम मची थी और अब वह व्यथापूर्वक कहने लगा, "अब तो फिल्म और रेडियो आ गया—म्हांकी तो कोई सुनै ही कोनी।"

रामचंद्रा और उसके बेटों की 'पड़' उतने मनोयोग और आनंद से सुननेवालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। हमें लगा, हर लोक कलाकार एक रामचन्द्रा है और रामचन्द्रा की राम कहानी हर उस लोक कलाकार की संघर्ष-कथा है, जो बदलते हुए परिवेश में कटकर एक तरफ पड़ा है—उदासीन, उपेक्षित और आर्थिक कुचक्र की मार से मारा हुआ। लेकिन सवाल केवल रामचंद्रा के जीवनयापन तक ही सीमित नहीं है—रामचन्द्रा यहां लोककला का प्रतीक है—रामचंद्रा की दुर्गति-लोककला की दुर्गति है।

वनवासी रामचन्द्रा

शाम होने को आयी। हमने रामचन्द्रा और उसके परिवार से विदा ली। ऊबड़-खाबड़ इलाका पार करके हमारी जीप ज्यों ही सड़क पर आयी, हमने टेप शुरू कर दिया। टेप चलता गया और रामचन्द्रा हमसे दूर छूटता गया। पड़ के अंश सुनने में हम मशगूल हो गये। बीच-बीच में रामचन्द्रा की ओर हमारा ध्यान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'रावण हथा' के स्वरों की संगत में रस घोलती लोक धुनें। एक भोपा अपने वाद्य के साथ

चला जाता था। हमें रामचन्द्रा बार-बार नीम के नीचे अकेला गुमसुम बैठा दिखायी देता-बनवासी की तरह!

दरअसल, राजस्थान की लोक कलाएं और सांस्कृतिक परिवेश इतना समृद्ध है कि बदलते हुए इस दौर में इस बात की संभाल ही नहीं हो पा रही है कि कहां क्या छूट रहा है, कहां क्या टूट रहा है या मिट रहा है। पर्यटन या अन्य माध्यमों से आज के परिप्रेक्ष्य से इन लोक कलाओं और कलाकारों को जोड़ने के जो भी प्रयत्न हो रहे हैं—वे ऊंट के मुंह में जीरे के समान हैं।

पड़ या फड़ चित्रण की परंपरा राजस्थान की विविध चित्र शैलियों में सबसे अलग और महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि, यह चित्रशैली भी है और 'पर्फोमिंग' कला भी है। यह शैली अपने रंग-संयोजन और कथा-शिल्प के कारण अत्यंत लोकप्रिय रही है।

पड़ चित्रों की मांग आजकल केवल परंपरागत पड़-गायकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अब तो काफी संख्या में चित्र-प्रेमियों द्वारा भी पड़-चित्रों की मांग घरों की दीवारों पर लगाने के लिए की जाने लगी है। मांग की वजह से व्यावसायिक रूप में पड़-चित्रों का निर्माण होने लगा है। व्यावसायिकता के कारण परंपरागत इस शैली में कुछ संशोधन भी हुए हैं। कला-सामग्री विक्रेताओं एवं कला-प्रेमियों के लिए तैयार किये जानेवाले चित्रों का आकार छोटा होने लगा है। अर्थात परंपरागत रूप से किसी लोक-देवता की कथा के जो प्रसंग जिस लंबाई और चौड़ाई के केनवास पर किये जाते थे, उसमें परिवर्तन आया है।

इस प्रसंग में यह कहना भी उचित होगा कि जहां एक ओर पड़-गायकों अर्थात भोपों की मांग कम हुई है, वहां पड़-चित्रों की मांग बहुत बढ़ रही है। पड़ चित्रशैली की तकनीक तो वही है, परंतु आमतौर पर बाजार में बिकनेवाले पड़ चित्रों में कथा पर कम बल दिया जाता है और शैलीगत विशेषताओं पर अधिक। आकृतियां, रंग-संयोजन, रूपांकन आदि सभी मूल तत्व ऐसे चित्रों में उपस्थित होते हैं, परंतु कथा जो कि इन चित्रों की आत्मा होती थी, वह गौण होती जा रही है।

धरातल दें

पड़-चित्रण करनेवाले कलाकारों की संख्या भी बढ़ी है। राजस्थान में भीलवाड़ा एवं शाहपुरा पड़-चित्रण के केंद्र हैं। इसके अलावा कई नगरों में अनुकृतियां या कला की दृष्टि से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यूरोपीय देशों में इंगलैंड के निवासी सबसे ज्यादा साबुन का इस्तेमाल करते हैं। उनके बाद स्विस का क्रम आता है। फ्रांस की इत्र और सौंदर्य प्रसाधन सामग्री बनानेवाली कंपनियों के संघ ने एक दिलचस्प सर्वेक्षण प्रकाशित किया है। उसके अनुसार फ्रांस में हर पांच पुरुषों में से एक प्रतिदिन स्नान करता है। स्त्रियों में प्रत्येक तीन में एक स्त्री प्रतिदिन स्नान करती है। एक ओर जहां इंगलैंड में साबुन की खपत बढ़ती जा रही है, वहीं फ्रांस में दिन-ब-दिन घट रही है।

कमजोर कृतियां भी बन रही हैं। परंतु मूल प्रश्न लोक-देवताओं की गाथाओं को एक लंबे कैनवास में समेटकर वाद्य बजाते-नाचते और गाते हुए वर्षों गुजार देनेवाले परंपरागत लोक-गायकों की जमात को बदले हुए संदर्भों से जोड़ने और संरक्षण देने का है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो बड़े-बड़े ड्राईंगरूमों, पांच सितारा होटलों की दीवारों पर लटकाने तक पड़-चित्रों का महत्त्व रह जाएगा। दरअसल, पड़-चित्रण और पड़ का सीधा संपर्क-समुदाय और समाज के राग-रंग, मनोरंजन, संगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य आदि से है। यह शैली भारतीय ग्रामीण-जीवन की संपूर्ण संवेदना की सरसता में डूबी हुई है। इस संवेदना से कटकर रह जाने पर पड़-चित्र एक टूटा हुआ खाली-खाली कैनवास होने से बढ़कर कुछ नहीं रह जाएगा। इसलिए सवाल लोक कलाकारों को बदलते संदर्भों में अपनी कला-परंपरा कायम रखने के लिए धरातल प्रदान करने का है।

—४३-सी, इंस्ट्रूमेंटेशन टाउनशिप,
कोटा-३२४००५

काफी कष्टकर सिद्ध हुई सत्य की खोज !

कभी-कभी जिज्ञासा भी तरह-तरह की विपत्तियों और दुःखों का कारण बन जाती है।

ब्रेंडा बटलर, डाट स्ट्रीट और जेनी रेंडल्स ने इस बात का पता लगाने की कोशिश की कि क्या सन १९८० में एक अमरीकी अड्डे के निकट एक उड़नतश्तरी दुर्घटनाग्रस्त हुई थी? इसके लिए तीन सदस्यों की एक टोली अनेक लोगों से मिली, दुर्घटनास्थल पर गयी और उसने तरह-तरह की परेशानियां भी झेलीं। लेकिन अंततः सत्य को जानने की यह जिज्ञासा उन्हें काफी महंगी पड़ी।

स्ट्रीट का वैवाहिक जीवन खतरे में पड़ गया है। उसका पति-पत्नी की इस खोजबीन से परेशान है। रेंडल्स को खोजबीन का खर्च उठाने के लिए अपना मकान तक बेचना पड़ा। यही नहीं, उसका प्रेम-संबंध भी खतरे में पड़ गया। ब्रेंडा भी आर्थिक अभाव का शिकार हो गयी है।

☆

छाते का सर्वप्रथम निर्माण प्राचीन मिस्र में हुआ था। उस समय छाता राज-परिवार और दरबार के सरदारों की प्रतिष्ठा और उनकी वरीयता का प्रतीक था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्व. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

राजा का प्रताप राज करता है !

● जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

दिनकर व्याख्यानमाला का दूसरा व्याख्यान देने के लिए आचार्य हजारी प्रसादजी द्विवेदी दिल्ली आये हुए थे । वे अपने पुत्र डॉ. मुकुन्द द्विवेदी के घर जनकपुरी ठहरे हुए थे । तेइस सितम्बर, १९७५ को उन्होंने प्यारेलाल भवन के गांधी मेमोरियल हाल में अपना व्याख्यान दिया । रेल मंत्री पं. कमलापति त्रिपाठी ने समारोह की अध्यक्षता की । राजधानी के सभी प्रमुख लेखक, विद्वान तथा हिंदी साहित्यानुरागी उपस्थित थे । भाषण बड़ा प्रेरक था । द्विवेदीजी जब बोलने खड़े होते थे तो जैसे अमृत वर्षा होती थी— उनकी वाणी पर सरस्वती विराजती थी । सभी लोग प्रसन्न थे ।

दूसरे दिन सवेरे हिंदी के समाचारपत्रों में उनका भाषण बड़े विस्तार से छपा था । रेडियो तथा दूरदर्शन में भी उसका प्रसारण हुआ था । हमें स्वाभाविक तौर पर प्रसन्नता थी ।

कोई ग्यारह बजे की बात होगी कि प्रधानमंत्री के निजी सचिव श्री शेसन का फोन आया । श्री शेसन मेरे निजी मित्र थे । इसलिए हम लोगों के बीच में बेतकुल्लफी थी । उन्होंने फोन मिलाते ही कहा, "चतुर्वेदी, सुना है कि डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी तुम्हारी 'कस्टडी' हिरासत में हैं ।" मैंने कहा, "'कस्टडी' में तो नहीं हैं, वे अपने बेटे के घर ठहरे हैं परंतु आप बताइए काम क्या है । मैं उनसे संपर्क कर सकता हूं ।" श्री शेसन ने कहा, "प्रधानमंत्री उनसे मिलना चाहती हैं, उन्हें लेकर शाम को ६ बजे घर पहुंचो ।"

मैंने मुकुन्द को फोन किया । उनके घर पर फोन नहीं था । उनके एक पड़ोसी के यहां था । उन्होंने बताया कि द्विवेदीजी तो उनकी बहन प्रो. इन्दुमती ओझा के घर दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर में गये हैं । उनके यहां भी फोन नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था। उनके कॉलेज में फोन कर डॉ. ओझा को बुलाया। उन्होंने बताया कि द्विवेदीजी वहां से भी चल दिये हैं। शायद राजकमल प्रकाशन कार्यालय में हों। वहां देखिए।

राजकमल प्रकाशन कार्यालय में उनसे संपर्क हो गया। बात बताते ही द्विवेदीजी ने जिज्ञासा के स्वर में पूछा, "कल क्या कोई गलती हो गयी?" मैंने तुरंत उत्तर दिया, "नहीं। अगर आपकी गलती होती तो प्रधानमंत्री आपको अपने घर न बुलातीं, दरोगाजी आपको बुलाने आते।"

कुछ समय बाद द्विवेदीजी मेरे घर आ गये। वे सोच रहे थे कि व्याख्यान में कहीं कोई कहने-सुनने की बात तो नहीं हो गयी। हुआ यह था कि उन्होंने अपने भाषण में एक जगह कहा था, 'किंतु परिवर्तन चाहे प्राकृतिक नियमों या परिस्थितियों के दबाव से हों या मनुष्य की स्वेच्छाकृत योजना के फलस्वरूप, यह प्रश्न रह ही जाता है कि वस्तुतः यह विकास है या ह्रास। प्रसिद्ध दार्शनिक शापनहावर ने एक जगह कहा है कि यदि किसी पत्थर को पहाड़ से लुढ़का दिया जाए और उसमें बोलने की शक्ति हो तो प्रायः वह यही कहेगा कि वह प्रगति कर रहा है, आगे बढ़ रहा है।' इस वाक्य पर बहुत तालियां पिटी थीं।

आपातकाल का जमाना था। बीस-सूत्री कार्यक्रम घोषित हो चुका था और उसकी बड़ी प्रशंसा हो रही थी। द्विवेदीजी को यह शंका हो गयी कि कहीं इस वाक्य को व्यंग्य तो नहीं मान लिया गया, उसी के बारे में इंदिराजी को उनसे कुछ शिकायत हो।

शाम को ६ बजे हम १ सफदरजंग रोड के फाटक पर पहुंच गये और मैंने गाड़ी रुकवा दी। मैं रिसेप्शन में जाने के लिए उतरा ही था कि फाटक पर तैनात एक संतरी ने पूछा कि गाड़ी में कौन साहब हैं। जब मैंने डॉक्टर साहब का नाम बताया तो उसने कहा कि 'आप गाड़ी अंदर ले जाओ' और फाटक खोल दिया।

"परिवर्तन चाहे प्राकृतिक नियमों या परिस्थितियों के दबाव से हों या मनुष्य की योजना के फलस्वरूप, यह प्रश्न रह ही जाता है कि वस्तुतः यह विकास है या ह्रास। प्रसिद्ध दार्शनिक शापनहावर ने एक जगह कहा है कि यदि किसी पत्थर को पहाड़ से लुढ़का दिया जाए और उसमें बोलने की शक्ति हो तो प्रायः वह यही कहेगा कि 'वह प्रगति कर रहा है, आगे बढ़ रहा है'।"

गाड़ी जब पोर्टिको में पहुंची तो प्रधानमंत्री के एक सहायक ने आकर गाड़ी रोकी और हमें उतारकर श्रीमती इंदिरा गांधी के पुस्तकालय वाले कमरे में बैठा दिया। वहां कुरसिया पड़ी थीं। उन पर हम दोनों को बैठा दिया और कहा, "प्रधानमंत्री विदेशों से आये भारतीय राजदूतों की सभा में भाषण करने गयी हैं, आती ही होंगी। आप यहीं प्रतीक्षा करें।" इसके बाद वह चला गया।

मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। इस पुस्तकालय में दर्जनों खुले रैकों में किताबें रखी थीं। इनमें कोई भी आनेवाला कोई चीज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छिपाकर रख सकता है । यह कैसी सुरक्षा है ! न कमरे में और न बाहर ही कोई संतरी या पहरेदार था ।

कुछ समय बीतते ही इंदिराजी आ गयीं । नमस्कार कर उन्होंने एक स्टूल खींच लिया और उस पर बैठ गयीं । इसके बाद गुरु-शिष्या की बातचीत शुरू हो गयी । शांति निकेतन के पुराने दिनों की चर्चा चल निकली ।

आपातकाल की चर्चा होने पर द्विवेदीजी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के द्वार पर स्थित एक दुकानदार की एक युक्ति का उल्लेख किया कि किस प्रकार वह कह रहा था कि 'पहले जो भी चाहे, उससे कुछ न कुछ वसूल कर ले जाता था । यह पहला मौका है कि वह बेफिक्री से अपना माल बेच सकता है ।' उसके बाद द्विवेदीजी ने एक बात कही, जो मुझे अभी भी याद है । उन्होंने कहा, "राजा राज नहीं करता । राजा का प्रताप राज करता है । ऐसा लगता है कि राजा का प्रताप समाप्त हो गया था । वह पुनः वापस आ गया है ।"

आध घंटे तक यह बातचीत बड़े प्रेमपूर्ण वातावरण में चलती रही । श्री राजबहादुर आये, श्री कर्ण सिंह आये, उनकी स्लिपें आती रहीं, लेकिन श्रीमती गांधी ने उन्हें इंतज़ार करने को कहला भेजा । उन्होंने अपने पोते-पोतियों का आचार्यजी से परिचय कराया । आचार्यजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया । फिर उन्हें गाड़ी में बैठाकर ही वह अन्य मिलनेवालों के पास गयीं । द्विवेदीजी भी इंदिराजी की इस भक्ति से प्रसन्न थे ।

—५५, काका नगर,
नयी दिल्ली ।

और अब कंकालों का अभाव

विश्व के मेडिकल स्कूलों के सामने आजकल एक बड़ी समस्या मुंह बाये खड़ी है और यह है, कंकालों के अभाव की । कुछ समय पूर्व तक भारत प्रतिवर्ष १५,००० कंकालों और ५०,००० खोपड़ियों की पूर्ति करता था । कलकत्ता की तेरह फर्मों को पुलिस, अस्पतालों और चीरघरों से लावारिस शव प्राप्त करने की अनुमति मिली थी, पर अब भारत सरकार ने इस धंधे पर प्रतिबंध लगा दिया है ।

भारत सरकार को सूचनाएं मिली थीं कि लोग कब्रों को खोदकर कंकाल निकाल लेते हैं या फिर ऐसे लोगों से, जो अपने संबंधी का शवदाह नहीं कर पाते, शव खरीद लेते हैं । इसी प्रवृत्ति को रोकने के लिए भारत सरकार ने यह प्रतिबंध लगाया है ।

इंगलैंड में इसका एक परिणाम यह हुआ है कि मेडिकल स्कूल के पुराने छात्र प्रथम वर्ष के छात्रों को अस्थि-पंजर बेच देते हैं । यों एक फर्म ने प्लास्टिक के अस्थि-पंजर बेचने की शुरुआत की है लेकिन जैसा कि लिवरपूल विश्वविद्यालय मेडिकल स्कूल के डॉ. एड्रिन बावर्स का कहना है, प्लास्टिक के अस्थि पंजरों में असली अस्थि-पिंजरों-जैसी बारीकी नहीं आ पाती ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

वह एक यादगार चांटा!

● के. पी. सक्सेना

कभी- कभी कुछ ऐसा होता है, जो उम्र के दरीचों में इत्र से दाग-जैसा महफूज होकर रह जाता है। वक्त गुजर जाता है, मगर इस दाग की बची-खुची खुशबू यादें दोहराती रहती हैं। सन १९५० की घटना है। गोरखपुर में सेंट एंड्रयूज कालेज में पढ़ता था। गिट्टक-सा कद, सहमा-सहमा-सा मैं और कच्ची उम्र ! उस दिन पंडित नेहरू गोरखपुर आनेवाले थे। दोपहर दो बजे कूड़ांघाट हवाई अड्डे पर उतरना था। मन में एक लालसा थी कि एक बार करीब. . . बहुत करीब से उनके दर्शन करूं। जनसभा में भला हमारा शुमार किस गिनती में ? गरमी के दिन, तपती धूप। चल पड़े पैदल कूड़ांघाट एयरपोर्ट की जानिब। प्यास से हलक सूख रहा था, पर मन में पंडितजी को देखने की चाह थी। एयरपोर्ट पर पुलिस और सरकारी अधिकारियों की कतारें खड़ी थीं। हमारे-जैसे टुइयां की क्या गुजर ? एक हड़कंप मचा। प्लेन उतर रहा था। इन कतारों की दीवार के पार नेहरूजी को कैसे देख पाएंगे ? एक जोश उभरा मन में। अगलों की टांगों के बीच से तड़ से निकल गये। सिर उठाया तो सीधे नेहरूजी से जा टकराये। फिर एक चांटा पड़ा मुंह पर। नेहरूजी झल्लाये थे . . . 'यह क्या बदतमीजी है ?'. . . रहा-सहा ढारस छूट गया। फफक-फफककर रो पड़े हम। हिचकियों के बीच बताया कि तपती धूप में किस तरह पहुंचे हैं। नेहरूजी ने पीठ थपथपायी. . . दिलासा दिया. . . 'चुप चुप !. . . रोता क्यों है ? मैंने तो धीरे-से मारा था. . . गुड ब्वाय !' नेहरूजी हुजूम के साथ आगे बढ़ गये।. . .

उस चांटे की धीमी से चिलक आज भी गाल पर मौजूद है। फिर कितनी ही बार उन्हें देखा। विश्वविद्यालय की डिग्री और गोल्ड मेडल उनके हाथों लिया। मगर गोल्ड मेडल से ज्यादा यादगार बना है भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के हाथ का चांटा। इस देश में कितनों को नसीब हुआ होगा भला ?. . .

—७२ नारायण नगर, राम सागर, लखनऊ-१६

इंगलैंड के लीड्स क्राउन कोर्ट में एक पाकिस्तानी ने कुरान की कसम लेने से इसलिए इनकार कर दिया कि वह स्वच्छ नहीं था। लिहाजा न्यायाधीश ने पुलिस को उसे स्नान कराने का निर्देश दिया। चूंकि न्यायालय में कोई स्नानघर नहीं था, अतः पुलिस उसे एक सार्वजनिक स्नानघर में ले गयी। उसने वहां जी भरकर स्नान किया और फिर अदालत में आकर गवाही दी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

गूंज की एक जबरदस्त गिरफ्त में

● विवेकी राय

सन् १९५९ की बात है। उन दिनों सिनेमा का एक गीत बहुत अधिक गूंज रहा था, 'बड़े प्रेम से मिलना सबसे...।' इसी गीत ने एक दिन बहुत उपद्रव किया। मुझे हार मान लेनी पड़ी। वैसे अध्यापक जल्दी हार नहीं मानता है। लेकिन यह गीतों की गूंजवाला मामला जरा टेढ़ा था। मैं इस गूंज में साफ-साफ फंस गया था। विद्यालय में स्वच्छ और स्तरीय कविताओं का साहित्यिक वातावरण बनाने का गर्व चूर हो गया था। तुलसीदास की चौपाई याद आने लगी थी, कि 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरिय ते नर न घनेरे।' मैंने अपना नाम उपदेश को आचरण में उतारनेवाले बिरले लोगों की लिस्ट से खारिज कर दिया।

उस दिन मुझे गहराई से अनुभव हुआ था कि सिनेमा बाजी मार ले गया। संस्कृत, ब्रजभाषा, खड़ी बोली और मैथिली के गीत अपृछ हो गये। प्रार्थना, भजन, स्तोत्र और संझा-प्रभाती वगैरह की आकर्षणभरी मधुरताओं ने घुटने टेक दिये। अब घर-बाहर, राह-घाट और जीवन के हर चौराहे पर भगवान की अघटित घटी-पटीयसी माया की भांति सिने संगीत का राज है। लाज-डरवश यह गूंज अब तक हमारे विद्यालय के अहाते के भीतर नहीं घुसने पायी थी। सो, उस दिन वह सरेआम प्रवेश क्या कर गयी, भरपूर रूप में छा गयी। अंत्याक्षरी प्रतियोगिता में एक पट्ठे ने टनाक्-से कढ़ा ही तो दिया—

बड़े प्रेम से मिलना सबसे
दुनिया में इनसान रे
नां जाने किस वेश में बंदे
मिल जाये भगवान रे

इधर मैं चकित, लज्जित, संकुचित और क्षुब्ध हो रहा था, कुछ समझदार लड़के मुंह छिपाकर मुसकरा रहे थे क्योंकि मना न करने पर भी सिनेमा के गीत 'अगेय' मान छात्रगण यहां प्रयोग नहीं करते और उधर वह नाटे कद का भोंदू-जैसा लड़का सिर हिला-हिलाकर तथा श्रोताओं की ओर निहार-निहारकर बिना झिझक, परम निर्विकार स्वर-भंगिमाओं में तन्मय हो सुनाता चला जा रहा था। उसे विश्वास नहीं था कि 'बहुत अच्छा गाते हो' कहकर भी मैं बीच में ही उसे रोककर बैठ जाने के लिए कहूंगा। इसीलिए उसने खड़े-खड़े पूछा, 'जब अच्छा गाता हूं तो पूरा क्यों नहीं गाने देते हैं?'

'यह सिनेमा का गीत है। ऐसे गीत विद्यालयों में नहीं चलते हैं। भले लड़के हिंदी के श्रेष्ठ कवियों की कविताएं सुनाते हैं।' मैंने कहा।

"लेकिन साहब, इस गाने में क्या दोष है?" उसने झेंपते हुए फिर सवाल किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मैंने अनुभव किया कि जैसे-जैसे उस नकारी पंक्ति से पिंड छुड़ाना चाहता हूं, वैसे-वैसे वह शिव के पीछे ऊर्ध्व हस्त भस्मासुर की भांति पीछे लगी है...

'इसमें कोई रस नहीं होता। बस ऊपर-ऊपर से आकर्षित करनेवाली स्वर की झनक भर होती है।' मैंने उत्तर दिया और तत्काल लगा, समग्र रूप से पूरी स्थिति को देखते उत्तर अधूरा है।

घंटा बजने पर मैं दूसरे-दूसरे कामों में लग गया पर ऐसा क्या हुआ कि गीत मेरे कानों में बराबर गूंजता रहा। रह-रहकर विष-भरे सिने संगीत को जिनकी बौछारों से गली-कूचे पटते चले जाते हैं, कोसता और सूर-तुलसी आदि के साथ निराला-महादेवी आदि के गीतों के धकियाये जाने की स्थितियां को रोता। तब मैंने अनुभव किया कि जैसे-जैसे उस नकारी पंक्ति से पिंड छुड़ाना चाहता हूं, वैसे-वैसे वह शिव के पीछे ऊर्ध्वहस्त भस्मासुर की भांति पीछे लगी है। रजिस्टर में फीस का हिसाब ठीक कर रहा हूं और मन के एकाग्र होते ही होंठ अपने आप हिलने लगते हैं, 'बड़े प्रेम से मिलना सबसे...।' डस्टर-चाक ले क्लास रूम की ओर बढ़ते हुए यह क्या गुनगुना रहा हूं, 'बड़े प्रेम से मिलना... ?' यहां तक कि घर पर भी इस अवांछित से मुक्ति नहीं। छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं के परीक्षण के लिए बैठता हूं और पत्रों पर तेजी से आंखें तैरने लगती हैं तो अनायास उत्पन्न हुई वही मुसीबत, 'बड़े प्रेम से मिलना... !' धत्तेरे की !

मुझे ठीक याद है, उस दिन अकेले दरवाजे पर चारपाई पर बैठे-बैठे मैंने खूब जोर का ठहाका लगाया और पेंसिल तथा कापियों को किनारे कर चारपाई पर आराम से सोकर उस गीत से ही प्रेमपूर्वक मिलने की कोशिश की थी परंतु मुश्किल यह हुई कि चार पंक्तियों के बाद कुछ याद ही नहीं था। स्वीकार के लिए इतना काफी था। अब हम कितना-कितना क्या-क्या अस्वीकार करें? सत्य शायद इस स्वीकार-अस्वीकार से परे कहीं और है।

—बड़ी काग, गाजीपुर (—)२३३००१

☆

डी. एच. लारेंस : एक प्रसिद्ध लेखक और 'लेडी चैटरलीज लवर'—जैसी प्रतिबंधित कृति के रचनाकार। उनका एक विचित्र शौक था। वे विवस्त्र हो पेड़ पर चढ़ा करते थे !

☆

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डॉ. जाकिर हुसैन

संस्मरण

आखिर मैं भी इनसान हूं

● टी. काशीनाथ

"केवल एक कोबरा ही इतनी ज्यादा देर तक अपनी गरदन ताने रह सकता है।" यह टिप्पणी थी राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन की।

मैं अपने एक सहयोगी श्री लूथरा के साथ राष्ट्रपति भवन गया हुआ था। हमें राष्ट्रपतिजी के रंगीन चित्र खींचने थे। विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों से राष्ट्रपति के चित्र भेजने के लिए अनुरोध आया करते थे।

मई की गरम सुबह थी। हमें बताया गया था कि राष्ट्रपति गरमी की हलके रंग की वेशभूषा पहने हुए होंगे। हमने गद्दीदार दो सोफे चुने और तय किया कि सुबह के हलके प्रकाश में एक द्वार के पास, जिसके सामने मुगल गार्डन था, उनका चित्र खींचा जाए। प्रत्येक वस्तु तैयार थी और नियत समय पर राष्ट्रपतिजी अपने सहायकों सहित वहां पधारे।

"क्या आप लोग मेरा चित्र खींचने के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"क्या आप केवल एक अच्छा फोटो पाने के लिए इतने सारे चित्र खींच रहे हैं।" राष्ट्रपति ने कुछ अधीरता से कहा।

टी. काशीनाथ

इस बदसूरत कुरसी का इस्तेमाल कर रहे हैं ? क्या उससे मैं फरनीचर का हिस्सा नहीं लगूंगा ? इसे जहां तक संभव हो सके सामान्य और स्वाभाविक रहने दीजिए। आखिर मैं भी इनसान हूं।" राष्ट्रपतिजी ने कहा।

"सर, यह फोटोग्राफ विशेष तरह का है। इसीलिए हमने यह कुरसी चुनी।" मेरे सहयोगी ने विनम्रता से कहा।

उनका चेहरा कुछ खिंच गया—स्पष्ट था यह असहमति का भाव था। फिर वे कुरसी पर बैठ गये। उनकी अप्रसन्नता पर हम भी बेहद असमंजस अनुभव कर रहे थे। पर जब हमने अपने कैमरे के ग्राउंड ग्लास में उनका शांत, सौम्य और गौरव से भरा चेहरा देखा, तो हम सारा असमंजस भूल गये और हमने निगेटिव कलर फिल्म पर उनके कुछ चित्र खींचे। इसके बाद हमने पाजिटिव कलर फिल्म कैमरे पर चढ़ायी। दो चित्र खींचकर, हम कुछ फुट पीछे हट आये ताकि, तीन चौथाई पोट्रेट बना सकें।

हम चाहते थे कि पोट्रेट में उनके हाथ भी दिखायी दें, अतः हमने उन्हें एक पुस्तक देते हुए उनसे अनुरोध किया कि वे उसे हाथ में पकड़े रहें।

"मैं तो एक अपढ़ आदमी हूं। आप मुझे पुस्तक पकड़ने के लिए क्यों कह रहे हैं ?" राष्ट्रपति ने कुछ रूखे स्वरों में कहा।

हम पसीने से तर-बतर हो रहे थे और रोबोट की भांति चित्र खींचे चले जा रहे थे।

"क्या आप केवल एक अच्छा फोटो पाने के लिए इतने सारे चित्र खींच रहे हैं ?" राष्ट्रपति ने कुछ अधीरता से कहा। इसका कारण यह था कि हम लोग निगेटिव और पाजिटिव कलर फिल्मों पर उनके कुछ और चित्र खींच रहे थे।

इसके बाद हमने राष्ट्रपतिजी से एक दूसरे सोफे पर बैठने के लिए अनुरोध किया। यह सोफा पहले से इस कार्य के लिए तैयार रखा गया था। हम उनके कुछ और चित्र खींचना चाहते थे।

"सर, क्या आप थोड़ा मुसकराएंगे ?" मेरे सहयोगी ने अंतिम चित्र खींचने के पूर्व अनुरोध किया।

"मैं तो हमेशा मुसकराता रहा, केवल जब आप लोग कैमरा क्लिक करते हैं, उस समय को छोड़कर," राष्ट्रपतिजी ने कहा और उठ खड़े हुए। फिर जिस सोफे पर वे बैठे थे, उसकी ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "उसका अच्छा रंगीन चित्र आएगा।"

हमने राष्ट्रपतिजी के कुल मिलाकर केवल दस मिनट लिये थे, जो निःसंदेह ही हमारे जीवन के चिर-स्मरणीय दस मिनट थे।

—बी जी/१४ डी, मुनीरका,
नयी दिल्ली—११००६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अखंड महायोग के अनुपम साधक

□ लक्ष्मीशंकर व्यास

महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज भारत की आध्यात्मिक विभूति थे। महान दार्शनिकों और चिंतकों की ऋषि-परंपरा में उनका स्थान विशिष्ट रहा है। अखंड महायोग की उनकी साधना अनुपम थी। इसीलिए वे योगीराज के रूप में भी समादृत थे। आधी शताब्दी से अधिक समय तक उनकी आध्यात्मिक तथा सारस्वत साधना अनवरत चलती रही है। प्राचीन शास्त्र, पुराण, दर्शन और अखंड महायोग की साधना उनको योगी और मनीषी का स्वरूप प्रदान करती है।

मुझे कविराज के दर्शन तथा सान्निध्य के अनेक अवसर प्राप्त हुए। उन दिनों दिल्ली से 'नवभारत टाइम्स' के संपादक श्री अक्षय कुमार जैन तथा श्री लल्लन प्रसाद व्यास काशी आये थे। अक्षयजी ने महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज के दर्शन की इच्छा प्रकट की। हम तीनों सिगरा स्थित कविराज के निवास पर पहुंचे। संध्या का समय था। जब हम कविराज निवास की तीसरी मंजिल के उनके साधना के छोटे से कमरे में पहुंचे तो देखा कि वे समाधि में थे। कमरे में छोटी चौकी थी। चतुर्दिक पुस्तकों के ढेर थे। उन्हीं के मध्य वह पद्मासन लगाये आध्यात्मिक साधना में संलग्न थे।

'कविराज के सेवकों ने हमें बताया कि अब शीघ्र ही योग-समाधि का समय समाप्त होनेवाला है। उस समय कविराज के मुखमंडल पर विशेष तेज झलक रहा था। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपने नेत्र खोले। समाधि की भाषा में ही उन्होंने दिव्यलोक की अनुभूतियों की चर्चा की और कहा कि 'मां, अपनी संतान के कष्टों से अत्यंत दुःखित हैं। वह शीघ्र ही अवतरित होकर जनकष्ट का निवारण करेंगी।'

कविराज ने अंतरजगत् की अनेक आध्यात्मिक अनुभूतियों का वर्णन किया। उसका श्रवण कर हम आनंदित तो हुए किंतु पारिभाषिक दार्शनिक शब्दावली का संदर्भ अच्छी तरह समझ नहीं पाये। हां, इतना अवश्य हुआ कि उनके विचारों को सुनकर हमें हार्दिक आनंद का अनुभव हुआ।

इसके पूर्व उनके दर्शन एक विशेष प्रसंग में हुए थे। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने कविराज को साहित्य वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत करने का निश्चय किया था। सम्मेलन के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोहनलाल भट्ट ने मुझे यह कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौंपा था कि मैं कविराज से मिलकर प्रार्थना करूं कि वे उक्त उपाधि लेने सम्मेलन के समारोह में प्रयाग पधारने का कष्ट करें। जब मैं कविराज से मिला और सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री भट्ट का निवेदन सुनाया तो वे मुसकुराने लगे। प्रसन्न मुद्रा में उन्होंने कहा, "मैं इस सम्मान के लिए साहित्य सम्मेलन का अत्यंत आभारी हूं पर मेरा प्रयाग चलना कठिन है। अनेक विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों ने मुझे सम्मान तथा अलंकार प्रदान किया किंतु मैं कहीं भी नहीं जा सका।"

जब मैंने भट्टजी को कविराज का संदेश तथा आशय निवेदन किया तो यह व्यवस्था हुई कि वाराणसी आकर ही उन्हें उक्त सम्मान प्रदान किया जाए। प्रयाग से सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री भट्ट तथा विशेष अधिकारी श्री विद्याभास्कर काशी आये। एक विशेष समारोह कविराज के निवास पर ही आयोजित किया गया जिसमें उन्हें 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि सादर प्रदान की गयी।

कविराज के प्रथम दर्शन के अवसर पर जब मैंने यह बताया कि मैं आपके शिष्य का शिष्य हूं तो बड़े प्रसन्न हुए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष आचार्य बटुकनाथ शर्मा मेरे गुरुदेव थे। वह कविराज के शिष्य थे। दंडपाणि गली स्थित निवास के

महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज

उनके बंगले में ग्रंथों की आलमारियां थीं। वहीं प्रमुखता से पंडित गोपीनाथ कविराज का चित्र टंगा था। चित्र में कविराज के दर्शन का सौभाग्य बहुत पहले मिल चुका था किंतु प्रत्यक्ष दर्शन का यह प्रथम अवसर था। जब उनसे विदा लेने के लिए उठा तो कविराज ने पुनः प्रसन्न मुद्रा में कहा कि 'यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि आप बटुकनाथजी शर्मा के शिष्य हैं।' मैंने इसे अपना सौभाग्य माना और उन्हें सादर प्रणाम कर विदा हुआ।

माता आनंदमयी के आदेशानुसार उन दिनों कविराज भदैनी स्थित उनके आश्रम में आ गये थे। गंगातट स्थित आश्रम की पहली मंजिल में वहां भगवान की पूजा का कमरा है, उसी के बगल के कमरे में कविराज का निवास था।

समाधि की भाषा में उन्होंने कहा, "मां अपनी संतान के कष्टों से अत्यंत दुःखित हैं। वह शीघ्र ही अवतरित होकर जनकष्ट का निवारण करेंगी।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रति वर्ष सात सितम्बर को उनकी जयंती आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक ढंग से मनायी जाती थी। देश के विभिन्न भागों से उनके शिष्य इस अवसर पर काशी आते थे। कलकत्ता से उनके प्रमुख शिष्य श्री जगदीश्वर पाल जयंती समारोह के लिए विशेष रूप से आते थे। पहली मंजिल के गंगातटमुखी बरामदे में एक चौकी पर कविराज विराजते थे। पुष्पमालाओं से उनका वंदन-अभिनंदन हम शिष्यगण करते। प्रमुख शिष्यों में पद्मभूषण ठाकुर जयदेव सिंह, पंडित करुणापति त्रिपाठी, डॉक्टर प्रेमलता शर्मा, डॉक्टर विश्वनाथ भट्टाचार्य, इन पंक्तियों का लेखक तथा अनेक गण्यमान विद्वान तथा साधक एकत्र होकर उनका गुणानुवाद करते थे। यह क्रम कविराज के जन्म दिवस पर अब भी चलता है। परिवर्तन इतना ही हुआ है कि उनके स्थान पर अब उनका विशाल चित्र पुष्पों से सज्जित और समलंकृत रहता है।

महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज की अगाध विद्वतता तथा संस्कृत भाषा की सेवा के निमित्त उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें दस सहस्र रुपये प्रदान कर सम्मानित करने का निश्चय किया था। इस निमित्त उत्तर प्रदेश के राज्यपाल स्वयं काशी पधारे थे। मां आनंदमयी आश्रम के गंगातट वाले बरामदे में ही आयोजन हुआ था। राज्यपाल महोदय ने कविराज की संस्कृत भाषा, साहित्य और संस्कृति की महान सेवा की प्रशस्ति बड़े ही सुंदर शब्दों में व्यक्त की थी। समारोह की समाप्ति के बाद जब कविराज अपने कमरे में आये तो उन्होंने कहा कि 'राज्यपाल महोदय का भाषण महत्त्वपूर्ण रहा है।' इस सम्मान को प्राप्त कर उन्हें कोई विशेष हर्ष अथवा प्रसन्नता हुई हो, ऐसा नहीं प्रतीत हो रहा था। उनके मुखमंडल पर सामान्य गंभीरता जैसे पहले विराजती थी, वैसे ही दृष्टिगत हो रही थी।

उस दिन आनंदमयी आश्रम के गोपाल मंदिर के प्रांगण में उत्तर प्रदेश हिंदी समिति की ओर से विशेष साहित्यिक समारोह का आयोजन था। प्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित कमलापति त्रिपाठी भी इसमें सम्मिलित होने के लिए पधारे थे। इस समारोह में माता आनंदमयी विराजमान थीं। एक क्रम से माता आनंदमयी, कविराज तथा कमलापतिजी विशिष्ट आसन पर विराजमान थे। इस अवसर पर कविराज द्वारा लिखित 'तांत्रिक साहित्य' का प्रकाशनोद्घाटन था। पंडित कमलापतिजी ने कविराज की अगाध विद्वत्ता को रेखांकित करते हुए उनकी तंत्र संबंधी पुस्तक के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सचमुच तंत्र साहित्य पर ऐसा ग्रंथ भारतीय भाषा में उपलब्ध नहीं था। कमलापतिजी ने अपने भाषण में यह भी बताया कि किस प्रकार हिंदी समिति ने विशेष विद्वानों को नियुक्त कर कविराज की सेवा में उन्हें निरंतर भेजा और यह दुर्लभ ग्रंथ तैयार कराया। कविराज के प्रभूत ग्रंथों में 'तांत्रिक साहित्य' का विशिष्ट स्थान है। इस अवसर पर कविराज ने तो मौन ही धारण रखा पर माता आनंदमयी के आशीर्वचन से यह साहित्यिक-सांस्कृतिक समारोह महिमामंडित हो गया था।

—पराड़कर संग्रहालय,
के ३१/५१ कालभैरव, वाराणसी-२२१००१

> वह मनुष्य स्वतंत्र नहीं है जो स्वयं अपना स्वामी नहीं है।
>
> —इपिक्टेटस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अधूरी प्रतिकृति बन गयी पूर्ण कलाकृति

• डॉ. रणजीत कुमार साहा

स्व. रामकिंकर एक प्रख्यात शिल्पकार थे। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की कर्म-स्थली शांतिनिकेतन उनकी साधना-स्थली था। उन्होंने सीमेंट, कंक्रीट और सोरम का उपयोग कर अनेक भव्य मूर्तियां बनायीं।

यहां प्रस्तुत है, किंकर दा से संबंधित संस्मरण :

बात सन १९६८ की है। कलाभवन के तत्कालीन कला-विभाग के अध्यक्ष श्री दिनकर कौशिक से मुझे यह अनौपचारिक अनुमति मिल गयी थी कि मैं अपने हिंदी शोध कार्य के साथ-साथ शाम के समय कला भवन के किसी सहयोगी अध्यापक के साथ, उनकी स्टूडियो में चित्र या मूर्ति बना सकता हूं। मैं कभी स्वतंत्र रूप से और कभी किसी अध्यापक या ग्रुप के साथ अपना काम किया करता, केवल इस भावना से कि थोड़ा-बहुत अभ्यास बना रहे और शांतिनिकेतन के सबसे जीवंत विभाग—कला भवन की गतिविधियों से भी व्यक्तिगत रूप से जुड़ा रह सकूं। पोर्ट्रेचर के एक ऐसे ही ग्रुप के साथ मैंने देर से अपना कार्य आरंभ किया था। पूजा का अवकाश आरंभ होने वाला था, इसलिए दो-तीन दिनों में सागाई नाम की एक संथाली युवती (मॉडल) की प्रतिकृति पूरी भी करनी थी। एक दिन अचानक ही सूरज ढलने के बाद किंकर दा स्टूडियो आ धमके। उनकी नजर पहले मुझ पर पड़ी और फिर मेरी प्रतिकृति पर। उन्हें आते देखकर सागाई की सफेद मुसकान पहले ही खिल उठी थी। किंकर दा ने उसकी ओर देखे बिना मुझसे कहा, "नाइफ कहां है?"

और मेरे हाथ से नाइफ लेकर उन्होंने मेरी लगभग तैयार प्रतिकृति को बुरी तरह छीलना आरंभ कर दिया। मैं हतप्रभ खड़ा रहा और सागाई खिलखिलाती रही। किंकर दा अब भी इतने चुस्त और चौकस हैं, यह मैंने पहली बार देखा। वह बीच-बीच में उग्र और असंतुलित से हो उठते और फिर लगभग डांटते हुए बोले, "इतनी सुंदर लड़की। और तुमने क्या बनाकर रख दिया। कभी किसी संथाली लड़की को ठीक से देखा है?"

मैं सहम गया। वह कहते जा रहे हैं। ये, "केवल चेहरा मिला देने से ही नहीं होता, भाई। 'फेसियल लाइकनेस' से भी बड़ी चीज है 'रेसियल क्वालिटी'...पहले उसे लाउड करना पड़ता है, तभी 'कैरेक्टर साउंड' होता है समझे।"

इतना कहकर वह मेरे हाथ में नाइफ थमाकर चलते बने। और मुझे पहली बार लगा कि मैं चार-पांच दिनों से जो कुछ बना रहा था, वह अधूरी प्रतिकृति इन पांच-छह मिनटों में पूर्ण कलाकृति बन चुकी है। अब यह मेरी कलाकृति नहीं, उनकी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह मेरी हत्या करने आया था !

● जमनादास अख्तर

जमनादास अख्तर : उर्दू के प्रख्यात पत्रकार और संपादक । प्रस्तुत हैं उनके तीन प्रेरक संस्मरण

दूसरे विश्व युद्ध के दिनों की बात है । मैं उन दिनों लाहौर के एक दैनिक का संपादक था । एकरात दो बजे के करीब अखबार की अंतिम कॉपी प्रेस को जा रही थी कि एक वरिष्ठ पत्रकार मेरे कार्यालय में आये । उन्होंने कहा कि कॉपी रोक लो । मेरे पास एक ऐसी सनसनीपूर्ण खबर है, जो और किसी समाचारपत्र के पास नहीं । यदि मुझे पचास रुपये दे दो तो दे दूंगा । मैंने बहुतेरा कहा कि पहले खबर दिखा दो परंतु उन्होंने इनकार कर दिया । मैंने अंत में पचास रुपये देना मंजूर कर लिया । खबर थी, डेरा इस्माइल खान के राय बहादुर बेलीराम की हत्या की । मैंने यह समाचार प्रकाशित किया । दूसरी सुबह किसी और समाचारपत्र में यह समाचार नहीं था । उस रात मैं अपने मित्र को चार मील दूर साइकिल पर अपने मकान पर ले गया । पत्नी से पचास रुपये लिये । अपने मित्र को दिये और इसके बाद अपने मकान को लौट गया ।

पुलिस ने एक व्यक्ति दासराम को गिरफ्तार किया । वह दस नंबर का बदमाश था । उसे अदालत में पेश किया गया । एक दिन दासराम ने अपने वकील को हटा दिया और सरकारी गवाहों से स्वयं जिरह करनी शुरू कर दी । उसने पुलिस के एक अधिकारी से पूछा कि 'जिस रात आपने मुझे गोली चलाते हुए देख लिया था, वह रात चांदनी थी या अंधेरी ? आपने मुझे कितने फासले से देखा था ?'

पुलिस अधिकारी ने जवाब दिया कि 'रात अंधेरी थी और मैंने चालीस-पचास गज के फासले से तुम्हें देखा था ।'

दासराम ने जज से कहा कि 'हुज़ूर ! अब मैं न तो कोई और जिरह करूंगा और न ही अपना कोई गवाह पेश करूंगा । आप उस जगह अंधेरी रात में चलें और चालीस गज के फासले पर किसी को ठीक तरह से देख सकें तो मुझे फांसी की सजा दे दें ।'

यही हुआ और इसी कारण दासराम निर्दोष करार देकर रिहा कर दिया गया ।

कुछ दिन बाद मैं एक रविवार को अकेला ही अपने कार्यालय में बैठा था कि अचानक एक मोटा-सा, काला-सा व्यक्ति सिगरेट के कश लगाता हुआ मेरे निकट आ खड़ा हुआ । उसके एक हाथ में शराब की खुली बोतल थी । उसने एक-दो घूंट शराब के पिये । सिगरेट का एक कश लगाया और कहने लगा, ''आप ने ही बेलीराम की हत्या और दासराम की गिरफ़्तारी की खबर प्रकाशित की थी क्या !''

मैंने कहा, ''जी हां, मैंने ही खबर प्रकाशित की थी ।''

उसने कहा, ''मैं ही दासराम हूं । मुझे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह एक पेशेवर हत्यारा था। उसने शराब की बोतल मेज पर रख दी और कहा, "मैं ही दासराम हूं। मुझे अदालत ने रिहा कर दिया है, परंतु बेलीराम का कातिल हूं।" यह कहकर उसने अपनी जेब से एक पिस्तौल निकाली और उसे उछालते हुए कहा, "यह वही पिस्तौल है, जिससे मैंने बेलीराम को निशाना बनाया था।...असली पिस्तौल है यह !"

अदालत ने रिहा कर दिया है परंतु में ही बेलीराम का कातिल हूं।" यह कहकर उसने बोतल मेज पर रख दी और अपनी जेब से एक पिस्तौल निकाली और उसे उछालते हुए कहा, "यह वही पिस्तौल है, जिससे मैंने बेलीराम को निशाना बनाया था। वास्तव में पुलिस ने जो पिस्तौल बरामद किया था, वह किसी काम का नहीं था। असली पिस्तौल यह है।"

यह कहकर उसने फिर पिस्तौल को उछाला और कहा, "यह 'सैंपल' मैंने बेलीराम पर इस्तेमाल किया था। क्या आप पर भी कर दूं ?"

मेरी यह हालत थी कि काटो तो बदन में लहू नहीं। उसने फिर पिस्तौल अपने हाथ में उछाला। न जाने क्यों मैंने कह दिया, "दासराम, तुम बड़े बहादुर हो। तुमने जिस तरह से वकालत की, उस तरह से कोई महान वकील भी नहीं कर सकता।"

वह रुक गया।

मैंने कहा, "बैठ जाओ। सोडा मंगवाऊं ?"

उसने कहा, "मंगवाओ।"

मैंने चपरासी को बुलाया और कहा कि 'साहब के लिए सोडा ले आओ।'

मैंने कहा, "दास राम ! तुम हिंदुस्तान में पैदा हुए हो। कहीं विलायत में होते तो तुम्हें इनाम मिलता। यहां तुम-जैसों की कोई कदर ही नहीं।"

वह प्रसन्न हो गया। अपने कारनामे बयान करने लग गया और फिर जब कार्यालय में काम करनेवाले तीन-चार व्यक्ति आ गये तो वह नमस्ते कर लौट गया। दास राम में इनसान जाग उठा था।

हत्या की एक और धमकी

इसी तरह कुछ वर्ष पहले एक धार्मिक संस्थान के मुखिया के मर जाने के बाद उसके उत्तराधिकारी के सवाल पर झगड़ा होने लगा। संस्थान की संपत्ति पर एक व्यक्ति ने कब्जा कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरनेवाले के बेटे को बाहर निकाल दिया। मैं उस बदनसीब के हक में लिख रहा था। एक समय आया, जब इसी व्यक्ति के समर्थकों की संख्या बढ़ने लग गयी। इन दिनों मुझे हत्या की कई धमकियां मिलीं। मैंने सब पत्र प्रकाशित कर दिये और लिखा कि 'मैं पुलिस से अपनी सुरक्षा के लिए प्रार्थना नहीं करूंगा। यदि कोई मुझे गोली मार देना चाहता है तो मुझ पर मेरे कार्यालय में ही हमला कर दे।'

लगभग आठ महीने बाद एक टैक्सी-चालक मुझे एक उत्सव में मिला। उसने मुझसे पूछा, "क्या आप मुझे जानते हैं।"

मैंने कहा, "नहीं।"

उसने कहा, "मेरा नाम सरबजीत है। मैंने आपको हत्या की धमकी का पत्र लिखा था।"

मैं हैरानी से उसे देखने लगा। उसने बताया, "मुझे दो हजार रुपये दिये गये थे और एक गिरोह गठित किया गया था। प्लान यह था कि हम रात को आपके मकान पर जाएं। किवाड़ खटखटाएं और जब आप बाहर निकलें तो लाठियों और हाकियों से हमला कर दिया जाए। मेरे जिम्मे यह काम लगाया गया था कि मैं गोली चला दूं।"

उसने कहा, "तमाम तैयारियां पूरी हो गयी थीं परंतु अंत में मैंने सोचा कि एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या क्यों की जाए। मैंने इनकार कर दिया और साजिश करनेवाले को कह दिया कि ऐसा नहीं होगा।" इस व्यक्ति में इनसान जाग उठा था। इसलिए मैं बच गया।

झूठे आरोप में फंसाने की चाल

एक बार जब मैं वेश्यावृत्ति के ठिकानों से लड़कियां निकाल रहा था, मुझे और मेरे दो साथियों—सरदार लछमनसिंह गिल और श्री बंसीलाल चौहान—को गिरफ़्तार कराने के लिए एक खतरनाक साजिश की गयी। योजना यह थी कि दो लड़कियां, जो एक मुकदमे में गवाही देने के लिए अदालत में जाएं, वे हमारे खिलाफ अदालत में शिकायत करें कि हम उन्हें अगवा करना चाहते हैं। इसके बाद जब वे घरों को जाने लगें तो गोली चलायी जाए। फिर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करायी जाए कि हम उन्हें भगा ले गये हैं। सरदार गिल की कार का नंबर दर्ज कराया जाए। एक मकान हमारे नाम से किराये पर लिया गया था। योजना यह थी कि दोनों लड़कियों को रस्सियों से जकड़कर उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया जाए। रात को वे शोर मचाएं। लोग किवाड़ तोड़ दें। ये लड़कियां बयान दें कि हमने अपहरण करके उन्हें यहां रखा था और उमसे बलात्कार किया था। अब हुआ यह कि साजिश में शामिल एक व्यक्ति ने अपने एक मित्र के सामने डींग हांकी कि हम सब गिरफ़्तार हो जाएंगे। उसने मुझे सब कुछ बता दिया। हमने उसी समय डी. आई. जी. को सूचना कर दी। उन्होंने हमारी कार अपने पास रख ली। अदालत को बता दिया गया। जब एक लड़की ने कहा कि हम तीनों बरामदे में पिस्तौल लेकर घूमते हुए उसे गोली मार देने की धमकी दे चुके हैं तो जज ने मुसकराकर शैक्सपीयर का हवाला देकर कहा कि 'बहादुर लोग जीवन में एक बार ही मरते हैं। बार-बार नहीं।' यह कहकर जज के निर्देश से पुलिस उन लड़कियों को स्वयं अपने साथ ले जाकर उनके घरों में पहुंचा आयी।

—ए/१०, साउथ पटेल नगर, नयी दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

हार-जीत : जिंदगी के दो पहलू

● कर्नल रणजीत सिंह रावत

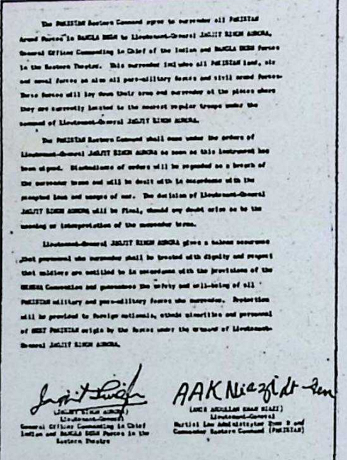

The PAKISTAN Eastern Command agree to surrender all PAKISTAN Armed Forces in BANGLA DESH to Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA, General Officer Commanding in Chief of the Indian and BANGLA DESH forces in the Eastern Theatre. This surrender includes all PAKISTAN land, air and naval forces as also all para-military forces and civil armed forces. These forces will lay down their arms and surrender at the places where they are currently located to the nearest regular troops under the command of Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA.

The PAKISTAN Eastern Command shall come under the orders of Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA as soon as this instrument has been signed. Disobedience of orders will be regarded as a breach of the surrender terms and will be dealt with in accordance with the accepted laws and usages of war. The decision of Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA will be final, should any doubt arise as to the meaning or interpretation of the surrender terms.

Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA gives a solemn assurance that personnel who surrender shall be treated with dignity and respect that soldiers are entitled to in accordance with the provisions of the GENEVA Convention and guarantees the safety and well-being of all PAKISTAN military and para-military forces who surrender. Protection will be provided to foreign nationals, ethnic minorities and personnel of WEST PAKISTAN origin by the forces under the command of Lieutenant-General JAGJIT SINGH AURORA.

(JAGJIT SINGH AURORA)
Lieutenant-General
General Officer Commanding in Chief
Indian and BANGLA DESH Forces in the Eastern Theatre

AAK Niazi Lt-Gen
(AMIR ABDULLAH KHAN NIAZI)
Lieutenant-General
Martial Law Administrator Zone B and
Commander Eastern Command (PAKISTAN)

एक ऐतिहासिक दस्तावेज : पाकिस्तान की पूर्वी कमान के सेनापति ले. जनरल नियाजी द्वारा भारत एवं बंगला देश सेना के जी. ओ. सी. चीफ ले. जनरल अरोरा के समक्ष किये गये आत्म-समर्पण का दस्तावेज

१७ दिसम्बर, सन १९७१ की ठिठुरती शाम। सोनामुरा पहाड़-श्रृंखला पर मैनामती की गढ़ी पर डूबता सूरज सोना उड़ेल रहा था। शेफी टैंकों की चहल-पहल ने गढ़ी को धूल की भीनी-भीनी चादर उढ़ा दी थी। इसी गढ़ी में पाकिस्तान का ११७ वां इन्फेंटरी ब्रिगेड पंजे गड़ाये बैठा था। और इस ब्रिगेड का कमांडर था पाकिस्तान का हॉकी का मशहूर खिलाड़ी ब्रिगेडियर आतिक;सांचे में ढला बदन, छह फुट लंबा जवान, और वर्ण, बिलकुल कुमार-संभव-जैसा। उसे पता था कि वह चारों ओर से भारतीय सेना द्वारा घिर चुका है और पाकिस्तान का सूरज बंगला देश के आसमान में तेजी से डूब रहा है। फिर भी वह अपने ब्रिगेड को समेटे हुए जमा हुआ था।

कोमिल्ला से कोई तीन मील की दूरी पर होगी ब्रिगेडियर आतिक की यह छोटी-सी गढ़ी। और जैसे चूहे के बिल के पास सतर्क बिल्ली बैठती है, वैसे ही घात लगाये बैठा था भारतीय सेना का एक माउंटेन डिवीजन। ना जाने क्यों वातावरण में हर्ष की महक-सी बसने लगी थी—विजय की सुगंध फैलने लगी थी। फिर दूसरे दिन ही रेडियो को घेरे हुए भारतीय सेना के ब्रिगेडियर 'टाम' पांडे और मैंने अपने कान घोड़ों की तरह खड़े कर रखे थे। फिर हमारे चेहरों पर हर्ष का गुलाल बिखरने लगा।

'ढाका में आत्म-समर्पण हो रहा है।' हम लड़ाई जीत गये। चारों तरफ उल्लास, विजय का नशा। फिर लेफ्टिनेंट जनरल और मेजर जनरल बदहवास से ढाका की ओर भागे-हवाई जहाज में, हैलीकोप्टर में, जीप में। एक होड़-सी हो गयी—पहले ढाका कौन पहुंचेगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बड़े-बड़े अफसर तो सब उड़ गये और अपने मातहत से कहते गये, 'बागडोर संभाले रखना, ठीक है।' तभी लाउड-स्पीकरों पर मैनामती पर डटे पाकिस्तानियों का ध्यान आकर्षित किया गया—'हथियार डाल दो। लड़ाई खतम हो गयी है, बेकार का खून-खराबा हम नहीं करना चाहते।' पर शायद ब्रिगेडियर आतिक का वायरलैस खराब हो गया था। ढाका के बारे में उसे कुछ भी ज्ञात नहीं था। जब हिंदुस्तानी 'माइक' पर बोलते तो वे जवाब में मशीनगन चला देते। अजीब समस्या थी। हमारे डिवीजन में भी हाकी के प्रेमी थे और उन्हें मालूम था कि दुश्मन का कमांडर हाकी का जाना-माना धुरंधर है। वे नहीं चाहते थे कि उसे नुकसान पहुंचे। उसके पीछे-पीछे उसका ब्रिगेड था मानो हॉकी का कप्तान अपनी टीम लेकर हाकी ग्राउंड पर खेलने आ रहा हो। मैंने ब्रिगेडियर आतिक को चटखी से सलाम किया और फिर उसका सत्कार किया—एक युद्धबंदी का उचित सत्कार। उसका उचित मान रखने को मैनामती की हॉकी-फील्ड पर ही शाम को चार बजे उससे आत्म-समर्पण कराया गया। और ब्रिगेडियर आतिक ने अपना पिस्तौल भारत के ब्रिगेडियर कैलाश प्रसाद पांडे उर्फ 'टॉम' पांडे को सौंप दिया।

....सात साल बाद फिर ब्रिगेडियर आतिक पाकिस्तान की हाकी टीम लेकर भारत आया था—बंबई में। हरी मखमली घास पर फिर

ढाका में पाकिस्तानी सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया था, लेकिन एक ब्रिगेडियर अभी भी पराजय स्वीकार करने के लिए तैयार न था। भारतीय सैनिक भी उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे। क्यों?

आखिर 'स्पोर्टसमैन स्पिरिट' भी कोई चीज है ना। तभी मुझे एक तरकीब सूझी। एक जीप पर सफेद झंडा लहराया और एक निडर कप्तान को एक 'चिट' लिखकर दी—ब्रिगेडियर आतिक के लिए। 'माइक' की लगातार आवाज और सफेद झंडेवाली जीप को अपनी ओर आते देख ब्रिगेडियर आतिक ने फायरिंग रुकवा दी। और जब उसे सलाम करके भारतीय कप्तान ने उसे कागज का टुकड़ा दिया तब ब्रिगेडियर आतिक ने उसे पढ़ा। लिखा था 'सर, हॉकी का मैच खत्म हो गया है।'

पढ़ते ही ब्रिगेडियर आतिक चल पड़ा। दोनों देश भिड़े। अब की बार ब्रिगेडियर आतिक की जीत हुई। किस्मत से उस दिन भी मैं भी बंबई में मौजूद था—अब की बार दर्शक की हैसियत से।

जब मैं ब्रिगेडियर आतिक के सामने आया, तब उसने पहचान लिया। मैंने फिर चटखी से एड़ी मिलाकर सलाम किया। "बधाई हो सर, आज आप जीत गये हैं।"

ब्रिगेडियर आतिक ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर बड़े प्यार से कहा "थैंक यू कर्नल, हार और जीत तो जिंदगी के अदलते-बदलते दो पहलू हैं।

प्रस्तुति : बा. दु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंधेरे में भी महफिल जमी रही

● अमजद अली खां

नयी दिल्ली के मंडी हाउस में आज जहां रवीन्द्र भवन, भारतीय कला केंद्र और कमानी सभागार वगैरह हैं, वहां कभी फिरोजशाह हटस हुआ करती थी। बाद में इस बड़ी इमारत को तोड़कर कई इमारतें बना दी गयीं। सन् ६०-६१ में हम फिरोजशाह हटमेंट्स से मॉडर्न स्कूल अपनी साइकिल पर आया करते थे। आज भी जब हम मंडी हाउस से गुजरते हैं, तब अपने पुराने दिन हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं।

फिरोजशाह हटमेंट्स में ही भारतीय कला केंद्र था। वह समय भारतीय कला केंद्र का महान समय था। शम्भू महाराज, सुंदर महाराज, सीनियर डागर ब्रदर्स, उस्ताद मुश्ताक हुसैन साहब और हमारे वालिद उस्ताद हाफिज अली खां यहां हुआ करते थे। इन सबसे हमको सीखने और उनको सुनने का मौका मिला। मॉडर्न स्कूल में तब हमारे प्रिंसिपल एम. एल. कपूर हुआ करते थे। उनका हमको बहुत आशीर्वाद मिला। 'स्पोर्ट्स' के पीरियड में वे हमको घर जाने की इजाजत दे दिया करते थे क्योंकि वे जानते थे हमारी खेल से ज्यादा सरोद में दिलचस्पी है। इतना समय हम सरोद को दे सकते हैं। खेल में हमारी दिलचस्पी फुटबाल और 'हॉर्स राइडिंग' में हुआ करती थी। क्रिकेट से बहुत डर लगता था कि कहीं गलत जगह लग गयी तो सरोद बजाना मुश्किल पड़ जाएगा।

उस्ताद अमजद अली खां; अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त युवा सरोदवादक एवं दिवंगत उस्ताद हाफिज अली खां के सुपुत्र। प्रस्तुत हैं, उनके संस्मरण

सरोद बचपन से ही शुरू कर दिया था। इसलिए १२ साल की उम्र से 'स्टेज' पर भी कार्यक्रम देना शुरू हो गया था। सन् ६१ की बात है तब हमारी उम्र १६ की थी, इलाहाबाद से प्रयाग संगीत सम्मेलन वालों ने हमको बुलावा भेजा। निमंत्रण पत्र आदि पर उन्होंने हमारा नाम उस्ताद अमजद अली खां ही प्रकाशित करा दिया। हम रेल से वहां पहुंचे। स्टेशन पर हमको कोई लेने आयेगा इस बात की उम्मीद थी। पर काफी देर तक कोई मिला ही नहीं। आखिर में प्लेटफार्म पर मैं और एक अन्य सज्जन ही रह गये। उन्होंने हमारे हाथ में सरोद देखकर पूछा कि क्या आप उस्ताद अमजद अली खां के साथ आये हैं? हमने कहा, "भई हम ही अमजद अली खां हैं पर हमको कोई लेने ही नहीं पहुंचा।" वे बोले, "आपको लेने के लिए तो मैं कब का आया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीचे से ऊपर तरबें छेड़ते-छेड़ते आधा घंटा हो गया, तब जाकर सरोद 'लाइन' पर आया। जैसे ही हमने तरबें छेड़नी बंद कीं, लोगों ने समझा, 'आइटम' खतम हो गया है और तालियां बजा दीं।

उस्ताद अमजद अली खां

हूं। सारे डिब्बे भी मैंने देख डाले पर मेरा खयाल था उस्ताद अमजद अली खां कोई दाढ़ीवाले और बड़ी उम्र के होंगे। इसलिए मैं आपको पहचान ही नहीं पाया।"

अभी दो-तीन साल पहले कलकत्ता के रवीन्द्र सदन में 'सुरेश संगीत संसद' ने एक कार्यक्रम में बुलाया था। हम जिस समय महफिल को पूरी रौनक में ले आये, ठीक उसी समय अचानक हॉल की बत्ती गुल हो गयी। हमारे साथ तबले पर जयंत बोस थे। मंच पर एक तख्त के ऊपर हम बैठे हुए थे। हॉल में पूरी तरह अंधेरा छा गया। एक पल के लिए हमारे हाथ भी कुछ ढीले पड़े। पर हम तख्त से उतरकर मंच के किनारे पर आकर बैठ गये और सरोद के उसी रंग में फिर से बजाना शुरू कर दिया। जयंत बोस ने जब सरोद की आवाज सुनी तो वे भी नीचे हमारे साथ आकर बैठ गये। हम अंधेरे में आधे घंटे से भी ज्यादा तक सरोद बजाते रहे बिना बिजली, बिना माइक के महफिल अंधेरे में भी जमी रही।

एक बार हम हॉलैंड गये। करीब १५ साल पहले की बात होगी। आडिटोरियम दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। भारतीय संगीत को सुनने के लिए वह उतावले से थे। हम स्टेज पर जाकर बैठे और हमने राग शुरू करने से पहले तरबें छेड़नी शुरू कीं। हमको नीचे से ऊपर तरबें छेड़ते-छेड़ते आधा घंटा हो गया, तब जाकर सरोद 'लाइन' पर आया। जैसे ही हमने तरबें छेड़नी बंद कीं, लोगों ने समझा 'आइटम' खतम हो गया है और उन्होंने तालियां बजा दीं। हमने उनको 'थैंक यू' तो बोल दिया पर साथ ही कह भी दिया कि हमारा 'आइटम' अब शुरू होगा। दरअसल वे लोग तरबें छेड़ने को ही 'आइटम' समझ बैठे थे।

तीस सितम्बर, ८४ की बात है, नयी दिल्ली के फिक्की सभागार में कैंसर सोसाइटी की सहायतार्थ हमारे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री राजीव गांधी को इस कार्यक्रम का उद्घाटन करना था। लोगों के दिमाग में बड़ी चिंता थी कि वे सिर्फ २० मिनट के लिए आ रहे हैं। राजीवजी आये। उन्होंने उद्घाटन किया। फिर उनसे हमारा परिचय कराया गया। हमने सोचा, कहीं ऐसा न हो कि हम सरोद बजाना शुरू करें और वह बीच में ही उठकर चल पड़ें। इसीलिए हमने उनसे पूछ ही लिया, "आप बताइए कितनी देर बैठेंगे, मैं उसी हिसाब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से अपना पहला 'आइटम' 'प्लान' करूं, राजीवजी ने जवाब दिया, "मैं तो आपसे ही पूछना चाह रहा था कि आपका क्या 'मूड' है।"

उनका यह जवाब सुनकर हम शुरू हो गये। घड़ी तो हम हाथ में बांधते नहीं। लेकिन हमको दिमाग में आवाज आ जाती है कि अब बंद कर देना चाहिए। पर उस दिन इत्तफाक से आवाज देर से आयी। हमने कैंसर की 'फीलिंग' पर राग ललिता गौरी बजाना शुरू कर दिया था। इसलिए उसमें ज्यादा समय लग गया। सरोद बंद करने के बाद हमने तबलावादक से पूछा, "भइया कितना समय हो गया?" उन्होंने कहा, "पचपन मिनट से आप सरोद बजा रहे हैं।" हम भौंचक्के रह गये। तब हमने श्री राजीव गांधी से कहा, "शुक्रिया अब आप जा सकते हैं।" तब उन्होंने प्रस्थान किया। वे बीस मिनट के लिए आये थे, जबकि एक घंटा रुककर गये।

—३, साधना एनक्लेव
नयी दिल्ली—७६

प्रस्तुति : प्रदीप सरदाना

थाने के दरोगा से हनुमानजी बड़े हैं

एक बार आजाद किसी साधु के साथ झांसी से सातार की अपनी कुटिया की ओर जा रहे थे। रास्ते में पुलिस के दो सिपाहियों ने उन्हें रोका और पूछा, "क्या तू आजाद है?" दूसरा कोई होता तो अनायास इस प्रकार से नाम सुनकर चौंक पड़ता, लेकिन आजाद ने शांत भाव से साधुओं की भाषा में प्रश्न पर कुछ ज्ञान का पुट चढ़ाते हुए कह दिया कि साधु तो आजाद होते ही हैं, उन्हें बंधनों से क्या वास्ता। पुलिसवालों को शायद कुछ शक हो गया था, वे उनसे थाने चलने का आग्रह करने लगे। आजाद ने पहले तो हनुमानजी की पूजा में विलंब हो जाने का बहाना किया, लेकिन जब पुलिसवाले किसी प्रकार भी उन्हें छोड़ने पर राजी नहीं हुए, तो उन्होंने पैतरा बदला और दृढ़ता से बोले, "तुम्हारे थाने के दरोगा से हनुमानजी बड़े हैं। मैं तो हनुमानजी का हुक्म मानूंगा, तुम मानो अपने दरोगा का।" उस समय तक आजाद के बारे में बहुत-सी किंवदंतियां फैल चुकी थीं। अस्तु बाबाजी को नाराज होते देख दोनों सिपाही सकपका गये। आजाद ने उनकी घबराहट भांप ली और नौ दो ग्यारह हो गये।

—शिव वर्मा : प्रसिद्ध क्रांतिकारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

ग्रह स्थिति : सूर्य १६ से वृश्चिक में, मंगल १६ से कुंभ में, बुध १० से वक्री होकर वृश्चिक से तुला में, गुरु कुंभ में, शुक्र तुला में, शनि वृश्चिक में, राहु मीन तथा केतु कन्या राशि में होगा ।

मेष : (चू, चे, चो, ल, ली,लो, ले, आ)

१ से ८ के मध्य कार्यों की अधिकता दायित्वों में वृद्धि तथा आकस्मिक एवं विलासितादायक वस्तु पर धन व्यय से चिंता होगी । जीवन साथी के स्वास्थ्य पर भी व्यय होगा । १ से १७ के मध्य सशक्त समय होगा । राज्याधिकारियों के सहयोग तथा संपर्कों के कारण प्रतिष्ठा तथा प्रभाव बढ़ेगा । नवीन आर्थिक साधनों का सृजन होगा । १८ से ३० के मध्य विशिष्ट कार्य की पूर्ति व आर्थिक सफलता प्राप्त होगी । जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप लंबे समय से संघर्षरत हैं, उसका पूर्ण होने का समय प्रारंभ होगा । मास में सृजन एवं रचनात्मक कार्यों में बाधा उपस्थित होगी ।

वृषभ : (ई, उ, ए, व, वा, वे, वू, वो)

१ से ९ के मध्य शत्रुओं से सावधानी एवं सतर्कता, जीवन साथी के कारण चिंता तथा परेशानियों का सामना करना होगा । इस मध्य शासन सत्ता एवं संबंधित अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा । १० से १८ के मध्य पदोन्नति, विभागीय परिवर्तन, प्रतिष्ठा एवं सम्मान का लाभ मिल सकता है । पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन सुखद एवं सहायक होगा । नवीन सृजन एवं रचनात्मक कार्यों के लिए अनुकूल समय होगा । १९ से ३० के मध्य आकस्मिक धन लाभ, घटनाक्रमों में परिवर्तन, धार्मिक कार्यों में व्यस्तता के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । इस मध्य प्रियजनों से सावधानी तथा व्यवसाय में सीमित जोखिम लेना हितकर होगा ।

मिथुन : (क, के, की, कू, को, घ, ह)

१ से १० के मध्य राजकीय कार्यों में सफलता तथा आर्थिक लाभ का सुनिश्चित योग होगा । इस मध्य स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें । जीवन साथी तथा उनके परिवारजनों का सुख तथा सहयोग मिलेगा । ११ से १८ के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्य व्यर्थ मानसिक तनाव, संतान संबंधी चिंता, रचनात्मक एवं सृजन में अकारण बाधा एवं विलंब । १९ से ३० के मध्य अपेक्षित कार्यों में सफलता । धन, संपत्ति विवादों पर अनुकूल निर्णय अथवा नवीन संपदा का क्रय भी संभव होगा । यह मास विलक्षण होगा । इसमें जहां अकारण तनाव पीड़ा होगी, वहां आकस्मिक रूप से विशिष्ट कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी ।

कर्क : (ही, हो, हे, हो, डा, डे,डो)

१ से ९ के मध्य आपकी असाधारण मानसिक क्षमता के कारण शासन, सत्ता अथवा राजनीतिक व्यक्ति से लाभ होगा । लंबित योजना की आकस्मिक सफलता से प्रसन्नता होगी । १० से १८ के मध्य व्यावसायिक कार्यों में उन्नति धन लाभ तथा संपत्ति संबंधी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी । पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन सुखद होगा । १८ से ३० के मध्य विषम परिस्थितियों एवं गुप्त षड्यंत्रों के कारण मानसिक एवं भावनात्मक पीड़ा की स्थिति होगी । भावुकता पर नियंत्रण रखें । स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखना आवश्यक है । प्रतियोगिता, शिक्षा, परीक्षा तथा राजकीय कार्यों में सफलता के लिए उन्नत समय होगा । सृजनात्मक कार्यों से भी प्रतिष्ठा तथा धन लाभ का योग स्पष्ट प्रतीत होता है ।

सिंह :(म, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी)

आर्थिक एवं पारिवारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए श्रेष्ठ मास है । आपके इच्छित कार्य की पूर्ति होगी । सामाजिक प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्ति

पर्व एवं त्योहार

१—दीपावली, ३—भैयादूज, ५—वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, ७—सूर्य षष्ठी, १०—अक्षय नवमी, १२—प्रबोधनी (देवोत्थान) एकादशी, १३—प्रदोष, १६—कार्तिक पूर्णिमा, २०—संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, २४—महाकाल भैरवाष्टमी, २८—एकादशी व्रत, २९—शनि प्रदोष ।

राशियां एवं प्रभाव

बुध २२, गुरु ८ तथा शुक्र २६ को मार्गी होंगे । शनि मंगल का महाग्रह परिवर्तन, १५ के बाद गुरु मंगल योगारंभ २९ तक रहेगा । परिणामस्वरूप मासारंभ का तनाव विद्वेष तथा संहारक प्रवृत्तियों पर मास के उत्तरार्द्ध में नियंत्रण होगा । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति प्रयासों की दिशा में पहल प्रारंभ होगी । मास के उत्तरार्द्ध में वातावरण शांत एवं सद्भावपूर्ण होगा । तीसरे सप्ताह में सूर्य, शनि युति तथा मंगल का प्रत्यावर्तन विश्वव्यापी अप्रिय घटना का स्पष्ट संकेत है जो कि प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक स्वरूप में होना संभावित है ।

देश में राजनीतिक एवं आर्थिक वातावरण में शिथिलता दृष्टिगोचर होगी । दक्षिण भारत में प्राकृतिक कारण से जनहानि होगी । पंजाब तथा सीमावर्ती राज्यों में विध्वंसक घटनाओं की मासारंभ में अधिकता होगी । मासांत में श्रम समस्याएं तथा प्रजा-राजा के मध्य विषमताकारक स्थिति होगी । उत्तर भारत के किन्हीं प्रदेश प्रमुख का परिवर्तन ग्रहगोचर से स्पष्ट है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का योग भी है । १ से ९ के मध्य नवीन कार्य, रुकी हुई योजनाओं की पूर्ति । संपत्ति के कार्यों में धन के विनियोग का योग उपस्थित होगा । सामाजिक जीवन में अनुकूल वातावरण एवं लाभवर्धक स्थितियों का उदय होगा । १० से १८ के मध्य मांगलिक कार्य, पद प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आकस्मिक यात्रा का योग उपस्थित होगा। व्यावसायिक कार्यों की अधिकता होगी । १९ से ३० के मध्य शासन से सावधानियां रखें । धैर्य से कार्य करने पर अप्रिय स्थिति से बचाव हो सकता है ।

कन्या : (टो. पा. पी. पू. पू. ष, ठ,पो)

१ से ९ के मध्य अज्ञात तनाव, चिंता एवं व्यर्थ भय रहेगा । संपत्ति वाहन आदि के सुखों में कमी होगी । आपकी मानसिक क्षमता के कारण कार्यों में साधारण प्रगति होगी । इस मध्य आपका मनोबल ही आपका सहायक होगा । १० से १८ के मध्य शत्रुओं के द्वारा गुप्त षड्यंत्र अकारण विरोधाभास एवं रक्त संबंधियों के कारण कष्ट का सामना करना पड़ेगा । किंतु मासांत में शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा अभीष्ट कार्यों की पूर्ति होगी । जीवन साथी तथा परिवारजनों के सहयोग से महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां होंगी । यह मास आपको पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में श्रेष्ठ फलदायक होगा । आप साहस तथा मनोबल से कार्य करें । रचनात्मक एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्तता होगी, जिससे प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ।

तुला : (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

१ से ९ के मध्य आर्थिक, मांगलिक कार्य, पद, प्रतिष्ठा एवं सम्मान में सफलता अर्जित होगी, आपके असाधारण मानसिक क्षमता के कारण शासन, सत्ता अथवा राजनीतिक व्यक्ति से लाभ होगा । १० से १८ के मध्य जिस लाभ के लिए आप लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं, उसमें विजय प्राप्त होगी । समय का पूरा-पूरा उपयोग करें । १० से १८ के मध्य आकस्मिक रूप से लाभदायक यात्राएं, धनलाभ सृजन एवं रचनात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त हों । भौतिक सुखों की वृद्धि होगी । परिचय क्षेत्र में वृद्धि होगी । १९ से ३० के मध्य शत्रुओं पर विजय, राजकीय कार्यों में अभीष्ट सफलता प्राप्त होगी । प्रतियोगिता परीक्षा तथा सम्मान के लिए अनुकूल समय होगा ।

वृश्चिक : (तो, ना, नी, नू, ने, नो, यी)

१ से ९ के मध्य कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति होगी। पदोन्नति, विभागीय परिवर्तन, प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान आदि का लाभ मिल सकता है । १० से १७ के मध्य पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति में चल रहे आर्थिक प्रयासों के साकार होने का योग उपस्थित होगा । विवाद एवं तनाव कम होगा । मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों की ओर रुझान अधिक होगा । १८ से ३० के मध्य शासन एवं राजनीतिक व्यक्तियों से सावधानी एवं सतर्कता रखना ही हितकर होगा । इस मध्य अकारण विरोधाभास, व्यर्थ विवाद तथा अपमानजनक स्थिति का सामना करना होगा । कार्यों में सावधानी व सतर्कता से अधिक धैर्य रखना हितकर होगा । मास के उत्तरार्द्ध की अपेक्षा पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ फलदायक होगा ।

धनु : (य, यो, भा, भी, भू, धा, फा, भे)

मास में कार्यों में सफलता, पारिवारिक सुख, नवीन योजनाओं की संपन्नता तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यों से प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। १ से ९ के मध्य राजकीय कार्यों की पूर्ति, पारिवारिक सुख व नवीन योजनाओं पर अधिक श्रम के बाद सफलता प्राप्त होगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता होगी। १० से १८ के मध्य व्यर्थ तनाव, मित्रों से विरोधाभास तथा स्वास्थ्य संबंधी कारणों से परेशानी का सामना करना होगा। राजकीय अधिकारियों के विरोधाभास को धैर्य सहित टालना हितकर होगा। १८ से ३० के मध्य विलासितादायक वस्तुओं पर व्यय होगा। मित्रों के सहयोग से महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण होगा। भावी योजनाएं सफल होंगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। संतान संबंधी सुखद समाचार प्राप्त होगा।

मकर : (भो, जा, जी, खी, खे, खो, गा)

मास अनुकूल एवं श्रेष्ठ फलदायक होगा। आर्थिक मांगलिक कार्य, पद,प्रतिष्ठा एवं सम्मान में सफलता अर्जित होगी। १ से ९ के मध्य पराक्रम में वृद्धि, नवीन कार्यों में सफलता, अभीष्ट सुखों की प्राप्ति तथा प्रियजन से भेंट होगी। १० से १८ के मध्य गुप्त शत्रुओं के षड्यंत्र से प्रतिष्ठा को हानि, किंतु राजाश्रय से कार्यों में सफलता तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। यात्रा के कारण कष्ट का सामना करना होगा। परिवारजनों के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। जीवन साथी एवं उनके संबंधियों के कारण लाभ की प्रबल संभावनां होगी। मासांत का समय प्रतियोगिता परीक्षा, राजकीय कार्य, नवीन सृजन एवं रचनात्मक गतिविधियों के लिए श्रेष्ठ होगा।

कुंभ : (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, द)

मास में प्रतिष्ठा, धन व पद वृद्धि के प्रयास में सफलता मिलेगी। आपकी प्रतिभा का उचित मूल्यांकन होगा तथा वांछित कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी। १ से ९ के मध्य साधारण शरीर पीड़ा, जीवन साथी तथा रक्त संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। क़ीर्ति के प्रयास विशेष रूप से सफल होंगे । १० से १८ के मध्य पद, प्रतिष्ठा एवं स्थानांतरण की दिशा में चल रहे प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यात्रा का योग होगा। आकस्मिक रूप से विदेश भ्रमण का अवसर आ सकता है। १९ से ३० के मध्य राज्याधिकारी, सत्ता तथा प्रभावशाली व्यक्तियों से दीर्घकालिक हितों की सफलता। रचनाधर्मियों के लिए अनुकूलतम समय होगा।

मीन : (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

१ से ८ के मध्य आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। प्रियजन मिलन व परिचय क्षेत्र में वृद्धि होगी। विलासितादायक वस्तुओं पर धन व्यय अधिक होगा। ९ से १८ के मध्य शीघ्र कार्य, लेखन, साहित्य, कला एवं संगीत की दिशा में यश प्राप्त होगा। रक्त संबंधियों एवं संतान से परेशानी होगी। १९ से ३० के मध्य नवीन योजना को साकार करने पर धन-व्यय होगा। शत्रुपक्ष के कारण उलझनों का सामना करना होगा। पारिवारिक एवं व्यावसायिक मुद्दों पर सावधानी रखना हितकर होगा। प्रतियोगिता परीक्षा संबंधी कार्यों में प्रतिष्ठा एवं उपहार प्राप्त होने का योग है। मास में व्यर्थ तनाव एवं व्ययों पर नियंत्रण रखें। संयम एवं धैर्य से परिस्थितियों को आप अपने अनुकूल बनाने में सफल हो सकते हैं।

—१२/४ सुभाष नगर, भोपाल, (मध्यप्रदेश)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपराधिनी

• रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

संस्मरण-लेखन अपने में एक यातना ही प्रायः हुआ करता है—यातना न कहें तो भी यातना की अंतर्भुक्ता वृत्त-चित्रावली कहने से काम चल जायेगा। आदमी के अद्‌भुत, अकल्पनीय, गूढ़ातिगूढ़ मन को न पहचान पाने का एक अपराध-बोध भी उसके साथ अकसर लगा रहता है। किसी संचित अहंकार के चूर-चूर होने की वेदना भी रहती है। आज कुछ ऐसा ही मुझे यह पचास-पचपन वर्ष पुराना क्लेशद प्रसंग लिखते समय प्रतीत हो रहा है।

रुपया आदमी को जीवन देता है और रुपया ही उसके प्राण भी ले लेता है यह तब मैंने न जाना था। साहित्य की भावुकताभरी अर्धस्वप्न, अर्धसत्य दुनिया में जीता था और अभाव के तनाव झेलकर भी मस्ती में कोई कमी न आने देने की आदत उल्लसित किये रहती थी। इसीलिए महल्ले की एक कुलवधू को जब अपने पति के सगे बड़े भाई की हत्या के तथाकथित अपराध में अभियुक्त के कटघरे में बंद पाया, तब चकित रह गया। उन दिनों अदालतों में इस प्रकार की अपराधिनी स्त्रियों के मामले बहुत कम आते थे।

पूरे परिवार की इज्जत दांव पर लगी थी। अभियुक्ता के पति रामसहाय की कपड़े की दुकान पर मैं अपनी बेकारी का समय काटता अकसर बैठा मिलता था। वह सहृदय था और साहित्यिक रुचि भी रखता था। जिस दिन पेशी होती मैं भी रामसहाय के साथ जाता—पूरे दिन कचहरी में उसके साथ रहता। वकील की पूरी चेष्टा के बाद भी जमानत न हुई थी। पेशी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बराबर बढ़वाते रहने के यत्न जारी थे।

जो हो गया वह तो अघटित नहीं हो सकता पर अपराधिनी किसी प्रकार बेदाग छूट जाए, यही घरवालों की प्रबल इच्छा थी। घर में रामसहाय के बाकी दोनों छोटे भाई इसी पर कटिबद्ध थे। रामसहाय के आत्मसंताप की सीमा न थी। उसकी पत्नी—दो बच्चों की मां अपने एकमात्र सगे जेठ को विष देकर हत्यारिणी बन जायेगी ! भले उसका बड़ा भाई घोर स्वार्थी रहा हो—अधिक-से-अधिक पैसा दबाने और अपनी बदचलनी और पत्नी-बच्चों के लिए काट-कपट करता रहा हो, पर इसे वे तीनों भाई जानते थे। बड़ा होने के कारण सारी कमाई उसी के हाथ में रखी जाती थी। वह जिस भाई या बहू को जितना देता था उतना ही पाते थे। भाई सुशील थे—पत्नियों के उकसाने, अलग हो जाने के उत्तेजनों पर न आते थे। भीतर-भीतर तीव्र शीत युद्ध चलता था। यदि खुलकर कलह होती थी तो घर का मालिक जेठ अशालीन बातें करता था। जेठानी ऐसे में पति का ही साथ देती थी। पर शालीन भाई अपनी पत्नियों को ही डाट-फटकार कर शांत करते थे। जिस बड़े भाई ने एक प्रकार से उन्हें पाला था उसके साथ रहना—उसी के पारिवारिक अनुशासन में चलना अपना धर्म मानते थे। दुर्व्यसनी बड़े भाई का सारा अतिचार भी उन्हें सहन था।

रामसहाय की पत्नी को मैंने खुली अदालत में ही पहली बार देखा। परदे की लखनवी परंपरा से ग्रस्त घरों के भीतर तब मित्रों का आना-जाना उसके-जैसे सनातन रक्त वाले परिवार में वर्जित था। अदालत में ही उसका 'ललिता' नाम जाना था। उसके मुख पर नाम के अनुरूप सच्चरित्र लालित्य की छाप थी।

रामसहाय की ग्लानि, उसका मनस्ताप उसे जैसे अपना मुंह न उठाने देता था। सुना कि वकील के लाख समझाने और दोनों देवरों के अनुनय-आग्रह पर भी ललिता अपराध स्वीकार करने का अपना बयान बदलने को तैयार न थी। जेठ शराबी और दुराचारी था इसे सब जानते थे। इस स्थिति में ललिता अपने को बड़ी हद तक बचा ले जाने का कानूनी प्रयास कर सकती थी। पर अडिग सच्चाई के प्रति उसकी लगन उसे किसी प्रकार का बचाव करने से विमुख किये थी। ऐसा तीव्र अवसाद-बोध था जैसे जेल के भीतर ही अपने परिपूर्ण यौवन और जिजीविषा से अभिशप्त जीवन की शेष कहानी बिताने के लिए उसने अपने को तैयार कर लिया हो—जैसे पीछे छूटे संसार और कर्मगति में उसे लौटना ही न हो।

ललिता को हत्यारिणी के रूप में कटघरे में पाकर और चारों ओर उसके खूनी आचरण के लिए छिः-छिः सुनकर भी न जाने क्यों मुझे उसके अलोभ पर विश्वास घना होता जाता था। न जाने क्यों मन मानने को किसी प्रकार तैयार न होता कि अपने हिस्से के पैसे का या उससे अधिक का लोभ ललिता को इतना प्रतिहिंसक बना सकता है! उसके मुंह की निर्दोष पारदर्शिता छिपाये न छिपती थी। एक विचित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उज्ज्वलता उसे घेरे चलती थी।

रामसहाय के घर की बहुत-सी बातें मुझे मालूम थीं। ललिता की छोटी बहन राधा का विवाह भी इसी घर में हुआ था—रामसहाय के सबसे छोटे भाई असरफीलाल के साथ। छोटी बहू अपने ही क्या, दस-बीस घरों में सबसे रूपवती मानी जाती थी। स्वभाव से मिलनसार पर अपने काम से काम रखनेवाला—दिन-रात पैसा कमाने में लगा असरफीलाल पत्नी की ओर ध्यान भले न दे पाता रहा हो, पर मन-ही-मन उसके रूप-गुण से निहाल था। और बहुओं से कुछ ज्यादा ही पढ़ी थी वह। ललिता ने ही अपनी बहन का विवाह, अपने देवर की ओर से भली भांति संतुष्ट होकर, कराया था। राधा पर ललिता के स्नेह की सीमा न थी।

उस दिन रामसहाय अवाक् रह गया जब एकांत पाकर आंसू बहाते हुए राधा ने उसे बताया कि 'जीजी ने यह हत्या अपनी छोटी बहन की शील-रक्षा के लिए की है।'

अपने को किसी प्रकार प्रकृतिस्थ रखकर रामसहाय ने राधा को शांत किया और उससे सारी जानकारी ले ली। बड़ा भाई गुलजारीलाल वेश्यागामी और दुराचारी था। यह सब जानते थे। सबसे छोटी अनुज-वधू—लगभग कन्या-जैसी आयु की 'भैया' के मन को बेकाबू कर गयी। उसके भोग की क्षुधा ने उसका सारा बचा-खुचा विवेक हर लिया। कामासक्त होकर मौका पाते ही उसने कई बार उसे दबोचने की चेष्टा की। पर राधा साध्वी थी और पति को देवता की सीमा तक पूजनेवाली। उसने सबसे बड़े जेठ को इस अधम प्रयास के लिए फटकारा—मुंह खोलकर भर्त्सना भी की। पर गुलजारीलाल ने इस पर कोई भी ध्यान न दिया—अपने दुष्प्रयास में लगा रहा। घर में रहकर वह दिन भर लेन-देन की पैतृक गद्दी संभालता था। ब्याज का धंधा था और उसे कहीं बाहर जाने की जरूरत न थी। सब उसी के पास आते—सूदखोरी का लंबा-चौड़ा कारोबार था।

राधा ने पति से न कहकर ललिता को ही यह सब बताया था। राधा से यह सब सुनकर पहले तो वह सन्न रह गयी—फिर सहसा उसकी आंखें भक् से जल उठीं। राधा ने ऐसी कौंध बहन ही क्या, कभी किसी की आंखों में पहले न देखी थी। वह सहम उठी—बोली, "जीजी ! इस राक्षस से कैसे त्राण हो ? मरदों को मालूम होने पर खून-खच्चर मच सकता है।"

इतने दिनों में ललिता इस घर के मरदों को पहचान चुकी थी। किस तरह बड़े भाई के प्रति दासत्वभरी आज्ञाकारिता लेकर वे गृहस्थी चला रहे थे इसे वह देखती आयी थी। परिवार की प्रतिष्ठा, घर की बात कहीं बाहर फुसफुसाहट के रूप में भी न जाने पाये और सब-कुछ सहन किया जाये ऐसी निर्जीव मानसिकता सबकी थी। सास का देहांत बरसों पहले हो चुका था जिससे फरियाद की जाती और उसके जेठ-जैसे नर पिशाचों पर सदुपदेश और सन्मति की भीख का कोई असर नहीं पड़ता। अपने दिल के उबालों में उलझी ललिता रह-रहकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाती थी। छोटी बहन की पत का सवाल था।

दो दिन तक ललिता के मन में विदारक अंतर्द्वंद्व चलता रहा। भगवान से बार-बार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रार्थना करती, पर बहन के शीलहरण की बात सोचकर सिहर उठती । अंत में उसने निश्चय कर लिया । अधिक इंतजार नहीं किया । राधा को उसने उसके पति की शपथ दिलाकर इस बात को कभी जाहिर न होने देने का वचन लिया । और-तो-और अपने प्राणपति को भी कुछ नहीं बताया । वह जानती थी वैसा करना कोई काम न आयेगा । उसने कृतसंकल्प हो जेठ को विष दे दिया—उसके प्राण लेकर मानो बहन का संकट इस धरती से सशरीर, सदा के लिए उठा दिया ।

सारी बात सुनकर रामसहाय ने राधा से इस बात को अन्य किसी से भी— यहां या मायके में — न कहने का वचन लिया । उसे सांत्वना देकर उसकी आत्मा की आर्त्तता दूर करने का पूरा प्रबोध दिया । उसके दिल पर जो गुजर रही थी, वही जानता था । भीतर-बाहर जैसे चारों ओर से कशाघात हो रहे हों । पर अब वही बड़ा था—धैर्य और समझदारी से आगे की सोचकर विचारपूर्वक बढ़ना था ।

तीनों भाइयों ने बैठकर घंटों सब पहलुओं पर विचार किया । अंत में यही तय हुआ कि यह बात यहीं दफना दी जाए । दोनों भाइयों ने असरफीलाल को राधा को संभालने और इस बात को घोलकर सदा के लिए पी जाने का आदेश दिया जिससे वह भी पूरी तरह सहमत था । पर उसका उद्वेलित युवा मन तो और भी अशांत था ।

जैसे किसी ने इस प्रकार का कुछ जाना ही नहीं इस प्रकार स्थिति आगे बढ़ती गयी ।

जिस दिन फैसला सुनाया गया उस दिन भीड़ थी । निर्णय तो सर्वविदित-जैसा था ही । ललिता को ऐसी निष्ठुर आवेगहीन हत्या का अपराधी पाकर भी उसकी आयु और इतर बातों को ध्यान में रखकर उसे मृत्युदंड न देकर विद्वान न्यायाधीश ने आजन्म कारावास की सजा दी थी । सबने सुना और बचाव की क्षीण आशा को भी बुझते देखा ।

निर्णय सुनते समय सब उनकी ओर देख रहे थे; मेरी आंखें ललिता के मुख पर जमी थीं । बड़े-बड़े आश्रमवासियों, संन्यासियों के मुख पर ऐसी दिव्य शांति मैंने नहीं देखी । शायद सारे भवताप मिट जाने पर किसी गंभीर अदेखी दिव्यता के तले ऐसी सर्वात्म विश्रांति मिलती होगी । मैं वही अटूट, निश्चल, निर्भ्रांत आलोक ललिता के सिर से पैर तक उमड़ता देख रहा था ।

जैसा सबने सोचा समझा था शायद वैसा ही रहा आता, पर राधा की अर्ध-विक्षिप्तता ने बात को ढंकी-मुंदी न रहने दिया । उसकी दशा बिगड़ती ही चली गयी । बहन ललिता के बच्चों के साथ दिन-रात बिताती हुई वह जब-तब जो असंबद्ध प्रलाप करती, उसका अर्थ समझना अनभिज्ञ-से-अनभिज्ञ आदमी के लिए भी कठिन न रह जाता । 'मैंने तुमसे यह क्यों कहा ? क्यों कहा ?—क्यों नहीं यह घर छोड़कर चली गयी । जीजी ! मैं तो उस अधम से बच ही जाती पर तुम्हारी यह दुर्गति तो न होती । तुम उस पापी से मुझे बचाने में क्या कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बैठीं ? मैं क्या करूं ? कैसे अपने को अपना यह अभागा मुंह दिखाऊं ? अब नहीं सहा जाता ! अब नहीं सहा जाता !'

अनुताप की भट्टी में कभी जलती, कभी अपने आंसुओं को रोकती, कभी बहाती राधा के संतप्त उद्गारों से जल्दी ही सबको हकीकत का पता चल गया । घर वालों ने सब जान लिया और ऐसी बातों के पंख निकलते देर ही कितनी लगती है । 'सगी बड़ी बहन के आजन्म कारावास का आघात नववधू राधा नहीं सहन कर पायी—ऊटपटांग बकती है, पागल हो-हो जाती है'—यह सब कहे जाने पर भी गुलजारीलाल की हत्या का सूत्र सबकी पकड़ में आ गया । उसके वेश्यागामी दुश्चरित्र के साथ इसकी संगति बैठने में कठिनाई भी न थी । जो तथ्य अदालत के सामने नहीं लाया गया वह चारों ओर गूंज उठा । तब लोगों ने जाना कि ललिता ने कितनी बड़ी, कितनी पवित्र रोकड़ के लिए जेठ को विष दिया था ।

—दक्षिण सिविल लाइन, पचपेढ़ी, जबलपुर

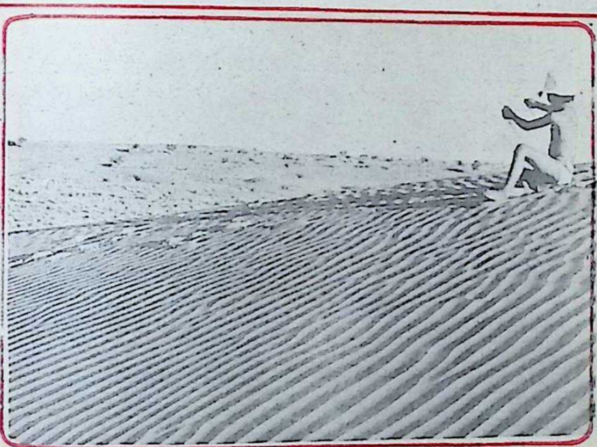

लहरें

समस्या-पूर्ति -९०

ऊपर दी गयी पंक्ति कविता के अंत में ही आनी चाहिए । इस नियम की पूर्ति न करनेवाले प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा । प्रविष्टि पोस्टकार्ड पर ही भेजें । जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा ।

प्रथम पुरस्कार-३५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार-२५ रुपये

यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए । इसे लेकर आपको एक छंदमुक्त कविता लिखनी है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्यापूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार

अंतिम तिथि २० दिसम्बर १९८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हवलदार और 'चंदू लुटेरा'

● गुरु हनुमान

अब ८६ साल की उम्र हो चुकी है मेरी, बस मरने ही वाला हूं। पुरानी एक बात याद करने बैठता हूं तो कई बातें याद हो आती हैं। मुझे याद नहीं मेरे माता-पिता कब गुजरे। जब मैं छोटा था। मुझे याद है, मैं यहां के प्रेमनगर प्राइमरी स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ता था। वहां के कुछ लड़के आपस में बहुत गाली-गलौज करते थे। यह मुझसे सहन नहीं होता था और दुबला होने के कारण उनको कुछ क़ह भी नहीं सकता था। मैंने अपने मास्टरजी से इसकी शिकायत की, लेकिन बात कुछ बनी नहीं।

शौक कुश्ती का

इससे मुझे स्कूल बुरा लगने लगा। मैं वहां से भागकर उस जगह चला जाता, जहां आज बिड़ला स्कूल बना हुआ है। वहां भगवानसिंह, रिसालसिंह पहलवान हुआ करते थे। उन्होंने मुझसे कहा, "यदि तगड़ा बनना है तो पहलवानी करो।" उन्होंने मुझे पहलवानी सिखायी। मैं तीन-चार महीने स्कूल भी नहीं गया और पहलवानी करता रहा। इतने समय में मैं तगड़ा हो गया। तब स्कूल न जाने पर आज की तरह नाम नहीं कटता था। मैं तगड़ा होने पर स्कूल गया, तो मुझे चौथी कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया। फिर मैंने किसी को अपशब्द नहीं बोलने दिया। लेकिन मुझे कुश्ती लड़ने का इतना शौक हो गया था कि मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगा। इसीलिए चौथी के बाद पढ़ाई छोड़ दी।

धुन : भगवान खोजने की

कुछ समय बाद मुझे भगवान को खोजने की धुन सवार हुई। इसके लिए मैं चौदह-पंद्रह साल की उम्र में हरिद्वार गया। वहां कनखल के दक्ष मंदिर में रहा। कुश्तियां खेलकर मैं हर कुश्ती से दस आने कमा लेता था। हरिद्वार में कुछ युवाओं ने मुझे देखा, वह बोले, "तू कहां से आया है?" मैंने कहा, "दिल्ली से।" मैंने अपने आने का कारण भी बताया। तब उन्होंने कहा, "मानवसेवा को अपनाना ही भगवान को अपनाना है।" उन समझदार युवकों ने मुझे स्कूल से आते हुए कुछ बच्चों की तरफ इशारा करते हुए पूछा "बताओ, इनमें कौन-सा बच्चा किस धर्म का है?" मैंने कहा, "यह तो नहीं बताया जा सकता। तब से मेरे मन में जात-पात और धर्म का कोई भेद नहीं रहा। मैं आर्यसमाज को मानने लगा।"

हरिद्वार के वे लोग मेरे कुश्ती-प्रेम और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जापान में मैंने यह देखा कि वहां के लोग मां-बहन की गाली को तो एक बार सुन सकते हैं, लेकिन यदि कोई उनके राष्ट्र को गाली दे, तो वे मरने-मारने पर उतर आते हैं। वहां के बच्चों में इतनी समझ है कि वे लालबत्ती पर सड़क कभी भी पार नहीं करते और कूड़ा कूड़ेदान में ही डालते हैं। जैसी राष्ट्रभक्ति वहां है, ऐसी हमारे यहां भी हो, मैं यही चाहता हूं।

उससे होनेवाली आय से बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा, "तगड़ा होना बहुत अच्छा है, कुदरत भी उन्हीं की सहायता करती है, जो बलवान होते हैं।" उन्होंने एक माचिस की तीली को जलाकर मुझे दिखाया, जो हवा में एकदम बुझ गयी। बाद में उन्होंने उस तीली को भूसे में लगा दिया जिसने आग पकड़ ली। मुझे समझ में आ गया कि कमजोर को सब खतम कर देते हैं और मजबूत को मारना आसान नहीं।

प्रेम है : राष्ट्र से

मैंने सतपाल, भीम, जगमंदर, सुरेश कुमार, वेद प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, रामस्वरूप, सूरजभान और प्रेमनाथ—जैसे कई पहलवान दिये हैं। कई माताएं अपने गोदी के बच्चों को मेरे सुपुर्द करके चली जाती हैं। मेरे पास पैसा भी बहुत है। लोग कोरे चैक पर साइन करके मुझे दे जाते हैं। बिड़ला मिल्स से ही दो-ढाई हजार रुपये महीने की तनख्वाह मिल जाती है, बैंक का सूद आता है। पर मुझे पैसे का कोई लालच नहीं। यह सारा पैसा मैं ट्रस्ट को दे दूंगा, जो सभी शिष्यों के काम आये। मुझे यदि किसी चीज से प्यार है, तो वह है राष्ट्र-प्रेम। राष्ट्र के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं। लेकिन हमारे देश में लोग राष्ट्र से उतना प्रेम नहीं करते, जितना जापान के लोग अपने देश से करते हैं।

सितम्बर, ८१ में जापान ने मुझे सम्मान देने और अपने कुछ पहलवानों को प्रशिक्षण देने के लिए बुलाया। वहां जाकर मैंने अपने नसीब को पहचाना। टोकियो हवाई अड्डे से शहर तक शायद तीन घंटे का रास्ता होगा। पूरे रास्ते में जापान-भारत के झंडे लगे थे। मैंने उनसे पूछा, "क्या कोई मैच है?" वह बोले, "नहीं, यह तो आपके सम्मान में है।" मुझे उन्होंने वहां दो महीने रखा। दो महीने का उन्होंने ५ लाख रुपया दिया, जिसे मैं अपनी ढाई लाख रुपये महीने की तनख्वाह मानता हूं।

उसी दौरान मैंने देखा हिरोशिमा में एक बूढ़ी औरत रहती थी। उसके दो बेटे थे और दोनों एक-एक करके देश के लिए शहीद हो गये थे। लेकिन वह अपने कांपते हुए हाथों से कोई न कोई काम करती रहती थी। सरकार से वह सहायता नहीं लेती थी। उसका यह मानना था कि 'जितना पैसा मुझे खाने-रहने को चाहिए उतना मैं कमा लेती हूं, फिर देश का पैसा मैं बेकार में क्यों लूं।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जापान में मैंने यह भी देखा कि वहां के लोग मां-बहन की गाली को तो एक बार सुन सकते हैं, लेकिन यदि कोई उनके राष्ट्र को गाली दे, तो वे मरने-मारने पर उतर आते हैं। वहां के बच्चों में इतनी समझ है कि वे लाल बत्ती पर सड़क कभी भी पार नहीं करते और कूड़ा कूड़ेदान में ही डालते हैं। जैसी राष्ट्र-भक्ति वहां है, ऐसी हमारे यहां भी हो, मैं यही चाहता हूं।

मानव-सेवा के लिए पहलवानी

मैंने मानव-सेवा की भावना से प्रेरित होकर सन १९२८ से पहलवान बनाने शुरू किये। मेरा पुराना नाम विजय पाल है। लेकिन हरिद्वार के युवकों ने मेरी कुश्तियां देखकर मेरा नाम हनुमान रख दिया। तब से यही नाम मशहूर हो गया। अखाड़ा बनाने से पहले मैं गिलेरी मिल (आज की बिड़ला मिल) के सामने एक फल-सब्जी की दुकान और एक होटल चलाता था। उस समय बहुत सस्ता जमाना था। जब मेरे काम को बिड़ला मिल के मैनेजर सीताराम ने देखा, तो उन्होने अपने यहां व्यायामशाला बनवाकर मुझे रख लिया। तब मैंने अपना होटल और फलों की दुकान किराये पर दे दी। व्यायामशाला बनने पर जुगलकिशोरजी बिड़ला से मुलाकात हुई। बाद में उनसे दोस्ती हो गयी।

शहीद चंद्रशेखर : अखाड़े में

बाद में मेरी यह व्यायामशाला बहुत मशहूर हो गयी। चंद्रशेखर आजाद-जैसे शहीद ने यहां व्यायाम किया। सन १९२९ की बात है। मेरे एक पुराने दोस्त हैं रामचंद्र। एक दिन वह चंद्रशेखर को लेकर मेरे पास आये। आज जहां मेरा अखाड़ा है (शक्तिनगर, बिड़ला मिल के

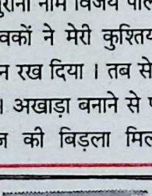

शुद्ध रुद्राक्ष
राशि के नग नगीने

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष व गौरीशंकर, छोटी बड़ी रुद्राक्ष की मालाएं, हर प्रकार के राशि के नग नगीने, हीरा-मोती- पन्ना-मुंगा-माणिक-पुखराज-गऊमेद-नीलम- लहसूनिया- नवरत्न व उपरत्न।
हर प्रकार की पूजा की शुद्ध मालाएं। मूंगा-मोती- स्फटिक और अनेक प्रकार की थोक व फुटकर में मिलने का एक मात्र स्थान:

शिव रत्न केंद्र (रजि.)

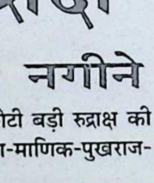

शो रूम: सन्तल सराय (दूसरी मंजिल) गऊ घाट
पोस्ट बाक्स नं. 55 हरिद्वार-उत्तर प्रदेश फोन : 965
सूचिपत्र व रुद्राक्ष महात्म पुस्तक डाक द्वारा मुफ़्त मंगवायें।

नोट: बिका हुआ माल वापिस लिया जाएगा, पसंद न आने पर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीछे) वहां जंगल हुआ करता था। यहां श्मशान भूमि थी। घिनौरा कला गांव कहलाती थी यह जगह। चंद्रशेखर तब मूंछें नहीं रखा करते थे। तब पानी की यहां समस्या थी। पानी लेने के लिए दूर जाना पड़ता था। चंद्रशेखर के पीछे पुलिस थी। इसलिए चंद्रशेखर और मैंने मिलकर पहले एक कुआं खोदा। दो घंटे में हमने कुआं खोद लिया होगा। चंद्रशेखर लगभग छह महीने यहां रहे। बीच-बीच में वह जाते भी रहते थे। रात को हम यहीं मैदान में सो जाया करते थे। सांप वगैरह यूं ही घूमते रहते थे। तब हमारे गरीबी के दिन थे। एक घड़ा और तवा हुआ करता था। चंद्रशेखर पिस्तौल का निशाना जितना अच्छा लगाते थे, उतना अच्छा वह खाना भी बना लेते थे। वह सुबह उठकर यहां कसरत करते। हम दोनों मिलकर खाना बनाते। पहले तवे पर ही आटा गूंदते फिर उसे केले के पत्तों पर रख देते। फिर तवे पर सब्जी बनाते और उसे भी केले के पत्तों पर रख देते। फिर हम रोटियां बनाते।

हवलदार और चंदू लुटेरा

उन दिनों एक बार चंद्रशेखर करोलबाग में किसी गुप्त सभा में गये, तो उनके पीछे मेरे पास एक देसराज नाम का हवलदार आया। उसने मुझसे कहा, "भई हनुमान, अगर तू चाहे तो मैं अफसर बन सकता हूं। मैंने सुना है कि तेरे पास एक चंदू लुटेरा आता है, तू उसका पता ठिकाना दे दे या पकड़वा दे।" मैंने कहा, "भैया, यहां लुटेरों का क्या काम, मैं तो किसी चंदू लुटेरे को नहीं जानता। हां, तू मुझे अपनी साइकिल दे मैं किसी और से पता करके देखता हूं।" उसने मुझे अपनी हरक्यूलिस साइकिल दे

गुरु हनुमान

दी, जो तब ३५ रुपये की आती थी। जिसके पास साइकिल होती थी, वह सरमायेदार कहलाता था। मैं साइकिल लेकर चंद्रशेखर के पास गया और उन्हें दूसरे रास्ते से निकल जाने को कह दिया। हवलदार को उलटे रास्ते की एक गलत जगह बता दी।

जब मैंने अखाड़ा बनाया तो लोग गंदगी, शीशे और कबाड़ वगैरह यहां फेंक जाते थे। यहां श्मशान-भूमि तो थी ही। लोगों को मैंने मना किया, मगर वह नहीं माने। तब मैं काले कपड़े पहनकर और अमरूद का डंडा लेकर रात को अखाड़े में घूमने लगा। रात को जो वहां कूड़ा डालने आता, वह भूत समझकर भाग जाता। कुछ दिन में ही यहां भूत होने का शोर हो गया। लोग मुझे भी रात को यहां न सोने की सलाह देने लगे। मैंने कहा, "मैं तो भूत-प्रेत को नहीं मानता।" पर वे लोग कहते, हमने रात को अपनी आंखों से देखा है। इससे वहां किसी ने फिर कभी गंदगी नहीं डाली। बाद में कोई दिक्कत नहीं आयी।

प्रस्तुति : प्रदीप सरदाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

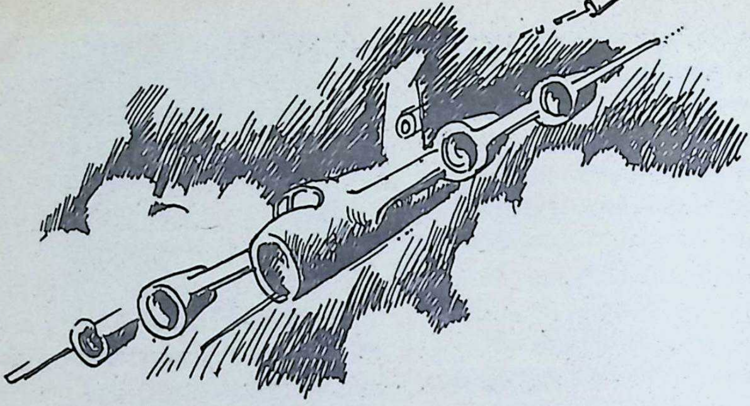

युद्ध-संस्मरण

आकाश-युद्ध

● अशोक प्रभाकर मोटे (विंग कमांडर)

बंगलादेश मुक्ति-संग्राम, पूरे जोश पर था। रात का घनघोर अंधेरा दसों-दिशाओं में छाया हुआ था। युद्धकालीन रोमांच से वातावरण ठसाठस भरा हुआ था।

नीचे वर्तमान की तरह अथाह फैली विशाल मेघना नदी, उस घुप्प अंधेरे में भी मेरी वैमानिकी आंखों को धूमिल-सी नजर आ रही थी। भूतकाल से बहकर आता हुआ भव्य मेघना का प्रचंड प्रवाह, भविष्य की दिशा में बहता जा रहा था।

और, नदी के ठीक पांच सौ फुट ऊपर, हमारे छह विमान, एक दूसरे से एक विशिष्ट दूरी रखकर, एक के पीछे एक उड़ान भरे चले जा रहे थे, भौंरों की तरह गुंजार करते हुए मेघना के प्रवाह की ही दिशा में, लेकिन प्रवाह से सौ-गुना तेज गति से, एक अनिश्चित, लेकिन रोमांचक भविष्य की ओर!

'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः'! दुश्मन की राक्षसी महत्त्वाकांक्षाओं के पंख उग आये थे। हम वैमानिकों को दुश्मन के इन पंखों को काट डालने का आदेश था। हमने इन पंखों को, जड़ से ही उखाड़ फेंकने की योजना बनायी, अर्थात् दुश्मन के ढाका तथा कुर्मितोला हवाई-अड्डों पर बमबारी का जबरदस्त प्रहार कर, उनकी हवाई-पट्टियों को नष्ट करना तथा विमानों को जमीन पर ही नेस्तनाबूद कर देना था।

युद्धनीति की योजनानुसार, जरूरी था कि हम नीची उड़ान भरें ताकि दुश्मन के रेडॉर हमें 'देख' न सकें। 'मेघना पर से उड़ान भरते हुए, हम लक्ष्य के दक्षिण की ओर पहुंचें और वहां से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर की ओर उड़ान भरते हुए, बमबारी करें। इससे दुश्मन अवश्य चकित हो जाता क्योंकि उसे तो हमारे उत्तर, पूर्व या पश्चिम की ओर से आने की उम्मीद थी।

नदी के बीचोंबीच, पानी की सतह से पांच सौ फुट ऊपर, हम उड़ान भरे जा रहे थे। दोनों किनारों के पार घमासान युद्ध चल रहा था। ऊपर आकाश में कुछ टिमटिमाते तारे थे और नीचे, किनारों पार की जमीन पर, युद्ध की आतिशबाजियां चल रहीं थीं। ये आतिशबाजियां, वास्तव में कितनी ही भयावह तथा भयंकर क्यों न हों, यहां दूर से बड़ी लुभावनी और मनोहारी नजर आ रही थीं, जैसे अंधेरे में कुछ नटखट बालक, फुलझड़ियां और पटाखे छोड़ रहे हों। हमारे विमानों के इंजिनों की गूंज के सिवा, सब कुछ शांत-शांत लग रहा था। एक विचित्र, अनाहूत, अमन-चैन दिलो-दिमाग पर छाया हुआ था। शायद यही विशिष्ट मनस्थिति, हम—वैमानिकों और सैनिकों-को, युद्ध के समय, ऊंचा और दृढ़ मनोबल देती है और भय हमसे कोसों दूर रहता है। युद्ध प्रत्यक्ष वीभत्स ही क्यों न हो, शायद इसीलिए कहते हैं, 'युद्धस्य कथा रम्याः !'

"हाऊ ब्युटिफुल ! कितना सुंदर लग रहा है सब !"—अनायास ही मेरे मुंह से निकल पड़ा और आदतन मैंने विमान के रेडियो का बटन भी दबा दिया।

"येस अशोक, ब्युटिफुल बट डिसेप्टिव एंड डेंजरस !"—मेरे आगे उड़ान भर रहे विमान से, हमारे कमांडिंग आफिसर, विंग कमांडर सुरेश साने की, रेडियो पर आवाज आयी। मैंने सोचा, यह कहकर वह जरूर मुसकराये होंगे, क्योंकि वह हर हालत में किसी भी परिस्थिति में, मुसकराते जरूर थे और उनकी यह मुसकराहट, हम सबके मनोबल को हमेशा बढ़ाती ही थी।

"साला, ऐसा लग रहा है, जैसे दिवाली हो रही है—" पीछे उड़ रहे विमान से पाटिल की आवाज आयी।

"मुन्ना, दिवाली तो है, लेकिन ये दिवाली बच्चों का खेल नहीं !"—उसके पीछे उड़ रहे गौर ने, फिल्मी-डायलॉग-सा मारा और हम सब हंस पड़े।

पिछले दो विमानों में ए. डी, सिंह और कर्णिक थे। हालांकि यह उड़ान बहुत लंबी नहीं थी फिर भी कर्णिक बोला, "क्या यार, बोर हो गये !"—और हम सब फिर हंस पड़े, क्योंकि यह उसका तकिया-कलाम था यहां तक कि अपनी शादी में भी उसने यही कहा था। टॉरगेट—याने हमारा लक्ष्य पास आता जा रहा

"घरवालों और बहुतों ने कहा, 'घर छोड़कर भागो, नहीं तो मर जाओगे।' मैंने सबको बताया, 'मैं हिंदुस्तानी हवाबाजों को अच्छी तरह जानता हूं। वे सही-सही और दुरुस्त, ठीक जगह पर ही मार करेंगे। मुझे कोई डर नहीं।' आप सबने मेरे यकीन की इज्जत रख ली।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था । हम नीची उड़ान भरते चले जा रहे थे । मेघना में दुश्मन की गनबोटें होने की संभावना थी, जो हमें मार गिरा सकती थीं । हर पल, हर क्षण खतरा था, लेकिन खतरा न हो, तो युद्ध कैसा ?

ब्लैक-आउट की वजह से, ढाका शहर घनघोर अंधेरे में घुलमिल-सा गया था । लेकिन यहां के नक्शों का, हमने खूब अभ्यास किया था । अब हम सबने नदी का सहारा छोड़ा और फौरन अपने-अपने विमान पांच सौ फुट से, छह हजार फुट उंचे चढ़ा लिये, ताकि दुश्मन की विमानभेदी तोपों की मार से हम कुछ तो बचे रहें ।

अंधेरे में भी, नदी तथा शहर के संदर्भ से हमने ढाका तथा कुर्मितोला हवाई-अड्डों की ठीक-ठीक जगह तो पहचान ली, लेकिन कुछ नजर नहीं आ रहा था ।

दोनों हवाई-अड्डों के बीच, घनी आबादी थी, वहां हमें गलती से भी बम नहीं गिराना था । बमबारी अचूक, सिर्फ हवाई-अड्डों पर ही करनी थी । यह हमारी वायुसेना तथा देश की इज्जत का सवाल था । घने अंधेरे में हमने हवाई-अड्डों की सही-सही जगह को जाना तो जरूर लेकिन फिर एक बार निश्चित कर लेना आवश्यक था ताकि आघात दुश्मन पर ही हो, वहां के नागरिकों पर नहीं ।

हमारा लक्ष्य अब सिर्फ तीस सेकंड दूरी पर था ।

"अशोक और पाटिल, तुम मेरे साथ ढाका पर आओ । गौर, कर्णिक और ए. डी. सिंह, तुम अपने विमान लेकर, कुर्मितोला पर जाओ"—विंग कमांडर साने ने आदेश दिया

विश्वविख्यात भविष्य वक्ता कीरो (CHEIRO)
द्वारा लिखित सरल हिंदी में सर्वप्रथम प्रकाशित

(1) हस्त रेखाएं बोलती हैं (PALMISTRY)

(2) अंकों में छिपा भविष्य (NUMEROLOGY)

जी हां, यह सत्य है कि रेखाएं बोलती हैं आवश्यकता है इनकी भाषा समझने की

जन्म तारीख से समूचे जीवन की जानकारी देने वाली अनूठी पुस्तक

- हस्तरेखा विज्ञान पर यह एक श्रेष्ठ एवं परिपूर्ण पुस्तक मानी जाती है ।
- किसी भी व्यक्ति का हाथ देखकर आश्चर्य चकित किया जा सकता है ।

- भविष्य क्या-क्या संभावनाएं लेकर उपस्थित
- एक सच्चे मित्र की भांति सहायक
- अनोखे रूप में प्रस्तुत करने की विशेषता
- पढ़िए, परखिए और भविष्य में झांकिए

दोनों पुस्तकें 40 वर्ष के अनुभव का निचोड़

बड़ा साइज, चित्र 50, पृष्ठ 216, मूल्य 40 रुपए
डाक व्यय अलग   पत्र लिखकर मंगाएं

बड़ा साइज, पृष्ठ 208, मूल्य 40 रुपए
डाक व्यय अलग   फोन 278835

रंजन पब्लिकेशंस 16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और फिर सूचनाएं दीं— हवाई अड्डों पर, विमान से तेज नीची उड़ान भरो, आहट पाते ही दुश्मन विमानभेदी तोपों से मार करेगा, उसी संदर्भ से, बारूदगोलों के प्रकाश में, हमें हवाई-पट्टियां तथा दुश्मन के हवाई-जहाज नजर आ जायेंगे फौरन बमबारी करो और तुरंत आकाश में ऊंची उड़ान भरो !"

अब हम अपने-अपने लक्ष्य पर थे हम सभी अपने-अपने विमान लेकर दुश्मन पर टूट पड़े। दुश्मन की विमानभेदी तोपों ने बारूद-गोलों की बौछार शुरू कर दी। हम चपलता से आकाश में विमान को ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दायें-बायें घुमाकर, बचते-बचाते उड़ान भर रहे थे। उसी प्रकाश में, दुश्मन की हवाई-पट्टियां और हवाई जहाज हमें नजर आ गये थे। हमने जबर्दस्त, जोरदार और अचूक बमबारी शुरू कर दी। हवाई-पट्टियों पर और दुश्मन के हवाई-जहाजों के बीचोंबीच, बड़े-बड़े विस्फोट हुए। हवाई-पटियां ध्वस्त हो गयीं। दुश्मन के हवाई-जहाज तहस-नहस हो गये। दुश्मन चिढ़ गया था, यह अचानक, अनपेक्षित आघात उसे चौंका गया था। विमान भेदी तोपें आग उगल रही थीं, बारूद-गोले हमारे विमानों के पंखों को चाटकर दूर जा रहे थे। अच्छी खासी दिवाली थी, लेकिन बच्चों का खेल नहीं ! हम सब शायद यही सोच रहे थे। "हैपी दिवाली, अप-अप, एंड्र अवे"—विंग कमांडर साने का विमान के रेडियो पर आदेश मिला। वे जरूर मुसकरा रहे होंगे, मैंने सोचा।

हमारे छहों विमानों ने आकाश में ऊंची उड़ान भरी। अब हमें नदी के ऊपर से घूमकर जाने की आवश्यकता नहीं थी। हमने सीधे

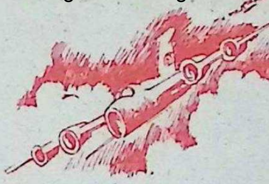

उत्तर की ओर उड़ान भरी। विमान कुछ क्षतिग्रस्त जरूर हुए, यह तो होना ही था लेकिन हम सब क्षतिग्रस्त विमानों को लेकर उड़ान भरते हुए सकुशल वापस लौटे। विमानों को शीघ्र ही ठीक कर हमने फिर फौरन उड़ानें भरीं।

बांगला देश मुक्ति के बाद, ढाका के एक बाजार में टहलते-टहलते एक बांगला देशी भाई जनाब आलम तथा उनके घरवालों से मुलाकात हुई। बातों-बातों में उन्हें पता चला कि हम भारतीय वैमानिक हैं, तो वे बोले, "पार्टीशन से पहले, मैं रॉयल इंडियन एयर फोर्स में कार्पोरल था। अब मेरा अपना व्यापार है। हमारा घर ढाका और कुर्मितोला हवाई-अड्डों के बीच है। घरवालों और बहुतों ने कहा, 'घर छोड़ भागो, नहीं तो मर जाओगे।' मैंने सब को बताया,'मैं हिंदुस्तानी हवाबाजों को अच्छी तरह जानता हूं वे सही-सही और दुरुस्त ठीक जगह पर ही मार करेंगे, मुझे कोई डर नहीं।'आप सबने मेरे यकीन की इज्जत रख ली"।

आलम भाई, भाभीजान और उनके बच्चों के मुसकराते हुए चेहरे, हमारी सफलता और अचूकता के निशान थे।

—टी/१८७/१, आफीसर्स एनक्लेव
एयर फोर्स स्टेशन, बमरौली,
इलाहाबाद—२११०१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

पत्रकारिता में अनुभव की शुरुआत

खुशी—जो ज्यादा दिन नहीं रही !

● कुलभूषण

मेरी पत्रकारिता के साथ जुड़ने की कहानी काफी दिलचस्प है।

आजादी की प्राप्ति के कुछ ही वर्षों बाद की बात है। उन दिनों मैं बंबई में एक बैंक में क्लर्क था। बैंक में काफी काम रहता था। एक दिन में पचास-साठ-सत्तर लाख रुपये की हुंडियों द्वारा उगाही मामूली थी—और उन सब हुंडियों को भुगतान तक ले जाने का काम मेरा ही था। काम से फुरसत दोपहर दो बजे के बाद ही मिल पाती। फुरसत के समय मैं कुछ लिखने लगता। इन्हीं क्षणों में मैंने कुछ लेख लिखे थे, जिनमें से कुछ 'बांबे क्रानिकल वीकली' में छपे भी।

तभी एक सहकर्मी के जरिए मेरी भेंट एक अंगरेजी दैनिक 'फ्री-प्रेस-जर्नल' के संपादक के निजी सचिव से हुई। उसने मेरी सिफारिश की और मुझे अपने संपादक-मालिक सदानंदजी से मिलवा दिया। सदानंदजी बहुत निर्भीक और निर्द्वंद्व समझे जाते थे।

मैं दो दिन बाद ही उनके पास फिर पहुंच गया। निजी सचिव के हांथ मैंने अपना लेख अंदर पहुंचा दिया। पंद्रह मिनट बाद अंदर से बुलावा आ गया। संपादकजी ने छूटते ही कहा, "आपका लेख मैंने छपने के लिए भेज दिया है। आप कब तक नौकरी पर आ सकते हैं ?"

"आप जब चाहें", मैंने उत्साह के साथ कहा।"

"पहली से आ जाओ", उन्होंने कहा। फिर कुछ सोचकर बोले, "कितना लोगे ?"

"मेरा कम-से-कम खर्च दो सौ है," मैंने कहा। "इतना तो मिलना ही चाहिए।"

"हम नये लोगों को सौ रुपये से शुरू करते हैं, मगर हम तुम्हें दो सौ दे देंगे।"

कुछ महीने मुझे यहां नौकरी करते हो गये। सभी उप-संपादकों और संवाददाताओं से मेरी अच्छी-खासी दोस्ती हो गयी। मैंने लिखा भी खूब। बहुत ही सार्थक और सर्जनात्मक समय था यह मेरे लिए।

मगर तभी एक घटना घट गयी।

संपादकजी ने एक दिन मुझ से पूछा "तुम पंजाबी जानते हो न ?"

"जी", मैंने जवाब दिया।

"तो ऐसा करो कि कल सुबह तुम कोलवाडा कैंप चले जाओ। वहां पुलिस द्वारा गोली चलायी गयी है। मामले की तहकीकात कर रिपोर्ट तैयार करो। समझ गये ना ?"

"जी !"

मैंने इससे पहले कभी रिपोर्टिंग नहीं की थी।

सुबह माहीम के अपने घर से चलकर मैं कोलवाडा कैंप पहुंचा। ज्यादा दूरी नहीं थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

विस्थापितों—शरणार्थियों—का यह कैंप था। स्थानीय नेताओं के आपसी झगड़ों ने एकाएक तूल पकड़ लिया था—और इस सबके फलस्वरूप हंगामा और पुलिस द्वारा गोली चलायी गयी थी। एक नौजवान अपनी जान गंवा बैठा था।

पंजाब के लोगों ने कैंप में राहत का काम आगे बढ़कर अपने हाथों में लिया था। इनमें एक प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर भी थे।

मैंने एक व्यक्ति से बात की, दूसरे से बात की, कई अन्य लोगों से बातें कीं। सभी की बातें नोट करके दोपहर लगभग दो बजे मैं अपने कार्यालय पहुंच गया।

टाइपराइटर पर कागज चढ़ाकर मैंने रिपोर्ट टाइप करनी शुरू कर दी। रिपोर्ट नौ पृष्ठों में तैयार हुई। इसमें किसी पर कोई तोहमत नहीं लगायी गयी थी। अंतिम पैरे में मैंने अफसोस व्यक्त किया था कि अपने घरबार से बेदखल इन गरीब असहाय लोगों को राजनीति के खेल में मोहरा बनाया जा रहा है।

रिपोर्ट एक बार फिर पढ़कर, मैंने 'न्यूज डेस्क' पर रख दिया और अपने रोज के काम में व्यस्त हो गया।

अगला दिन शनिवार था। मेरी शाम की ड्यूटी थी। लगभग पांच बजे जब मैं कार्यालय पहुंचा, तो मेरा गर्म-जोशी से स्वागत हुआ। सात कालम के शीर्षक के साथ मेरी रिपोर्ट छपी थी; मेरा उल्लेख 'हमारे विशेष संवाददाता' शब्दों से किया गया था।

उस समय तो मुझे बहुत खुशी हुई। मगर यह खुशी अधिक दिन नहीं रही।

कुछ दिन बाद, जब मैं काम में व्यस्त था,

संपादकजी का निजी-सचिव मेरे लिए एक चिट्ठी लाया। मैंने लिफाफा खोलकर पत्र पढ़ा। मुझे नौकरी से निकाला जा रहा था।

मैंने पत्र मोड़कर जेब में रख लिया और पुनः काम में लग गया।

कार्यालय छोड़कर चले जाने के बाद दो तथ्य पता चले।

एक, कि 'न्यूज डेस्क' पर शुक्रवार की रात को जो सज्जन थे, उनको उस स्थानीय राजनीतिक नेता से कुछ हिसाब चुकता करना था, जिसका जिक्र मेरी रिपोर्ट में था। सो रिपोर्ट को बढ़ाचढ़ाकर पेश करने की चाल उन्होंने चल दी। दूसरा तथ्य यह था, कि वह राजनीतिक नेता संपादकजी से मिलने आये थे इस रिपोर्ट के सिलसिले में।

'न्यूज डैस्क' वाले संपादक पत्र की मूल्यवान संपदा थे। उन्हें निकाला नहीं जा सकता था। इसलिए नेताजी को खुश करने के लिए मुझ नये 'रंगरूट' को निकाल बाहर किया गया।

—एम-११३ ग्रेटर कैलाश-१, नयी दिल्ली-११००४८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह छतफाड़ हंसी

● जानकीवल्लभ शास्त्री

उन दिनों आचार्य शिवपूजन सहाय बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक थे और परिषद् का कार्यालय बिहार-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन-भवन के ऊपरी कक्ष में था। मैं जब पहुंचा, वह कार्यालय में थे और पन-डब्बे से पान निकालकर खाने का उपक्रम कर रहे थे। काशी में प्रसाद-प्रेमचंद के साथ रह चुके थे, मगही पान और सुवासित जर्दे के बड़े शौकीन थे। मुझे देखते ही कुरसी से उछलकर अपने मुंह के करीब ले जाये गये बीड़े मेरी ओर बढ़ाते हुए हंसकर बोले, "अभी और सौ साल जियेंगे आप ! अभी-अभी बेनीपुरीजी और दिनकरजी आपके ही बारे में बातें कर रहे थे। दोनों एक स्वर से कह रहे थे कि आज हिंदी काव्य के क्षेत्र में इतना बड़ा विद्वान्. . .।"

बीड़े गले की फांस हो रहे थे। पीक फेंकने के बहाने मैं बाहर बारादरी में निकल आया। फिर रैलिंग पकड़कर भारतीय संस्कृति के अनुसार, बीच रास्ते में पीक थूककर कुछ यूं खड़ा रहा जैसे बम फेंककर कभी सरदार भगतसिंह खड़े रहे होंगे। शिवपूजनजी ने आवाज दी, "बाहर क्यों खड़े हैं ? अंदर आइए।"

"जी,"—मैंने कहा,—"बाहर चौकसी से निगरानी कर रहा हूं, कोई कहीं आपकी बात सुन तो नहीं रहा !"

शिवपूजनजी हंसे, मगर कपड़े पर कहीं एक भी छींटा न पड़ने दिया। कबीर अपने दावे पर पछताते, अगर मेरी जगह खड़े होते। इस बीच मेरा मलमल का चुन्नटदार कुरता केसरिया बेल-बूटों से सज गया था।

मैंने कहा, "दिनकरजी को भी बेनीपुरीजी की तरह ठहाका लगाते एक दिन मैंने देखा था। वह अपने एक मित्र के यह कहने पर कि 'शास्त्रीजी बहुत बड़े कवि हैं', समझा रहे थे कि 'वह कवि से कहीं बड़े विद्वान् हैं', इस पर मैंने कहा कि 'दिनकरजी, मैं इस लहजे का आदी हो गया हूं। किसी संस्कृत वाले से पूछ देखिए, वह मुझे हिंदी का प्रख्यात कवि बताएगा और हिंदी वाले से कहिए, वह मुझे संस्कृत का लब्धप्रतिष्ठ कवि कहकर राहत की सांस लेगा।'" दिनकर की वह छतफाड़ हंसी अब भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेरे कुरते की आस्तीन पर जमी है, आंसू और पसीने से वह पुंछती नहीं है।"

× × ×

आकाशवाणी के कार्यक्रम में भाग लेने दिल्ली गया हुआ था। मेरे साथ मेरी पत्नी भी थीं। अचानक दिनकरजी दिख गये। बोले, "कहां ठहरे हैं?"

"उदयशंकरजी भट्ट के यहां।"—मैंने कहा। बोले, "मैं क्या मर गया था जो दूसरी जगह ठहरे?"

हिमालय से गंगा के निकलने पर भी ऐसी हरहराहट न हुई होगी, जैसी अभी हुई।

इसी दिनकर से मुझे अलग-थलग रखने की कितनी-कितनी कोशिशें न की गयीं। मेरे खिलाफ कभी उनके कान भरे जाते, कभी मुझे उलटा-सीधा समझाया जाता। मगर दिनकर थे कि जहां कहीं मेरे लिए लिखा 'सुपरलेटिव' में ही लिखा; जब बोले, ऊंचे स्वर से ही बोले। यूं तो कोई मेरे लिए क्या लिखे, क्या बोले? क्या पिद्दी, क्या पिद्दी का शोरवा!

पलक झपकते मन कहां-कहां भटक आया। प्रकट कहा; "दिनकरजी, कहीं आपने 'सारा आकाश तुम्हारा है'—लिखा है, फिर यह सारी दिल्ली आपकी ही क्यों नहीं है? मैं जहां भी हूं, आपके ही पास तो हूं!"

—यह सब सुनकर शिवपूजनजी की आंखों से आंसू छलक आये।

—निराला निकेतन,
मुजफ्फरपुर—१

वचन-वीथी

जो यह कल्पना करता है कि वह विश्व के बगैर अपना काम चला लेगा अपने आप को धोखा देता है, किंतु जो यह सोचता है कि विश्व का कार्य उसके बिना नहीं चल सकता और भी बड़े धोखे में है।

—रोशे

दया के छोटे-छोटे कार्य, प्रेम के तनिक-तनिक से शब्द, हमारी धरती को स्वर्गोपम बना देते हैं।

—जूलिया कार्नी

कौन जानता है कि ईश्वर आज के बाद कल भी जोड़ेगा!

—होरेस

ही मानव सुखी है जो आज को अपना कह सके, जो निश्चिंतता के साथ कह सके, 'ओ कल! जो तेरे वश में हो कर ले, आज मैं जी भरकर जी लिया।'

—ड्राइडेन

शांति ठीक वहां से आरंभ होती है, जहां महत्त्वाकांक्षा का अंत हो।

—यंग

व्यवहार वेशभूषा के समान होना चाहिए—अति तंग नहीं, अपितु ऐसा कि जिसमें हरकत और कसरत सुगमता से हो सके।

—बेकन

धनवान् और निर्धन का अंतर कितना नगण्य है। एक ही दिन की भूख और एक ही घंटे की प्यास दोनों को समान बना देती है।

—खलील जिब्रान

बुराई करने के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं और भलाई का अवसर तो वर्ष में केवल एक बार आता है। —वाल्टेयर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दो संस्मरण

हिंदी की अपनी प्रवृत्ति और प्रकृति है !

● डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

वैसे तो, वाजपेयीजी से, हिंदी के बारे में, कई बार, खूब जमकर, बातें हुईं, लेकिन एक-दो बार तो, बस, बहस करते-करते वाजपेयीजी बिलकुल भाव-विह्वल हो गये ।

अपने 'हिंदी शब्दानुशासन' में उन्होंने विभक्तियां सर्वत्र अलग रखीं थी—जैसे 'उन्हों ने'।

उस दिन इसी संबंध में मैंने बात उठायी—"वाजपेयीजी, आपने सब जगह विभक्तियां अलग लिखकर ठीक नहीं किया । इससे तो ढेर-सारी उलझनें उत्पन्न हो जाएंगी ।"

"देखिए भट्टजी, मैं चाहता हूं कि हिंदी में हर प्रकार से एकरूपता हो । जब 'राम ने' में नें अलग लिखते हैं तो 'मैं ने', 'उन्हों ने' में भी अलग से विभक्तियां लिखी जानी चाहिए । यही मैं किया । इस से हिंदी में एकरूपता आएगी ।"

"वाजपेयीजी, आपने जो एकरूपता की बात उठायी, वह बिलकुल सही है, लेकिन यह तो आप मानते ही हैं कि हिंदी की अपनी प्रवृत्ति और प्रकृति है । मेरे विचार में सर्वनामों में विभक्तियां साथ लिखी जानी चाहिए और संज्ञाओं में अलग । यह एक प्रकार से हिंदी का अपना स्वरूप है और इसमें एकरूपता भी है और नियम भी, फिर इस बात को आप क्यों नहीं मानते ? 'उन्होंने' 'मैंने' मतलब सर्वनामों में विभक्तियां साथ और बाकी सब जगह मतलब संज्ञाओं में 'राम ने' अलग ।"

मेरा तर्क सुनकर वाजपेयीजी सचमुच गद्गद्-से हो गये । एकदम पीठ ठोंकने लगे..."भट्टजी, तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है । मैं मान गया, भाई । आगे यही चलेगा । तुमने हिंदी के स्वरूप के बारे में सही ढंग से सोचा है ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस वर्ष देहरादून में महादेवी कालेज में उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का विशेष अधिवेशन था। हिंदी के बड़े-बड़े दिग्गज पधारे हुए थे। दिन के अधिवेशन में वाजपेयीजी दूसरे दिग्गजों से एक प्रकार से भिड़ गये। कई मुद्दों पर लड़ पड़े। तनावपूर्ण माहौल में जैसे-तैसे दिन का अधिवेशन समाप्त हुआ।

उस दिन रात को आठ बजे से रंगारंग कार्यक्रम और उसके बाद कवि-सम्मेलन। संयोजक मैं। दिन की तनावपूर्ण स्थिति से सभी को लगा था कि वाजपेयीजी तो अब आएंगे नहीं। वह सचमुच गुस्सा हो गये थे, लेकिन फिर भी, मैंने उनसे निवेदन किया—"आप रात को रंगारंग कार्यक्रम में अवश्य पधारें-यह मेरा आग्रह है।"

"देखूंगा भाई" कहकर वाजपेयीजी चले गये।

दरअसल, किसी को उम्मीद नहीं थी कि वह आएंगे। एक तो दिन की गरमागरम बहस, दूसरे गुस्सा भी हो गये थे, ऊपर से रंगारंग कार्यक्रम...भला ऐसे कार्यक्रम में वह क्यों आएंगे? लेकिन सब-के-सब हैरान। वाजपेयीजी ठीक वक्त पर हाजिर। आठ बजने में पांच मिनट। मैंने भी ठीक आठ बजे कार्यक्रम आरंभ किया। सरस्वती-वंदना और फिर मेरी बेटी हिमानी का भरतनाट्यम। जैसे ही नृत्य समाप्त हुआ वाजपेयीजी बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में मंच पर। भाव-विह्वल हो घोषणा की कि प्यारी बिटिया हिमानी को अति सुंदर नृत्य प्रस्तुत करने के लिए मेरी तरफ से यह भेंट। दस रुपये। सब विस्मित!

—शैल शिखर, मसूरी।

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ५५०, २. प्लूटो (२४८ वर्ष), ३. एक क्वासर (प्रकाश एवं विकिरण का स्रोत), जो पृथ्वी से २० अरब प्रकाश-वर्ष दूर है, ४. लॉर्ड कैनिंग, ५. सोवियत रूस की 'इग्नालिनो' नामक परमाणु-भट्टी, क्षमता १,५०० मेगावाट, ६. जापान के फूकूशिमा नामक स्थान में, जहां ९ परमाणु-भट्टियों का समूह है, कुल बिजली-उत्पादन क्षमता ७,७९६ मेगावाट, ७. अमरीका का 'यू एस बी-एल बी' (रेंज ७,२०० कि. मी., आवाज की गति से दुगुनी रफ़्तार)—रूस इसके जोड़ का 'ब्लैकजैक' नामक बमवर्षक बना रहा है, ८. नौ करोड़ डॉलर से अधिक, जिसमें लगभग १३ करोड़ रुपये राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के हिस्से में पड़ा है (१९८५ के अंत तक के आंकड़े), ९. पांच वर्ष पूर्व ४०० अरब डॉलर प्रति-वर्ष, अब १,००० अरब डॉलर प्रतिवर्ष (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के आंकड़े), १०. संध्या अग्रवाल, विगत जुलाई में वारसेस्टर में हुए इंगलैंड के विरुद्ध तीसरे टेस्ट मैच में १९० रन बनाये (१९३५ में इंगलैंड की बेट्टी स्नोबाल ने न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेलते हुए १८९ रन बनाये थे), ११. कैलशियम, १२. (जिरह बख्तर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

सौ का नोट

—यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र

उस दिन मेरे मन में भीषण संघर्ष चल रहा था। तरह-तरह लालचों ने मुझे घेर लिया था और मेरी मनःस्थिति कोई भी निर्णायक कदम नहीं उठा पा रही थी।

सन् ५३ की बात है।

मैं कलकत्ता में था और वे मेरे अभावों और संघर्ष के दुर्दिन थे। स्वतंत्र लेखन से एकबारगी टूट गया था और 'फिल्मी भारत' में नौकरी कर ली थी। उसके संचालक स्वर्गीय भीमसेन केड़िया थे। केड़िया उदारमना और दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे हर जरूरतमंद कलाकार को जरूरत न होते हुए भी अपने यहां काम पर रख लेते थे। कलाकार सूरज उसके संपादक थे। मयंक, मैं और दो-चार अन्य कर्मचारी भी थे। केड़ियाजी एक साथ चार-चार पान खाया करते थे और बड़े योजना-बिहारी भी थे। पर कर्मचारियों को वेतन एक साथ न देकर थोड़ा-थोड़ा दिया करते थे।

उन दिनों मैंने सौ का नोट कई दिनों से पाया ही नहीं था। तब सौ रुपयों की कीमत भी बहुत थी।

मयंक बीमार हो गया था और मुंगेर चला गया। एक बार केड़ियाजी ने मुझे सौ का नोट देकर मयंक को मनीआर्डर करने के लिए कहा।

मैं मछुआ बाजार के बड़े डाकघर गया। एम. ओ. फार्म भरा। उस दिन मैं परेशान था। घर से मां का एक खत आया था। पत्नी अस्वस्थ थी। मन उखड़ा-उखड़ा था। काम कहीं कर रहा था और मन कहीं उड़ रहा था। शायद संबंधित क्लर्क भी मानसिक रूप से उद्विग्न और व्यथित था। यांत्रिकता से निरंतर एम. ओ. लेकर रसीद दे रहा था।

मैं एम. ओ. कर लगभग बारह बजे बाहर निकला।

जैसी कि मेरी आदत थी, मैं चित्तपुर और हरिसन रोड के क्रॉस पर स्थित हिंद जलपान में चाय पीने बैठ गया। चाय पीता रहा और अपने अभावग्रस्त परिवेश के बारे में सोचता रहा। चाय का स्वाद भी अच्छा नहीं लगा। व्यर्थ ही बैठा रहा। फिर उठकर काउंटर पर गया और पैसा देने के लिए जेब में जैसे ही हाथ डाला, वैसे ही चौंककर उछल पड़ा। मेरी जेब में सौ का नोट . , § बिजली की तरह कौंधा, यह तो वही नोट है जो भाई साहब (केड़ियाजी) ने मुझे दिया था। क्या उस क्लर्क ने नोट लिया ही नहीं, या मैंने नहीं दिया? आज विश्लेषित करता हूं तो लगता है—हम दोनों निर्दोष हैं और तब भीतरी लड़ाई में हम दोनों डूबे हुए थे?

मैं जल्दी से भाई साहब के पास गया और उनसे पेट-दर्द का बहाना करके छुट्टी ले ली।

मुझमें एक नया उत्साह व जोश भर गया था। सौ के नोट ने मेरे अभावग्रस्त जीवन पर संपूर्त्ति के प्रश्न चिह्न लगा दिये थे।

फिर एक होटल में बैठकर सोचने लगा कि इस सौ रुपये को लौटा दूं? नहीं . . . लंबे अर्से के बाद सौ का नोट मिला है, पचास रुपये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौ के नोट ने दुविधा में डाल दिया था। एक ओर तो मन उन सौ रुपयों से तरह-तरह के खर्च की योजनाएं बना रहा था तो दूसरी ओर यह भी विचार आ रहा था कि यह बेईमानी है। आखिर यह दुविधा क्यों थी?

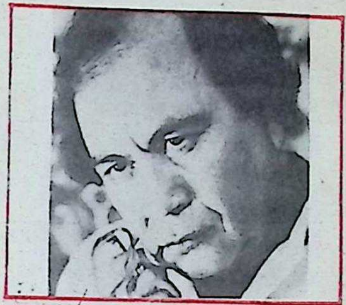

घर भेज दूंगा . . . दस रुपये की एक तांत की खूबसूरत साड़ी सपना राय को ला दूंगा, तब वह मेरी आत्मीय थी। चालीस रुपये में से तीस रुपयों के कपड़े और दस रुपयों की सपना के साथ एक शानदार पार्टी . .

पर यह तो बेईमानी है!

चला पड़ा। इंधर-उधर भटकता रहा। उन सौ रुपयों को लेकर न जाने क्या-क्या सोचता रहा। तत्कालीन जरूरतों को पूरा करने की योजनाएं ....

निरर्थक घूमते-घूमते थक गया। सेंट्रल एवेन्यू के कॉफी हाउस में जाकर बैठ गया। सौ का नोट पूर्ववत पड़ा था। अब मुझमें गंभीरता आ गयी थी। अंदर से कोई मानों मुझे दुत्कार रहा था।

मैं नहीं जानता कि वह कौन सी प्रेरणा और विवशता थी कि मैं मछुआ बाजार के डाकघर की ओर चल पड़ा। लंबा रास्ता पैदल तय किया। उस समय पांव स्वतः ही उधर उठ रहे थे और मन शून्य से भर गया था। एक दम सोचहीन!

चार बजे मैं डाकघर में घुसा। वह क्लर्क और उसके चंद साथी मरे-मरे से बैठे थे। . . . व्यथित और उदास!

पलभर के लिए उस नोट के प्रति मेरे मन में फिर लालच जागा। फिर महसूस हुआ कि किसी अज्ञात प्रेरणा ने मुझे जबरदस्ती धकेला है . . . और मैं उस क्लर्क के पास पहुंच गया था। उसने मेरी ओर देखा! मैंने वह रसीद पेश की उसने याचना से देखा।

सब लोगों ने मुझे घेर लिया।

पूछने लगे—"क्या-क्या , क्या?"

"यह एम. ओ. आपके यहां से हुआ।"

"हां-हां और . . .।" उसके एक साथी ने कहा, "भाई, यह बहुत गरीब है . . . यह गरीब मर जाएगा . . . इसके सौ रुपये कम हो गये हैं। कल से यह परेशान है। पगला गया है। घर के झमेलों से।"

"सच दादा मैं बहुत गरीब हूं . . . मर जाऊंगा . . . एक सौ टका . . . ? घर में सब गड़बड़ है।"

मैंने सौ रुपये अपने भीतर के बेईमान के रोकने के बावजूद दे दिये। शायद यह करुणाप्लावित उस सत्य का दबाव था जो हम सबके भीतर रहता है!

आशालक्ष्मी, नया शहर, बीकानेर ३३४००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

वे साहित्यानुरागी थे

● गोपाल कृष्ण कौल

स्व. डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद विद्वान नेता के साथ सौम्य सहृदय, साहित्यप्रेमी और लेखक थे। उनके सौम्य व्यक्तित्व के थोड़ा निकट जाकर उनसे अपरिचित व्यक्ति भी अपने को उनका चिरपरिचित अनुभव करने लगता था। वह युवा साहित्यकारों को अपना स्नेह और प्रोत्साहन देते थे एवं बुजुर्ग साहित्यकारों का आदर करते थे।

एक बार राष्ट्रपति-भवन में उनके सान्निध्य में एक कविगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके संयोजक संस्कृत और हिंदी के विद्वान डॉ. रामधन शर्मा थे। मैं भी उस कवि गोष्ठी में एक युवा कवि के रूप में सम्मिलित था। उस गोष्ठी में ज्यादा भीड़भाड़ नहीं थी। थोड़े से कवि, कुछ चुने हुए श्रोता और राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। मैंने जिस कविता को सुनाने को चुना, कई मित्रों की राय थी कि उस कविता को वहां न सुनाया जाय क्योंकि उस कविता के व्यंग्य का कहीं कुछ श्रोता अनुचित अर्थ न लगाएं। मैंने उनकी इस भयग्रस्त राय को नहीं माना। उस कविता का एक अंश था—

न कुटिया, न काटेज, न विला
दोस्त बनाते हैं किला
सपनों की छत
कल्पना का ड्राइंगरूम
शिष्टाचार के नाजुक रेशमीन परदे
घृणा के द्वारपाल
दम्भ के देवता फूले समाते नहीं।

× × ×

किले में तहखाना है—
अवचेतन मन-सा गहन अंधेरा
बाहर नफरत के पहरेदार
प्यार की हवाओं से कहते हैं बार-बार
इधर मत आना
यह वर्जित प्रदेश
यह अहं का घर
प्यार की हवा में
जिसे गिरने का डर।

माननीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद यह कविता सुनकर मुसकराये और मुझे स्नेह-प्रोत्साहन दिया।

0 0 0 0

एक संदर्भ और है। ३१ जुलाई को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेमचंद-जयंती थी। मैं दिल्ली प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का साहित्यमंत्री था और उसकी रंगमंच परिषद का भी मंत्री था। उन दिनों भाई गोपालप्रसाद व्यास सम्मेलन के प्रधानमंत्री थे। तय किया गया कि प्रेमचंद जयंती पर प्रेमचंद की कहानी 'पंचपरमेश्वर' का नाट्यरूपांतर करके मंच पर प्रस्तुत किया जाय। नाट्य रूपांतर मैंने किया और उसके प्रस्तुतीकरण का दायित्व भी मुझ पर था। यह याद रखनेवाली बात है कि उस समय न तो राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय की स्थापना हुई थी और न ही दिल्ली में इतनी नाट्यमंडलियां थी जितनी आज हैं। इस नाट्य रूपांतर पर भूमिका लिखने और सप्रूहाउस में उसकी प्रस्तुति का उद्घाटन करने के लिए ... प्रसाद से प्रार्थना की गयी। ... स्वीकृति देने की कृपा की, भूमिका ... सप्रूहाउस के मंच पर प्रेमचंद जयंती पर ... उद्घाटन भी किया। उन्होंने इस नाट्यरूपांतर की प्रशंसा और 'पंचपरमेश्वर' में हिंदू मुसलिम भाईचारे और पंचायती न्याय के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सुखद आश्चर्य तब हुआ, जब कुछ दिनों बाद राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने नागपुर की तरफ किसी सभा में इस 'पंचपरमेश्वर' के महत्त्व की फिर चर्चा की। साहित्य के प्रति उनके अनुराग का यह उदाहरण था।

—कल्पनानगर, शिब्बनपुरा, गाजियाबाद

मनोकामना पूर्ति के लिए अनोखा वरदान

धन तेरस तथा दीपावली पूजन के शुभ अवसर पर अनुभव सिद्ध शास्त्रीय पांच प्रकार के ताम्र यंत्र उपलब्ध

तात्कालिक लाभ में यंत्र फलदायक हैं

श्री यंत्र, श्री महालक्ष्मी यंत्र, श्री वीसा यंत्र,
श्री लक्ष्मीगणेश महायंत्र, श्री कुबेर यंत्र

उपरोक्त सभी ताम्र यंत्र, प्रत्येक का मूल्य 101/- डाक व्यय फ्री
इच्छुक सज्जन 101/- का मनीआर्डर भेजकर घर बैठे रजिस्ट्री द्वारा मंगाये।

मंगाने का पता :

गोयल मार्केटिंग कम्पनी,
214, दरीबा, दिल्ली-110006, दूरभाष : 279691

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्मरण

वे साहित्यानुरागी थे

• गोपाल कृष्ण कौल

स्व. डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद विद्वान नेता के साथ सौम्य सहृदय, साहित्यप्रेमी और लेखक थे। उनके सौम्य व्यक्तित्व के थोड़ा निकट जाकर उनसे अपरिचित व्यक्ति भी अपने को उनका चिरपरिचित अनुभव करने लगता था। वह युवा साहित्यकारों को अपना स्नेह और प्रोत्साहन देते थे एवं बुजुर्ग साहित्यकारों का आदर करते थे।

एक बार राष्ट्रपति-भवन में उनके सान्निध्य में एक कविगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके संयोजक संस्कृत और हिंदी के विद्वान डॉ. रामधन शर्मा थे। मैं भी उस कवि गोष्ठी में एक युवा कवि के रूप में सम्मिलित था। उस गोष्ठी में ज्यादा भीड़भाड़ नहीं थी। थोड़े से कवि, कुछ चुने हुए श्रोता और राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। मैंने जिस कविता को सुनाने को चुना, कई मित्रों की राय थी कि उस कविता को वहां न सुनाया जाय क्योंकि उस कविता के व्यंग्य का कहीं कुछ श्रोता अनुचित अर्थ न लगाएं। मैंने उनकी इस भयग्रस्त राय को नहीं माना। उस कविता का एक अंश था—

न कुटिया, न काटेज, न विला
दोस्त बनाते हैं किला
सपनों की छत
कल्पना का ड्राइंगरूम
शिष्टाचार के नाजुक रेशमीन परदे
घृणा के द्वारपाल
दम्भ के देवता फूले समाते नहीं।

× × ×

किले में तहखाना है—
अवचेतन मन-सा गहन अंधेरा
बाहर नफरत के पहरेदार
प्यार की हवाओं से कहते हैं बार-बार
इधर मत आना
यह वर्जित प्रदेश
यह अहं का घर
प्यार की हवा में
जिसे गिरने का डर।

माननीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद यह कविता सुनकर मुसकराये और मुझे स्नेह-प्रोत्साहन दिया।

0 0 0 0

एक संदर्भ और है। ३१ जुलाई को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेमचंद-जयंती थी। मैं दिल्ली प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का साहित्यमंत्री था और उसकी रंगमंच परिषद का भी मंत्री था। उन दिनों भाई गोपालप्रसाद व्यास सम्मेलन के प्रधानमंत्री थे। तय किया गया कि प्रेमचंद जयंती पर प्रेमचंद की कहानी 'पंचपरमेश्वर' का नाट्यरूपांतर करके मंच पर प्रस्तुत किया जाय। नाट्य रूपांतर मैंने किया और उसके प्रस्तुतीकरण का दायित्व भी मुझ पर था। यह याद रखनेवाली बात है कि उस समय न तो राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय की स्थापना हुई थी और न ही दिल्ली में इतनी नाट्यमंडलियां थी जितनी आज हैं। इस नाट्य रूपांतर पर भूमिका लिखने और सप्रूहाउस में उसकी प्रस्तुति का उद्घाटन करने के लिए राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से प्रार्थना की गयी। उन्होंने इसकी स्वीकृति देने की कृपा की, भूमिका लिखी, और सप्रूहाउस के मंच पर प्रेमचंद जयंती पर उसका उद्घाटन भी किया। उन्होंने इस नाट्यरूपांतर की प्रशंसा और 'पंचपरमेश्वर' में हिंदू मुसलिम भाईचारे और पंचायती न्याय के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सुखद आश्चर्य तब हुआ, जब कुछ दिनों बाद राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने नागपुर की तरफ किसी सभा में इस 'पंचपरमेश्वर' के महत्त्व की फिर चर्चा की। साहित्य के प्रति उनके अनुराग का यह उदाहरण था।

—कल्पनानगर, शिब्बनपुरा, गाजियाबाद

मनोकामना पूर्ति के लिए अनोखा वरदान

धन तेरस तथा दीपावली पूजन के शुभ अवसर पर अनुभव सिद्ध शास्त्रीय पांच प्रकार के ताम्र यंत्र उपलब्ध

तात्कालिक लाभ में यंत्र फलदायक हैं

श्री यंत्र, श्री महालक्ष्मी यंत्र, श्री वीसा यंत्र,
श्री लक्ष्मीगणेश महायंत्र, श्री कुबेर यंत्र

उपरोक्त सभी ताम्र यंत्र, प्रत्येक का मूल्य 101/- डाक व्यय फ्री
इच्छुक सज्जन 101/- का मनीआर्डर भेजकर घर बैठे रजिस्ट्री द्वारा मंगाये।

मंगाने का पता :

गोयल मार्केटिंग कम्पनी,

214,/ दरीबा, दिल्ली-110006, दूरभाष : 279691

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

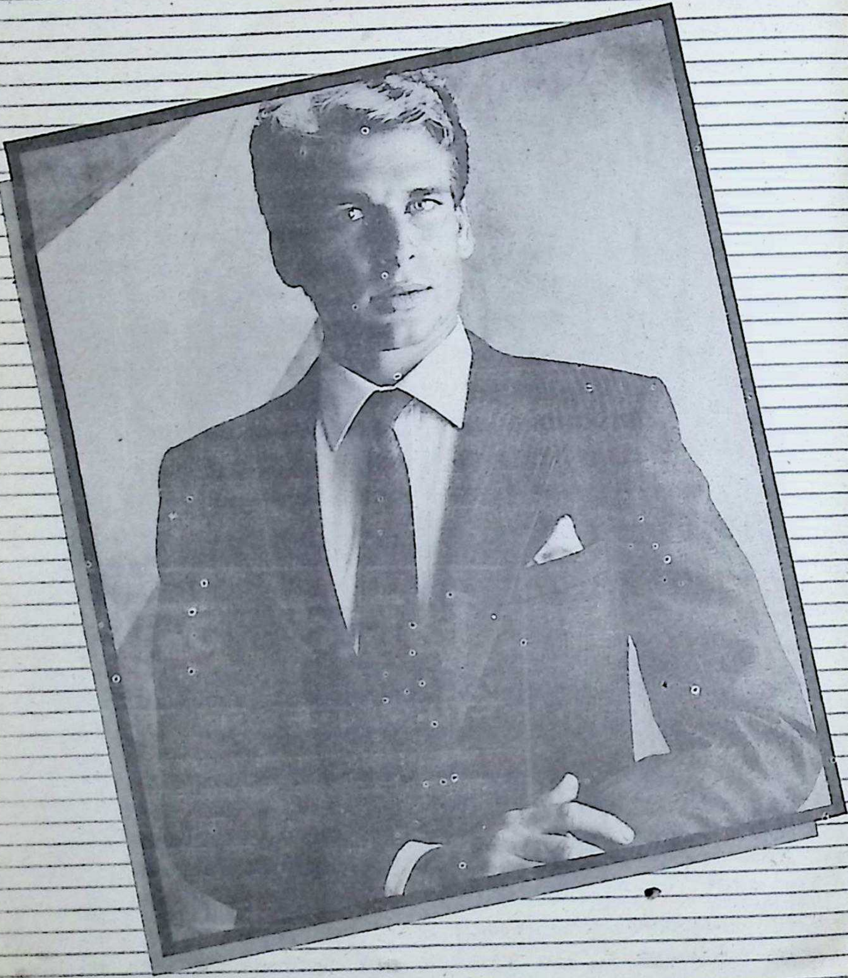

BD/361/HN

सेज़ारी कलेक्शन्स के सूटिंग्स

पॉलिएस्टर वूल, वर्स्टेड और पॉलिएस्टर ब्लेंडेड सूटिंग्स

बॉम्बे डाइंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान' की प्रविष्टि-५३ के लिए हमें सदा की भांति काफी बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र प्राप्त हुए। सभी पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। कुछ चुने हुए प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं राजधानी के सुपरिचित कंप्यूटर ज्योतिषी श्री अजयप्रताप भाम्बी

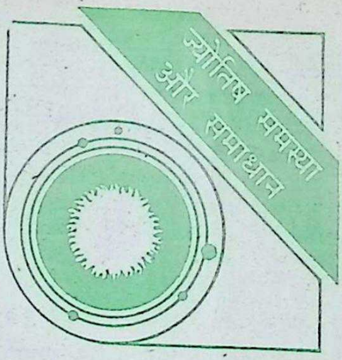

माधवी सिंह, पटना

प्रश्न : मेरी शादी कब होगी तथा शादी में कोई बाधा तो नहीं पहुंचेगी ?

उत्तर : आपका विवाह अगले वर्ष होगा तथा पूर्णतः शांति से संपन्न होगा, व्यथित न हों।

धीरेश कुमार प्रधान, चौबीस परगना (प. बं.)

प्रश्न : जातक २९-३-८४ से लापता है, कृपया इसकी वर्तमान स्थिति के बारे में बतायें ?

उत्तर : जातक जीवित है तथा घर से पूर्व की ओर रह रहा है, अगले वर्ष लौटेगा।

सत्यवान प्रसाद तिवारी, होशंगाबाद

प्रश्न : यदि अल्पायु नहीं हूं तो क्या भविष्य में इच्छानुसार सुखी व समृद्ध रह पाऊंगा ?

उत्तर : आप अल्पायु नहीं हैं, उम्र बहुत है ' वर्ष १९८८ बहुत उत्तम होगा।

कुमार कार्तिकेय अधिकारी, काठमांडू

प्रश्न : भाग्योदय कब से तथा कौन-सा रत्न धारण करूं ?

उत्तर : भाग्योदय अगले वर्ष से होगा। पुखराज स्वर्ण में धारण करो, लाभ होगा।

कुमारी विनील, गांधीधाम

प्रश्न : शादी कब होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष विवाह होगा।

अजयकुमार पांडेय, लखनऊ

प्रश्न : पढ़ाई और नौकरी मिलने में बाधा क्यों पहुंच रही है ?

उत्तर : पारिवारिक समस्याओं से स्वयं को उभारें, गंभीर होकर प्रयास करें, सफलता मिलेगी।

कु. प्रमिला त्यागी, टिहरी गढ़वाल

प्रश्न : मैं पी. सी. एस. में जाऊंगी या नहीं, जाऊंगी तो कब तक ?

उत्तर : अगले वर्ष सफलता प्राप्त होगी, मेहनत अभी से करें।

कु. सुशीला विश्वकर्मा, बिलासपुर

प्रश्न : मेरी शादी कब होगी एवं पति कैसा होगा ?

उत्तर : विवाह की संभावना अगले डेढ़ वर्ष में है, शुरू-शुरू में साम्य स्थापित करने में कठिनाई आएगी, बाद में ठीक रहेगा।

अश्विनी कुमार सिनहा, पटना

प्रश्न : पदोन्नति एवं मकान कब तक होगा ?

उत्तर : मंगल की दशा में मकान निश्चित बनेगा, पदोन्नति अगले वर्ष संभावित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनिता, गाजियाबाद

प्रश्न : मेरी नौकरी कब तक लगेगी ?

उत्तर : अप्रैल' ८७ से पूर्व नौकरी प्राप्त हो जाएगी।

कु. सरला चोपड़ा, वाराणसी

प्रश्न : मेरी पी. एच. डी. कब तक पूरी हो सकेगी ?

उत्तर : अगले दो वर्ष में।

नीलिमा राजवैद्य, देवास

प्रश्न : विवाह कब होगा, पति का व्यवसाय क्या होगा ?

उत्तर : विवाह अगले दो वर्ष में संपन्न होगा तथा पति शासकीय सेवा में होगा।

श्रीमती दुर्गेश श्रीवास्तव, पीलीभीत

प्रश्न : संतान योग कब तक ?

उत्तर : अगले डेढ़ वर्ष में बच्चा होगा।

दिनेश शर्मा, ग्वालियर

प्रश्न : मेरी शादी कब होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष के उत्तरार्द्ध में।

त्रिवेदी ओमप्रकाश हीरालाल, गुजरात

प्रश्न : पुत्र प्राप्ति का योग कब है ?

उत्तर : अगले दो वर्ष में संभावना है, पुखराज धारण करें।

अलख देव प्रसाद, गया

प्रश्न : पदोन्नति कब होगी ?

उत्तर : दो वर्ष के भीतर।

पुरुषोत्तमलाल सोनी, जबलपुर

प्रश्न : व्यावसायिक स्थिति कब सुधरेगी ?

उत्तर : अगले वर्ष के उत्तरार्द्ध से।

शैल कुमारी, अलवर

प्रश्न : विवाह एवं नौकरी का योग कब तक ?

ऐतिहासिक धरोहर

ज्योतिष शास्त्र का प्राचीन दुर्लभ ग्रंथ

रणवीर ज्योतिर्महानिबंधः

(संस्कृत-हिन्दी सहित)

120 वर्ष पूर्व जम्मू-कश्मीर राज्य के तत्कालीन महाराजा रणवीर सिंह ने फलित ज्योतिष पर प्रमुख ज्योतिषियों एवं विद्वानों द्वारा तैयार कराया और श्रेष्ठ माना गया। अब मूल प्रति से ज्यों का त्यों, इलैक्ट्रोस्टेट, बड़ा आकार (35×26) सैंटीमीटर, पृष्ठ 700, श्लोक संख्या 4500, बढ़िया जिल्द, वज़न 4 किलो में उपलब्ध है। मूल्य 1200 रुपए, डाकखर्च 50 रुपए अलग। 500 रुपए मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट भेजकर बाकी रुपयों की वी.पी. भेजने की सुविधा प्राप्त।

विनम्रता सहित :

ग्रंथ विश्व की सर्वश्रेष्ठ कृतियों के समकक्ष विद्वानों एवं संग्रहालयों के लिए गौरवपूर्ण उपहार में दीजिए— दिल जीतिए

रंजन पब्लिकेशन्स

16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2 फोन : 278835

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर : दोनों कार्यों के अगले वर्ष संपन्न होने की संभावना है ।

शिवकुमार सिंह, रामपुर

प्रश्न : मानसिक चिंताओं से मुक्ति कब तक ?

उत्तर : पुखराज धारण करें, शीघ्र लाभ होगा ।

राजेंद्र कुमार त्रिपाठी, दुर्ग

प्रश्न : नौकरी में परेशानी व क्लेशदायक दांपत्य जीवन । रत्न सुझाएं ?

उत्तर : नीलम धारण करें, सब ठीक हो जाएगा । दांपत्य जीवन में शांति के लिए आपसी सामंजस्य की आवश्यकता है ।

एस. सी. खरे, लखनऊ

प्रश्न : पदोन्नति कब होगी ?

उत्तर : अगले वर्ष ।

अजय उकास, इंदौर

प्रश्न : क्या मैं मेडिकल में जा सकूंगा ?

उत्तर : हां, लेकिन अगले वर्ष बहुत मेहनत की आवश्यकता होगी ।

वासुदेव शर्मा, गोरखपुर

प्रश्न : पदोन्नति में काफी दिक्कतें आ रही हैं, क्या कारण है ?

उत्तर : कुंडली में दशमेश की स्थिति अच्छी नहीं है । अतः विद्रोही ज्यादा क्रियाशील हो जाते हैं । अगले वर्ष पदोन्नति हो जाएगी ।

बी-२, बसंत मार्ग,
बसंत विहार,
नयी दिल्ली—५७

यहां से काटिए

....

५४

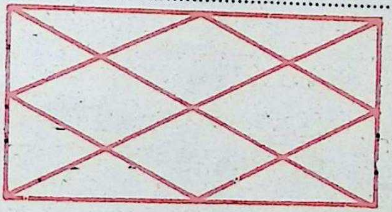

नाम..

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख)..... महीना ..... सन.....................

जन्म-स्थान .... जन्म-समय ....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ....

पता..

आपका एक प्रश्न ....

यहां से काटकर चिपकायें

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकाएं

....

संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि—५४) 'कादम्बिनी',
हिन्दुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० नवम्बर, १९८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

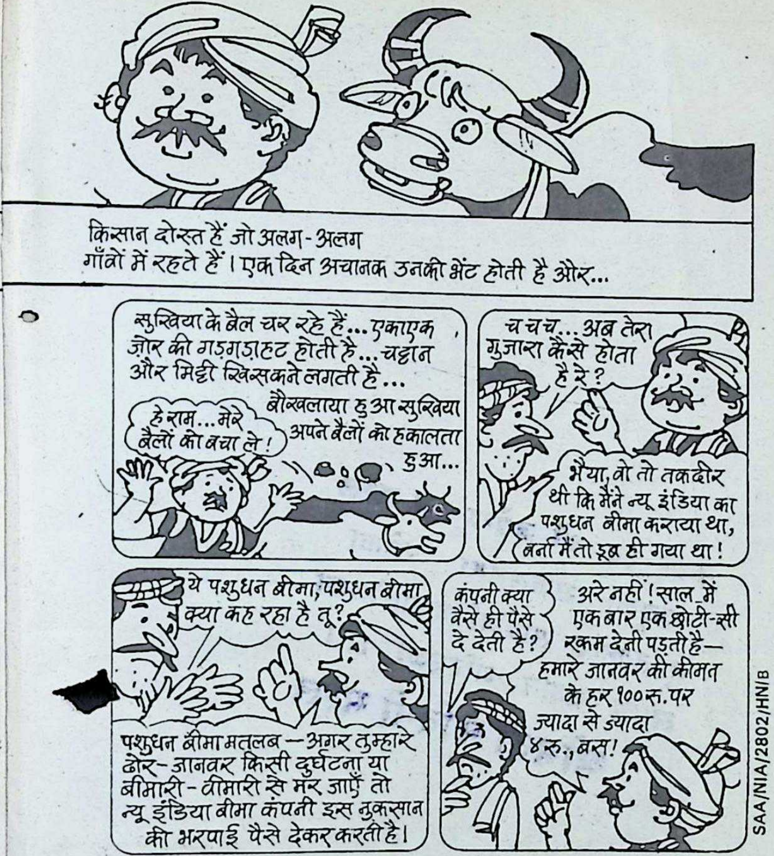

पूरी जानकारी के लिए अपने पास के न्यू इंडिया कार्यालय में पधारिए या एजेंट से मिलिए।

न्यू इंडिया एश्योरेंस

(जनरल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया की एक सहायक कंपनी)

बीमा— नुकसान में आपका सहारा!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो

(गृह मंत्रालय)

पुलिस से संबंधित हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए पं. गोविंद बल्लभ पंत पुरस्कार योजना

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, न्यायिक विज्ञान, पुलिस प्रशिक्षण, पुलिस प्रशासन, पुलिस अन्वेषण, अपराधविज्ञान, अपराध शास्त्र तथा अन्य पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी की उत्कृष्ट मूल पुस्तकें लिखने अथवा अनुवाद करने के लिए सृजनशील लेखकों और अनुवादकों को उपर्युक्त योजना के द्वारा प्रोत्साहित करता है। इस योजना के निम्नलिखित दो भाग हैं :

भाग-1 : पुलिस से संबंधित उपर्युक्त विषयों पर हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं :—

1. मूल हिन्दी पुस्तकें :— सात-सात हजार रुपए तक के पांच पुरस्कार।
2. अनूदित हिन्दी पुस्तकें :—तीन-तीन हजार रुपए तक के दो पुरस्कार।

भाग-2 : ब्यूरो किसी एक पुलिस-विषय पर पुस्तक लिखवाने के लिए प्रति वर्ष दस हजार रुपए तक का एक पुरस्कार भी प्रदान करता है जिसके लिए इस वर्ष का विषय है—"विकासशील समाज में समसामयिक पुलिस की भूमिका"।

इस पुरस्कार योजना में भाग लेने के लिए निम्नलिखित शर्तें हैं :—

1. इस योजना में भारत के सभी नागरिक भाग ले सकते हैं।
2. योजना के प्रथम भाग में वे सभी पुस्तकें शामिल की जाएंगी जो 31-12-85 तक प्रकाशित हैं।
3. पांडुलिपियां भी प्रविष्टि के रूप में भेजी जा सकती हैं परन्तु यदि विचार करने के बाद उन्हें पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया गया तो पुरस्कार-राशि केवल पांडुलिपि के प्रकाशन के बाद ही दी जाएगी। प्रकाशन करवाने की व्यवस्था स्वयं लेखक/ अनुवादक को करनी होगी।
4. पुस्तकों/ पांडुलिपियों की तीन-तीन प्रतियां निर्धारित प्रपत्र के साथ ब्यूरो को भेजें। ... यह पुस्तकें/ पांडुलिपियां वापस नहीं की जाती हैं। पांडुलिपि की तीन प्रतियां टाइप होनी चाहिए।
5. पुस्तक का आकार लगभग 100 पृष्ठों का अवश्य होना चाहिए।
6. योजना के भाग-2 के लिए आवश्यक है कि लेखक उपर्युक्त विषय पर अपनी विस्तृत रूपरेखाएं और बायोडेटा की तीन-तीन प्रतियां भेजें।
7. इस योजना में वे पुस्तकें शामिल नहीं की जाएंगी जिन्हें पहले ही भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा अन्य किसी सरकारी एजेंसी द्वारा कोई पुरस्कार प्रदान किया जा चुका हो अथवा इसके लिए कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई हो।

योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकों/ रूप रेखाओं का मूल्यांकन एक मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाता है जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। यदि समिति निर्णय लेती है कि कोई पुस्तक अपेक्षित स्तर की नहीं है तो उसे अधिकार है कि वह कोई भी पुरस्कार घोषित न करें अथवा पुस्तक के स्तर को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार की राशि कम कर दे।

भेजने की अंतिम तिथि : उपर्युक्त संदर्भ में पुस्तकें अथवा पांडुलिपियां अथवा रूप रेखाएं ब्यूरो के कार्यालय में 30-11-86 तक अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें—

संपादक हिंदी, पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो,
ब्लाक-II, 3/4 मंजिल, सी.जी.ओ. कम्पलैक्स,
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003।

प्रपत्र

1. पुस्तक का नाम और विषय :
2. पुस्तक का संस्करण व वर्ष :
3. लेखक/ अनुवादक का नाम और पूरा पता :
4. प्रकाशक का नाम और पूरा पता :
5. रायल्टी पाने वाली संस्था अथवा व्यक्ति का नाम और पूरा पता :
6. (क) क्या यह रचना मूल अथवा अनूदित है ?
   (ख) यह अनूदित कृति है तो मूल पुस्तक और उसके लेखक और प्रकाशक का पूरा पता :
7. प्रमाणित किया जाता है कि यह अनूदित कृति है तथा इसके लेखक और प्रकाशक से हिन्दी अनुवाद तथा प्रकाशित करने की अनुमति ले ली गई है।
8. प्रमाणित किया जाता है कि इस पुस्तक की मूल कृति, अनुवाद अथवा पांडुलिपि पर भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा किसी अन्य एजेंसी द्वारा परिचालित कोई पुरस्कार अथवा अन्य किसी तरह की कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई है।

हस्ताक्षर (लेखक या अनुवादक)

डीएवीपी-561(643)/86

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कादम्बिनी

KADAMBINI NEW DELHI

Regd. No. D.(C)—172
R.NI. No. 4983/60

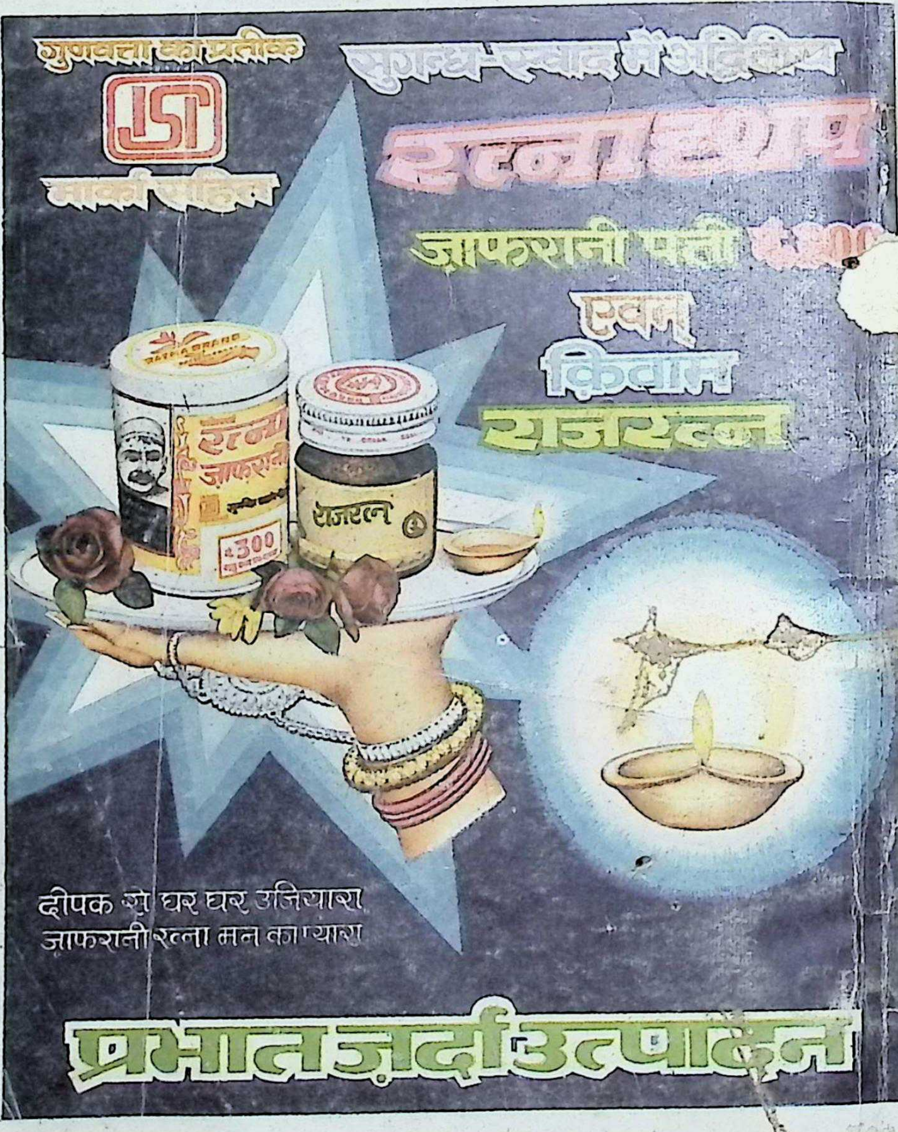

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu